अध्ययन

(प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन के हिन्दी विश्वविद्यालय की
'साहित्य महोपाध्याय' उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध)

डॉ० एन. एस. दक्षिणामूर्ति, एम.ए., पी-एच.डी.,
साहित्यरत्न, साहित्यरत्नाकर, साहित्य महोपाध्याय,
अध्यापक, स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन तथा अनुसंधान विभाग,
मैसूर विश्वविद्यालय, मानसगंगोत्री. मैसूर-6.

☆

1966

HINDĪ AUR TELUGU KAHĀVATŌ KĀ TULANĀTMAK ADHYAYAN

by Dr N. S. Dakshina Murthy, M.A., PH.D.,
Sāhityaratna, Sāhityaratnākar, SāhityaMahopādhyāya.

Published by the Author, 'Vijayanivas', Palace Road,
NANJANGUD (Mysore Dt.)

Price : Rs 9–00

प्रथम संस्करण १९६६

रु. ९–००

प्रकाशक :
लेखक,
'विजयनिवास',
पैलेस रोड,
नञ्जनगूड (मैसूर).

मुद्रक :
साम्राज्यम् मुद्रणालय,
१४०३, सोप्पिन कोळ,
मैसूरु–४.

भूमिका

हम नित्यप्रति कहावते कहते हैं, कहावतें सुनते हैं। बोलते समय हम जाने या अनजाने कहावतों का प्रयोग कर देते हैं। जब-कभी किसी बात को प्रमाणित करने के लिए प्रमाण-स्वरूप कहावत को प्रस्तुत करने में असमर्थ (विस्मृति या किसी दूसरे कारण से) होते हैं, तब अक्सर कह देते हैं कि "अदेमो सामेत चेप्पिनट्लु" अर्थात् जैसे कोई कहावत कही जाती है। कहावत प्रस्तुत करने में असमर्थ भले ही हो, पर कहावत का नाम अवश्य लेते हैं। हमारे दैनिक जीवन से कहावतें इस प्रकार हिल-मिल गयी हैं कि उनको पृथक करना संभव नहीं है। हिन्दी के समान ही तेलुगु में भी कहावतों का प्राचुर्य है। तेलुगु-जनता विशेष रूप से कहावतों का प्रयोग करती है। जहाँ किसी से उपमा देनी हो, किसी से तुलना करनी हो अथवा सादृश्य दिखलाना हो वहाँ कहावतों का प्रयोग किया जाता है जो अभिव्यक्ति की सफलता का सर्वोत्कृष्ट साधन है। इनकी तुलना किससे की जाय? यदि वेद, महर्षियों के ज्ञान के भण्डार हैं तो कहावतें जनता-जनार्दन की अनुभव-सुधा हैं।

हिन्दी, बंगला, मराठी, तेलुगु, तमिल, कन्नड आदि भारतीय भाषाओं में कहावतों के कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। परन्तु, इस विषय पर आलोचनात्मक अध्ययन बहुत कम हुआ है। राजस्थानी,

भोजपुरी जैसी कतिपय भाषाओं की कहावतों को लेकर विद्वानों ने शोध-कार्य किया है । जहाँ तक मुझे ज्ञात है, तेलुगु में इस विषय का सर्वांगीण अध्ययन किसी ने नहीं किया है । तुलनात्मक रीति से कहावतों का अध्ययन भी अब तक नहीं किया गया है । "हिन्दी और तेलुगु कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन"– यह विषय सर्वथा नया एवं मौलिक प्रयास है ।

जब हम हिन्दी को राष्ट्रभाषा मान चुके हैं और उसे राजभाषा के आसन पर आसीन देखना चाहते हैं, तब यह आवश्यक हो जाता है कि अन्यान्य भारतीय भाषाओं के साहित्य के आदान-प्रदान के द्वारा हिन्दी साहित्य की समृद्धि और श्रीवृद्धि की जाय । इस दृष्टि से भाषा तथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन विशेष महत्व का माना जाता है । "हिन्दी और तेलुगु कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन" विषय अपनी नवीनता के कारण उपयोगी सिद्ध होगा, इसमें संदेह नहीं । बाल्य-जीवन से ही कहावतों के प्रति अधिक आकर्षण रहने के कारण अवकाश के समय में विविध भाषाओं की कहावतों का संग्रह करता रहा हूँ । मेरी धारणा है कि तुलनात्मक कहावतों का संग्रह और अध्ययन एक अत्यंत उपयोगी कार्य है । विभिन्न देशों की कहावतों के अध्ययन से साहित्य तथा संस्कृति पर नूतन प्रकाश पड़ सकता है ।

यहाँ "हिन्दी और तेलुगु कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन" के संबंध में कतिपय [illegible] प्रतीत होता है ।

(१) [illegible] "हिन्दी" शब्द का विस्तृत अर्थ ग्रहण किया गया

है। हिन्दी का अर्थ खड़ीबोली, ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी आदि लिया गया है। तथापि, यथा संभव खड़ीबोली की ही कहावतों को उदाहरण के रूप में देने का प्रयास किया गया है।

(२) हिन्दी और तेलुगु कहावतों की तुलना करते समय समानताएँ एवं असमानताएँ दिखलाते हुए समन्वय करने की चेष्टा की गयी है।

(३) पाद टिप्पणी में अन्यान्य भाषाओं की कहावतें भी इस उद्देश्य से दी गयी हैं कि उनके अध्ययन से यह ज्ञात हो कि सामाजिक एकीकरण एवं उन्नति में कहावतें कितनी सहायक होती हैं।

(४) भारत की प्रत्येक भाषा पर संस्कृत का प्रभाव लक्षित होता है। तेलुगु इसका अपवाद नहीं है। तेलुगु पर तो संस्कृत का प्रभाव विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है। तेलुगु में संस्कृत की कई लोकोक्तियाँ ज्यों की त्यों प्रयुक्त होती हैं। अतएव, यत्र-तत्र ऐसी लोकोक्तियों का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत प्रबंध का विषय आठ अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में कहावतों का सामान्य सर्वेक्षण किया गया है। कहावतों की लोकप्रियता व अध्ययन की आवश्यकता, हिन्दी "कहावत" और तेलुगु "सामेत" शब्दों की व्युत्पत्ति, कहावत की परिभाषा, कहावत के लक्षण, कहावत तथा मुहावरे, प्राज्ञोक्ति आदि विषयों पर विचार किया गया है।

द्वितीय अध्याय "कहावतों की उत्पत्ति का मूल कारण" है।

उसमें कहावतों की उत्पत्ति की प्राचीनता और उत्पत्ति के कारणों पर प्रकाश डाला गया है।

तृतीय अध्याय में कहावतों का क्रमिक विकास दिखलाया गया है।

चतुर्थ अध्याय में कहावतों के वर्गीकरण के संबन्ध में चर्चा की गयी है। वर्गीकरण संबन्धी सिद्धान्त अस्थिर है। विभिन्न विद्वान विभिन्न रूप से कहावतों का वर्गीकरण करते हैं। यथा स्थान यह दिखलाया गया है और अपना मत प्रकट किया गया है।

पंचम अध्याय में मानव जीवन तथा साहित्य में कहावतों का स्थान और प्रभाव स्पष्ट किया गया है। विश्व में ऐसी कोई भाषा नहीं है जिसके साहित्य में कहावतों का प्रयोग न होता हो। मानव जीवन में तो उनका इतना मुख्य स्थान है कि प्रत्येक अवसर पर उनका प्रयोग होता है।

षष्ठ अध्याय में हिन्दी और तेलुगु कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। प्रबन्ध का यह मुख्य भाग है जो प्रबंध की जान है। चतुर्थ अध्याय में वर्गीकरण का जो सिद्धान्त अपनाया गया है, उसी के अनुसार हिन्दी और तेलुगु कहावतों की तुलना की गयी है। दोनों भाषाओं में प्रचलित कहावतों की तुलना करते हुए समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया गया है।

कहावतों की रूप-शैली, अभिव्यंजना में स्पष्टता, स्फूर्ति आदि की चर्चा सप्तम अध्याय में है। कहावतों में अलंकार, छंद आदि के

संबन्ध में भी विवेचन मिलता है। कहावतों में प्रायः सभी अलंकार ढूँढ़े जा सकते हैं। इस अध्याय में केवल उन्हीं अलंकारों की चर्चा है जिन से यह प्रकट हो कि कहावतों में व्यक्त भाव किस प्रकार स्पष्ट तथा प्रभावशील होता है। कहावतों में छंद का स्पन्दन दिखाई पड़ता है। उनमें तुक और गति की प्रधानता है। सामाजिक एकीकरण में कहावतों का अध्ययन उपयोगी सिद्ध होता है।

अष्टम अध्याय में, विश्व-साहित्य में कहावती-साहित्य का क्या स्थान है, नई कहावतों का निर्माण किस रूप में होता है — आदि के संबन्ध के विचार व्यक्त किया गया है। हिन्दी और तेलुगु कहावतों के तुलनात्मक अध्ययन का निष्कर्ष निकालते हुए बतलाया गया है कि भारत में अनेकता में एकता स्थापित है, भारत का हृदय एक है।

परिशिष्ट १ में कुछ तुलनात्मक कहावतें दी गयी हैं; जिन के अध्ययन से पता चलता है कि देश या जाति की भिन्नता के कारण मानव के अनुभव भिन्न नहीं होते, उसकी मूल प्रकृति में भिन्नता नहीं आती।

परिशिष्ट २ में संस्कृत की कुछ ऐसी लोकोक्तियाँ दी गयी हैं जिनका प्रयोग हिन्दी तथा तेलुगु में होता है।

मुझे इस कार्य में कई विद्वानों की पुस्तकों से सहायता प्राप्त हुई है। उन पुस्तकों की सूची परिशिष्ट ३ में दी गयी है। फिर जिन पुस्तकों से मैंने सहायता ली है, प्रबन्ध में उनका [illegible] दिये हैं।

विषय-क्रम

प्रथम अध्याय

कहावत की परिभाषा

कहावतों की लोक-प्रियता व अध्ययन की आवश्यकता

मानव-जाति भाषा का भव्य वरदान प्राप्त कर प्रगति के पथ पर अग्रगामी होने में सर्वथा समर्थ हुई है। भाषा सामाजिकता की आधार-शिला है। यों तो भाषा का प्रत्येक अंग मानव-जाति की सम्मिलित संपत्ति है; परन्तु कहावतों या लोकोक्तियों के संबन्ध में यह बात विशेष रूप से कही जा सकती है। कहावतें मानव-जाति के अनुभवों की सुन्दर अभिव्यक्ति हैं। कोई भाषा ऐसी नहीं है जिसमें कहावतों का प्रयोग न होता हो और उनका महत्व स्वीकृत न हुआ हो। उनके प्रयोग से हम को न केवल एक परंपरागत विचार-शृंखला का ज्ञान होता है, अपितु हमारी सांसारिक कुशलता भी बढ़ जाती है। दूसरे शब्दों में, कहावतें सांसारिक व्यवहार-कुशलता और सामान्य बुद्धि की उत्कृष्ट परिचायक एवं निदर्शन हैं। 'कहावतें मानव-स्वभाव और व्यवहार-कौशल के सिक्के के रूप में प्रचलित होती हैं और वर्तमान पीढ़ी को पूर्वजों से उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त होती हैं'।[१] कहावतों का प्रयोग सर्वत्र होता है।

स्त्री-पुरुष, शिक्षित-अशिक्षित, ग्रामीण-नागरिक सब कहावतों का प्रयोग करते हैं। यह कम आश्चर्य की बात नहीं है कि नगर-निवासियों की अपेक्षा ग्राम-निवासियों को एवं पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को कहावतों का प्रचुर प्रयोग करते हुए देखते हैं। सच तो यह है कि कहावतें ग्रामीणों तथा स्त्रियों की निजी संपत्ति है। जब कभी स्त्रियाँ बोलने लगती हैं तो मानो कहावतें उनकी जुबान पर रहती हैं — परिस्थिति या संदर्भ के अनुसार वे उनका प्रयोग कर देती हैं। कुछ पंडितों का अनुमान है कि अधिकतर कहावतों का उद्भव स्त्रियों के कारण और स्त्रियों के द्वारा हुआ है। हो या न हो, यह बात अवश्य है कि कहावतों के विकास में स्त्रियों का बहुत बड़ा हाथ रहा है। अपढ़ स्त्रियों की वाणी में कहावतों का कोष ही रहता है। ये कहावतें उनकी शिक्षा की कमी को पूर्ण कर देती हैं। इसीलिए तेलुगु में यह कहावत चल पड़ी है — "चदुवुकोसवानि कंटे चाकलिवाडु मेलु कदा" अर्थात् 'शिक्षित की अपेक्षा धोबी अच्छा है न!'

कहावतों के प्रयोग से किसी भी प्रसंग अथवा घटना का स्पष्ट एवं सजीव चित्रण हो जाता है। उस प्रसंग अथवा घटना पर मानो चार चाँद लग जाते हैं। संभाषण या वर्णन में कहावतों का प्रयोग करें तो सोने में सुगंधि आ जाती है। क्योंकि, वह एक सबल प्रमाण है। उसके आगे शेष सब प्रमाण मात हो जाते हैं। बात यह है कि कहावतों में मानव-जीवन का तथ्य छिपा रहता है। किसी व्यक्ति के मुँह से हम कोई कहावत सुनें और उसके तथ्य से हमारा साक्षात्कार हो जाय तो उसकी प्रामाणिकता स्वयमेव सिद्ध हो जाती है। प्रायः यह देखा जाता है कि जब

कभी अनेक प्रकार के तर्क-जाल बिछाने और युक्तियों से सहायता लेने पर भी किसी उपस्थित संदेह का समाधान नहीं हो पाता है, तब प्रसंगानुसार कहावत का प्रयोग करने से वह संदेह दूर हो जाता है और संदेह करनेवाले बिना किसी तर्क-वितर्क के उस बात को मान जाते हैं मानो कहावत एक बहुत बड़ा साक्ष्य है, प्रमाण है, सब कुछ है। वह न्यायालय का अन्तिम निर्णय है जहाँ अपील के लिए गुँजाइश नहीं। यही कारण है कि कुछ भाषाओं में कहावतें ही चल पड़ी हैं— "चाहे वेद भी झूठे हो जायँ, पर कहावत झूठ नहीं होती।" ० कहावतों का यह विलक्षण प्रभाव है। उनकी अपार महानता है, गरिमा है। उनका पृथक-लोक है।

प्रायः कहावतें सूत्रवत् छोटे-छोटे वाक्यों में होती हैं। (कहीं कहीं इसके अपवाद भी हैं।) गागर में सागर या बिन्दु में सिन्धु भरने का अनुपम गुण कहावतों में है। व्यापक समस्याएँ, गंभीर-प्रश्न और जटिल विषय सूत्रवत् छोटे, नुकीले और चटपटे वाक्य बन कर कहावतों के रूप में प्रचलित होते है। किसी भी देश या समाज में प्रचलित कहावतों के आधार पर उस देश या समाज की रुचि-अरुचि, सभ्यता-संस्कृति आदि

० वेद सुळ्ळादरु गादे सुळ्ळादीते ? (कन्नड)
A proverb does not tell a lie (Estoniam)
A proverb never lies. (German)
Proverbs do not lie. (Russian)
There are no proverbial sayings which are not true. (Don Quixote).
If there is a falsity in a proverb then milk can be sour. (Malayalam).

सब बातों को जान सकते हैं। उस देश या समाज में प्रचलित कहावतें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में इन बातों को प्रकट कर देती हैं। इस संदर्भ में आंग्ल लेखक लार्ड बेकन की यह प्रसिद्ध उक्ति स्मरणीय है कि 'किसी भी राष्ट्र की प्रतिभा, विदग्धता और आत्मा के दर्शन उसकी कहावतों से होते हैं'[१]। कहावतें श्रवणसुखदायक और पीयूष सम प्रियकर होती हैं। इनमें हमारे पूर्वजों के अनुभव और इतिहास निहित हैं।

'अनुभव के पृष्ठ में जीवन के घटना-व्यापार कार्य करते हैं। कहावतों अथवा लोकोक्तियों में घटनाएँ झलकती है।'[२] कोई विशेष अनुभव जब सार्वजनीन और सब के मन और बुद्धि पर अपना प्रभाव डालने योग्य हो जाता है तभी वह कहावत का रूप धारण कर लेता है। उदाहरणार्थ तेलुगु की इन कहावतों को लीजिए —

१) अत्त लेनि कोडलु उत्तमुरालु, कोडलु लेनि अत्त गुणवंतरालु।

(वह सास नेक स्वभाव की है जिसकी बहू नहीं, वह बहू गुणवती है जिसकी सास नहीं।)

२) स्वर्गानिकि वेळ्ळिना सवति पोरुवद्दु।

(स्वर्ग मिले तो भी सौत नहीं चाहिए।)

उपर्युक्त कहावतों में पारिवारिक जीवन के अनुभवों का सुन्दर चित्रांकन हुआ है।

१ "राष्ट्रभारती" जून १९५४, पृ. ३३६ (पाद टिप्पणी) "The genius, wit and spirit of a nation are discovered in its proverbs."

२ [illegible] लेख — साहित्य संदेश, जून १९५५, पृ. ४४५.

लोक-साहित्य में कहावतों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। जिस विस्तृत लोक-मानस में वे अपना स्थान बना चुकी हैं, वह अवश्य इसके लिए प्रमाण है कि जन साधारण से इनका संबंध अविच्छिन्न है। इनका संबन्ध किसी व्यक्ति विशेष से नहीं होता अथवा ये किसी व्यक्ति विशेष की ही संपत्ति नहीं है। कहावत लोक से संबंधित उक्ति है। इसलिए इसका नाम लोकोक्ति भी है। यह लोक की सपत्ति है। संपूर्ण जाति या समाज की संपत्ति है। इसका प्रचलन तभी संभव है जब कि यह साधारण जन-मानस में स्थान प्राप्त करे, उनकी स्वीकृति पावे।

कहावतों की तुलना रत्न से या हीरे से की जाती है। परन्तु हीरा तो निरा पत्थर है– जड़, है, पर कहावतें भावों की सजीव प्रतिमायें हैं और प्रतिभापूर्ण भावों की।°

जैसा कि इसके पूर्व ही कहा गया, कहावतें समाज की "तत्कालीन दशा का दर्पण" हैं। इनसे हम को उपदेश मिलता है, नीति मिलती है, आचार-विचार का ज्ञान होता है, शिक्षा मिलती है और इतिहास की बातें ज्ञात होती हैं।

किसी भी देश या राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता वहाँ के लोक-साहित्य द्वारा भली-भांति जानी जाती है। लोक-साहित्य समय की गति-विधि के अनुसार परिवर्तन को स्वीकार करते हुए मौखिक रूप में बचा है। कथाएँ-कहानियाँ, गीत-प्रगीत, घटनाएँ-प्रसंग इत्यादि जनता को

° कहावतों की कहानियाँ महावीर प्रसाद पोद्दार पृ ४

परंपरागत रूप से ही मालूम हुए हैं और उनका अस्तित्व लिखित रूप में विद्यमान नहीं है। आज के युग में उनके पुनरुत्थान का प्रयास किया जा रहा है और उनको लिपिबद्ध किया जा रहा है। लोक-साहित्य में भी साहित्यिकता का होना असंभव नहीं है, यह धारणा आज दिन पक्की हो गयी है, और यही कारण है कि उसकी उपेक्षा का दृष्टिकोण आदर के दृष्टिकोण के रूप में परिवर्तित हो गया है। लोक-साहित्य की महत्ता इसमें है कि यह परंपरागत साहित्य है जिसे हमने पूर्वजों से प्राप्त किया है। इसका इतना अधिक प्रभाव है कि यह जन साधारण के मनोभावों को आकर्षित करता आ रहा है। इस लोक-साहित्य में उसके अन्य अंगों की अपेक्षा कहावतों का अपनी प्राचीनता, आकर्षण, प्रभावशीलता और अनूठेपन के कारण अधिक महत्वपूर्ण स्थान है। कहावतों का प्रयोग किसी देश या काल विशेष पर आधारित न रहने के कारण ये प्राचीन होते हुए भी नवीन हैं। उनमें आज भी वही आकर्षण है जो सहस्रों वर्षों पहले था। उनका प्रयोग आज भी बेखटके उसी प्रकार होता है। इसका संभवतः कारण यह है कि जीवन कर्मक्षेत्र है। उसमें नये-नये प्रश्न और समस्याएँ उत्पन्न होती रहती हैं। ऐसी समस्याओं के साथ कहावतों का चोली-दामन का संबन्ध है। उत्साह और स्फूर्ति कहावतों के प्राण है। "षण्णां रसानां लवणं प्रधानम्" अर्थात् षड् रसों में नमक प्रधान स्थान प्राप्त कर चुका है; उसी भाँति भाषा के नाना अंगों रूपी रसों मे कहावत रूपी रस "लवण" के सदृश्य सारतम और अत्यंत आवश्यक वस्तु है। अरबी भाषा में यह कहावत ही चल पड़ी है कि "भोजन मे नमक का जो स्थान है, वही कहावतों

का भाषा में है" । [१अ]

सारांश यह है कि लोक-साहित्य मे अन्तर्भावित यह कहावती-साहित्य बहुत ही वैशिष्ट्यपूर्ण है । कहावतो में हम काव्य का आनंद ले सकते हैं, नाटक का रस ले सकते हैं और मनोरंजन की सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। सब से बड़ी बात यह है कि सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, मनोवैज्ञानिक इत्यादि प्रवृत्तियों का स्वरूप देख सकते है । कहावतों से किसी राष्ट्र की प्रतिभा का ही परिचय नहीं मिलता बलिक उस राष्ट्र की प्रवृत्तियों एवं साधारण विश्वासों एवं आदतों का भी ज्ञान हो जाता है । [आ] अपने विशेष गुणों के कारण ही कहावतें इतनी लोकप्रिय हुई हैं । [°]

१ अ. A proverb is to speech what salt is to food. (National proverbs — India . Abdul Hamid).

आ. The proverbs of a nation are not only an epitome of its wisdom, but crystallise for us much of its national temperment and popular habits of thought. (National proverbs – India : Abdul Hamid, भूमिका से)

° The prodigious amount of sound wisdom and good common sense they contain, the spirit of justice and kindiness they breathe, their prudential rules for every stage and rank, their poetry, bold imegery and passion, their wit and satire, and a thousand other qualities, have, by universal consent, made of imparting hints, counsels and warnings. (Chamber's Encyclopaedia of universal knowledge Vol 7 page 806)

ईसा मसीह ने कहावतों द्वारा शिक्षा दी। भगवान बुद्ध ने उनका उपयोग किया। अरस्तू और प्लेटो ने कहावतों का संग्रह तैयार किया था। अरस्तू के शिष्यों ने भी इस दिशा में कदम बढ़ाया था। विख्यात अंग्रेज नाटककार शेक्सपीयर ने अपने नाटकों में बहुत-सी कहावतों का प्रयोग किया है। यहाँ तक कि कुछ नाटकों के नामकरण तक कहावतों के रूप में ही हुए हैं। स्पानिश नाटककारों ने भी ऐसा किया है। कहा जाता है कि स्पाइन जनता और स्पाइन-साहित्य में कहावतों का कम प्रयोग नहीं होता।

कहावतों को प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। हम ज्ञानवृद्धों तथा वयोवृद्धों की बातें बड़े आदर से सुनते हैं और उनको महत्व देते हैं। एतत् कारण कहावतें हमारे आदर की वस्तु बनी हुई हैं। ये ज्ञान-विज्ञान की कड़ियाँ हैं। अति साधारण कहावतों से भी हम काम की कई चीजें पा सकते हैं। जैसे प्राचीन काल से शिलालेखों और सिक्कों आदि से इतिहास की कड़ियाँ जुड़ती है, वैसे ही कहावतों की माफ़ंत हम कितनी ही कड़ियाँ जोड़ सकते हैं।

पाश्चात्य देशों मे शिक्षा के क्षेत्र में भी कहावतों को श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। शिक्षा-विधान मे उनका उपयोग होता है। जापान में खेल-कूद मे भी कहावतों का प्रयोग होता है ऐसा कहा जाता है।

भाषावैज्ञानिक दृष्टि से विचार करने पर स्पष्ट होता है कि कहावतों का अध्ययन परमावश्यक है। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से उनका अध्ययन करने पर बहुत सी नई बातें ज्ञात हो सकती हैं। अंधकाराच्छन्न अतीत पर नूतन प्रकाश पड़ सकता है। रूस के प्रसिद्ध लेखक गोर्की का

कथन है कि "जाति विज्ञान और संस्कृति के विद्वानों का कथन है कि है कि जनता की विचार धारा, कहावतों और मुहावरों आदि से व्यक्त होती है। यह बात सोलहों आने सही है। कहावतें और मुहावरे श्रमिक-जनता की संपूर्ण सामाजिक और ऐतिहासिक अनुभूतियों के संक्षिप्त रूप हैं।"[०] इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कहावतों का सम्यक् अध्ययन आवश्यक और उपादेय है।

व्युत्पत्ति की चर्चा

संस्कृत के "लोकोक्ति" शब्द के अर्थ में हिन्दी में "कहावत" शब्द का प्रयोग होता है। वैसे तो दोनों शब्द व्यवहृत हैं। लोकोक्ति शब्द का निर्माण "लोक" और "उक्ति" से हुआ है जिसका अर्थ होता है साधारण जनता में प्रचलित उक्ति।

तेलुगु में संस्कृत "लोकोक्ति" शब्द के साथ-साथ "सामेत" या "सामित" शब्द प्रचलित हैं। अस्तु। अब हम "कहावत, सामेत" शब्दों की व्युत्पत्ति पर विचार करें।

कहावत शब्द की व्युत्पत्ति[१] के संबन्ध में विद्वानों में मतभेद दिखाई पड़ता है। इस संबन्ध में कई मत प्रचलित हैं। ये मत अनुमान या कल्पना पर आधारित हैं।

० उद्धृत "राजस्थानी कहावतें — एक अध्ययन" : डा० कन्हैयालाल सहल, पृ० ३.

१ दे. "राजस्थानी कहावतें — एक अध्ययन" पृ. ४–८

अ) प. रामदहिन मिश्रके अनुसार कहावत का मूल रूप "कथा-वत" है। कथाओ की तरह कहावतें भी लोक-प्रसिद्ध हैं। इनका आधार भी कथाओ का कुछ खण्डित-मण्डित रूप ही हैं। अत. कहावत को लोकोक्ति भी कहते हैं।

आ) डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल का मत है कि प्राकृत "कहाप्" धातु से भाववाचक सज्ञा बनाने के लिए 'त्त' प्रत्यय जोड़कर 'कहाप्त' 'कहावत" बन गया है।

इ) आचार्य केशव प्रसाद मिश्र के अनुसार "कह" धातु के आगे आवत प्रत्यय लगाकर कहावत शब्द बना है। यद्यपि 'कह' अरबी धातु नहीं है तथापि मिथ्या सादृश्य के कारण "कह" धातु के साथ 'आवत' शब्द प्रचलन मे आ गया है।

ई) हिन्दी शब्द सागर[1] मे लिखा गया है कि कहावत के पर्याय के रूप मे "कहनूत" शब्द का प्रयोग कभी-कभी हिन्दी मे देखा जाता है जिसकी व्युत्पत्ति कहना + ऊन प्रत्यय से मानो गयी है, यद्यपि इस "ऊत" प्रत्यय के सबन्ध मे यह नहीं कहा जा सकता कि यह अप्रत्यय वाचक है।

उ) भारत के प्रसिद्ध भाषा तत्ववेत्ता डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या का इस सबन्ध मे मत यह है —

The origin of the word kahāvat would appear to be old Indo Aryan Kathay √ Katha + Early M. I. A

१ पहला भाग, पृ ५१५

causative or denominative affix (Satr)— ant, Kathāpayanta > Kadhāvayanta > Kahāvaanta > Kahāvanta > Kahāvat.

ऊ) डॉ. कन्हैलाल सहल का अनुमान है कि तुलसी रामायण में प्रयुक्त 'बतकही' शब्द से कहावत का कुछ संबन्ध होगा। 'कहनावति' और "कहनावतियाँ" शब्दों की ओर भी उन्होंने ध्यान आकृष्ट किया है।[०]

ऋ) बहुत से विद्वान इस मत के है कि "कहावत" का संबन्ध "कथावार्ता" से है।

ए) डॉ. रामनिरंजन पांडेय जी इस संबन्ध में लिखते हैं—
1) कथनावर्त भी संभावित व्युत्पत्ति सूत्र हो सकता है। आवर्त-चारों तरफ़ से घेरना। जो कथन किसी दूसरे कथन के ठीक परिवेश को समझाता हो। किसी कथन को चारों तरफ़ से घेर कर समझाना।
2) कथन + अवट ; छोटे गढ़े को अवट कहते हैं। गहराई और संक्षेप मे किसी विस्तृत अभिप्राय को समझा देना।
3) कथावृत्ति=कथा + आवृत्ति ; कथन को दुहराना। अभिप्राय को कहावत में दुहराकर स्पष्ट किया जाता है। पर ये सब संभावित व्युत्पत्तियाँ ही हैं।[१]

इस प्रकार "कहावत" शब्द की व्युत्पत्ति के संबन्ध में अनेक मत

० उद्धृत " राजास्थानी कहावते — एक अध्ययन " डा० कन्हैयालाल सहल, पृ० ६

१ लेखक के नाम मे लिखे एक पत्र से उद्धृत।

हैं। यहाँ उन सभी मतों का उल्लेख नहीं किया गया है। केवल कुछ मुख्य मतों का उल्लेख मात्र हुआ है।

इन मतों को देखने से यह बात प्रकट हो जाती है कि "कहावत' शब्द की व्युत्पत्ति के संबन्ध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। सभी मत अनुमान या कल्पना की भित्ति पर ही स्थित हैं। "कहावत" शब्द लिखावट, सजावट आदि के सादृश्य पर बना है, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता। हमारा अनुमान है, संस्कृत "कथावार्ता" का ही यह परिवर्तित रूप होगा। इसके प्रधान कारण ये हैं —

१) व्याकरण के सूत्रों से कथावर्ता का "कहावत" रूप सिद्ध किया जा सकता है।

२) भारतीय भाषाओं में प्रचलित "कहावत" के पर्यायवाची शब्दों से इसकी पुष्टि होती है। उन भाषाओं में संस्कृत का शब्द अथवा उसका तद्भव रूप या उसके समानार्थवाची शब्द का प्रयोग होता है।

३) प्राय: प्रत्येक कहावत के पीछे कोई न कोई कथा जुड़ी हुई रहती है। चाहे कथा से कहावत का निर्माण हुआ हो या कहावत से कथा का। अत: प्रतीत होता है कि "कहावत" शब्द का संबन्ध कथा-वर्ता से है।

विभिन्न भाषाओं में "कहावत" का पर्यायवाची शब्द क्या है, इसकी चर्चा करना अप्रासंगिक न होगा। इससे "कहावत" शब्द की व्युत्पत्ति पर अधिक प्रकाश पड़ सकता है।

सर्वप्रथम तेलुगु का "सामेत" शब्द को लीजिए। "सामेत" शब्द संभवतः तद्भव है। यह संस्कृत शब्द "साम्य" से निकला हो। तेलुगु और संस्कृत भाषा के विद्वान पं. जटावल्लभुल पुरुषोत्तम जी का यही मत है।[०] "साम्य" से "सामेत" शब्द बना होगा, इसकी पूरी संभावना है। यह शब्द "लोकोक्ति के समान अर्थ" जताने के लिए प्रयुक्त हुआ हो।

साम+इत, सामम् इतः — शान्ति के पास पहुँचा हुआ ; किसी अभिप्राय को व्यक्त करने की कठिनाई में पड़कर मन व्यग्र होता है ; कहावत कह देने से अभिप्राय व्यक्त हो जाता है। इससे कहनेवाले तथा सुननेवाले को शान्ति प्राप्त हो जाती है। यह भी केवल संभावित व्युत्पत्ति है।[१]

कुछ लोग "सामेत" की व्युत्पत्ति के संबन्ध मे बतलाते है कि यह शब्द "सह+मति से बना है" जिसका अर्थ होता है बुद्धि से युक्त अर्थात् विवेक देनेवाली उक्ति। परन्तु, नहीं कहा जा सकता कि यह अनुमान कहाँ तक युक्तिसंगत है।

यों तो तेलुगु में "सामेत" और "लोकोक्ति" दोनों शब्दों का प्रयोग होता है। परन्तु, अधिक प्रचलित शब्द "सामेत" ही है। यहाँ यह भी ध्यान देने की बात है कि इन शब्दों के प्रयोग में थोड़ा-सा अंतर भी दीखता है। साधारणतया संस्कृत की उक्तियों के लिए "लोकोक्ति"

० व्यक्तिगत सभाषण से ज्ञात।

१ डा० रामनिरंजन पांडेय : लेखक के नाम मे लिखे एक पत्र से उद्धृत।

का प्रयोग होता है। साधारण प्रचलित शब्द "सामेत" ही है। यही लोकप्रिय शब्द है।

कन्नड़ में कहावत के अर्थ में "गादे" का प्रयोग होता है। 'गद्' संस्कृत धातु भी है। एक मत के अनुसार "गादे" "गाथा" शब्द का तद्भव रूप है तो दूसरे मत के अनुसार "गादे" कन्नड़ का अपना शब्द है। दूसरे मत के विद्वानों का कथन है कि "गादे" ही मूल रूप है जिस कालांतर में "गाथा" शब्द निकला। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि "गादे" का संबन्ध — किसी तरह का भी हो — "गाथा" से स्पष्ट होता है।

तमिळ में प्रचलित पळमोळि शब्द तमिळ का निजी शब्द है जिसका अर्थ होता है "पुरानी उक्ति"। मलयाळम में भी इससे मिलता-जुलता शब्द "पळम चोल" का प्रयोग होता है। इसका अर्थ भी "पुरानी-उक्ति" है।

संस्कृत में कहावत के लिए कई शब्द प्रयुक्त हुए हैं। वे हैं आभ-णक, (आ– चारों तरफ़ से, भणक– कहनेवाला। चारों तरफ से अभि-प्राय को समझाना), प्रवाद, लोकोक्ति, लोकप्रवाद, लौकिकी गाथा, प्रायोपवाद आदि। संस्कृत के अनुकरण पर ही भारत की विभिन्न भाषाओं में "कहावत" के पर्याय-शब्द बने होंगे। वाल्मीकीय रामायण में "कहावत" के अर्थ में प्रवाद, लोकप्रवाद और लौकिकी गाथा का प्रयोग हुआ है।[1] कादंबरी मे "लोकप्रवाद" शब्द प्रयुक्त हुआ है। कथासरित्-

१ उदाहरण के लिए — [illegible] लौकिक प्रतिभाति मे।
[illegible] (वाल्मीकि-रामायण— ६.३५, २८)

सागर में इस अर्थ में "प्रवाद" का प्रयोग द्रष्टव्य है।

पाली भाषा में कहावत के लिए "भासितो" शब्द (संभवतः "सुभाषित" से इसका संबन्ध होगा) मिलता है। आहाण, आहीण और आहाणय शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं।

अपभ्रंश में "कहावत" के अर्थ में "आभणउ" शब्द मिलता है।

लैटिन भाषा में "Proverbium" का प्रयोग होता है जिसका अर्थ होता है – साधारण प्रचलित उक्ति या शब्द (A common saying or word)। जर्मन भाषा में "paroimin शब्द का प्रयोग होता है। इसका अर्थ है एक सर्वसामान्य उक्ति जो अधिकांश लोगोंकी जिह्वा पर रहती है। (A way side saying.)°

माराठी में म्हाण, म्हणणी, आणा, आहणा, न्याय, और लोकोक्ति शब्द प्रयोग में लाये जाते हैं।

बंगला में प्रवाद, वचन, प्रवचन, लोकोक्ति और प्रचलित वाक्य का प्रयोग होता है।

गुजराती में ये शब्द हैं— कहेवत, कहेणी, कहेती, कथन और उखाणु, उत्कथन।

राजस्थानी में ओखाणा (उत्कथन), कहवत, कैवत, कुवावत और कुवावट (कथनावट या कथा + अवट – इससे सिद्ध होते हैं) शब्द प्रचलित है।

साधारणतया सभी भारतीय भाषाओं में "कहावत" के अर्थ में

° Chambers's Encyclopaedia of Universal Knowledge, Vol 7, Page 805

एक से अधिक शब्द प्रचलित हैं। सभी भाषाओं में प्रचलित शब्दों पर सर्वांगीण दृष्टि से विचार करने पर यह सार निकलता है कि 'कहावत' वह प्राचीन उक्ति है जो युग-युग से परंपरागत संपत्ति के रूप में चली आ रही है। सभी भाषाओं के "कहावत" के पर्याय शब्द पर तुलनात्मक दृष्टिकोण से विचार करने पर यह निष्कर्ष निकालना युक्तिसंगत दिखाई देता है कि "कहावत" शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत "कथावार्ता" से हुई हो। तेलुगु का "सामेत" का भी संबन्ध संस्कृत शब्द से ही दीखता है। साधारणतया बोलते समय जब कहावत का प्रयोग होता है तब तेलुगु, कन्नड़, तमिळ आदि भाषाओं में कहा जाता है— जैसे या जैसा कि कहते हैं (अदेमो अन्नट्टु) आदि। इससे ज्ञात होता है कि संस्कृत शब्द के अनुकरण अथवा सादृश्य पर इन भाषाओं में "कहावत" के पर्याय-शब्द चल पड़े होंगे।

ऊपर हमने "कहावत" शब्द की व्युत्पत्ति के संबन्ध में थोड़ी-सी चर्चा की है। कहावत की परिभाषा जानने में यह सहायक सिद्ध होती है। अब हम कहावत की परिभाषा पर विचार करें।

कहावत की परिभाषा

कहावत की क्या परिभाषा है? इस प्रश्न का उत्तर आसानी से नहीं दिया जा सकता। क्यों कि, इस पर कम परिभाषाएँ प्रचलित नहीं हैं। Encyclopaedia Britannica Vol. XVIII में कहावत की यह परिभाषा दी गयी है— कहावतें छोटे वाक्य हैं जो जीवन के सुदीर्घ

अनुभव के आधार पर अभिव्यक्त है।[1] " Proverbs from East and West" के लेखक इस संबन्ध में कहते हैं— 'कहावत एक छोटी उक्ति है' जो प्रभावशाली शैली में किसी व्यावहारिक सत्य का उद्घाटन करती है। उसकी परिभाषा यों दी गयी है कि "वह एक की वाग्विदग्धता और अनेकों का ज्ञान है।" एक प्राचीन आंग्ल-लेखक कहावत में सारगर्भितता, संक्षिप्तता और सप्राणता या चटपटापन आवश्यक मानते हैं।"[2] Nelson's Encyclopaedia, Vol 18 में यह परिभाषा दी गयी है —

The best definition of a proverb is perhaps that given by Cervantes, viz. short sentences, founded on long experience. Every true proverb is pithily expressed, and is based upon the experience of mankind, but it must also meet with popular acceptance and be of wide spread application".

अर्थात् कहावत को उत्तम परिभाषा संभवतः सर्वेण्टीस की दी हुई है— "छोटे-छोटे वाक्य हैं जो जीवन के दीर्घकालीन अनुभवों को अन्तर्हित किये हुए हैं।" प्रत्येक कहावत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त होती है और मानवीय अनुभवों पर आधारित रहती है, परन्तु उसको विशाल लोक-

1 Proverbs are short sentences drawn from long experience. (Ency. Brit. Vol XVIII, page 44.)

2. A proverb is a short saying, expressing forcibly some practicle truth It has been defined to be 'the wit of one and wisdom of many'. An old English writer describes the essentuals of a proverb as sense shortness and salt or wit.

मानस का क्षेत्र प्राप्त होना चाहिए।

महान अरस्तू ने कहावत की यह परिभाषा दी है— "तत्वज्ञान के खण्डहरों में से निकाले गये टुकड़े— बचा लिए गये अंश हैं, जो अपनी संक्षिप्तता और सत्यता के कारण बची हैं।"[1]

एग्रिकोला के अनुसार कहावतें "जीवन-व्यवहृत प्राचीन काल के छोटे-छोटे कथन हैं।"[2]

कहावत की परिभाषा देते हुए एरासमस कहते हैं— "वे प्रसिद्ध और साधारण प्रचलित उक्तियाँ हैं जिसकी बनावट में एक विचित्रता या विलक्षणता देखी जाती है।"[3]

डॉ. जॉनसन के अनुसार कहावतें "जनता में निरंतर व्यवहृत होनेवाले लघु कथन हैं।"[4]

जॉन टेनीसन कहते है— "कहावतें वे रत्न हैं जो पाँच-शब्द लम्बे

1. Aristotle speaks of them as ramnants, which, on account of their shortness and correctness, have been saved out of wreck and ruins of ancient philosophy (Chambers's Ency. of Universal Knowledge. Vol VII, page 865)
2. Short sentences into which, as in rules, the ancients have compressed life. (वही).
3. Well known and well used dicta, framed in a somewhat out of fashion. (वही).
4. Short sentences frequently repeated by the people. (वही)

होते हैं और जो अनंतकाल की अंगुली पर सदा जगमगाते रहते हैं।"[1]

जौबर्ट (Joubert) के अनुसार "वे ज्ञान के संक्षिप्तीकरण है।"[2]

डिजरेली (Disraeli) कहते हैं— "कहावतें पाण्डित्य के अंश हैं जो मानव-सृष्टि के आदिकाल में अलिखित नैतिक कानून का काम करती थीं।"[3]

बाइबल में इनको "ज्ञानी जनों की उक्तियों का निरूपण" कहा गया है।[4]

"कहावतों की लोकप्रियता" के संबन्ध में विचार करते समय लार्ड बेकन की विचार-धारा व्यक्त की गयी है। उनके अनुसार "किसी भी राष्ट्र की प्रतिभा, विदग्धता और आत्मा के दर्शन उसकी कहावतों में होते हैं।" जार्ज हरबर्ट का यह कथन सत्य से दूर नहीं कि "कहावतें ज्ञानी-जनों के हीरे या रत्न (Darts or Javelins) हैं।"

रिजले (Risley) ने कहावतों को "भौतिकवाद की बीजगणित" कहा है।[5]

1. Jewels five words long that on the stretched fore finger of all time sparkle for ever.
   उद्धृत "राजास्थानी कहावतें – एक अध्ययन" . डा० कन्हैयालाल सहल, १९ से।
2. Proverbs may be said to be the abridgements of wisdom. (वही)
3. The fragment of wisdom, the proverbs in earliest ages serve as the unwritten laws of morality. (वही)
4. A proverb is the interpretation of the words of the wise. (वही)
5. Algebra of meterialism. (People of India, p. 125.)

ऊपर हम विदेशी विद्वानों के मत उद्धृत कर चुके हैं। अब कहावत की परिभाषा पर भारतीय विद्वानों के मतों का अवलोकन करें। 'संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर' में कहावत की यह परिभाषा दी गयी है— "ऐसा बधा वाक्य जिसमे कोई अनुभव की बात संक्षेप मे चमत्कारिक ढग से कही गई हो।" (पृ 218)।

डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल लिखते हैं — "लोकोक्तियाँ मानवी-ज्ञान के चोखे और चुभते हुए सूत्र हैं। अनन्तकाल तक धातुओं को तपा कर सूर्य-राशि नाना प्रकार रत्न-उपरत्नों का निर्माण करती है, जिनका आलोक सदा छिटकता रहता है। उसी प्रकार लोकोक्तियाँ मानवी-ज्ञान के घनीभूत रत्न हैं, जिन्हे बुद्धि और अनुभव की किरणों से फूटनेवाली ज्योति प्राप्त होती है।"[1]

"लोकोक्ति मे गागर मे सागर भरने की प्रवृत्ति काम करती है। इसमे जीवन के सत्य बडी खूबी से प्रकट होते हैं। यह ग्रामीण-जनता का नीतिशास्त्र है ... लोकोक्तियाँ प्रकृति के स्फुलिंगी (रेडियो एक्टीव) तत्त्वों की भाँति अपनी प्रखर किरणों को चारो तरफ़ फैलाती रहती हैं।"[2]

डॉ. सत्येंद्र लोकोक्ति के अतर्गत कहावत और पहेली दोनो को मानते हैं। वे लिखते हैं— "लोकोक्ति केवल कहावत ही नहीं है, प्रत्येक प्रकार की उक्ति लोकोक्ति है। इस विस्तृत अर्थ को दृष्टि मे रखकर लोकोक्ति के दो प्रकार माने जा सकते हैं। एक पहेली और दूसरा

1. साहित्य सदेश, वर्ष १६, अक १२ (जून १९५५), पृ ४४५.
2. डॉ॰ सत्येन्द्र : ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन, पृ ५११

कहावतें। ... यद्यपि पहेलियाँ स्वभाव से कहावतों की प्रवृत्ति से विपरीत प्रणाली पर रची जाती हैं, क्योंकि पहेलियों में एक वस्तु के लिए बहुत से शब्द प्रयोग में आते हैं, भाव से इसका संबन्ध नहीं होता, प्रकृत को गोप्य करने की चेष्टा रहती है, बुद्धि-कौशल पर निर्भर करती है, जब कि कहावत में सूत्र प्रणाली होती है, भाव की मार्मिकता घनीभूत रहती है, लघु प्रयत्न से विस्तृत अर्थ व्यक्त करने की प्रवृत्ति रहती है, फिर भी पहेलियाँ भी उतनी भी उक्तियाँ हैं जितनी कहावतें।"[1]

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने कहावत की बहुत ही व्यापक परिभाषा दी है — "वस्तुतः कहावत (Proverb) केवल लोकोक्ति नहीं है, वह कई बार प्राज्ञोक्ति भी है। तुलसीदास जी की अनेक पंक्तियाँ प्राज्ञोक्ति बन गयीं हैं। उन्हें लोकोक्तियाँ नहीं कहा जा सकता, वे प्राज्ञोक्तियाँ हैं, जो लोक में साहित्य के माध्यम से प्रचलित हुई हैं।[2]

कहावत की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए डॉ. कन्हैयालाल सहल जी लिखते हैं — "कहावत के स्वरूप को लक्ष्य में रखते हुए हम कह सकते हैं कि अपने कथन की पुष्टि में, किसी को शिक्षा या चेतावनी देने के उद्देश्य से किसी बात को किसी की आड़ में कहने के अभिप्राय से अथवा किसी को उपालंभ देने व किसी पर व्यंग्य कसने आदि के लिए अपने में स्वतंत्र अर्थ रखनेवाली जिस लोक प्रचलित तथा सामान्यतः सारगर्भित, संक्षिप्त एवं चटपटी उक्ति का लोग प्रयोग करते हैं, उसे

1. डॉ० सत्येन्द्र ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन, पृ० ५१९-२०
2. उद्धृत "राजस्थानी कहावतें—एक अध्ययन" :- डा० कन्हैयालाल सहल, पृ ३६ से।

लोकोक्ति अथवा कहावत का नाम दिया जा सकता है।"[1]

"कहावतें प्रसंग या घटना के दीपक हैं। ये छोटे-छोटे वाक्य हैं जिनका प्रयोग संदर्भानुसार होता है। उनमें ध्वनि की प्रधानता है"।[2]

कन्नड के प्रसिद्ध लेखक श्री मा. कस्तूरी लिखते हैं — "कहावतें मानव-जीवन के अनुभवों की विकीर्ण चिनगारियाँ हैं। लोगों ने जिन सुखों का अनुभव किया हो, जिस प्रकाश को देखा हो और जिन घात-प्रतिघातों को सहा हो, उन्हें वे प्रकाश में लाती हैं।"[3] ये बिना किसी वक्ता के, लोक-मानस से सीधे निकलनेवाली उक्तियाँ हैं।

श्री शं. मा. जोशी का मत है— "जब कभी कोई समस्या उत्पन्न हो जाती है, तब इन कहावतों से हमको तुरन्त कोई मार्ग दिखलाई पड़ता है। अतः कहावतों को "नयन" अर्थात् "मनुष्य के नेत्र" कहें तो कोई अनुपयुक्तता नहीं होगी"।[4]

निष्कर्ष— उपर्युक्त विवरण से प्रकट होता है कि कहावत की परिभाषा के सबन्ध मे विद्वानों में कई मत हैं। सभी विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से इसके बारे मे चिन्तन किया है और अपनी शैली मे तत्सम्बन्धी विचार धारा व्यक्त की है। अतः कहावत की अनेक परिभाषाएँ उपलब्ध होती हैं। कौन-सी परिभाषा ग्राह्य है, कौन-सी नहीं, यह नहीं कहा जा सकता। गुण-दोष सब मे दिखाई पड़ सकते हैं, यह सहज ही है।

1. राजस्थानी कहावतें - एक अध्ययन . डा० कन्हैयालाल सहल, पृ० [illegible]
2. लोकोक्ति मुक्तावलि भूमिका, पृ १
3. कन्नड गादेगळु [illegible] — भूमिका [illegible]
4. [illegible] पृ ८५

क्योंकि— "जड़ चेतन गुण दोषमय, विश्व कीन्ह करतार"— कुछ विद्वानों ने कहावत की परिभाषा ऐसे लंबे-लंबे वाक्यों में दी है कि उसे याद रखना कष्टसाध्य है। परिभाषा सरल, सुबोध तथा स्मरण में रखने योग्य होनी चाहिए। इस दृष्टि से, उपर्युक्त सभी विद्वानों के अभिप्रायों का सार-संग्रह करते हुए, कहावत की परिभाषा यों दे सकते हैं— "कहावत सामान्यतः संक्षिप्त, सारगर्भित और प्रभावशाली उक्ति है जिसमें जीवन की अनुभूतियाँ स्पष्टतया झलकती हैं और जो परिस्थिति की अनुकूलता को दृष्टि मे रखकर प्रयोग में लायी जाती है।"

कहावत की परिभाषा पर सविस्तार विचार करने के बाद हमें अब कहावत के लक्षणों पर विचार करना आवश्यक हो जाता है।

कहावत के लक्षण

कहावत की क्या पहचान है? उसके क्या-क्या लक्षण हैं? ये विचारणीय प्रश्न हैं।

१) लघुत्व— प्रायः कहावतें छोटे-छोटे वाक्यों में होती हैं। इस कारण कहावतों को स्मरण में रखना सुगम हो जाता है। क्या पंडित, क्या पामर सब की जिह्वा पर अपने लाघव गुण के हेतु ही कहावत नाचती रहती है। यह अनुभव की बात है कि छोटे-छोटे वाक्यों को सुगमता से कंठस्थ या हृदयंगम कर सकते हैं। ऐसे सारगर्भित सूत्रवत् वाक्यों के सामने बड़े-बड़े वाक्य या सुदीर्घ तर्क-वितर्क सारहीन हो जाते हैं।

अब इस प्रथम लक्षण का परीक्षण होना चाहिए। कुछ हिन्दी और तेलुगु कहावतों को देखिए —

हिन्दी— १) ढपोरशंख।
२) ऊँट के मुँह में जीरा।
३) अंधों में काना राजा।
४) इक्के दुक्के का अल्ला बेली।
५) चोर की दाढ़ी में तिनका।

तेलुगु— १) इट्टु गोय्यि अट्टु नुय्यि। (आगे कुआँ पीछे खाई।)
२) नोरु मंचिदैते ऊरु मंचिदि। (वाणी अच्छी हो तो बस्ती अच्छी।)
३) देब्बकु देय्यम्। (लातों के भूत बातों से नहीं मानते।)
४) करवुलो अधिकमासम्। (अकाल में अधिकमास।)

यहाँ उद्धृत कहावतों से स्पष्ट हो जाता है कि लघुत्व कहावत का प्रधान लक्षण है। कुछ भाषाओं में कहावतें एक या दो शब्दवाली ही होती हैं। हिन्दी तथा तेलुगु में एक शब्दवाली कहावतें नहीं के बराबर हैं। हो तो भी नगण्य हैं। दो या उससे अधिक शब्दवाली कहावतें जो छोटे-छोटे वाक्यों में हों, मिल जाती हैं। किन्तु, इससे यह नहीं समझना चाहिए कि कहावतें सदा संक्षिप्त ही होती हैं। कभी-कभी वे लंबे वाक्यों में भी कही जाती हैं। उदाहरण के लिए अरबी की यह कहावत लीजिए—

"शुतुरमुर्ग से किसी ने कहा— ले चल। उसने उत्तर दिया— मैं पक्षी हूँ, भार-वहन नहीं कर सकता। तब किसी ने कहा— उड़ चल।

तुरन्त ही शुतुरमुर्ग कह उठा — "मैं उड़ नहीं सकता क्योंकि मैं ऊँट हूँ।"[1]

हिन्दी की यह कहावत भी छोटी नहीं है —

"कलाल की दूकान पर पानी भी पिओ तो शराब का शक होता है।"

तेलुगु की यह कहावत देखिए—

"चकिक्लालु तिंटावा, चल्दि तिंटावा अंटे, चकिकलालु तिंटानु, चल्दी तिंटानु, अय्यतोडि वेडी तिंटानु अन्नाडट।"

(अर्थात्— शष्कुल खाओगे या बासी भात खाओगे? बेटे से माँ ने पूछा तो बेटे ने कहा— शष्कुल भी खाऊँगा, बासी भात भी खाऊँगा, पिता जी के साथ गरम-गरम खाना भी खाऊँगा।)

तात्पर्य यह है कि साधारणतः कहावतें छोटी ही होती हैं। कभी-कभी वे लंबी भी होती हैं। यह अपवाद हैं। प्रश्नोत्तर के रूप में प्रचलित कहावतें इस प्रकार लंबी होती हैं। हिन्दी, तेलुगु या किसी भी भाषा में भी ऐसी कहावतें मिलेंगी। चूँकि अधिकतर कहावते छोटी होती हैं, इसलिए लघुत्व कहावत का एक लक्षण मानें तो कोई आपत्ति नहीं हो सकती। जिस तरह प्रत्येक नियम के कुछ अपवाद होते हैं, उसी तरह यह नियम भी। कहावतें साधारणतया लघु होती हैं। अतः लघुत्व उनका एक मुख्य लक्षण है जिससे उनकी पहचान संभव है।

1. "राजास्थानी कहावते – एक अध्ययन" : डा० कन्हैयालाल सहल, पृ १३ से उद्धृत।

२) लय या गति— कहावतों में लय के लिए बहुत ही मुख्य स्थान प्राप्त है। प्रायः सभी कहावतें लय युक्त होती हैं। ढूँढने पर ऐसी एकाध कहावतें मिल जायँ तो मिल जायँ जिनमें लय का अभाव हो। अतः लय को भी हम उनकी पहचान का एक लक्षण मान सकते है। इन कहावतों को देखिए—

धोबी रोवे धुलायी को मियाँ रोवे कपड़े को।

इसी भाव की तेलुगु कहावत—

गोड्डुवाडु गोड्डुकु येडिस्ते गोडारिवाडु तोलुकु येड्चिनाडट।

(अर्थात्— गायवाला गाय के लिए रोवे तो चमार चमड़े के लिए रोने लगा।)

३) तुक या अनुप्रास— कहावतों में कभी-कभी तुक का विशेष ध्यान रखा जाता है। तुक के कारण कहावत की भाषा में संगीत, आकर्षण, ओज और प्रभावशालिता आ जाती है। उदाहरण के लिए—

१) साँच को आँच नहीं।
२) जाको लोह ताको सोह।
३) एक बार योगी, दो बार भोगी, तीन बार रोगी।
४) No cross, no crown
५) A bad man is better than a bad name.
६) कप्पकु काटु, ब्राह्मणुनिकि पोटु लेदु।
(अर्थात् मेढक काटता नहीं, ब्राह्मण लड़ता नहीं।)

कहावतों में तुक या अनुप्रास का कितना ध्यान रखा जाता है

यह देखते ही बनता है। तेलुगु में इस संबन्ध में कहावत तक चल पड़ी है कि---

"तल्लिनालिनि लिट्टिना ताळानिकि कलववले।"

(अर्थात् माँ और पत्नी को गालियाँ भी दे, पर "ताल" मिलना चाहिए।)

लय और तुक कहावत के विलक्षण लक्षण हैं जो सहसा हमारा ध्यान आकृष्ट कर देते हैं।

४) निरीक्षण और अनुभूति की अभिव्यंजना--- जीवन की अनुभूतियाँ कहावतों की रचना में अपना योगदान दे चुकी हैं। अथवा यों कहें कि जीवन के अनुभवों की प्रेरणा ने कहावतों को अस्तित्व प्रदान किया है। अतः कहावतें अनुभूति के मूर्त रूप हैं। निरीक्षण और अनुभूति मानव-जीवन में विशेष महत्त्व रखते हैं। निरीक्षण और अनुभूतियों के फलस्वरूप कुछ उक्तियाँ चल पड़ी हैं जो लोक-मानस तक पहुँच कर कहावत का जामा पहन लेती हैं। उदाहरणार्थ इन कहावतों पर विचार करें ---

१) "साँझ का आया पाहुन और घन टिकता है, जाता नहीं।" यह एक सुन्दर कहावत है। इसमें जीवन की अनुभूति कितनी मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त हुई है। व्यवहार-सत्य का रहस्योद्घाटन इससे हो जाता है। यह अनुभव सिद्ध बात है कि सायंकाल जो बादल आसमान में छाये रहते है, वे बहुल करके पानी बरसते ही हैं। व्यर्थ नहीं जाते। उसी प्रकार शाम के समय आया अतिथि भी ठहर जाता है, चला नहीं जाता। इस कहावत में दो वस्तुएँ देखने योग्य है। एक हैं निरीक्षण और

दूसरी अनुभूति। इन दोनों के सामंजस्य से निर्मित यह कहावत देश-काल की सीमा का अतिक्रमण कर सार्वजनीन, सार्वकालीन सत्य तथा अनुभूति का अंश बन गयी है।

२) एक दूसरी कहावत है— "अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।" यह अनुभूति का विषय है कि एक ही आदमी कोई कठिन काम नहीं कर सकता। एकता से सब काम आसानी से हो जाते हैं। यह कहावत एक अन्योक्ति है। इसमें एक साधारण प्रमाण को पेश करते हुए एक विशेष बात की ओर इंगित किया गया है।

३) तेलुगु की एक कहावत देखें— "कल्याणं वच्चिना कक्कोच्चिना आगदंटारु" (अर्थात् विवाह आ जाय, वमन आ जाय, रुकता नहीं।) तात्पर्य यह है कि समय आ जाय तो सब कुछ हो जाएगा। यह कहावत विवाह के संबन्ध में प्रचलित है। इसमें व्यक्त बातों की सच्चाई की परीक्षा करें। पहली बात है, जब कै आ जाती है तब उसे रोकने पर भी रुकती नहीं है। यह अनुभवजन्य विषय है। इसके आधार पर दूसरी बात का समर्थन होता है। यह देखा जाता है कि विवाह की घड़ी जब आती है, तभी विवाह होता है। अनुभव के आधार पर कही गयी यह उक्ति पहले पहल किसी व्यक्ति के मुह से निकल पड़ी होगी और पीछे लोगों को इसके तथ्य से साक्षात्कार हुआ तो यह कहावत के रूप में प्रयुक्त होने लगी।

४) "आरुद्रलो अड्डेडु चल्लिते पुट्टेडु पंडुनु" — कृषि से संबंधित तेलुगु कहावत है जिसका अर्थ आर्द्रा मे (एक निश्चित परिमाण में) बीज बोयें तो यथेष्ट अनाज उत्पन्न होगा। प्रकृति-निरीक्षण और अनुभव के

आधार पर यह कहावत बनी है। यह अनुभव का विषय है कि आर्द्रा में पानी पड़ते ही बीज बोने से अच्छी फसल होगी।

इस प्रकार की अनेक कहावतों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर सकते है। सारांश यह है कि कहावतों के मूल में निरीक्षण और अनुभूति काम करते है। अतएव, निरीक्षण और अनुभूति की अभिव्यंजना को कहावतों का आवश्यक लक्षण माना जा सकता है।

५) प्रभावशीलता और लोकरंजकता— यह कहावत का पाँचवाँ लक्षण है। प्रत्येक कहावत के संबन्ध मे यह लक्षण यद्यपि लागू नहीं हो सकता, तथापि अधिकांश कहावतों के संबन्ध में यह महत्वपूर्ण सिद्ध होता है। उदाहरण के लिए— "अंधी पीसे कुत्ता खाय" कहावत को लीजिए। यह कहावत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त हुई है। इसमें लोकरजनकारी गुण भी है। इसी तरह की कहावतें हैं- "चिराग तले अंधेरा" "धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का", और तेलुगु की कहावतें— "लोपल लोटारमैना पैकि पटारमे" (अन्दर कुछ न होने पर भी बाहर आडंबर), "मुंदु वच्चिन चेवुलकंटे वेनुक वच्चिन कोम्मुलु वाडियट" (पहले आये कानों की अपेक्षा बाद में आए सींगों की धाक अधिक जम गयी।)

कहावतें बहुधा प्रभावशाली और लोकरंजनकारी ढंग से अभिव्यक्त होती है। इसीलिए हैवेल ने कहावत की तीन विशेषताओं में (shortness, sense and salt) चुलबुलापन या चटपटापन को भी एक माना है। पर, कुछेक कहावतों में यह बात नहीं दीखती। उदाहरण के लिए "धन खेती, धिक चाकरी" कहावत को ही लीजिए। इसमें

चटपटापन नहीं दीखता।

६) सरल शैली — कहावतों की पहचान उनकी सरल शैली से हो सकती है। यह उनका लक्षण है। सरल शैली में अभिव्यक्त बात सुगमता और शीघ्रता से ग्राह्य होती है। कहावतों में यह गुण विद्यमान है। अतएव, कहावतें लोकमानस में अपना स्थान बना चुकी हैं। इन कहावतों को देखिये—

१) दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते।

२) दुधारु गाय की लात भी सही जाती है।

३) दूरपु कोंडलु नुनुपु। (दूर के ढोल सुहावने।)

४) आवगिंजं कोंडंत चेस्ताडु। (राई का पर्वत बनाता है।)

ये कहावतें सरल शैली में कही गयी हैं। सर्वत्र हम यह गुण देख सकते हैं। भणिति की भंगिमा के कारण कुछ कहावतें अनूठी होती हैं। उन्हें सुनने या प्रसंगानुसार उनका प्रयोग करने से बात में न केवल चुस्ती आती है, बल्कि शैली की सरलता के कारण हमारा मन अत्यंत प्रसन्न हो जाता है।

उदाहरणार्थ—

१) शौकीन बुढ़िया, चटाई का लहंगा।

२) मेंढकों को भी जुकाम हुआ है।

३) पिच्चि कुदिरिंदि, रोकलि तलकु चुट्टमन्नाडट।

(उसने कहा; 'पागलपन चला गया, मूसले को सिर पर लगाओ।)

४) अंदितो पुलि अंटे, इंदितो तोक अन्नाडट।

जैसा ('वह देखो बाघ', एक ने कहा तो दूसरे ने कहा, 'वह देखो पूँछ।')

ऐसी कहावतों के पर्यालोकन से यह बात विदित हो जाती है कि शैली की सरलता के कारण कथन में विदग्धता आ गयी है। इन कहावतों को सुनने से हँसी भी आती है। प्रसंगानुसार इनके प्रयोग से कथन में स्पष्टता और स्फूर्ति आ जाती है।

ऊपर कहावतों के जो लक्षण बताए गये हैं, वे अधिक महत्व के हैं। इन लक्षणों के आधार पर कहावतों का परीक्षण करना सरल और सुगम होगा। यहाँ पर यह स्मरण रखना चाहिए कि कहावत तब तक कहावत या लोकोक्ति नहीं कहला सकती जब तक वह लोक द्वारा अर्थात् साधारण जन समाज द्वारा स्वीकृति न पाती हो। लोकप्रिय हो तभी को उक्ति कहावत या लोकोक्ति के आसन पर आसीन हो सकती है। उदाहरणार्थ तुलसीदास या कालिदास जैसे कवियों की उक्तियाँ अथवा सूक्तियाँ लीजिए जो ज़माने से लोगों की जिह्वा पर रहने के कारण कहावतें बन गयी हैं। "जिन्ह के रही भावना जैसी, प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी" (तुलसी), "जाको राखै साइया, मारि न सकै कोय" (कबीर), "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" (कालिदास), "न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्" (कालिदास) आदि लोकप्रिय उक्तियाँ हैं जो कहावतें बन गयी हैं।

इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति सुंदर से सुन्दर और सभी गुणों से युक्त उक्तियाँ गढ़ ले तो वे उक्तियाँ कहावतें या लोकोक्तियाँ नहीं हो सकती हैं। यदि वे लोक-मानस को छू न सकती हैं तो वे कहावत

कहलाने योग्य नहीं होती।

ऊपर कहे गये लक्षण कहावत की पहचान में सहायक सिद्ध होते हैं। साथ ही साथ इसे भी देखना चाहिए कि लोक में व्यवहृत होने का गुण, जो सर्वोपरि है, किसी उक्ति में है या नहीं।

कहावतों का सत्य

जगत-सत्य और काव्य के सत्य में अन्तर होता है। कवि या लेखक मानव-जीवन में जिस सत्य का दर्शन करता है, उसको उसी रूप में अपनी रचना में चित्रित नहीं करता। यह असंभव न होने पर भी कला की दृष्टि से वांछनीय नहीं है। कवि का एक स्वतंत्र लोक है। वह उसका प्रजापति है। कहा भी गया है — "अपारे काव्य-संसारे कविरेकः प्रजापतिः"। काव्य में वर्णित सत्य जगत-सत्य से भिन्न होकर काव्य-सत्य कहलाता है। इसी काव्य-सत्य के उद्घाटन के नाते कवि काव्य-जगत में अपना स्थान बनाए रखता है।

जिस भांति हम जगत-सत्य और काव्य-सत्य के बीच में अलग-अलग लकीरें खींचते हैं, उसी भांति जगत-सत्य और कहावतों के सत्य के रूपों में वैविध्य का दर्शन करते हैं। कहावतों में मानव-जीवन की अनूठी अभिव्यक्ति है, यह ऊपर दिखाया गया है। जीवन की विभिन्न घटनाओं और तज्जनित अनुभूतियों के आधार पर बनी कहावतों में सत्य का अंश कहाँ तक रहता है इसका परीक्षण करना अनुपयुक्त न

होगा । अन्यत्र [1] हम ऐसी कहावतें उद्धृत कर चुके हैं जिनमें यह कहा गया है कि कहावतें झूठी नहीं होतीं । तब यह प्रश्न सहज ही उत्पन्न होता है कि कहावतें सदा सत्य बोलती है ? उत्तर यही है कि यह आवश्यक नहीं है कि कहावतों का सत्य सार्वकालीन, सार्वजनीन तथा सार्वदेशीय हो । किसी कहावत का सत्य किसी परिस्थिति-विशेष तक ही सीमित हो सकता है तो किसी दूसरी परिस्थिति में कहावत का सत्य देश-विशेष या जाति-विशेष तक ही सीमित रह सकता है । कुछ कहावतें ऐसी भी मिल जाती हैं जिनमें विरोधी भावना व्यक्त हुई रहती है ।

उदाहरण के लिए तेलुगु की यह कहावत लीजिए —

"कोडुकु बागुण्डवले, कोडलु मुण्डमोयवले ।"

(अर्थात् बेटे की खैरियत हो और बहू विधवा बने ।)

हिन्दी की इस कहावत को देखिए —

"भाई बरोबर बैरी नहीं, भाई बरोबर प्यारो नहीं ।" — इन कहावतों को देखने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ये कहावतें परस्पर विरोधी भावों को प्रकट नहीं कर रही हैं बल्कि यह विरोधाभास मात्र है । ऐसी कई कहावतें मिल सकती हैं । जब हमारा जीवन ही अनेक प्रकार के विरोधाभासों से परिपूर्ण है तब जीवन की मार्मिक अनुभूतियों के चित्र कहावतों में इसी विरोधाभास को देखें तो क्या आश्चर्य है । वस्तुतः कहावतें सत्य के प्रतिबिंब है । जिस प्रकार दर्पण में अपना रूप देखते हैं, उसी प्रकार कहावतों में सत्य का रूप (प्रतिबिंब) देखते हैं ।

1. दे. कहावतों की लोकप्रियता, पृ ६

हम दर्पण में प्रतिबिंब को ही देख सकते हैं, अपने को नहीं। उसी प्रकार कहावतों में हम जीवन के अनुभूत सत्य का प्रतिबिंब ही देख सकते हैं। दर्पण की भिन्नता के अनुरूप प्रतिबिंबों में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है, उसी भाँति देश, काल, वातावरण के अनुरूप कहावतों के रूपों में, उनकी अभिव्यक्ति में, उनके सत्य में भिन्नता देखी जाती है। यदि कोई यह प्रश्न करे कि सत्य क्या है? उत्तर यह है कि सत्य का निरूपण बड़े-बड़े महान भी नहीं कर सके हैं। स्टीवेनसन के शब्दों में "निरपेक्ष सत्य जैसी कोई वस्तु नहीं है। हमारे सब सत्य अर्ध-सत्य मात्र हैं।"[1] अतः कहावतों में सत्य का प्रतिबिंब देखना ही पर्याप्त है। वे सत्य के लिए एक दृष्टिकोण मात्र है, निरपेक्ष सत्य नहीं।[2]

जीवन एक प्रवाह है। परिस्थितियों के घात-प्रतिघात के अनुसार इसका मोड़ बदलता रहता है। चूंकि कहावतें जीवन की अनुभूतियाँ हैं, इसलिए उनमें भी अनेक मोड़ों का दर्शन होना स्वाभाविक ही है। कभी किसी में एक रंग है तो कभी किसी में दूसरा रंग। कभी कोई कहावत सत्य प्रतीत हुई तो कभी दूसरी।

कहावतें अनुभूतियों की भित्ति पर खड़ी हैं। अतः उनमें वैज्ञानिक सत्य का दर्शन नहीं होता। यही कारण, उनमें विरोधाभास दिखाई पड़ता है। तर्कशास्त्र के शब्दों में हम यों कह सकते हैं कि कहावतों का

1. There is nothing like absolute truth, all other truths are half truths
2. "राजस्थानी कहावतें—एक अध्ययन" : डा० कन्हैयालाल सहल, पृ. १६

सत्य अवैज्ञानिक होता है, सीमित घटनाओं को लक्ष्य में रखकर वह प्रवृत्त होता है।[1]

जो भी हो, यह बात सत्य है कि अति प्राचीन काल से कहावतों का प्रयोग होता आ रहा है। इस दृष्टि से इनका बहुत महत्व है।

कहावत की परिभाषा और लक्षण जानने के पश्चात् अब हमें यह आवश्यक प्रतीत होता है कि कहावत के साथ सुभाषित मुहावरे, रोज़-मर्रे, प्राज्ञोक्ति और न्याय का संबन्ध और अन्तर स्पष्ट किया जाय। कारण यह कि कहावत और इनके प्रयोग में कभी-कभी भ्रम या भूल होने की संभावना रहती है।

१) कहावत और सुभाषित— संस्कृत में लोकोक्ति शब्द का प्रयोग आधुनिक अर्थ में नहीं होता। "सुभाषित" का प्रयोग इस अर्थ में होता है। सुभाषित का अर्थ अत्यंत व्यापक है— उसमें सभी सुन्दर उक्तियों के लिए स्थान है। लोकोक्ति भी सुभाषित के अन्तर्गत आती है। परन्तु, स्मरण रखना चाहिए कि सभी सुभाषित लोकोक्ति नहीं होते। लोकोक्ति बनने के लिए सुभाषित को भी लोक-मानस तक पहुँचना परमावश्यक होगा।

२) कहावत और रोजमर्रा— पं. केशवराम भट्ट के अनुसार "हिन्दी जिनकी मातृभाषा है, वह अपनी नित्य की बोलचाल में वाक्य रचना जिस रीति से करते हैं, उसे रोजमर्रा कहते हैं।"[2] साधारणतया

1. "राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन" डा० कन्हैयालाल सहल, पृ. १६.
2. (वही.) पृ. २१.

बोलते या लिखते समय रोजमर्रे का ख्याल रखा जाता है। "रोजमर्रा" का पर्याय शब्द "बोलचाल" है। कई संदर्भों में बोलचाल की भाषा लिखने से भाव प्रकटीकरण में सुगमता और रचना में लालित्य आ जाता है। पं. अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध "रोजमर्रा" या बोलचाल को मुहावरे के अन्तर्गत मिलाते हैं। आप लिखते हैं— "मुहावरे के दो रूप हैं— एक वह जिसको हम रोजमर्रा या बोलचाल कह सकते हैं और दूसरा वह जो किसी वाक्य में सांकेतिक अथवा लाक्षणिक अर्थ द्वारा विदित होता है। पांच-सात, रोज-रोज आदि रोजमर्रे के उदाहरण हैं। ठोकर खाना, कसम खाना आदि मुहावरे हैं।"

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि कुछ विद्वान रोजमर्रे और मुहावरे को एक ही रेखा में रखना चाहते हैं तो अन्य विद्वान उनके बीच में अलग-अलग लकीरें खींचना चाहते हैं। बात यह है कि रोजमर्रा या बोलचाल और मुहावरे में अन्तर है। एक का प्रयोग रचना में लालित्य लाने की दृष्टि से आवश्यक है तो दूसरे का प्रयोग नितान्त अनिवार्य नहीं माना जा सकता। वाक्य मे मुहावरे का प्रयोग कर सकते हैं, नहीं भी कर सकते हैं। हाँ, प्रयोग करने से प्रभावशालिता आ जाती है। अतः मुहावरे का प्रयोग अनिवार्य नहीं माना जा सकता। इसके विपरीत रोजमर्रे का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है। वाक्य में रोजमर्रे का ख्याल न रखें तो भावों की अभिव्यंजना में सुन्दरता आती रहती है। कहावत और रोजमर्रे का अन्तर स्पष्ट है। कहावत पूरे वाक्य में होती है, पर रोजमर्रा वाक्यांश मात्र है। "कहावत" के प्रयोग के संबन्ध में हम पहले ही कह आये हैं।

३) <u>कहावत और मुहावरा</u>— मुहावरे की क्या परिभाषा है ? मुहावरा वास्तव में "लक्षणा या व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य या प्रयोग जो किसी एक ही भाषा में प्रचलित हो और उसका अर्थ प्रत्यक्ष (अभिधेय) अर्थ से विलक्षण हो।"[1] मुहावरा वाक्य या वाक्यांश होता है जिसका प्रयोग ऐसे समय पर किया जाता है जब कि अर्थ को स्पष्ट करना पड़ता है। मुहावरे के प्रयोग से चमत्कार आ जाता है। लेखक का उद्देश्य स्पष्ट होकर शीघ्र ही पाठक के हृदय पर अंकित हो जाता है। मुहावरा वाक्यांश है अवश्य, पर सब वाक्यांश मुहावरे नहीं होते हैं। उदाहरणार्थ "नदी तट पर" वाक्यांश है, मुहावरा नहीं। "टेढ़ी खीर" मुहावरेदार वाक्यांश है, मुहावरा नहीं। अतः मुहावरे में कोई न कोई लाक्षणिक अर्थ अवश्य रहता है। दूसरे शब्दों में उसमें लक्ष्यार्थ की प्रधानता होती है। उदाहरण के लिए "सिर पर सवार होना" का अर्थ "किसी के सिर पर आरूढ़ होना" न लेकर "तंग करना" लेते हैं। इस प्रकार मुहावरों का विशिष्ट अर्थ लिया जाता है। तेलुगु में प्रयुक्त कुछेक मुहावरों पर दृष्टिपात कीजिये— "चेयि काल्चुकोनुट" जिसका सीधा अर्थ होता है "हाथ जलाना"। पर, यह अर्थ न लेकर दूसरा ही अभिप्रेत अर्थ लेते हैं "अपने हाथ से खाना बनाना"। "कडुपुलो पालु पोयुट" (आनंद का समाचार सुनाना या तसल्ली देना।) "काळ्ळु चापुट" (अशक्तता दिखाना) आदि अन्य उदाहरण हैं।

स्मरण रखने की बात यह है कि मुहावरे में जो शब्द प्रयुक्त होते

1. संक्षिप्त हिन्दी शब्द-सागर, पृ. ९५९.

हैं, वे सर्वथा अपने स्थान पर सार्थक और नपे-तुले होते हैं। उनके स्थान पर दूसरे शब्दों का प्रयोग उपयोगी नहीं होता। उदाहरणार्थ— "कलेजा मुँह को आना" के बदले "हृदय मुँह को आना", "जान खाना" के बदले "प्राण खाना" कहने से कोई प्रभाव नहीं रहता और वे मुहावरे कहलाने लायक भी नहीं होते।

हिन्दी में प्रयुक्त "मुहावरा" शब्द फ़ारसी का है। यह शब्द बहुत ही लोकप्रिय है। इस शब्द के स्थान पर कुछ विद्वानों ने वाग्धारा, व्यक्तता, वाग्रीति, रूढ़ोक्ति, भाषा-संप्रदाय, मुख-व्यवहार आदि शब्दों को सुझाया है।[1] परंतु, इनमें से कोई भी शब्द व्यवहार में नहीं है। "मुहावरा" शब्द व्यावहारिक दृष्टि से जितना उपयुक्त है, उतना और कोई शब्द नहीं। इधर कुछ दिनों से कतिपय विद्वानों में यह धुन सवार हो गयी है कि वे प्रत्येक विदेशी शब्द को निकाल बाहर करना चाहते हैं और उनके स्थान पर कठिन संस्कृत शब्द गढ़ना चाहते हैं। राष्ट्रभाषा के प्रचार की दृष्टि से यह हितकर प्रतीत नहीं होता। सच तो यह कि संस्कृत में मुहावरे का पर्याय शब्द नहीं मिलता। संस्कृत में मुहावरे नाम की कोई चीज नहीं है। "अगुलिदाने भुजं गिलति"[2] जैसे प्रयोग लाक्षणिक प्रयोगों के अन्तर्गत माने जाते हैं। उनका पृथक अस्तित्व नहीं।

अनुमान लगा सकते हैं कि मुहावरे का इतिहास अति प्राचीन है। इन मुहावरों का आविर्भाव कैसे हुआ, यह कौतूहल का विषय हो सकता

1. [illegible]
2. [illegible]

है। यह कहना अनुचित न होगा कि अनेक मुहावरों का अपना अलग इतिहास होगा। प्राचीन काल में किसी संदर्भ या परिस्थिति में, ऐसे वाक्यांशों का प्रयोग हुआ होगा, जो कालान्तर में विशेष अर्थ को लेकर प्रचलित होने लगे। "भौंहें सिकोड़ना", "दाँतों तले उँगली दबाना" आदि ऐसे मुहावरे हैं जिनका अर्थ व्यक्ति विशेष के मुख पर किसी समय अभिव्यक्ति होनेवाले मूक भाव हैं जिनको सुन्दर शब्दों में पिरोकर वाक्यांश के रूप में लिये गये है। कभी-कभी मुहावरे किसी विशेष व्यक्ति, समाज, परिवार आदि से संबन्धित घटनाओं के कारण ही चल पड़ते हैं। "नाक काटना", "नानी मर जाना" जैसे मुहावरे अवश्य किसी पारिवारिक घटना से संबन्धित है। "अंधे की लकड़ी" जैसे मुहावरे लाक्षणिक अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

अब हम मुहावरे और कहावत के अन्तर को स्पष्ट करें। मुहावरा, जैसा कि ऊपर कहा गया है, वाक्यांश होता है। वह स्वतंत्र नहीं होता। किसी वाक्य में प्रयुक्त होने पर ही उसका अस्तित्व क़ायम रहता है। जब तक मुहावरे का प्रयोग वाक्य में नहीं होता तब तक अर्थ पूर्ण नहीं होता। उदाहरण के लिए "लोहा मानना" मुहावरे को लीजिए। इसका प्रयोग वाक्य में करें, तभी इसका अर्थ पूर्ण होता है, जैसे— औरंगजेब ने भी शिवाजी का लोहा माना, मैं उनका लोहा मानता हूँ आदि। कहावतें स्वतंत्र वाक्यों में होती है। वे स्वतंत्र अर्थ की द्योतक हैं। मुहावरे का वाक्य लिंग, वचन, पुरुष और काल के अनुसार बदल सकता है, पर कहावत मे ऐसा परिवर्तन अपेक्षित नहीं। कहावत का प्रयोग बंधा-बंधाया प्रयोग है। उसमें परिवर्तन आवश्यक ही नहीं। एक उदाहरण

देखिए— "उसको पूर्वी-कल्याणी में गाना मालूम नहीं है।" [illegible] गा न सका तब कहने लगा कि आर्केस्ट्रा अच्छा नहीं है। "नाच न जाने आंगन टेढ़ा।" इस प्रकार जब कहावत का प्रयोग होता है तब संदर्भानुसार दो-चार वाक्य लगे रहते हैं। इससे स्पष्ट है कि मुहावरा (अर्थ की दृष्टि से) स्वतंत्र नहीं होता जब कि कहावत स्वतंत्र होती है।[1]

मुहावरे और कहावत में और एक भेद है। मुहावरे लाक्षणिक प्रयोग होते हैं। जब कि कहावतें बहुधा अन्योक्ति या अप्रस्तुत योजना के रूप में होती हैं। "गुस्सा पीना" "जान में जान आना", "सिर पर चढ़ना" आदि लाक्षणिकता के आधार पर ही बने हैं। "हीरे की परख जौहरी जाने", "समुद्र के पास जाकर घोंघा हाथ लगा", "नाम बड़े दर्शन थोड़े"— इन कहावतों में अप्रस्तुत योजना स्पष्ट लक्षित होती है। "मेंढक को भी जुकाम हो गया", "अड्डु गोड मीद पिल्लि" (दीवार पर की बिल्ली)[2] जैसी कहावतें अन्योक्तियों के रूप में मिलती हैं। प्रस्तुत अर्थ के द्वारा अप्रस्तुत अर्थ को बताना, साधारणतया कहावतों का लक्ष्य रहता है। कृषि, स्वास्थ्य, वर्षा आदि से सम्बन्धित कहावतें अप्रस्तुत के रूप में होती हैं।

अधिकतर मुहावरों के अन्त में 'ना' (तेलुगु में 'ट') लगा रहता है। जैसे [illegible], तंग आना आदि। कहीं-कहीं 'ना' अन्त में नहीं

[1] कहीं-कहीं लोग कहावतों के रूप में थोड़ा परिवर्तन कर देते हैं जैसे [illegible]

[2] [illegible] — Jack of both sides (अंग्रेजी)

होता, जैसे ठन-ठन गोपाल आदि। तेलुगु की कहावतों में प्रायः अंत में "अट्लु या अट्टु" लगा रहता है जिसका अर्थ होता है "जैसे"।

जब कवि या लेखक कहावतों का प्रयोग करते हैं तो उनके स्वरूप में थोड़ा-सा परिवर्तन कर देते हैं। तेलुगु और हिन्दी के लेखकों तथा कवियों ने ऐसा किया है। श्रीनाथ, वेमना, सूर, तुलसी आदि की रचनाओं में हम कहावतों के परिष्कृत रूप देख सकते हैं।

मुहावरे और कहावत में एक बहुत बड़ा अन्तर यह है कि प्रत्येक भाषा के मुहावरे अलग-अलग होते हैं। भाषा-संप्रदाय के अनुसार मुहावरों का प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ "कलम तोड़ना" मुहावरा हिन्दी में प्रचलित है। तेलुगु में इसे इसी रूप में नहीं ले सकते हैं। "घनकार्यं चेसाडु" तेलुगु का एक प्रयोग है जिसका अर्थ होता है "सिंहगढ़ जीत लिया"। तात्पर्य यह कि एक भाषा के मुहावरों को दूसरी भाषा में रूपांतरित नहीं कर सकते। शब्दशः अनुवाद करने पर अर्थ की हानि होती है। परन्तु, कहावत के संबन्ध में यह बात नहीं। कहावतें अनुभव की दुहिता हैं। उनमें सार्वदेशीय, सार्वकालीन सत्य छिपा रहता है। एक भाषा मे जो कहावत है, वह दूसरी भाषा में भी दिखाई पड़ सकती है, अभिव्यंजना में भिन्नता भले ही रहे। उदाहरणार्थ इन कहावतों को देखिए —

All that glitters is not gold. (अंग्रेजी)

तेल्लनिविन्नि पालु कावु मेरिसेवन्नि रत्नालुकावु। (तेलुगु)

पीलुं एटलु सोनुं नहीं। (गुजराती)

मिन्नुन्नतेल्लाम पोन्नल्ल। (मलयाळम)

मिन्नुविरिगिपडितेल्लां पोदल्ला (तमिळ)
बेळ्ळगिरोवेल्ल हालल्ल (कन्नड)

इत्यादि । श्री फिरोज शाह रुस्तुम जी के शब्दों में "कहावत तो मानव-जाति के सामान्य अनुभवों का अक्षरदेह है जब कि मुहावरा भिन्न-भिन्न देश, जाति अथवा समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों की सूचक संज्ञा है ।"[1] इस संबन्ध में डॉ. ओमप्रकाश लिखते हैं— "मुहावरे वाक्य के सूक्ष्म शरीर हैं । स्थूल शरीर के बिना जिनकी अभिव्यक्ति नहीं हो सकती । लोकोक्ति-वाक्य भाषा रूपी समाज के वे प्रामाणिक व्यक्ति हैं जिनका व्यक्तित्व ही उनकी प्रमाणिकता का प्रमाण हो जाता है । जहाँ कहीं, जिस किसी के पास वे जा बैठे, उनकी तूती बोलने लगे ।"[2]

मुहावरा वस्तुतः एक कार्य-व्यापार है । कहावत नैतिक वाक्य है अथवा अनुभूतिजन्य कथन । उदाहरणार्थ– "होम करते हाथ जला"– यह मुहावरा है या कहावत ? यह एक कार्य-व्यापार का द्योतक है । अतः मुहावरा है । "नाम बड़े. दर्शन थोड़े"– एक कहावत है जिसमें एक अनुभूत व्यावहारिक सत्य का प्रकटन हुआ है । "आहारे व्योहारे लज्जा न कारे" नीति बतलानेवाली तथा "सुनिये सब की करिये मन की" उपदेशात्मक कहावतें हैं ।

कहावतें अलंकारशास्त्र में भी स्थान प्राप्त करती हैं । 'लोकोक्ति'

1. [illegible] – एक अध्ययन डा० कन्हैयालाल सहल, [illegible]
2. [illegible]

नामक एक अलंकार ही है। मुहावरे लाक्षणिक अर्थ मे प्रयुक्त होने के कारण शब्द शक्ति के अन्तर्गत आते हैं।

कहावती-साहित्य नीति-साहित्य का एक अंग है। हमारे देश में नीति-शास्त्र का विशेष स्थान है। हमारे यहाँ इस विषय के कई ग्रंथ मिलते हैं। पंचतंत्र की कथाओं में नीति-संबन्धी कई वाक्य मिलते हैं जो वस्तुतः कहावतें हैं। बाइबल में कहावतों का एक अध्ययन ही है। उपनिषदों, जातक-कथाओं एवं इतर प्राकृत तथा संस्कृत के ग्रन्थों में नीति का भाण्डागार है। नीति-वाक्यों के रूपों में, कहावतें प्राचीन काल से ही प्रचलित होती चली आ रही है। आज दिन वर्तमान भारतीय भाषाओं में जो कहावतें प्रचलित हैं, उनमें कई अनूदित होकर संस्कृत तथा प्राकृत भाषाओं से आयी हुई हैं। यह कहना सर्वथा उपयुक्त मालूम पड़ता है कि सांस्कृतिक एकता स्थापित करने के लिए ये कहावतें अधिकाधिक सहायक सिद्ध होंगी। अतः कहावतों को हम 'सांस्कृतिक एकता का उपकरण' कह सकते हैं। यह हम आगे एक स्वतंत्र अध्याय में दिखायेंगे। संस्कृत में प्रचलित कई सुभाषित तथा न्याय भारत की भाषाओं में कहावतों के रूप में प्रचलित हैं। पं. राजशेखर का "हत्थ कंकणं किं दप्पणो न पेक्खि"[1] हिन्दी में "हाथ कंगन को आरसी क्या" और तेलुगु में "अरचेति रेगुवंटिकि अद्दमु कावलेना" (अर्थात् हथेली में जो बेर है, उसे देखने के लिए दर्पण चाहिए क्या ?) कहावत का जामा पहन कर अवशिष्ट है। लोको भिन्न रुचिः, उद्योगः पुरुष लक्षणम् आदि

1 कर्पूरमञ्जरी (१।१८)

उक्तियाँ हिन्दी और तेलुगु में ही नहीं अन्य भाषाओं में भी ज्यों कि त्यों प्रचलित हैं। अजाकृपाणीय, काकतालीय आदि अन्य न्याय भी प्रचलित हैं।

समग्र रूप से कहावतों के अध्ययन से यह बात ज्ञात होती है कि कहावतों में कल्पना की उड़ान और निरर्थक आडंबर नहीं हैं। ये जनता प्रसारित की उक्ति बनकर मानव-जीवन की अनुभूतियों को चारुता से अभिव्यंजित करती आ रही हैं।

४) कहावत और पहेली— पहेली का जन्म उसी समय हुआ जिस समय मनुष्य में सोचने-समझने की शक्ति आ गयी। पहेली को "नारी की संपत्ति" मानने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती। अक्सर देखा जाता है कि बहनें-बहुयें इस कला में निष्णात होती हैं। वे हजारों पहेलियाँ जानती हैं। बहुओं की परीक्षा लेते समय भी इन पहेलियों का प्रयोग होता है। पहेलियाँ किसी जाति या देश विशेष की संपत्ति नहीं हैं। वह सार्वजनीन, सार्वदेशीय और सार्वकालिक हैं।

पहेलियों में बुद्धि-कौशल की प्रधानता होते हुए भी सर्वथा भावों से असंबद्ध नहीं है। उनमें उतना भावगांभीर्य भले ही विद्यमान न हो, तथापि भाव से उनका संबन्ध अविच्छिन्न है। इस कारण पहेलियों को लोकोक्तियों में एकीभूत करना संभव न होगा। पहेली की परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं— "किसी वस्तु विशेष के संबन्ध में कही गयी वह चमत्कारपूर्ण उक्ति पहेली है जिसमें वस्तु का नाम सीधे न बतलाकर गोपनीयता से बतलाया जाता है और जिसमें बुद्धि-कौशल और कलात्मक अभिव्यक्ति प्रधान रहती है।

कहावत और पहेली में मौलिक भेद यह है कि कहावत मार्मिक तथा शीघ्र ही प्रभाव डालनेवाली होती है। पर, पहेलियाँ गूढ़ उक्तियाँ होती हैं। उन उक्तियों पर थोड़ी देर सोचने के बाद ही रहस्य खुलता है, पहेली का महत्व समझ में आता है। कहावतें सीधे हृदय पर चोट करती हैं तो पहेलियाँ हमारे मन को गूढ़ या रहस्य जानने के लिए क्रियावान बनाती हैं। एक से तुरन्त ही मन को आनंद की उपलब्धि होती है और उसकी प्रभावशालिता को हम मानने लगते हैं तो दूसरी से मन को सोचने का अवकाश मिलता है और रहस्य जानने का कौतूहल उत्पन्न होता है। फलतः मानसिक भोजन मिलता है।

यद्यपि मुहावरे, पहेली और लोकोक्ति में अविनाभाव संबन्ध भी देखा जाता है, तथापि उनका अपना-अपना अस्तित्व है। (ये तीनों बुद्धि ग्राह्य हैं। इनसे मानसिक विकास होता है।) पहेली में प्रयुक्त वाक्य बड़े भी होते हैं, छोटे भी। उसमें चार-पाँच से अधिक वाक्य भी हो सकते हैं। पर, कहावत में प्रायः वाक्य इतना सारगर्भित होता है कि एक ही वाक्य में अर्थ का प्रकटन हो जाता है।

जिस प्रकार प्राचीनकाल से कहावतें जनता की जबान पर हैं, उसी प्रकार पहेलियाँ भी। इस समानता का होते हुए भी उनमें एक और भेद यह है कि पहेलियों को कहावतों का स्थान प्राप्त नहीं है। कहावतों को साहित्य में भी स्थान प्राप्त है। जहाँ कहावतें व्यवहार-कुशलता के प्रबल प्रमाण के रूप में प्रयुक्त होती हैं, वहाँ पहेलियाँ केवल बुद्धि-माप के साधन के रूप में। दोनों में यह अन्तर है।

५) कहावत और लौकिक न्याय– संस्कृत में लोक प्रसिद्ध युक्ति

को न्याय कहते हैं। 'संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर' के अनुसार न्याय "ऐसा दृष्टान्त-वाक्य (है) जिसका व्यवहार लोक में कोई प्रसंग आ पड़ने पर होता है और जो किसी उपस्थित बात पर घटती है।"[1] न्याय के पर्याय में संपादकों ने कहावत का भी प्रयोग किया है। ऐसे बहुत-से न्याय व्यवहार में देखे जाते हैं। संस्कृत में न्याय के नाम से प्रचलित बहुत-से सूत्र सुन्दर कहावतें ही हैं। उनमें सच्चे हृदय के उद्‌गार हैं। उदाहरणार्थ ये न्याय देखिए — "अरण्य रोदन न्यायः" "बीज-वृक्ष न्यायः" आदि। तेलुगु में इन न्यायों को 'सामेत' के अन्तर्गत मिलाते हैं। इन न्यायों में हृदय को स्पर्श करने की शक्ति विद्यमान है। संस्कृत साहित्य में अनेक स्थलों पर "न्याय" का प्रयोग हुआ है। टीका-टिप्पणी, समालोचना, व्याख्या या शंका-समाधान करते समय इनका अधिकाधिक प्रयोग हुआ है। इनके संबन्ध में यह बात याद रखने की है कि ये देखने में छोटे लगते हैं, पर "गंभीर घाव" करनेवाले हैं। सूत्र रूप में प्रचलित ये न्याय हमारे हृदय को खींच लेते हैं। न्याय का प्रयोग कई अर्थों में होता है; जैसे उपमा, सिद्धान्त-प्रतिपादन, किसी कार्य के अर्थ में आदि।

ऊपर कहा गया है कि न्याय के पर्याय में कहावत का प्रयोग किया जाता है। तथापि, इन दोनों में अन्तर स्पष्ट है। वे इस प्रकार हैं।

१) प्रायः न्याय एक शब्द से गठित होता है, जैसे 'कतक न्यायः',

1. [illegible] ६३३ [illegible] प्रकाश [illegible] 'संस्कृत [illegible]-[illegible] न्याय [illegible] 'प्रसिद्ध कहावतें' [illegible]

"जलौका न्याय:" आदि। किन्तु, विश्व की प्राय: सभी भाषाओं में कहावत एक से अधिक शब्दों से युक्त रहती है। एक शब्दवाली कहावत ढूंढने पर एक दो मिले तो मिले। छोटी-सी छोटी कहावत के लिए भी दो शब्दों की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए— "कष्टे फले" (कष्ट से फल मिलता है), "सुखमु दुःखमुनके" (सुख दुःख के लिए है।) आदि तेलुगु कहावतें उद्धृत की जा सकती है।

२) "न्याय" दो शब्दों से भी बनता है। उदा.— काकतालीय न्याय, कूप मंडूक न्याय, देहली दीप न्याय आदि। प्राय: इन न्यायों के पीछे कोई न कोई कहानी रहती है। उसे समझे बिना न्याय का पूर्ण अर्थ समझ में नहीं आता। कहावतों में भी कोई न कोई कहानी रह सकती है। ऐसी कहावतों की कमी भी नहीं है। उदाहरण के लिए—

१) नौ सौ चूहों को खाकर बिल्ली हज को चली।
२) अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा।
३) रेंडिटिकि चेडिन रेवडि (तेलुगु) (उभय भ्रष्ट रजक।)
४) अत्तगारु काटिके पेट्टुकोंटारा ? (तेलुगु)
('सास जी, क्या काजल लगाएँगी ?')

ध्यान देना चाहिए कि कहावतें पूर्ण वाक्य में होती हैं। पर, न्याय संपूर्ण वाक्य की भाँति प्रयुक्त नहीं होते।

३) न्याय और कहावत दोनों में लोक प्रसिद्ध उपमाओं को देख सकते हैं। उदाहरण के लिए— "अरण्य रोदन न्याय", अजागलस्तन न्याय आदि; और अडविकाचिन वेन्नल (तेलुगु कहावत— जिसका अर्थ है— वह चाँदनी जो वन में व्यर्थ होती है।) आदि।

४) अनेक न्याय ऐसे भी मिलते हैं जिन्हें "कहावत" कहने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती। क्योंकि, ऐसे न्यायों में कहावत के सब लक्षण दिखाई पड़ते हैं। यथा —

क) अर्के चेन्मधु विन्देत किमर्थं पर्वतं व्रजेत ?
(यदि समीप ही मधु मिलता है तो पर्वत पर जाने से क्या प्रयोजन ?)

तेलुगु कहावत से तुलना कीजिए —
"अरचेत वेन्न पेट्टुकोनि नेतिकि येड्चिनट्टु ।"
(अर्थात् हथेली पर मक्खन रख कर घी के लिए रोवें ।)

ख) सर्वं पदं हस्तिपदे निमग्नम् ।
(हाथी के पैर में सब पैर समा जाते हैं ।)[1]

५) प्रश्नोत्तर के रूप में न्याय मिलते हैं। उदाहरण के लिए,

प्रश्न:— जागर्ति लोको ज्वलति प्रदीपः सखीजनः पश्यति कौतुकं मे
क्षणैकमात्रं कुरु कान्त धैर्यं बुभुक्षितः किं द्विकरेण भुंक्ते ।

उत्तर:— जागर्तु लोको ज्वलतु प्रदीपः सखीजनः पश्यतु कौतुकं ते ।
क्षणैकमात्रं न करोमि धैर्यं बुभुक्षितं न प्रतिभाति किंचित् ॥

कहावतें भी प्रश्नोत्तर के रूप में मिलती हैं —

१) [illegible] ।

1. विशेष विवरण के लिये देखिए [illegible] — एक अध्ययन ; — [illegible] पृ. [illegible].

2. वही.

२) कुरूपी येमि चेस्तुन्नाडंटे, सुरूपलन्नी लेक्क पेट्टुतुन्नाडु ।
(रूपहीन क्या कर रहा है ? रूपवानों की गिनती कर रहा है ।)

३) उपाध्यायलु येमि चेस्तुन्नारण्टे, अबद्धालु रासि
लिद्दुकोंटुन्नाडु अन्नाडट ।

(एक ने पूछा— "मास्टर जी क्या कर रहे हैं ?"
दूसरे ने कहा— "गलतियाँ लिखकर सुधार रहे हैं ।")

६) कुछ कवियों की उक्तियाँ न्याय के समान प्रयुक्त हुई हैं ।

उदाहरण—

छिद्रेष्वनर्था बहुली भवन्ति । (अर्थात् विघ्न पर विघ्न आया करते हैं ।) (विष्णु शर्मा)

लोक मानस पर पहुँच कर यह उक्ति कहावत भी बन जाती है । इसी अर्थ की कहावतें हिन्दी और तेलुगु में हैं ।

उपर्युक्त विवेचना से यह बात विदित होती है कि संस्कृत में न्याय का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है । लोक प्रचलित वाक्यांश, प्रसिद्ध उपमाएँ दृष्टांत, सूक्तियाँ और कभी-कभी कहावतें भी इसके अन्तर्गत आ जाती हैं । ऊपर ऐसे उदाहरण दिये गये हैं । अतः "कहावत" और "न्याय" के बीच स्पष्टतया अलग-अलग रेखाएँ खींचना कष्टसाध्य है ।

६) <u>कहावत और प्राज्ञोक्ति</u>— प्राज्ञोक्ति के अन्तर्गत प्रज्ञा सूत्र (Aphorism) व्यवहार सूत्र (maxim) और मर्मोक्ति (Epigram) आती है । स्वरूप की समानता के हेतु प्राज्ञोक्ति और कहावत के पृथक्करण में भ्रम होने की संभावना है ।

अंग्रेजी शब्द (Aphorism) ग्रीक (Appigetv) से निकला है । इसी को

हिन्दी में 'प्रज्ञा सूत्र' कह सकते हैं। प्रज्ञा सूत्र की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है— "प्रज्ञा सूत्र एक संक्षिप्त, सारगर्भित उक्ति है जिसमें किसी सामान्य सत्य की अभिव्यक्ति होती है और वह उक्ति इतनी प्रभावशाली होती है कि एक बार सुनने मात्र से उन्हें विस्मृत करने की संभावना नहीं रहती।"[1]

हमारे देश में सूत्रों की परंपरा प्राचीन काल से ही है। साधारणतया उन्हें दो वर्गों में रखते हैं—प्रज्ञा सूत्र और विद्या सूत्र। प्रज्ञा सूत्र का संबन्ध आध्यात्मिक ज्ञान, नैतिक, धार्मिक उपदेश आदि से है जब कि विद्या सूत्रों का संबन्ध ज्योतिष, व्याकरण, छंद, नाट्य आदि विद्याओं से है।[2] "नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते" "अमृतं तु विद्या" आदि प्रज्ञा सूत्र के उदाहरण हैं तो "इको यणचि" जैसे व्याकरण के सूत्र विद्या सूत्र के अन्तर्गत हैं।

ऐसा कहा जाता है कि पाश्चात्य देशों में प्रज्ञा सूत्रों का व्यवहार पहले पहल वैद्य शास्त्र में होता था। बाद में शरीर विज्ञान संबन्धी साधारण उक्तियों के लिए इसका प्रयोग होने लगा और अब तो प्रत्येक

1. "Literally a distinction or a definition, a term used to describe a principle expressed concisely in a few telling words or any general truth conveyed in a short and pithy sentence in such a way that when once heard it is unlikely to pass from the memory." (Ency. Brit. Vol II, page 165)

2. 'राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन' डॉ० कन्हैयालाल सहल, पृ. ३२

प्रकार की सामान्य उक्ति (Statement of principle) के लिए प्रयोग होने लगा है।

कहावत और प्रज्ञा सूत्र में अन्तर यह है कि कहावत जन साधारण की उक्ति है, इसलिए उसे "लोकोक्ति" कहते हैं। प्रज्ञा सूत्रों का संबन्ध विद्वानों (प्राज्ञों) से है, वह प्राज्ञों की उक्ति है। प्रज्ञा सूत्र के लिए (Encyclopaedia Britannica, Vol. II) मे एक उदाहरण दिया गया है जो इस प्रकार है —

Those who are very fat by nature are more exposed to die suddenly than those who are thin.

यह प्राज्ञों की ही उक्ति है। ऊपर संस्कृत का, प्रज्ञा सूत्र के लिए उदाहरण दिया गया है।

प्राज्ञा सूत्र और व्यवहार सूत्र (maxim) में भी अन्तर है। पर कुछ लोग दोनों में अन्तर नहीं देखते।[1] "सर्वाधिक गुरुतापूर्ण उक्ति को व्यवहार सूत्र कहते हैं।[2] पादरियों की उक्तियाँ उदाहरण के रूप में

1. Ref. Chambers's Encyclopaedia of universal knowledge (Vol I, page 312)
2. Maxim is statement of the greatest weight. (Morley)

   A brief statement of a practical principle or proposition, usually as derived from experience, a principle accepted as true and acted on as a rule or guide. (New standard Dictionary, page 1530.)

उद्धृत कर सकते हैं।" "भगवान की सेवा करो और प्रसन्न रहो" आदि।[1]

मानव स्वभाव की गूढ़ता प्रदर्शित करनेवाली संक्षिप्त विशुद्ध और ललित उक्ति को मर्मोक्ति कहते हैं। दूसरे शब्दों में हृदय पर अपना प्रभाव छोड़कर जानेवाली उक्ति को मर्मोक्ति कह सकते हैं। प्रज्ञा सूत्र और मर्मोक्ति में अन्तर है। संस्कृत में सुभाषित के अन्तर्गत सूत्र, सूक्ति, मर्मोक्ति सभी का समावेश हो जाता है।

प्रज्ञा सूत्र, व्यवहार सूत्र और मर्मोक्ति के संबन्ध में इतना जानने के अनन्तर प्राज्ञोक्ति से कहावत की तुलना करके अन्तर स्पष्ट करना उचित प्रतीत होता है। प्राज्ञोक्ति में हम ज्ञानी का चिन्तन और उसका निष्कर्ष देखते हैं तो कहावत में जन साधारण का हृदय और अनुभव। प्राज्ञोक्ति उपदेशात्मक शैली में किसी नीति का उद्घाटन करती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि कहावत में नीति या उपदेश नहीं होता। पर, उसकी अभिव्यक्ति ही अलग प्रकार की होती है। कहावत पाण्डित्य और चिन्तन का फल नहीं है। वह जन-जीवन के व्यावहारिक सत्य की भित्ति पर खड़ी है।

कभी-कभी इन दोनों को अलग करना सम्भव नहीं होता। कालिदास, बाणभट्ट, तुलसीदास आदि के ग्रंथों में अनेक ऐसी उक्तियाँ प्रयुक्त हुई हैं जिन्हें हम प्राज्ञोक्ति भी कह सकते है, लोकोक्ति भी।

1. Serve God and be cheerful.
(New Standard dictionary page, 1530.)

निष्कर्ष— कहावतें, ज्ञान, चिन्तन और तत्व की बात ही नहीं कहतीं बल्कि वे लोक-ज्ञान की प्रत्यक्ष अनुभूति की अभिव्यक्ति हैं। कुछ लोग कहावतों को ग्राम्य कहकर उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, और कुछ लोग सभ्य-समाज में इनका प्रयोग वर्जित मानते हैं। यह ठीक नहीं है। गाँवों में कहावतों का अधिक प्रयोग होने मात्र से वे ग्राम्य नहीं हो जातीं। कहावतों का प्रयोग सर्वत्र हो सकता है। उनमें कहीं असभ्यता की बात हो तो उनका परिष्कार किया जा सकता है। कहावतों का जीवन से घनिष्ठ संबन्ध है। उनके अध्ययन से हम जीवन की वास्तविकता को परख कर सकते हैं। कहावतों की सफलता का रहस्य उनकी भणिति-भंगिमा, सहज-बुद्धि के चमत्कार, संक्षिप्त एवं सारगर्भित प्रयोगों की सार्थकता में छिपा है।

द्वितीय अध्याय

कहावतों की उत्पत्ति का मूलकारण

कहावतें किसी एक जाति या राष्ट्र की संपत्ति नहीं हैं, ये तो विश्व के सभी मानवों और सभी राष्ट्रों की निधि हैं। जिस प्रकार हीरे या रत्न को किसी एक व्यक्ति की संपत्ति नहीं कहा जा सकता, उसी प्रकार कहावतें भी किसी एक व्यक्ति की संपत्ति नहीं हैं। यदि हीरा या रत्न किसी एक स्थान से मिल सकता हो तो कहावतें संसार के सभी क्षेत्रों में मिल जाती हैं। इस दृष्टि से ये हीरों से भी अधिक मूल्यवती हैं। ये अनंत हैं, इनकी कोई गिनती नहीं। प्राचीन काल से कहावतें मानव-समाज को परम्परागत विरासत के रूप में प्राप्त होती आ रही हैं। जैसा कि पिछले अध्याय में यह दिखाया गया है कि मानव-जीवन की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हैं, इससे यह स्पष्ट है कि इनकी उद्भावना किसी एकान्त कोने में नहीं हुई, प्रत्युत संसार के विशाल अनुभव के प्रांगण में हुई। पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर न तो कहावतें बनी हैं और न ऐसे पंडित ही इनके निर्माता हैं। जीवन के वास्तविक अनुभव के क्षेत्र में निष्णात तथा पारखी कहावतों के निर्माता हैं। यह सच है कि हमको इन निर्माताओं के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं है। कतिपय

निर्माताओं के संबन्ध मे ज्ञान हो जाय तो हो जाय। काल के गर्भ मे
निर्माताओं के नाम लुप्त हो गये होंगे, पर कहावतें अमर रह गयीं
किसी के प्रयत्न से भी कहावतों का प्रचलन नहीं हुआ है। वे तो स
मेव जनता में प्रचलित हो गयी हैं। "न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्
इन रत्नों को संपूर्ण मानव समाज ने अपना लिया। यह भी संभव है
कहावतों के कुछ निर्माताओं को इसका ज्ञान न रहा हो कि वे जो उ
कह गये, वह लोक-मानस पर "कहावत" के रूप में स्थिर
जाएगी। किसी के मुख से संदर्भ के अनुसार कोई सारगर्भित, चटकी
नुकीला वाक्य निकल पड़ा, वही कहावत के रूप में प्रचलित होने लग
यह है कहावत के जन्म का विधान।

मानव-जाति जितनी प्राचीन है, कहावतें भी उतनी ही प्रा
है। जब से मानव ने भावाभिव्यक्ति के निमित्त भाषा का प्रयोग क
सीखा तभी से उसने कहावतों की भी उद्भावना की। वाणी के वर
के समान कहावतों का वरदान भी उसे प्राप्त हुआ, जो स्वस्थ
और अनुभवों का परिचायक है। अतएव, यह नहीं कहा जा सक
कि कहावतों का जन्म कब हुआ और इनके जन्मदाता कौन
क्योंकि, कहावत रूपी शिशु का जब जन्म होता है, तो किसी को
ही पास बैठने दिया जाता है?[1]

1. Rarely indeed is one permitted to sit in at t
birth of a proverb or to the name of its author.
(Introductory note to Stevenson's Book of proverb

उत्पत्ति का विधान

कहावतों का जन्म किस प्रकार होता है, इस संबन्ध में यद्यपि निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता, तथापि कल्पना से काम ले सकते हैं। जैसा कि इसके पहले देख चुके हैं, कहावतें अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है। मानव ने अपने जीवन में जिस किसी का अनुभव किया, उसी को ऐसे प्रभावशाली– हृदयग्राही वाक्यों के द्वारा प्रकट किया। उदाहरणार्थ —

"जो घड़ा पूरा भरा नहीं होता, वह कुछ छलकता और छलकन [illegible] आवाज होती है। इसके विरुद्ध जो घड़ा भरा होता है, वह न छल-[illegible]ता है और न उसमें से आवाज होती है, पानी का घड़ा लेकर आती हुई स्त्रियों के संबन्ध में यह हमारा प्रतिदिन का अनुभव है। किन्तु यह नेत्रानुभव मात्र है। न जाने कितने लोग इस दृश्य को देखते हैं। [illegible]न्तु किसी प्रकार की मानसिक प्रक्रिया उनमें नहीं होती। किन्तु, किसी [illegible]न एक विचारशील व्यक्ति के मन में यह दृश्य उस व्यक्ति का चित्र [illegible]मने खड़ा कर देता है जो बोलता बहुत है किन्तु जिसका ज्ञान अध-[illegible]रा है, जिसकी विद्या अधूरी है। ऐसी स्थिति में नेत्रानुभव मन के [illegible]भव के रूप में परिणित हो जाता है और उसके मुख से सहसा निकल [illegible]ा है। 'अध जल गगरी छलकता जाय।' यद्यपि यह वाक्य प्रसंग [illegible]ष पर एक व्यक्ति के मुख से निकला था तथापि समान प्रसंग आने [illegible] अन्य लोग भी इस वाक्य की आवृत्ति करने लगते हैं। इस प्रकार [illegible] व्यक्ति की उक्ति लोक की उक्ति बन कर, कहावत का रूप धारण

कर लेती हैं।[1] यह लोकानुभव किसी प्रदेश तक ही सीमित नहीं रह [illegible] यही कारण है कि एक भाषा में ही नहीं, अनेकों भाषाओं में ऐ[illegible] कहावतें चल पड़ती हैं। दूसरी बात यहाँ ध्यान देने की यह है कि [illegible] ही भाव के द्योतन के लिए दो-तीन कहावतें भी चल पड़ती हैं। इन[illegible] उद्भावना प्रसंग विशेष के अनुसार होती है और आगे चलकर इन[illegible] प्रचलन हो जाता है। "अधजल गगरी छलकत जाय" और "अल्प वि[illegible] महा गर्वी" जैसी कहावतें भाव-साम्य की दृष्टि से एक श्रेणी में र[illegible] जा सकती हैं।

एक दूसरी कहावत को लीजिए— "न नौ मन तेल होगा न रा[illegible] नाचेगी।" राधा नाम की कोई नर्तकी रही होगी। उससे नाचने [illegible] लिए कहा गया होगा। उसने कहा— जब चारों ओर आग की लूकें [illegible] तेल-दीपक जलाएँगे जिसके लिए नौ मन तेल लगेगा, तभी मैं नाचूँगी [illegible] यह उसका बहाना मात्र था। प्रयत्न बहुत किया गया। पर नौ मन [illegible] न मिला। तब किसी के मुंह से यह वाक्य निकल पड़ा होगा कि न [illegible] मन तेल होगा न राधा नचेगी।

प्रकृति के प्रति मनुष्य का सहज आकर्षण है। प्रकृति के न[illegible] रूपों को देखकर उसका मन केवल आनंदित ही नहीं होता, अपितु उ[illegible] वह शिक्षा भी ग्रहण करता है। अपने जीवन से उसकी तुलना क[illegible] है। मनुष्य में यह गुण है और इसीलिए कहावतों की उत्पत्ति संभव

1. [illegible] राजस्थानी कहावतें—एक अध्ययन — डा० कन्हैयालाल सहल पृ. ३८—३९.

"गरजनेवाले बादल बरसते नहीं", "एक मछली सारे पानी को गंदा कर देती है", "सावन हरे भादों सूखे", "मामिडि मगिते सज्जलु पंडुनु" (आम फले तो बाजरा पैदा होगा) "यथा किस्सा तथा दवाति" ऐसी कहावतें इसी प्रकार की हैं। इन कहावतों का परीक्षण करने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि लोकानुभव ही कहावतों के जन्म का प्रधान कारण है।

उत्पत्ति के मुख्यकारण

कहावतों की उत्पत्ति के मुख्य कारण क्या-क्या हैं, इस पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। कहा जा सकता है कि कहावतों की उत्पत्ति के निम्न लिखित कारण हैं— अ) लोक कथाएं, आ) ऐतिहासिक घटनाएँ या प्रसंग, इ) पारिवारिक जीवन के अनुभव और ई) प्राज्ञ-वचन। प्रत्येक के संबन्ध मे विचार करें :

अ) लोक-कथाएँ— जीवन में अनेक घटनाएँ घटती है। लोक-कथाओं ने ऐसी घटनाओं का ही चित्रण होता है। अतः हम कह सकते हैं, लोक-कथाएं घटनामूलक हैं। लोक-कथाओं मे वर्णित घटनाएं मानव-जीवन की अनुभूतियों से सम्बन्धित होने के कारण उन मे सहज आकर्षण और शक्ति रहती है। संस्कृत मे प्रचलित आख्यान उपन्यास आदि शब्द इस अर्थ के द्योतक हैं कि वे मानव-जीवन की किसी न किसी अनुभव की अभिव्यक्ति है। गढवाली भाषा मे "आखाणा और पाखाणो" शब्द कहावत के लिए प्रचलित हैं। इसी प्रकार राजस्थानी भाषा में 'आखाणो'

शब्द चलता है। इससे यह विदित होता है कि कहावतों के पीछे साधारणतया कोई न कोई कथा लगी रहती है जो किसी घटना विशेष की ओर संकेत करती है। कहावत के पीछे कहानी होने पर भी उसमें संपूर्ण घटना का वर्णन नहीं किया जाता, बल्कि उसका संकेत मात्र किया जाता है। पूरी कहानी या घटना का उल्लेख करना प्रभाव की दृष्टि से आवश्यक भी नहीं है और संभव भी नहीं है। उसमें केवल एक ऐसे वाक्य का उल्लेख होता है जो आकर्षक, प्रभावशाली, तेज और मार्मिक होता है। ऐसे वाक्य सूत्रात्मक शैली मे होते हैं। अतः उन्हें याद रखना सरल होता है अथवा यों कहें कि वे स्वयमेव स्मृति-मंदिर के दीपक बन जाते हैं। ऐसे वाक्य ही कहावत बन जाते हैं जो किसी विशेष घटना का चित्र उपस्थित करने में समर्थ होती है। कहावत के रूप मे प्रचलित ये वाक्य लोक-कथा की केन्द्र-बिन्दु हैं। वे साधारणतया चरम वाक्य होते हैं। संपूर्ण घटना का चित्रण होने के कारण अनन्तर सूत्रात्मक शैली में ऐसे वाक्य कहे जाते हैं। यहाँ यह भी स्मरण रहे कि कहावतों के कारण लोक-कथाएँ और लोक-कथाओं के कारण कहावतें चल पड़ती हैं। अस्तु।

नीचे कुछ ऐसी कहावतें दी गयी हैं जिनका प्रयोग लोक-कथाओं में चरम वाक्य के रूप में होता है।

१) <u>भागते चोर की लंगोटी ही भली</u> — "किसी बनिये के यहाँ एक चोर ने सेंध दी। माल-मता तो उसके हाथ आया, ढोकर बाहर ले आया। आखिरी बार बचा-खुचा सामान लेने आया तो जाग हो गई। "चोर के घर कहाँ"— भागा। चोर नंगा-धड़गा सिर्फ लंगोटी पहने था। बनिये ने सेंध से निकलते-निकलते चोर की लंगोटी पकड़ ली। लंगोटी

बनिए के हाथ में एक लंगोटी और निकल भागा। सबेरे टोले-मोहल्लेवाले इकट्ठे हो गये। क्या गया, क्या रहा, चोर किधर से आया, कैसे भागा उसकी शक्ल कैसी थी, इत्यादि प्रश्नों की बौछार बनिये पर होने लगी। बनिया सब बातों का हू-ब-हू बयान करता रहा। एक पड़ोसी ने कहा "चोर अक्सर कुछ निशान छोड़ जाया करते हैं।"

बनिया बोला— "छोड़ तो नहीं गया, पकड़-धकड़ में वह लंगोटी मेरे हाथ लग गयी है।"

पड़ोसी ने कहा– "चलो, भागते चोर की लंगोटी ही भली।"[1]

यही चरम वाक्य कहावत के रूप में प्रसिद्ध हो गया।

८) 'रेंडिटिकि चेडिन रेवाडु' — इस कहावत की तुलना हिन्दी-कहावत "धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का" से की जा सकती है। इस तेलुगु-कहावत से संबन्धित कथा इस प्रकार कही जाती है —

"कोई धोबी नदी मे कपड़े धो रहा था। नदी में पानी बहुत गहरा नहीं था। धोबी ने नदी के दोनों किनारे धुले हुए कपड़े सुखाए थे। इतने मे जोर का पानी बरसा। धोबी ने सोचा— "चलो, कपड़े उठा चलें।" उसने नदी का एक किनारा देखा और कहा "इस तरफ़ अधिक कपड़े हैं, पहले इन्हे उठा लूँ।" कपड़े उठाने लगा। सहसा उसकी दृष्टि दूसरे किनारे पर के कपड़ों पर पड़ी तो उसने मन ही मन कहा— "अरे, उस तरफ तो इससे अधिक कपड़े हैं। उन्हें पहले उठाना चाहिए।" यह सोच कर वह यहाँ का काम छोड़ कर उस किनारे से कपड़े ले जाने चलों

1. कहावतों की कहानियां : महावीर प्रसाद पोद्दार, पृ. ११४–११५.

में चलने लगा। और को वर्षा के कारण तुरन्त ही नदी में प्रवाह आ गया और धोबी नदी की धारा में बह गया। धोबी का यह हाल सुना तो किसी ने कहा— "रेंडिटिकि चेडिन रेवडि।"

तब से यह कहावत के रूप में चल पड़ा। मलयाळम में भी इस प्रकार की कहावत चलती है— "इक्कर निन्नाल अक्कर पच्च, अक्कर निन्नाल इक्कर पच्च"— अर्थात् इस किनारे पर खड़े रहे तो वह किनारा हरा लगता है और वहाँ खड़े रहे तो यह किनारा हरा लगता है।

३) आप डूबे तो जग डूबा — इस कहावत से संबद्ध लोक-कथा इस प्रकार है —

"एक आदमी नदी में नहाते-नहाते गहरे उतर गया। वह तैरना न जानने के कारण पानी में डूबने लगा। और चिल्लाया— "अरे मुझे निकालो, नहीं तो जग डूबा" पुकार सुनकर एक तैराक आगे बढ़ा और उसे बचा लाया। डूबनेवाले के होश ठिकाने होने पर लोगों ने उससे पूछा, तुम जो यह चिल्लाते थे कि "मुझे निकालो, नहीं तो जग डूबा।" इसका क्या मतलब था? तुम्हारे एक के डूबने से जग कैसे डूब जाता है? उसने जवाब दिया "दोस्तो, सोचिए मैं डूब जाता तो मेरे लिए सब डूब गया था न?" कहा ही है "आप डूबे तो जग डूबा।"

इस कहावत के दूसरे रूप— "आप मुए तो जग मुआ।" "आप मुर्दा जहान मुर्दा।"

पंजाबी रूप— आप मुए तो जग परलो (प्रलय)[1]। कन्नड में भी

1. कहावतों की कहानियाँ : महावीर प्रसाद पोद्दार, पृ. २६–२७

इस प्रकार की कहावत है — "तानु उप्टो मूर लोक उप्टो।"

ऊपर उद्धृत लोक-कथाओं के चरम वाक्य कहावत के रूप में प्रसिद्ध हैं। जिस भाँति आधुनिक छोटी कहानियों में कथा की चरम सीमा होती है, उसी भाँति इन लोक-कथाओं में चरम वाक्य बड़ा ही आकर्षक होता है। यहीं इन कथाओं की चरम सीमा है। इसके पश्चात् कथा नहीं चलती, समाप्त हो जाती है। क्योंकि चरम सीमा पर पहुँचने के पश्चात् भी कथा कही जाए तो सरसता नहीं रहेगी।

लोक-कथाओं का आकर्षण चरम वाक्य में ही निहित है। यह वाक्य इतना प्रभावशाली और मर्मस्पर्शी होता है कि इसे बार-बार पढ़ने की इच्छा होती है। हमारे कानों में यह चरम वाक्य मानो प्रतिध्वनित होने लगता है और मन में अपना स्थान बना लेता है। कहीं-कहीं तो इन वाक्यों में ऐसा तीखा व्यंग्य भी रहता है कि उसे भूलना सम्भव नहीं होता। इस तरह के वाक्य, जो कहावतों के सदृश प्रयुक्त होते हैं, विश्व की सभी भाषाओं में प्रचलित रहते हैं।

लोक-कथाएँ निरुद्देश्य नहीं रची गयी हैं। उनसे हमको शिक्षा या नीति मिलती है। कहावतों के रूप में उन कथाओं की शिक्षा अब भी विस्मृत रह गयी है। यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि कहावत लोक-कथा का एक ही वाक्य में समाहार संक्षिप्तीकरण है।

आधुनिक युग में प्रचलित मनोक्ति भी कभी कहावत के रूप में प्रचलित होती है। ईसोप की कई कहानियों की नीति या शिक्षा कहावत के रूप में व्यवहृत है। हमारे देश में प्राचीन काल से ही रोचक कथाएँ सुनने की पद्धति है। पंचतंत्र, हितोपदेश, आदि की कहानियाँ घर-

घर प्रचलित हैं। ऐसी कहानियों से जो शिक्षा प्राप्त होती है, उसी को "नीतिमंजरी", "नीतिशतक" आदि ग्रंथों में सूक्तियों, सुभाषितों और कहावतों के रूप में संग्रहीत पाते हैं। होमर की कई कथात्मक कविताओं की "नीति" जो एक वाक्यात्मक है, कहावतों के रूप में प्रचलित है।[1] कालिदास, भर्तृहरि, सूरदास, वेमना, तुलसीदास आदि की उक्तियाँ भी कहावतें बन गयी हैं।

इस प्रकार शिक्षा के लिए सदा नई सूक्ति या कहावत बनाने की आवश्यकता नहीं होती। प्राचीन काल से ही प्रचलित सूक्तियों और कहावतों का प्रयोग कर सकते हैं। कभी-कभी जैसा कि ऊपर दिखाया गया है, किसी लेखक या कवि द्वारा गढ़ी गयी सूक्ति या उक्ति कहावत बन जाती है। पञ्चतंत्र, जातक-कहानियाँ और हितोपदेश आदि में प्रयुक्त उक्तियाँ इसकी साक्षी हैं। उन पुस्तकों से ऐसे उदाहरण दिए जा सकते हैं जो कहावतों के रूप में प्रचलित हैं।

"पण्डितोऽपि वरं शत्रुर्न मूर्खो हितकारकः।
वानरेण हतो राजा विप्राश्चोरेण रक्षिताः॥" (पंचतंत्र)

(मूर्ख मित्र से पंडित-शत्रु श्रेष्ठ है। बंदर से राजा मारा गया जब कि चोर से ब्राह्मण बचाए गये।) "मूर्ख मित्र से पंडित-शत्रु श्रेष्ठ है" यह वाक्य कहावत का रूप धारण कर चुका है। तेलुगु मे भी यह कहावत

1. The moral of many of the stories of the Homeric poems was summed up in a single line which gained currency as a proverb. (उद्धृत "राजस्थानी कहावतें– एक अध्ययन' : —पृ. ४१ से.)

संकेत है।)[1]

"मिलहिं न जगत सहोदर भ्राता" रामचरित मानस की एक सूक्ति है, जो लोकोक्ति की भाँति व्यवहृत है। इसीसे मिलती-जुलती उक्ति "उच्छंग-जातक" की निम्न लिखित गाथा में मिलती है —

उच्छंगे देव मे पत्तो, पथे धावन्तिया पति।
तञ्च देसं न पस्सामि यतो सोदरियमानये॥

(अर्थात् हे देव, पुत्र तो मेरी गोदी में है, रास्ते चलती को पति भी मिल सकता है, किन्तु वह देश मुझे दिखाई नहीं पड़ता जहाँ से सहोदर भाई मिल सके।)[2]

कुछेक कहावतों के परीक्षण से हमें पता चलता है कि कभी-कभी उनमें ऐसा अभिप्राय व्यक्त रहता है जो संभावित प्रतीत नहीं होता। ऐसी कहावतों के सम्बन्ध में क्या कहा जाय? ऐसी कहावतों के पीछे भी कोई न कोई लोक-कथा प्रचलित रहती है। उदाहरणार्थ— "कौआ कान ले गया" इस कहावत को लीजिए। इससे संबन्धित कथा इस प्रकार कही जाती है —

"एक बेवकूफ़ से किसी ने कहा — "अरे बात नहीं सुनता है, तेरे कान कौआ ले गया क्या?" इसी समय पास के पेड़ पर बैठा हुआ एक कौआ उड़ा। वह मूर्ख कौवे के पीछे दौड़ा और चिल्लाता गया कि कौआ मेरे कान ले गया। किसी बुद्धिमान ने दूर से यह आवाज सुनी। मन में सोचा, कौआ कहीं किसी के कान ले जाता है? पास आने पर

1-2. 'राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन' — डा० कन्हैयालाल सहल पृ ४०.

उस आदमी को देखा तो उसके दोनों कान मौजूद थे। पूछा— "अरे कौआ किसके कान ले गया ?

"मेरे"

"कौन कहता है ?"

बेवकूफ बोला— "उस आदमी ने कहा।"

"लेकिन अपने कान संभाले बिना ही तुम सिर्फ उस आदमी के कहने पर कौए के पीछे दौड़ पड़े। इसी से लोग कहते हैं कि "बेवकूफों के सिर-सींग नहीं होते" यानी वे अपनी करतूत से पहचाने जाते हैं। किसी बाहरी चिह्न से नहीं।[1]

जिस भाँति लोक-कथाओं से कहावतों की उद्भावना होती है, उसी भाँति कहावतों से भी लोक-कथाओं की उद्भावना हो सकती है। उदाहरण के लिए यह कहावत लीजिए — "भगवान जो करता है, भले के लिए करता है।" (ऐसी कहावत तेलुगु तथा इतर भारतीय भाषाओं में भी है) अनुमान है कि पहले पहल यह कहावत अनुभव के आधार पर बनी। पीछे इसके साथ लोक-कथा की भी [illegible] हो गई। प्रचलित लोक-कथा यह है—

एक राजा शिकार के लिए वन में गया। तलवार की धार [illegible] हुए उसके दाहिने हाथ की कानी अंगुली कट गई। साथ उसका [illegible] भी था। राजा बहुत कराहने लगा तो मंत्री ने सांत्वना के रूप में [illegible]— "महाराज, भगवान जो करता है, भले के लिए ही करता है।"

कहावतों की कहानियाँ : [illegible] पृ. १०

राजा को इस पर बड़ा क्रोध आया कि मुझे तो इतनी तकलीफ़ हो रही है, मेरी एक अंगुली गायब हो गयी और यह कहता है कि भगवान ने भले के लिए किया है। राजा ने उसी समय उसे मंत्रि-पद से अलग कर दिया।

कहावत है —

"राजा, जोगी अगिन, जल इनकी उल्टी रीति।
बचते रहिए परसराम, थोड़ी पाले प्रीति॥"

राजा का अंगुली का दर्द एक-दो दिन में जाता रहा। तीसरे दिन राजा शिकार के पीछे घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते जंगल में बहुत दूर निकल गया। वहाँ डाकुओं का एक बड़ा गिरोह रहता था। उस गिरोहवालों ने राजा को पकड़ा। डाके के पहिले देवी को एक मनुष्य की बलि देने का उनका पुराना रिवाज था। आज उन्होंने राजा की बलि चढ़ाने की ठानी। राजा ने बहुत अनुनय-विनय की, पर एक न सुनी गयी। डाकुओं का सरदार राजा को देवी के सामने खड़ा करके उसका सिर धड़ से जुदा करने को ही था कि उसकी नजर राजा के दाहिने हाथ की कानी अंगुली पर पड़ी। उसकी तलवार रुक गयी। राजा बन्धन मुक्त कर दिया गया। सरदार बोला— "यह व्यक्ति बलिदान के योग्य नहीं है, इसके तो एक अंगुली ही नहीं है। खण्डित जीव है।" राजा के लिए तो "जान बची, लाखों पाए"। वहाँ से बेतहाशा भागा। घोड़ा तो उसका डाकुओं ने पहले ही ले लिया था। कई दिन पैदल चलकर अपने राज्य में पहुँचा। पहुँचते ही उस मन्त्री को पहले तलाश करवाया। सब घटना सुनाकर उसे अलग करने पर बड़ा दुःख प्रकट किया। मंत्री ने

[illegible] — 'मैंने [illegible] आदमी ने पकड़ [illegible] दिया। मुझे आप निकाल न देते तो [illegible] जरूर होता और मेरा तो बलिदान हो गया होता, क्योंकि मैं तो कहीं से खण्डित नहीं था।'[1]

"विपत पड़ी तब मानी भेंट" — यह भी इसी ढंग की कहावत है। अक्सर हम देखते हैं, जब विपदा आती है, तब मनौती करते हैं। मानव के स्वभाव को देखकर, किसी से कही गयी यह उक्ति कहावत का रूप धारण कर चुकी है। इससे संबन्धित लोक-कथा बाद में चल पड़ी। "रुपयों के पास रुपया जाता है" — इस कहावत के संबन्ध में भी यही बात कही जा सकती है। हमारा यह साधारण अनुभव है कि थोड़े से रुपये रहे तो उनसे अधिक रुपये कमा सकते हैं। थोड़ी-सी पूंजी व्यापार में लगी तो पूँजी बढ़ गयी। दूसरी बात भी हम देखते हैं कि साधारणतया जो अमीर होते हैं, उन्हीं के पास लक्ष्मी जाती है। किसी ने सच ही कहा— "नीच प्रगमना लक्ष्मि जलजायास्तवोचिता।"

(अर्थात् हे लक्ष्मी, तू नीचों के पास जाती है। तेरे लिए यह उचित ही है। क्योंकि तेरा जन्म पंक से ही तो हुआ।) अनुमान है कि पहले ऐसी कहावतें बन गयी होंगी, पीछे तत्सम्बन्धी कथाएं गढ़ ली गयी होंगी। ऊपर की कहावत से संबन्धित कथा इस प्रकार कल्पित गयी है।

"किसी बेवकूफ ने एक कहावत सुनी कि रुपये के पास रुपया जाता है। वह खजाने की खिड़की पर जाकर खड़ा हो गया। पहरेदार ने पूछा — "यहां क्या करता है?"

1. कहावतें और मुहावरे — महावीर प्रसाद पोद्दार, पृ. १०८-१०९

बोला— "जरा एक बात की आजमाइश करने आया हूँ। लोग कहते हैं कि रुपये के पास रुपया जाता है। मैं एक रुपया अपने साथ लाया हूँ। देखना चाहता हूँ कि खजाने से रुपया मेरे पास जाता है क्या ?"

सिपाही समझ गया कि यह बेवकूफ़ आदमी है। लेकिन वह भी तमाशा देखने खड़ा हो गया कि देखें क्या करता है, क्या होता है ?

उस आदमी ने जेब से रुपया निकाला और खिड़की के किनारे खड़ा होकर उसे उछालने लगा और मन में सोचने लगा कि "अब खजाने में से रुपया उड़कर उसके पास आता है, अब आता है। संयोग-वश, वह रुपया उसके हाथ से गिरकर खिड़की के रास्ते खजाने के रुपयों में मिल गया। अब वह चिल्लाने लगा, लोग झूठ कहते हैं कि रुपये के पास रुपया जाता है।"

सिपाही ने कहा— "मेरी समझ में तो बात बिलकुल ठीक कहते हैं लोग। तुम्हारा रुपया रुपयों के पास चला गया न। वह बहुत थे, तुम्हारा एक था। बहुतों ने एक को खींच लिया। "जमात में करामात है।"[1]

यह भी देखने में आता है कि एक ही अभिप्रायवाली कहावतें विभिन्न भाषाओं में प्रचलित रहती हैं। पर, तत्संबन्धी लोक-कथाओं में अंतर रहता है। प्रदेश विशेष की रुचि और रूढ़ी ही इस भिन्नता का कारण है।

1. कहावतों की कहानियाँ : महावीर प्रसाद पोद्दार, पृ. १३४-३५

अब हम कहावतों की उत्पत्ति के दूसरे कारण पर विचार करें।

आ) ऐतिहासिक घटनाएँ — ऐतिहासिक घटनाओं के कारण कहावतों का जन्म होता है। कई कहावतें ऐतिहासिक गाथाओं के आधार पर निर्मित होती हैं। हमारे देश में गाथाओं की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। ऋग्वेद और ब्राह्मण ग्रन्थों में गाथाओं का स्वरूप हम देख सकते हैं। "ऐतरेय ब्राह्मण मे ऋक् तथा गाथा का अन्तर दिखाया गया है। ऋक् दैवी होती है। गाथाएँ मनुष्य के उपयोग का फल हैं। प्राचीन काल में किसी राजा के विशेष गुणों का कीर्तन करते हुए जो गीत गाये जाते थे, वे ही गाथाएँ कहलाने लगे। निरुक्त में दुर्गाचार्य ने स्पष्ट रूप से दिखलाया है कि वैदिक स्कूलों मे कहीं-कहीं जो इतिहास उपलब्ध होता है, वह कहीं ऋचाओं के द्वारा, और कहीं गाथाओं के द्वारा निबद्ध हुआ है। ऋचाओं के समान ही गाथाएँ भी छंदोबद्ध हुआ करती हैं।"[1]

वैदिक गाथाओं की परंपरा ब्राह्मण ग्रंथों तथा श्रीमद्भागवत आदि पौराणिक ग्रंथों में अक्षुण्ण है। संस्कृत की यह गाथा-परंपरा आगे चल-कर प्राकृत, पाली और अपभ्रंश भाषाओं में सुरक्षित है। हिन्दी तथा अन्य देशी भाषाओं में कालांतर में ये गाथाएँ ऐतिहासिक कहावतों का रूप धारण कर गृहीत हुई हैं। इन गाथाओं को ऐतिहासिक कहावत, [illegible] कह सकते हैं। प्रत्येक भाषा में ऐसी ऐतिहासिक कहावतों की [illegible] है। ऐसी कहावतें या प्रवादों से हमको [illegible] इतिहास [illegible] मिलता है। परन्तु, इसका अर्थ यह नहीं है

[1] राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन - डा० [illegible], पृ. ११

कि सभी कहावतें ऐतिहासिक दृष्टि से खरी उतरती हैं।

इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियों की उक्तियां कहावत के रूप में प्रचलित रहती हैं। उदाहरणार्थ— मारवाड़ विजय पर शेरशाह ने कहा था— "एक मुट्ठी भर बाजरे के लिए मैंने दिल्ली का राज खो दिया होता।"[1] जोधपुर के राजा मालदेव के साथ युद्ध करते-करते शेरशाह के छक्के छूट गये। युद्ध के अन्त में विजय प्राप्त होने पर भी शेरशाह हारते-हारते बच गया था, इसलिए उसके मुख से यह वाक्य निकल पड़ा। यह कहावत के रूप में प्रचलित हो गया है। जूलियस सीजर की यह उक्ति "The die is cast" अथवा सिंहगढ़ विजय पर शिवाजी की यह उक्ति "गड़ आला पण सिंह गेला" क्रमशः अंग्रेजी और मराठी में कहावत के रूपमें प्रचलित हो गयी है। कांग्रेस के सत्याग्रह के समय विशेष रूप से व्यवहृत उक्तियाँ "करो या मरो" (Do or die) और "दिल्ली दूर नहीं है" आदि इसी प्रकार की ऐतिहासिक कहावतें हैं।

किसी देश या प्रदेश में प्रचलित ऐतिहासिक किंवदंतियों या अनु-श्रुतियों से हमें इतिहास का ज्ञान होता है एवं तात्कालिक परिस्थितियों का पता लगता है। किन्तु, सभी देशों में इतिहास के साथ परंपरागत अनुश्रुतियाँ इस प्रकार मिली रहती हैं कि उनको अलग करना कठिन काम है। अनुश्रुतियाँ मौखिक रूप में सुरक्षित रहने के कारण उनमें प्रक्षेप भी रहता है। उदाहरण के लिए राजस्थान मे प्रसिद्ध इस कहावती छप्पय को लीजिए जिसमें कहा गया है कि मारवाड़ 'नवकोटि

1. वही पृ. ४४

मारवाड़' के नाम से प्रख्यात है—

माण्डोवर सामन्त हुवो, अजमेर सिद्धसुव ।
गूढ़ पूंगल गजमल्ल हुवो, लोद्रवे भाणभुव ।
आल पाल अरबद्द, भोजराज जालन्धर ।
जोगराज धरधाट हुवो, हांसू पावक्कर ।
नवकोटि किराडू सजुगत, थिर पवांरहर थप्पिया ।
धरणीवराह धर भाइयाँ, कोट बांट जू जू किया ।। [1]

परन्तु, इस छप्पय की ऐतिहासिकता पर विद्वानों ने संदेह प्रकट किया है। बहुत से विद्वान इसे प्रामाणिक नहीं मानते। इससे यह स्पष्ट होता है कि ऐतिहासिक कहावतों की परख बड़ी सावधानी के साथ होनी चाहिए। ऐसी कहावतों में इतिहास और कल्पना का सुन्दर सामंजस्य रहता है। जहाँ पर लिखित प्रमाण नहीं मिलते हैं, वहाँ इतिहास लेखक को अनुश्रुतियों से काम चलाना पड़ता है। इसलिए हमारे देश में तो अनुश्रुतियों की ओर अधिक ध्यान देना पड़ता है कि हमारे पूर्वजों ने अपना इतिहास लिखकर नहीं रखा है। एक-आध अपवाद को छोड़कर हिन्दू लेखकों का इतिहास ग्रंथ हमें नहीं मिलता है मुसलमान लेखकों के इतिहास ग्रंथ मिलते हैं जिनमें उन्होंने अपने बारे में ही अधिक कहा है, हिन्दुओं के बारे में कम। अलबरूनी ने लिखा है—

The Hindus do not pay much attention to the historical order of things, they are careless in relating

1. उद्धृत — वही पृ. १००

the chronological succession of things, and when they are pressed for information, they invariably take to tale-telling.[1]

अतएव ऐतिहासिक कहावतों से तथ्यांश ढूंढ निकालना असंभव न होने पर भी कठिन साध्य अवश्य है।

अब हम तेलुगु की एक ऐतिहासिक कहावत पर विचार करें— "अट्नुंटि कोट्टारा" यह प्रसिद्ध तेलुगु कहावत है। इस कहावत के पीछे इतिहास की घटना जुड़ी हुई है। मध्ययुग में देश के नाना भागों में छोटे-छोटे राज्य थे, कोई एक शक्तिशाली राज्य नहीं था। इस समय अंग्रेज, फ्रेंच, और मुसलमान राज्य-प्राप्ति के हेतु परस्पर लड़ते-झगड़ते थे। देश भर में अराजकता थी। तत्कारण, चोर-डाकुओं का आतंक अधिक हो गया था। सन् १६०० ई० के लगभग "वासिरेड्डी वेंकटाद्रि नायुडु" अमरावती का शासन कर रहा था। वह शूर-वीर ही नहीं "महादानी" भी था। कहा जाता है कि "अट्नुंडि कोट्टारा" यह कहावत उसके व्याज से ही उत्पन्न हुई है। "चाटुपद्यमंजरी" में इस संबन्ध में यह लिखा हुआ है– "उस युग में पथिकों को लूटनेवाले डाकू-लुटेरे अधिक दिखाई पड़ते थे। अनेक रीति से प्रजा को सतानेवाले इन डाकुओं में से एक सौ डाकुओं को वेंकटाद्रि नायुडु ने पकड़वाया और उनको एक कतार में खड़ा कर एक के बाद एक के सिर काटने की आज्ञा दी। एक ओर से सिर काटने का काम आरंभ करते समय वहाँ

१. वही, पृ. १०३– (पाद-टिप्पणी)

के लोगों ने प्रार्थना की कि "उस ओर से आरंभ किया जाय" उन्होंने यह सोचा कि कुछ लोगों को मार डालने के बाद दया की भीख मिल सकेगी। परन्तु, नायुडु ने उन सबको मौत के घाट उतार दिया और प्रजा के भय-क्षोभ को दूर किया।[1]

इस तरह की कई कहावतें उदाहरण के रूप में प्रस्तुत की जा सकती हैं।

(इ) पारिवारिक जीवन के अनुभव — कहावतों की उत्पत्ति का एक कारण पारिवारिक जीवन है। कुटुम्ब के बीच उत्पन्न होनेवाली विविध परिस्थितियों के कारण कहावतों की उत्पत्ति संभव होती है। तेलुगु की कहावत "रेण्डु कत्तुलोकयोरलो निमुडुनु गानि रेण्डु [illegible] ओक बंटिलो निमुडवु" (अर्थात् भले ही दो तलवार एक म्यान समा जायँ, पर दो बर्तन एक घर में नहीं समा सकते) को उदाहरण के रूप में ले सकते हैं। इस कहावत के मूल में पारिवारिक जीवन का हृदय ही दिखाई पड़ता है। संयुक्त परिवार में रहनेवाली स्त्रियों में आये दिन झगड़े होते ही रहते हैं। किसी न किसी रीति से पुरुष एक दूसरे से हिल-मिल कर रह भी जायँ, पर स्त्रियों में अक्सर लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं। यही कारण है कि ऐसी कहावत उत्पन्न हुई।

कुछ लोग कहते हैं कि घरेलू झगड़े आधुनिक काल की उपज है, प्राचीन काल में ऐसी बात नहीं थी। यह भ्रमात्मक ही है। कारण, प्राचीन काल से भी सास और बहू के हिल मिलकर रहने में बहू को

[1] [illegible] — पृ. ३९५.

कठिनाई होती थी। यदि यह बात न हो तो "आडबिड्ड मगमु मगडु", (ननद आधा पति ही है) "अत्तलेनि कोडलु उत्तमरालु, कोडलुलेनि अत्त गुणवंतुरालु" (वह बहू उत्तम गुणवाली है जिसकी सास नहीं, वह सास गुणवती है जिसकी बहू नहीं।) अत्ता ओक इंटि कोडले (सास भी कभी बहू थी) आदि कहावतें उत्पन्न न हो सकती थीं। पारिवारिक जीवन में उत्पन्न होनेवाली विविध परिस्थितियों के कारण ही इन कहावतों का जन्म हुआ। त्योहार मनाना, व्रताचरण करना आदि सामाजिक आचार व्यवहार प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। कहावतों की उत्पत्ति का यह एक कारण है। व्रताचरण करते समय स्त्रियाँ देवताओं से जो प्रार्थना करती हैं, वे भी कहावतों का रूप धारण कर चुकी हैं। आन्ध्र में ऐसी कहावतें खूब प्रचलित है। उदाहरण के लिए "स्वर्गानिकि वेळ्ळिना सवति पोरु वद्दु" (स्वर्ग में भी सौत नहीं चाहिए) एक प्रसिद्ध तेलुगु कहावत है। इसकी उत्पत्ति के सबन्ध विचार करते समय हमारा ध्यान आन्ध्र प्रदेश में प्रचलित "बोम्मल नोमु" (गुडियों का व्रत) की ओर जाता है। यह एक सामाजिक व्रत है। ग्राम की कुल वधुयें और कन्यायें मिलकर यह व्रताचरण करती हैं। संक्रान्ति से इसका प्रारंभ होता है। इस व्रत के लिए सावित्री, गौरीदेवी तथा पंचांग ब्राह्मण की पुत्तलिकायें आवश्यक होती हैं। नौ दिन तक यह व्रत मनाया जाता है। प्रतिदिन भक्ष्य-भोज्य-नैवेद्य रखा जाता है। इस तरह यह व्रत नौ वर्ष मनाया जाता है। प्रार्थना के वाक्य, जो स्त्रियाँ व्रताचरण के समय कहती हैं, वे इस प्रकार हैं —

"तल्लि दंडन, तंड्रि दंडन, अत्त दंडन, माम दंडन, पुट्टिंटि दंडन,

पुत्रुनि दंडन, राच दंडन एप्पाटिकि वद्दु, सहोदर दंडन चालकावले। स्वर्गानिकि वेळ्ळिना सवति पोरु वद्दु, मेडमीदकु वेळ्ळिना मारुतल्लि वद्दु। सावित्रि गौरीदेवम्मा नी दंडन एल्लकालं कावालि।"[1]

(अर्थात् माँ का दंड, पिता का दंड, सास का दंड, ससुर का दंड, पति का दंड, पुत्र का दंड और राजदंड कभी नहीं चाहिए। भाई का दंड सदा चाहिए। स्वर्ग में भी सौत नहीं चाहिए, मंजिल पर रहें तो भी सौतेली माँ नहीं चाहिए। सावित्री, गौरीदेवी, माँ, तुम्हारा दंड सदा चाहिए)

पारिवारिक जीवन के अनुभव के फलस्वरूप उत्पन्न हुई ऐसी कहावतें मिल जाती हैं। किसी एक समाज में ऐसी कहावतें मिलती हैं, यह बात नहीं, प्रत्युत् सभी समाजों में ऐसी कहावतों के लिए स्थान है।

(ई) प्रान्तभेद — स्वरूप निर्धारण की दृष्टि से कहावतों को दो वर्गों में रख सकते हैं— साहित्यिक कहावतें और लौकिक कहावतें। साहित्यिक कहावतें परिष्कृत और परिमार्जित होती हैं। भाषा की दृष्टि से भी वे खरी उतरती हैं। पर, साधारणतया लौकिक कहावतों में भाषा का उतना परिष्कार और परिमार्जन नहीं देखा जाता। एक बात है। साहित्यिक कहावतों के निर्माताओं का पता रहता है, पर लौकिक कहावतों के निर्माताओं का पता नहीं रहता। कवियों या लेखकों की उक्तियाँ साहित्यिक कहावतों का रूप धारण कर लेती हैं। यदा-कदा ऐसा भी संभव है कि साहित्यकार लोक प्रचलित (उस युग में प्रचलित)

१. आन्ध्रुल सांघिक-संस्कृति — [illegible] नया [illegible]
[illegible], पृ [illegible]

कहावतों के ही परिष्कृत रूप का प्रयोग कर देता है। अतः यह स्पष्ट रूप से कहना कठिन है कि अमुक उक्ति साहित्यकार की है, अमुक उक्ति लोक की है। इतना होते हुए भी यह बात अवश्य है कि कहावतों की उत्पत्ति में कवियों या लेखकों की उक्तियाँ, सूक्तियाँ और प्राज्ञोक्तियाँ महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

उत्पत्ति की प्राचीनता

जब हम कहावत की उत्पत्ति का प्रश्न उठाते हैं तब हमारे समक्ष उसकी प्राचीनता का भी प्रश्न उपस्थित हो जाता है। जिस आदिम अवस्था में मनुष्य के पास कागज नहीं था, लेखनी नहीं थी, लिपि नहीं थी, प्रेस नहीं था और पुस्तकें नहीं थीं, उस अवस्था में भी कहावतों का प्रचलन रहा होगा और[1] जीवन के उपयोगी संकेतों के लिए कहावतों पर ही लोग आश्रित रहे होंगे। किसी व्यक्ति के मुख से विशेष परिस्थिति में निकली उक्ति ही कहावत का स्वरूप धारण कर परंपरागत संपत्ति के रूप में चली आती होगी। श्रद्धा और विश्वास ही इस प्रकार कहावतों को अपनाने के पीछे काम करते हैं।

1) 'राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन'— डा० कन्हैयालाल सहल, पृ. ४५.

ज्ञान-विज्ञान संबन्धी पुस्तकें उस काल में प्राप्त नहीं थीं। पर, त्संबन्धी कहावतें प्रचलित थीं। अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, दर्शन, नीति-ास्त्र, इतिहास आदि से संबन्धित ग्रंथ उस काल में उपलब्ध नहीं थे। र, इन विषयों पर पर्याप्त प्रकाश डालनेवाली कहावतें थीं।

भाषा की उत्पत्ति के साथ ही कहावतों की उत्पत्ति हो गयी, यह ात पहले ही कही गयी है। समाज में व्यावहारिक भाषा में जिन कहा-तों का प्रचलन हुआ वे समाज की माँग के अनुसार था। चूँकि, कहा-तों में ज्ञान-विज्ञान की बातें निहित हैं, इसलिए आगे चलकर साहित्य ी रचना के लिए इनसे प्रेरणा मिली। मानव के मुख से सहज ही त्पन्न– गद्यात्मक हो या पद्यात्मक— ये मर्मस्पर्शी उक्तियाँ समाज की रोहर हैं।

मौखिक परंपरा के रूप में कहावतों का प्रचलन अति प्राचीन ाल से रहा है। वैदिक काल से चली आती हुई कहावतें आज भी ुरक्षित हैं। ये कहावतें या तो मौखिक परंपरा के रूप में वर्तमान हैं ा कवियों या लेखकों की कृतियों में प्रयुक्त होकर सुरक्षित हैं। जिन हावतों को हम आधुनिक मानते हैं, उनके मूल में भी अनुसंधान करने र प्राचीनता दिखाई पड़ सकती है। प्राचीन काल की ये कहावतें ारत की समस्त भाषाओं में किसी न किसी रूप में वर्तमान हैं। प्रायः त्येक कहावत के पीछे कोई न कोई कथा जुड़ी रहती है, तथापि यह ानना सुगम नहीं है कि किस कहावत की उत्पत्ति का मूल कारण ौन-सा है।

"उदर निमित्तं बहुकृत वेष:" यह कहावत हिन्दी और तेलुगु आदि कई भाषाओं में चलती है। इस कहावत के मूल के संबन्ध में विचार करने पर प्रकट होता है कि यह जगद्गुरु शंकराचार्य जी के "भजगोविंद" श्लोक की एक पंक्ति है।

"तिरिया चरित न जाने कोय, खसम मारके सत्ति होय" यह एक कहावत है जिसका मूल हमको कथा सरित्सागर में मिल जाता है। ऊपर हमने ऐसी कुछ और कहावतों की चर्चा की है। इस प्रकार हम प्राचीन साहित्य में कहावतों के मूल को ढूंढ सकते हैं।

हम अपने नित्य-जीवन का न जाने कितनी कहावतों का प्रयोग करते रहते हैं। पर, इस ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता अथवा बहुत कम जाता है कि हम कहावतों का प्रयोग कर रहे हैं। प्रसंगानुसार ऐसी कहावतें हमारे मुंह से निकल जाती हैं। विद्वान लोग भी इनका प्रयोग करते हैं। इतना होते हुए भी इनके निर्माताओं का पता नहीं रहता। बात यह है कि प्राज्ञोक्ति भी जब कहावत की सीमा में आ जाती है तब उसके निर्माता का नाम विस्मृत कर दिया जाता है। व्यक्ति की संपत्ति जब लोक की संपत्ति हो जाती है तब व्यक्ति का नाम याद नहीं रहता। अपवाद के रूप में कुछ लोगों के नाम याद रह जायँ तो रह जायँ।

प्रथम अध्याय में यह बताया गया है कि कहावत व्यावहारिक भाषा में होती है। उसमें लोक प्रियता का अंश विद्यमान है। यही कारण है कि उसका प्रयोग सर्वत्र होता है। साहित्य में भी उसका प्रयोग होता है। पर, यह कहना अवश्य कठिन है कि किस कहावत को साहित्य में आने में कितना समय लगा।

सारांश यह कि बहुत-सी कहावतों के निर्माताओं का पता नहीं चलता और कहावतों की उत्पत्ति के संबन्ध में हमें केवल कल्पना से काम लेना पड़ता है। चाहे कुछ भी हो, इस बात में संदेह नहीं कि कहावतों की उत्पत्ति के मूल में मानव-जीवन संबन्धी घटनाओं का मुख्य हाथ है।

तृतीय अध्याय

कहावतों का क्रमिक विकास

कहावतों की उत्पत्ति के मूल कारणों पर विचार करने पर यह बात ज्ञात हुई कि कहावतों का जन्म जीवन की नाना परिस्थितियों का फल है। हम देख चुके हैं कि कहावतें अधिकतर आदान-प्रदान के रूप में व्यवहृत रही हैं। अतएव, उन में समय-समय पर परिवर्तन होते रहते हैं। यह परिवर्तन ही विकास है। जिस प्रकार प्राचीन काल से चली आती हुई भाषा में अनेक प्रकार के परिवर्तन हुए और वह विकसित हुई, उसी प्रकार कहावतों के रूपों में भी अनेक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं, जो वस्तुतः उनके विकास के कारण हैं।

कहावतों के विकास को हम इस प्रकार दिखलाने का प्रयत्न करेंगे—

(१) किसी भाषा की निजी कहावतें अर्थात् वे कहावतें उस भाषा की अपनी मानी जा सकती हैं, जिन में कालक्रमानुसार विकास दृष्टिगोचर होता है।

(२) रूप-परिवर्तन के साथ दूसरी भाषाओं से आयी कहावतें।

(३) ऐसी कहावतें जो प्रायः सर्वत्र पायी जाती हैं, पर देश या जातिगत विशेषता के अनुसार अन्तर दिखाई पड़ता है।

(४) वे कहावतें जिनमें भाव-साम्य दिखलाई पड़ता है, पर अभिव्यक्ति की शैली में भिन्नता रहती है।

(५) कहावतों में पाठ भेद।

(६) पुरानी कहावतों का लोप और नयी कहावतों की उत्पत्ति।

क्रमशः इन पर विचार करें—

(१) किसी भाषा के निजी कहावतें — साधारण रूप से कहा जा सकता है कि कहावतें किसी देश या जाति विशेष की संपत्ति नहीं होतीं, वे तो समस्त मानव-जाति की निधि हैं। तथापि, हम देखते हैं कि कुछ कहावतें किसी एक भाषा में विशेष रूप से प्रयुक्त होती हैं जो उस भाषा की ही मानी जा सकती हैं। ऐसी कहावतों में उस भाषा, प्रदेश, जाति की विशिष्टताओं का अवलोकन कर सकते हैं। इन कहावतों के अध्ययन से संस्कृति और सभ्यता पर भी पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। लोगों की रीति-नीति आचार-विचार रुचि-अभिलाषा आदि के संबन्ध में जाना जा सकता है। उदाहरणार्थ तेलुगु की एक कहावत की ओर दृष्टिपात करें जिसमे तेलुगु जनता की रुचि का विशेष पता चलता है— "तल्लिलेनि पिल्ल, उप्पुलेनि कूर" (मातृहीन लड़की और नमक रहित तरकारी अर्थात् इन दोनों को पूछनेवाले कौन हैं) इस कहावत में एक सामान्य बात के साथ विशेष बात का उल्लेख है। यह मानी हुई बात है कि मातृहीन लड़की की आशा-आकांक्षायें शायद ही पूरी हो। उसमें वह पूर्णता नहीं दीखता जो माता के प्रेम से प्राप्त हो

सकती है। प्याज का तरकारियों में विशिष्ट स्थान है। प्रायः लोग तरकारी में उसका उपयोग करते हैं। इस कहावत से मालूम होता है कि जन-समाज में इस तरकारी का क्या महत्व है।

"अजीर्णे भोजनं विषम्" "भिन्नरुचिर्हि लोकः" आदि कहावतें जिनका प्रयोग साधारणतया प्रत्येक भारतीय भाषा में होता है, संस्कृत भाषा की अपनी कही जा सकती हैं।

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि कई एक ऐसी कहावतें मिलेंगी जिनके संबन्ध में यह बताना कठिन है कि इनका प्रयोग पहले-पहल किस भाषा में होने लगा। उदाहरणार्थ इन कहावतों को लीजिए—

अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्। (संस्कृत)

अध जल गगरी छलकत जाय। (हिन्दी)

निण्डु कुण्ड तोणकदु। (तेलुगु)

तुंबिद कोड तुळुकोल्ल। (कन्नड़)

निरैकुडं नीर तुळुंबादु। (तमिळ)

नरकोडं तुळुंपकयिल्ल। (मलयालम)

Empty vessels give the greatest sound. (अंग्रेजी)

इन कहावतों की परीक्षा करने पर ज्ञात होगा कि इन में भावसाम्य है मूल भाषा की कहावत का पता लगाना कठिन है। एक ही कहावत विविध भाषाओं में विविध रूपों में आ सकती हैं, उसमें परिवर्तन भी हो सकता है। यह भी संभव है कि अनुभव की समानता के कारण ऐसी कहावतें प्रत्येक भाषा में दिखाई पड़े। दूसरे शब्दों में किसी भी विशेष

और इन समानताओं को हम कहावतों में देख सकते हैं।

इस विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि किसी भाषा की निजी कहावतों का पता लगाना सुगम कार्य नहीं है। तथापि, भाषा, प्रदेश और संस्कृति-सभ्यता को दृष्टि में रखकर कुछ कहावतों के संबन्ध में निर्णय कर सकेंगे। जिन कहावतों से किसी प्रदेश की रीति-नीति का ही पता चलता है, जिनका प्रयोग उस प्रदेश की सीमा में ही होता है, उनको उस भाषा की निजी कहावतें मान सकते हैं।

(२) रूप-परिवर्तन के साथ दूसरी भाषाओं से आयी हुई कहावतें —

ऊपर बताया गया है कि कहावतों का प्रचलन प्रत्येक प्रदेश में होता है। कुछ कहावतों से प्रदेश विशेष की विशिष्टतायें भी प्रकट होती हैं। इनके अतिरिक्त ऐसी कहावतें कम संख्या में नहीं हैं जो एक भाषा से दूसरी भाषा में आ गयी हों। ऐसी कहावतें दो रूपों में दिखाई पड़ती हैं — (अ) शब्दशः अनूदित होकर आयी कहावतें। (आ) वे कहावतें जिन में भावानुवाद ही हुआ हो अर्थात् रूप-परिवर्तित होकर आयी कहावतें।

"यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी" यह एक शास्त्रीय कहावत है जिसका प्रचलन संस्कृत भाषा में है। इस कहावत का प्रयोग इतर भारतीय भाषाओं में भी देखा जाता है। विद्वत्-समाज में इसका प्रयोग ज्यों-का-त्यों होता है तो साधारण लोगों में इसका अनूदित रूप प्रचलित है। हिन्दी में "जाकी जैसी भावना, ताकि तैसी सिद्धी" अथवा "जाकि भावना जैसी प्रभु मूरत मिलइ तैसी" कहावत प्रचलित है।

ध्यान देने की बात यह है कि इन रूपों में पहला अनूदित है तो दू
शब्दशः अनूदित नहीं है। उसमें भाव का ही रूपांतर हुआ है।

"ओखली में सिर दिया तो मूसले से क्या डर?" (हिन्दी

"रोटिलो तल दूर्चि रोकटिपोट्लकु वेरवदीरना!" (तेलुगु

ये कहावतें संस्कृत से आयी हुई मालूम पड़ती है। इनका
पंचतंत्र (मित्रलाभ) में दिखाई पड़ता है। इसी प्रकार "मुंह में र
राम, बगल में छुरी" (हिन्दी) "नालिक तीपु, लोन विषमु" (तेलु
जैसी कहावतों का भी मूल पंचतंत्र में है। कई कहावतों की उत्प
पंचतंत्र की कहानियों के आधार पर हुई है। उदाहरणार्थ तेलुगु-कहा
"चेरपकुरा चेडेदवु" (दूसरों की हानि मत करो, स्वयं नष्ट हो जाओ
का मूल मृग-जंबुक की कथा है। "दूसरों को हानि पहुँचानेवाले
नष्ट हो जाते हैं"— इस नीति वाक्य से उपर्युक्त कहावत की उत्प
हुई है और थोड़ा रूप-परिवर्तन स्पष्ट है।

ऊपर कहा गया है कि कुछ कहावतें ज्यों की त्यों अनूदित रह
हैं। उदाहरणार्थ — Necessity is the mother of invention. अंग्रे
कहावत का शब्दशः अनूदित रूप जो हिन्दी में चलता है, इस प्रक
है— 'आविष्कार आवश्यकता की जननी है।' 'Where there is a w
there is a way,' का रूप — 'जहाँ चाह वहाँ राह' है। 'मल
भिल्लपुरंध्रि चंदनतरुकाष्टं इन्धनं कुरुते' का अनूदित रूप है
'मलय गिरि की भीलिनी चंदन देत जराय', ऐसे कई उदाहरण उद्
किये जा सकते हैं।

जिन कहावतों में भाव का ही अनुवाद हुआ हो, ऐसी कहावत

। एक-दो उदाहरण लीजिए — All that glitters is not gold. ग्रेजी कहावत है। "तेल्लनवन्नि पालु कावु, मेरिसेवन्नि बङ्गारु कावु" अथवा "मेरिसेवन्नि बङ्गारु कावु, पच्चनिदंतयु बंगारमु कावु" इन दोनों के बाह्य रूप में अन्तर भले ही दिखाई पड़े, पर अभिव्यक्त भाव एक ही है।

इस वर्ग की कहावतों में और एक विशेषता है। कुछ कहावतों मूल भाषा में व्यक्त भाव के साथ-साथ समानता के आधार पर नया भाव भी व्यक्त रहता है उदाहरण के लिए— "क्षुधातुराणां न रुचिर्न क्वम्" संस्कृत की उक्ति है। तेलुगु की इस कहावत से तुलना कीजिए — "आकलिकि रुचि येरगदु, निद्र सुख मेरगदु, वलपु सिग्गु रगदु" (भूख को रुचि नहीं, निद्रा को सुख नहीं, प्रेम को लज्जा नहीं) स्पष्ट है कि तेलुगु-कहावत संस्कृत की उपर्युक्त उक्ति का ही अनुकरण । इसे रूपांतर के साथ आयी हुई कहावत कहने में आपत्ति नहीं हो सकती।

विकास का यह चक्र घूमता ही रहता है। कहावतों में कभी भी इतना परिवर्तन हो जाया करता है कि अर्थ में भी (बाह्य परिवर्तन साथ-साथ) भिन्नता दृष्टिगोचर होने लगती है। उदाहरण के लिए भारत वर्ष की अधिकांश भाषाओं में प्रचलित "कहाँ भोज, कहाँ गंगा तेली" लोकप्रसिद्ध कहावत को लीजिए। यह लोकोक्ति वैषम्यमूलक अर्थ में प्रयुक्त होती है। काश्मीर तक आते-आते इसका क्या रूप हो गया, देखिए— "जहाँ राजा भोज वहाँ गंगा तेली"। विषमतामूलक अर्थ को छोड़कर समतामूलक अर्थ को ग्रहण कर लिया।

"मौनं सम्मति लक्षणम्" अथवा "मौनं अर्धांगीकारम्" जैसी संस्कृत की लोकोक्तियों का प्रयोग प्रायः सर्वत्र होता है। तेलुगु में इसी प्रकार की और एक कहावत चल पड़ी है — "ऊरकुंटे पोम्मनट्टु" (चुप रहना अस्वीकार करना है।) संस्कृत-लोकोक्ति और तेलुगु-कहावत में अर्थ भेद स्पष्ट है।

कहीं कहीं कहावतों में प्रयुक्त नामों में भी परिवर्तन दिखाई पड़ता है। इस परिवर्तन का कारण प्रदेश-विशेष की रुचि मात्र है। ऊपर उद्धृत "कहाँ राजा भोज कहाँ गंगा तेली" के निम्न लिखित रूप में प्राप्त होते हैं—

कहाँ राजा भोज कहाँ ढूंडा तेली। (बुंदेलखंड में)
कहाँ राजा भोज कहाँ कहाँ भोजवा तेली। (भोजपुर में)
कहाँ राजा भोज कहाँ लखुवा तेली। (भोजपुर में)
कहाँ राजा भोज कहाँ कनवा तेली। (बाँदा में)
कहाँ राजा भोज कहाँ कंगाल तेली। (साधारण प्रचलित रूप)

कहावतें मौलिक परंपरा के कारण परिवर्तित होती रहती हैं। जनता की रुचि के अनुसार उनमें परिवर्तन असंभव नहीं है।

(३) देश या जाति की विशेषता बतलानेवाली कहावतें— प्रथम अध्याय में यह बतलाया गया है कहावतों के अध्ययन से किसी देश या समाज की रीति-नीति, आशा-आकांक्षा और सभ्यता-संस्कृति आदि की परख कर सकते हैं। ऐसी कहावतें जिन में किसी देश या समाज का व्यक्तित्व प्रकट होता हो, प्रत्येक भाषा में वर्तमान रहती हैं। यहाँ कुछ कहावतों पर विचार करेंगे। राजा भोज से संबन्धित

वत का उल्लेख ऊपर किया गया है। भारत के कई प्रदेशों में यह वत प्रचलित है। यद्यपि, उसमें प्रदेश विशेष की रुचि के अनुसार र परिवर्तन लक्षित होता है, तथापि उस कहावत में राजा भोज नाम परिवर्तित नहीं हुआ है। राजा भोज भारतीय संस्कृति के क हैं।

आन्ध्र में "वेमन चेप्पिनदि वेदम्" एक कहावत प्रचलित है। कहावत तेलुगु की अपनी मानी जा सकती है। तेलुगु जनता में कवि र की उक्तियाँ कितनी प्रिय और प्रसिद्ध हो गयीं, यह बात इस त से ज्ञात होती है। तेलुगु की एक दूसरी कहावत है— "अक्कलु रकु नक्कलु कूसे" समाज में अनेक प्रकार की रीति-नीतियाँ होती इस कहावत में ऐसी एक विशेषता की ओर निर्देश है। प्राचीन से ही तेलुगु जनता में अनेक प्रकार की कथा-कहानियाँ, गीत प्रचलित हैं। कथा कहकर जीविका कमानेवाली जातियाँ भी हैं। कलु" ऐसी ही जाति है। ब्राह्मणों के घरोंमें "कादंबरी कथा" सुनने की प्रथा है। कृष्णा, गुंटूर और गोदावरी जिले में विशेष इस कथा का प्रचार है। ऊपर उद्धृत कहावत की उत्पत्ति इसके ही हुई। यहाँ कथा सवेरे प्रारंभ होती है और इसकी समाप्ति को होती है। कथा श्रवण कर जब तक स्त्रियाँ उठती हैं, तब तक म हो जाती है। इसलिए "अक्कलुलेचेवरकु नक्कलु कूसे" कहावत ड़ी है। इस कहावत के परिशीलन से यह बात समझ में आती है लुगु जनता में इस प्रकार की कहानी कहने और सुनने की प्रथा थी।

(४) कहावतों में भावसाम्य और अभिव्यक्ति की शैली में भिन्नता—

कई कहावतों में हम भाव साम्य देख सकते हैं। ऐसी कहावतें सभी भाषाओं में प्रचलित रहती है। उदाहरण के लिए हिन्दी में प्रचलित इन दो कहावतों को लीजिए जिन्हें भाव-साम्य की दृष्टि से एक श्रेणी में रख सकते हैं— आप मरे जग परलै।

आप डूबे जग डूबा।

इन दोनों में व्यक्त भाव एक ही है। केवल प्रयुक्त शब्दों में अन्तर है।

जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं।

भूँकनेवाले कुत्ते काटते नहीं।

इन दो कहावतों को देखिए। इनमें भावसाम्य दिखाई पड़ता है, पर अभिव्यक्ति की शैली में अन्तर है। मनुष्य ने अपने अनुभव के आधार पर ही इनका निर्माण किया है। तथापि स्मरण करना चाहिए, एक के सादृश्य पर दूसरे की रचना की गयी है। "जैसा करे वैसा भरै" कहावत का भाव "अपनी करनी, पार उतरनी" अथवा "जो बोते हैं सो काटते हैं" कहावतों में भी निहित है। "बुर्ई सो लुनई निदाना" (तुलसी) और "बोवे बबूल का पेड़ आम कहाँ तें होय" (कबीर) आदि उक्तियों में भी वह भाव व्यक्त किया गया है। हाँ, अभिव्यक्ति की शैली में भिन्नता है। "जो हरमजादा सहरी खाय, वह रोजा भी रखे" और "जो गुड खाये वह कान छिपाये" को एक श्रेणी में रख सकते हैं। ऐसी अनेक कहावतें उदाहरण के रूप में प्रस्तुत की जा सकती हैं।

भावसाम्य की दृष्टि से हम एक भाषा की कहावत की तुलना

सरी भाषा की कहावत से भी कर सकते हैं । कुछ कहावतें देखिए —

(१) अत्त पेरु पेट्टि कूतुरुनि कुंपट्लो वेशिनट्लु । (तेलुगु)

(जैसे सास का नाम लेकर बेटी को अंगीठी में डाला)

धोबी का धोबिन पर बस न चले, गधैया के कान उमेठें। (हिन्दी)

लुगु और हिन्दी की इन कहावतों में भाव की समानता स्पष्ट है। भिव्यक्ति की शैली में भिन्नता ध्यान देने योग्य है । दोनों में लोकानुभव की प्रधानता है ।

(२) "गंगलो मुनिगिना काकि हंस अवुतुंदा ?"

[गंगा में डुबकी लेने से कौआ हंस हो जायेगा ?]

लुगु-कहावत का यही भाव हिन्दी-कहावत में इस प्रकार व्यक्त हुआ — "खर को गंगा नहाइये तऊ न छाँड़ै छार"

दोनों कहावतों में समानता है । तेलुगु-कहावत में प्रश्नार्थक के रूप में व्यक्त किया गया है तो हिन्दी-कहावत में नकार का प्रयोग कर निश्चित रूप प्रदान किया गया है ।

'भाव साम्य' की दृष्टि से कहावतों की तुलना अनेक भाषाओं की कहावतों को लेकर भी कर सकते हैं । उदाहरण के लिए —

Blind of sight called Mr. Bright. (अंग्रेजी)

आँखों से अंधा, नाम नयनसुख । (हिन्दी)

इंटिपेरु कस्तूरिवारु, इंट्लो गब्बिलालु वासन । (तेलुगु)

(घर का नाम कस्तूरी है, पर घर में दुर्गंध ।)

देखिए परिशिष्ट-१.

हेसरु क्षीरसागर, मनेलि मज्जिगेगे गति इल्ल। (कन्नड)

(नाम क्षीरसागर है, पर घर छाँछ तक न मिले।)

इन कहावतों में अभिव्यक्ति की शैली में भिन्नता होते हुए भी अभिव्यक्त भाव एक ही है। मानव अनुकरण प्रिय है। संभव है, अनुकरणप्रियता के कारण भी इस कहावतों का निर्माण हुआ हो।

(५) कहावतों में पाठ-भेद — मौखिक परंपरा के रूप में कहावतें प्रचलितरही हैं। अतएव उनमें पाठ-भेद का होना स्वाभाविक ही है। नीचे उदाहरण के रूप में ऐसी कतिपय कहावतें दी गयी हैं जिनमें पाठ भेद दृष्टिगोचर होता है—

(१) बाप न भैया सब से भला रुपैया।

पाठ-भेद— भाई न बडो, बहन न बडो, सब से बडो रुपैया।

(२) घर की मुर्गी दाल बराबर।

पाठ-भेद— घर की मुर्गी साग बराबर।

(३) भागते भूत की लंगोटी भली।

पाठ-भेद— भागते चोर की लंगोटी भली।

(४) बैठे से बेगार भली।

पाठ-भेद— बेकार से बेगार भली।

(५) गुड्डिकन्न बेल्ल मेलु।

(अंधे से काना भला)

पाठ-भेद— गुड्डिकन्नु कंटे मेल्लकन्नु मेलु।

(अंधी आँख से कानी आँख अच्छी।)

(६) पिडि मैतो रोट्टि अंत।

(जितना आटा उतनी रोटी)

पाठ-भेद— पिंडि कोद्दी रोट्टि या पिंडी वेंतो निप्पटि अंते।

इन कहावतों के परिशीलन से यह प्रकट होता है कि इनमें अधिकतर शब्दों में ही परिवर्तन दिखाई पड़ता है। यत्र-तत्र भाव में भी थोड़ा अंतर दिखाई पड़ता है। उदाहरणार्थ "एवरि वेरि वारिका-नंदम्" (जिसको पागलपन है, उसे उसी में आनंद है।) और "एवरिकंपु वारिकिंपु" (जिसके पास दुर्गंध, उसे वही अच्छी लगती है।) दोनों तेलुगु कहावतें एक ही प्रकार की हैं। पर, प्रकरण भेद के अनुसार इनका प्रयोग होता है। इसी भाँति, भाव साम्य होते हुए भी कहावतों के प्रयोग में भिन्नता दिखाई पड़ती है। अतएव, कहा जा सकता है कि पाठ-भेद होते हुए भी प्रत्येक कहावत का अपना अस्तित्व है, अपना महत्व है।

(६) पुरानी कहावतों का लोप और नयी कहावतों की उत्पत्ति—

समय और परिस्थिति के अनुसार कुछ कहावतों का आविर्भाव होता है और कुछ कहावतें लुप्त हो जाती हैं। साधारणतया यह देखा जाता है कि जो कहावतें किसी ऐतिहासिक या तत्कालीन परिस्थिति के कारण बनी होती हैं, कालांतर में उनका प्रचार कम हो जाता है या उनकी आवश्यकता नहीं पड़ती, वे लुप्त हो जाती हैं। अंग्रेजों के शासन काल में यह कहावत प्रचलित थी — "कमावै धोती हाला, खा ज्याय टोपी हाला"[1] (हिन्दुस्तानी कमाते और अंग्रेज खा जाते हैं) स्वतंत्रता

[1] राजस्थानी कहावतें — एक अध्ययन : डा० कन्हैयालाल सहल, पृ. ५५

प्राप्ति के अनंतर इस कहावत की आवश्यकता नहीं रह गयी है। फलतः उसका प्रयोग नहीं के बराबर होता है।

युग की रुचि के अनुसार कुछ कहावतों का प्रचार अधिक या कम होता है। जागीरदारी प्रथा, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, बहु विवाह और दहेज प्रथा आदि से संबन्धित कहावतों का प्रयोग युग की माँग के अनुसार होता है। वर्तमान युग में इन विषयों से संबन्धित कहावतों का प्रयोग बहुत कम होने लगा है। कुछ समय के बाद इनका लोप हो जाय तो कोई आश्चर्य नहीं।

जैसे-जैसे जनता सुशिक्षित होती जाती है वैसे-वैसे अश्लील कहावतों का लोप होता जाता है।

जिस प्रकार पुरानी कहावतों का प्रचार कम हो जाता है या वे लुप्त हो जाती हैं, उसी प्रकार नयी परिस्थिति के अनुसार नयी कहावतों का निर्माण संभव है। कन्नड़ की एक कहावत है— "कालेजिगे होदवनिगे कैवल्यविल्ल" अर्थात् जो कालेज जाता है, उसको "कैवल्य" नहीं मिलता। संदेह नहीं कि यह कहावत आज की कालेज शिक्षा की आलोचना करनेवाली आधुनिक कहावत है। इस युग में कांग्रेस-राज्य से संबन्धित कहावतों की उत्पत्ति हो जाय तो कोई विस्मय का विषय नहीं। कुछ भाषाओं में तो ऐसी कहावतें प्रचलित भी हैं। देश की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि परिस्थितियों के परिणाम स्वरूप नयी कहावतों का जन्म होता है।

इनसे यह स्पष्ट है कि कुछ कहावतें स्थिर रूप से रह जाती हैं तो कुछ कहावतें काल के आघात से बच नहीं पातीं। जन्म लेना और "कालगति" को प्राप्त करना प्रकृति का नियम है जो कुछ कहावतों पर भी लागू होता है।

चतुर्थ अध्याय

कहावतों का सम्यक वर्गीकरण है

सर्वप्रथम इस विषय पर विचार करना आवश्यक हो जाता है कि कहावतों के वर्गीकरण के आधार का क्या हो ? कहावतों के बाह्य रूप को आधार मानकर उनका वर्गीकरण किया जाय अथवा उनमें वर्णित विषय को आधार मानकर वर्गीकरण किया जाय ? विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से कहावतों का वर्गीकरण किया है। एतत्कारण, इस विषय पर विचार करना और भी आवश्यक हो जाता है। वर्गीकरण के संबन्ध में जो मतभेद दिखाई पड़ते हैं, उनके कारण भी हैं। कई ऐसी कहावतें मिल जाती हैं, जिनके संबन्ध में निर्णय करना कठिन है कि वे किस वर्ग में रखी जायँ। उदाहरणार्थ नीचे की तेलुगु-कहावतों पर दृष्टिपात कीजिए—

(१) एद्दुपुण्डु काकोकि मुद्दा ?

(बैल का घाव कौवे को प्रिय होगा ?)

(२) एनुग पडुकुन्न गुर्रमंत एत्तु।

(हाथी सोवे तो भी घोड़े के बराबर ऊँचा।)

उपर्युक्त कहावतों को किस वर्ग में रखें ? उन्हें पशु संबन्धी कहावतों में रख सकते हैं, लोक-जीवन संबन्धी कहावतों में भी रख सकते हैं। इनके संबन्ध में निर्णय करना अवश्य कठिन है। कुछ कहावतों को मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दोनों वर्गों में रख सकते हैं। उदाहरण के लिए--

"करचमंटे कप्पकु कोपं, विडवमंटे पामुकु कोपम्।" (डसने के लिए कहे तो मेंढ़क को गुस्सा आता, छोड़ने के लिए कहे तो साँप को गुस्सा आता है।) इस कहावत में लोकानुभव की स्पष्ट झलक है। Face is index of man अंग्रेजी कहावत है। इसे किस वर्ग में रखें ? इसमें लोकानुभव तो है ही, मनोविज्ञान की कसौटी पर भी इसे कसा जा सकता है। इस प्रकार अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। प्रधान वर्गों के साथ उपवर्ग भी करना पड़े तो कठिनाई और भी अधिक हो जाती है। सारांश यह कि वर्गीकरण का अमुक आधार है, अमुक वर्गीकरण ठीक है, ऐसा कहना कठिन है।

कुछ विद्वानों ने कहावतों का वर्गीकरण अकारादि अक्षर क्रमानुसार किया है। साधारणतया कहावतों के संग्रहकर्ता इसी क्रम को अपनाते हुए दिखाई पड़ते हैं। Telugu proverbs के संग्रहकर्ता Captain M. W. Carr ने इसी क्रम को अपनाया है। हिन्दी और तेलुगु कहावतों के अनेक संग्रहकर्ताओं ने ऐसा ही किया है। इसका कारण स्पष्ट है, यह क्रम सरल तथा सुबोध है। परन्तु, इसे वैज्ञानिक नहीं मान सकते। कहावतों का वर्गीकरण वर्ण्य-विषय को आधार मानकर किया जा सकता है, जैसे धार्मिक, नैतिक आदि। वर्गीकरण का तीसरा भी विधान है, वस्तु या पदार्थ के अनुरूप वर्ग में विभाजन, जैसे— पशु पक्षी से

संबन्धित कहावतें, कृषि से संबन्धित कहावतें, पेशे से संबन्धित कहावतें इत्यादि। उक्त दोनों पद्धतियों को अपनाकर वर्गीकरण करना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। तथापि, विद्वानों ने वर्ण्य-विषय के आधार पर कहावतों का वर्गीकरण करना अधिक महत्वपूर्ण माना है। 'राजस्थानी कहावतें — एक अध्ययन' के लेखक डॉ० कन्हैयालाल सहल जी लिखते हैं— "वर्ण्य-विषय को लेकर कहावतों का वर्गीकरण करना अधिक उपादेय है और सब से अन्त में एक ऐसी सूची दी जा सकती है जिसमें कहावतों के प्रत्येक महत्वपूर्ण शब्द का समावेश कर दिया जाय। यह सूची नितांत आवश्यक है। क्योंकि यदि इस प्रकार की सूची न दी जाय तो कहावतें आसानी से ढूंढी नहीं जा सकतीं और यदि वे ढूंढी न जा सकें तो फिर उनकी उपयोगिता नहीं रह जाती।"[1]

वर्ण्य-विषय को आधार मानकर जिन विद्वानों ने कहावतों का वर्गीकरण किया है, उनमें भी मतभेद दिखाई पड़ता है।

"बिहार प्रावर्ब्स" के सम्पादक जॉन क्रिश्चियन ने कहावतों का वर्गीकरण यों किया है—

(१) मनुष्य की कमजोरियों, त्रुटियों तथा अवगुणों से संबद्ध।

(२) सांसारिक ज्ञान-विषयक।

(३) सामाजिक और नैतिक।

(४) जातियों की विशेषताओं से संबद्ध।

१. [illegible]

(५) कृषि और ऋतुओं से संबन्धित।

(६) पशु और सामान्य जीव-जंतुओं से संबन्धित।

"*Marathi proverbs*" के संपादक मैनवारिंग (*Manwaring*) ने कहावतों का इस प्रकार वर्गीकरण किया है— कृषि, जीव-जन्तु, अंग और प्रत्यंग, भोजन, नीति, स्वास्थ्य और रुग्णता, गृह, धन, नाम, प्रकृति, संबन्ध, धर्म, व्यवहार और व्यवसाय तथा प्रकीर्ण।

वर्ण्य-विषय के आधार पर डॉ० सहल ने राजस्थानी कहावतों का वर्गीकरण इस प्रकार किया है—

१. ऐतिहासिक कहावतें।

२. स्थान संबन्धी कहावतें।

३. राजस्थानी कहावतों में समाज का चित्र।

(क) जाति संबन्धी कहावतें।

(ख) नारी संबन्धी कहावतें।

४. शिक्षा, ज्ञान और साहित्य।

(क) शिक्षा संबन्धी कहावतें।

(ख) मनोवैज्ञानिक कहावतें।

(ग) राजस्थानी साहित्य में कहावतें।

५. धर्म और जीवन दर्शन।

(क) धर्म और ईश्वर विषयक कहावतें।

(ख) शकुन संबन्धी कहावतें।

(ग) लोक-विश्वास संबन्धी कहावतें।

(घ) जीवन दर्शन संबन्धी कहावतें।

६. कृषि संबन्धी कहावतें।

७. वर्षा संबन्धी कहावतें।

८. प्रकीर्ण कहावतें।

कुछ लोगों ने कहावतों का वर्गीकरण निम्न प्रकार किया है —

१. नैतिक, धार्मिक, तथा उपदेशात्मक।

२. लोक व्यवहार संबन्धी।

३. मानव चरित्र के संबन्ध में आलोचनात्मक तथा व्यंग्यात्मक।

४. खेती और ऋतु संबन्धी।

५. जीव-जन्तु संबन्धी।

६. रीति-रिवाज, शादी-ब्याह, यात्रा, अंध विश्वास।

७. जाति और वर्ग संबन्धी।

सारांश यह कि कहावतों के वर्गीकरण के संबन्ध में विद्वानों का एक निश्चित अभिप्राय नहीं है। वर्गीकरण का विधान कुछ भी हो यह स्मरण रखना चाहिए कि वे सर्वथा एक दूसरे से पृथक नहीं है। जैसा कि बताया गया है, एक ही कहावत में दो या दो से अधिक संबद्ध विषय दिखाई पड़ सकते हैं।

कहावतों का वर्गीकरण रूप और विषय दोनों को आधार मानकर किया जा सकता है। रूप को आधार मानकर कहावतों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है —

१. प्रश्नरूपक कहावतें — इसके अन्तर्गत वे कहावतें आती हैं जो कोई प्रश्न उपस्थित करती हैं। उदाहरणार्थ इन कहावतों को लीजिए —

सारी रामायण सुन गए पर यह न मालूम हुआ कि राम राक्षस थे या रावण ?

जंगल में मोर नाचा किसने जाना ?

नटनी जब बाँस पर चढ़ी तब घूँघट क्या ?

हाथ कंगन को आरसी क्या ?

अरचेलि रेखैक्कि अड्डु कालेना ?

(हथेली के बेर को देखने आइना क्यों ?)

आनवल्लु दूरमयिते अंतःकरणलु दूरमा ?

(आँखों से दूर हों तो दिल से दूर है क्या ?)

अच्च राकुंटे अनाचारं आगुनंदा ?

(नियाँ न आए तो अनाचार रुकेगा ?)

तल्लि-चालु पिल्लकु तप्पुना ?

(बेटी माँ का अनुकरण करना छोड़ देगी ?)

<u>निश्चय-ज्ञापक कहावतें</u> — ऐसी कहावतें जिन में सन्देह का स्थान नहीं, किसी सत्य का कथन निश्चित रूप से किया गया है।

अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है।

अल्पाहारी सदा सुखी।

आतुरगाररिकि बुद्धि मट्टु।

(उतावली सो बावली।)

निप्पु मुट्टनिदे चेय्यि कालदु।

(आग न छुए तो हाथ न जले।)

३. निषेध-रूपक कहावतें — वे कहावतें जिनमें ... का निषेध हो, जैसे —

१. काम प्यारा है, चाम प्यारा नहीं।

२. ऐश्वर्यानिकि अंतमु लेदु।
(ऐश्वर्य का अंत नहीं।)

४. विधि-रूपक कहावतें — जिन कहावतों से ... विध्यर्थ का बोध हो, जैसे —

१. हाकिम की अगाड़ी और घोड़े की पिछाड़ी सड़

२. आडि तप्परादु, पलिकि बोंकरादु।
(वचन देकर पीछे नहीं हटना चाहिए।)

३. काल्ह करे सो आज कर, आज करे सो अब।

५. उपमान-रूपक कहावतें — जिनमें समानता ... गयी हो, जैसे —

१. अब्रा की सी बिजली, होली की सी झल।

२. पंडु जारि पाल्लो पड्डट्टु।
(जैसे फल फिसलकर दूध में गिरा।)

३. अत्तगारि सोम्मु अल्लुडु धार पोशिनट्टु।
(जैसे सास की संपत्ति को दामाद ने दान में दिया।)

६. संवाद-रूपक कहावतें — उदाहरण के लिए —

१. काजी दुबले क्यों? शहर के अंदेशे से।

२. दंडमय्या बापनय्या अंटे, मी तंड्रिनाटि पातबाकि यिच्चि पोम्मन्नाडट ।

(नमस्ते महाराज, एक ने कहा तो दूसरे ने कहा—
तुम अपने पिताजी के पुराने कर्ज को चुका जाओ ।)

३. एद्दु ईनेनंटे कोट्टान कट्टमन्नट्लु ।

['बैल ब्याआ' (एक ने कहा)
'उसे गोशाला में बांध दो' (दूसरे ने कहा)]

रूपात्मक वर्गीकरण के संबन्ध में जानने के पश्चात् यह विचार करें कि वर्ण्य-विषय के आधार पर कहावतों का वर्गीकरण किस प्रकार किया जा सकता है ।

वर्गीकरण

१. धार्मिक कहावतें —

क) धर्म संबन्धी साधारण कहावतें ।
ख) ईश्वर संबन्धी कहावतें ।
ग) भाग्य-कर्म संबन्धी ।
घ) लोक-विश्वास और आचार-विचार संबन्धी ।
ङ) शकुन संबन्धी ।
च) भक्ति-वैराग्य संबन्धी ।
छ) जीवन-दर्शन संबन्धी ।
ज) पौराणिक गाथाओं से संबन्धित ।

२. नैतिक कहावतें —

क) अर्थ नीति ।

ख) मैत्री ।

ग) राजनीति ।

घ) परोपकार ।

ङ) आदर्श जीवन ।

च) अन्य नैतिक कहावतें ।

३ सामाजिक कहावतें —

क) समाज का सामान्य चित्र ।

ख) व्यक्ति का चित्र ।

ग) सृष्टि में मानव तथा मानवेतर प्राणी-संबंध ।

घ) जाति संबन्धी कहावतें ।

ङ) पुरुष संबन्धी ।

च) नारी संबन्धी ।

छ) अन्य सामाजिक कहावतें ।

४. वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक कहावतें —

क) शिक्षा तथा ज्ञान संबन्धी कहावतें ।

ख) कृषि तथा वर्षा-विज्ञान संबन्धी कहावतें —

१. कृषि संबन्धी साधारण कहावतें ।

२. वातावरण और वर्षा संबन्धी ।

३. मिट्टी के लक्षण संबन्धी ।

४. जुताई और कृषि प्रबन्ध संबन्धी ।

५. फसल संबन्धी ।

६. कृषि में सहायक पशुओं से संबन्धित ।

ग) मनोवैज्ञानिक कहावतें —

क) साधारण कहावतें ।

ख) विश्लेषणात्मक कहावतें ।

घ) कुछ अन्य कहावतें —

१. ऐतिहासिक घटना मूलक ।

२. व्यक्ति प्रधान कहावतें ।

३. स्थानसंबन्धी कहावतें ।

मेरे मत में कहावतों का ऐसा वर्गीकरण कर हिन्दी और तेलुगु कहावतों की तुलना करना अत्यंत उपयुक्त प्रतीत होता है । इस वर्गीकरण के अनुसार ही छठे अध्याय में हिन्दी और तेलुगु कहावतों की तुलना की जाएगी ।

पंचम अध्याय

साहित्य तथा मानव जीवन में कहावतों का स्थान और प्रभाव

प्रथम अध्याय में हम देख चुके हैं कि कहावतों के अध्ययन का क्या महत्व है। कहावतों का प्रयोग देश-काल के बंधन से सर्वथा मुक्त है। किसी भी देश या किसी भी काल के साहित्य को लीजिए, वह कहावतों से पूर्ण मिलेगा। चूँकि कहावत जनता-जनार्दन की उक्ति है, इसलिए उनका प्रयोग केवल लोक-साहित्य में ही नहीं होता, अपितु शिष्ट-साहित्य में भी होता है। कहावतें पहले जनता की उक्ति बन जाती हैं, फिर साहित्य में उनको स्थान उपलब्ध हो जाती है। कभी-कभी साहित्यकारों की प्राज्ञोक्तियाँ भी लोकोक्तियाँ बन जाती हैं, इस संबन्ध में हम पहले ही विस्तार-पूर्वक विचार कर चुके हैं। कालिदास, तुलसीदास, सूरदास, वेमना आदि की रचनाओं में ऐसी अनेक उक्तियाँ भरी पड़ी हैं।

मध्ययुग में, पश्चिमी देशों में, कहावतें अत्यंत लोकप्रिय थीं। पादरी, अध्यापक, कवि, लेखक और अनुवादक— सभी अपनी रचनाओं में इनका प्रयोग करते थे। विद्वानों के भ्रमण ने एक देश को दूसरे देश की कहावतें पहुँचायीं। महारानी एलिज़बेथ के सिंहासनासीन के समय कहावतें असीम लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी थीं। शेक्सपियर के नाटकों में उनका सुन्दर प्रयोग हुआ है। बाद के युग मे कहावतों का उतना प्रयोग नहीं हुआ। प्राचीन अंग्रेजी नाटकों में भी कहावतों का प्रयोग द्रष्टव्य है। J. T. Shipley लिखते हैं कि रंगमंच पर भी इनका प्रयोग होता था।[1]

हमारे देश में कहावतों का प्रयोग प्राचीन काल से होता आ रहा है। संस्कृत-साहित्य में इनका विशेष महत्व है। सुभाषित के रूप में अनेक कहावतें प्रसिद्ध हुई हैं। अर्थांतरन्यास, अन्योक्ति आदि अलंकारों के रूप में कवियों ने इनका प्रयोग किया है।

महाकवि कालिदास के ग्रंथों में लोकोक्तियों का प्रचुर प्रयोग हुआ है। "प्रियेषु सौभाग्य फला हि चारुता", "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" "न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्", "अलोकसामान्यमचिंत्यहेतुकं द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम्", "क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते", "भिन्नरुचिर्हि लोकः", "आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया"

1. Proverbs were acted as charades, for audience to guess. (Dictionary of World Literature, pages 460 61

आदि उनकी अनेक उक्तियाँ प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी हैं। कालिदास के ग्रंथों के लालित्य का एक कारण ऐसी उक्तियों का प्रयोग भी है। उनके मेघदूत की अनेक उक्तियाँ तो जगत् प्रसिद्ध हैं— "याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा", "रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय" आदि। महाकवि कालिदास की ही भाँति भारवी ने भी लोकोक्तियों का सुन्दर प्रयोग किया है, जैसे— "हितं मनोहारि च दुर्लभम् वचः", "विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः", "प्रेम पश्यति भयान्यपदेऽपि", "प्रकृत्यमित्रा हि सतामसाधवः", इत्यादि। बाणभट्ट की "कादम्बरी" में भी ऐसी अनेक उक्तियाँ मिलती है जो लोकोक्तियों का रूप धारण कर चुकी हैं। उदाहरणार्थ "अनतिक्रमणीया हि नियतिः", "सर्वथा दुर्लभं यौवनमस्खलितम्", इत्यादि।

पंचतंत्र, हितोपदेश और कथासरित्सागर में तो अनेक कहावतों का प्रयोग हुआ। इन ग्रंथों के द्वारा अन्यान्य भारतीय भाषाओं में भी ऐसी कहावतों का प्रचार हुआ है। अन्यत्र हम इसे देख चुके हैं। माघ, श्रीहर्ष, शूद्रक, भर्तृहरि आदि कवियों ने साहित्य में कहावतों का प्रचुर प्रयोग किया है।

अब अंग्रेजी साहित्य की ओर भी थोड़ा सा दृष्टिपात करना अनुचित न होगा। अंग्रेजी-साहित्य में महाकवि शेक्सपियर का अन्यतम स्थान है। उनके नाटकों में अनेक कहावतों का प्रयोग हुआ है। यह हम पहले ही कह चुके हैं। यहाँ तक कि उनके कुछ नाटकों के नामकरण कहावतों के आधार पर हुआ है। उदाहरण के लिए All's well that ends well, Much Ado about nothing, Measure for Measure नाटकों

के नाम उद्धृत कर सकते हैं। Speech is silver but silence is golden (एक चुप हजार को हराए) Familiarity breeds contempt (घर की मुर्गी दाल बराबर) A prophet is never honoured in his country (घर का जोगी जोगड़ा आन गाँव का सिद्ध) इत्यादि कहावतों का प्रयोग तो सभी कवियों और लेखकों ने किया है।

प्राचीन हिन्दी-साहित्य में कहावतों का कम प्रयोग नहीं हुआ है। अमीर खुसरो की कई पंक्तियाँ कहावतों का रूप धर चुकी हैं। उदाहरण के लिए "आधा कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा" एक कहावत है। इसका पहला चरण इस प्रकार है— "खीर पकाई जतन से, चर्खा दिया जला"। कबीर के कई दोहे कहावत-पदों के रूप में व्यवहृत होते हैं। दो-चार उदाहरण पर्याप्त होंगे—

१) आछे दिन पाछे गये, हरि से किया न हेत।
अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गयी खेत॥

२) जाको राखे साइयाँ, मारी न सकै कोई।
बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरि होइ॥

३) जो तो को काँटा बुवै, ताहे बोव तू फूल।
तो को फूल के फूल हैं, वो को है तिरसूल॥

४) जिन ढूँढा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ।
मैं बौरी डूबन डरी, रही किनारे बैठ॥

५) एक म्यान में दो खड्ग, देखा सुना न कान॥

सूरदास की गोपिकायें अपनी वाग्विदग्धता के लिए प्रसिद्ध हैं। यदि उद्धव से वार्तालाप करते समय वे कहावतों का सुन्दर प्रयोग करती

हैं तो आश्चर्य की कोई बात नहीं। कहावतें स्त्रियों की ही संपत्ति तो है। "सूरदास खल कारी कामरी चढ़े न दूजो रंग", "प्रीति करि काहू सुख न लह्यो", "प्रीति नई नित मीठी", "स्वान पूंछ कोटिक लागे सूधी कहुँ न करी", "कर कंकन तें भुज टाड़ भई", "मिले मन जाहि-जाहि सों ताको कहा करै काजी", एक आंधारी हिय की फूटी, दौरत पहिर खराऊँ", "जाहि लगै सोई पै जानै बिरह पीर अति भारी" आदि कई सुन्दर कहावतों का प्रयोग सूर-साहित्य में मिलता है। सूर की भाँति ही नंददास ने भी अनेक कहावतों का प्रयोग किया है, जैसे "प्रेम पियूषें छाँडि कै कौन समेटै धूरि", "घर आयौ नाग न पूजहीं बाँबी पूजन जाहिं" आदि। सतसई का कर्ताओं की कई उक्तियाँ कहावतें बन गयी हैं। उन्होंने कई पुरानी कहावतों का भी प्रयोग किया है। "चूहे के चाम से नगाड़े मढ़े जाते हैं", कहावत का प्रयोग रहीम के इस दोहे में देख सकेंगे—

> कैसे छोटे नरन सौं, सरै बड़न को काम।
> मढ़्यो नगारो जात क्यों, लै चूहे को चाम॥

तुलसीदास जी की रचनाओं में अनेक कहावतों का प्रयोग हुआ है। उनकी कई पंक्तियाँ कहावतों के रूप में व्यवहृत होती हैं। "पराधीन सपनेहु सुख नाहिं, (बालकाण्ड, 101) "स्वारथलाइ करहिं सब प्रीती" "नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं। प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं॥" (बालकांड, 59) "मातु पिता गुरु प्रभु कै बानी। बिनहीं बिचार करिअ सुभ जानी॥" (बालकांड, 70) "कोउ नृप होय हमै का हानी॥" (अयोध्याकांड, 15) आदि कहावतें हम उनकी रचनाओं में देख सकते हैं।

कविवर वृन्द ने अपनी सतसई में अनेक कहावतों का सुन्दर प्रयोग किया है। उदाहरणार्थ—

बुरे लगत सिख के वचन, हिय में विचारो आप।
करुवो भेषज बिन पिये, न मिटै तन का ताप ॥

कवि बोधा की नीचे की पंक्ति देखिये—

कहै है नहीं मुरग जिहि गाँव।
भट्टु तिहि गाँव का भोर न ह्वै है ॥

आधुनिक युग में कवियों और लेखकों ने कहावतों का प्रयो किया है। प्रेमचन्द की रचनाओं में इनका प्रचुर प्रयोग हुआ है। उनक भाषा में चमत्कार है तो उसका एक कारण कहावतों का प्रयोग औ उनकी सुन्दर उक्तियाँ हैं। "मर्द साठे पर पाठे होते हैं", "साईं के स खेत हैं" (गोदान), "मियाँ की जूती मियाँ के सिर", "न आगे ना न पीछे पगहा", "सिर मुड़ाते ही ओले पड़े" (गबन) आदि कहाव का प्रयोग उनके उपन्यासों में हुआ है। प्रेमचन्द की विशेषता यह है कि उनके कुछ वाक्य हमारे हृदय में अंकित रह जाते हैं, जैसे- "भेख औ भीख में सनातन से मित्रता है", "यौवन को प्रेम की इतनी क्षुधा न होती, जितनी आत्म प्रदर्शन की", "संपन्नता बहुत कुछ मानसि व्यथाओं को शान्त करती है", "दिल पर चोट लगती है तो आंख को कुछ नहीं सूझता" (गबन) इत्यादि। इनको ग्रामोक्तियाँ कहें त कोई अनुचितता न होगी। लोक-मानस में प्रविष्ट होकर ये ही लोको क्तियाँ बन जायेंगी।

आधुनिक युग में अन्य लेखकों ने भी कहावतों का प्रयोग किया है

इन पद्यों को देखिये—

१) झूठ की रहनी कभी फलती नहीं ।
नाव कागज़ की कभी चलती नहीं ।।

२) मिज़ाज क्या है कि एक तमाशा ।
घड़ी में तोला घड़ी में माशा ।।

३) अजब तेरी कुदरत, अजब तेरा खेल ।
छछूँदर के सिर में चमेली का तेल ।।

"रत्नाकर" ने 'उद्धवशतक' में कहावतों का प्रभावपूर्ण प्रयोग [illegible]या है । श्री हरिकृष्णप्रेमी के नाटकों में कहावतें प्रसंगानुसार प्रयुक्त [illegible] हैं । इस प्रकार कवियों और लेखकों की रचनाओं में कहावतों को [illegible] सकते हैं ।

जिस भाँति तेलुगु-जनता में कहावतों का आदर है, उसी भाँति [illegible]गु-साहित्य में भी कहावतों का विशिष्ट स्थान है । तेलुगु के प्राचीन [illegible]वयों में तिक्कना, श्रीनाथ, [illegible] सोमुडु, वेमना तथा अन्य शतक-[illegible]-कवि आदि ने कहावतों का अच्छा प्रयोग किया है ।

श्रीनाथ का समय ई० १३८५–१४५५ तक माना जाता है । इस [illegible] कवि की कीर्ति कौमुदी का आधार "शृंगार नैषधमु" काव्य है । [illegible] अन्य रचनायें — हरविलासमु, भीम खण्डमु, काशी खण्डमु, [illegible]त्री महात्म्यमु, मरुत्तराट् चरित्र, शालिवाहन सप्तशति, पंडिता-[illegible] चरित्रमु और पलनाटि चरित्र (थोड़ा अंश) । इनकी प्रखर प्रतिभा [illegible] अद्भुत पाण्डित्य से संतुष्ट होकर प्रौढदेवराय (विजयनगर के [illegible]) ने इनको 'कवि सार्वभौम' बिरुद प्रदान किया था और

“कनकाभिषेक” कर इनका सम्मान किया था। अस्तु। इनके काव्य में कई कहावतों का सुन्दर प्रयोग हुआ है। उदाहरणार्थ “गाबगिर्जल बूदि पलनि कोतिन बेलदि गुम्मिनडि कायल वेंडिपुड्डु” (तिल भर भस्म लगाने पर कुम्हड़े के बराबर पागलपन होगा), “मागवाडो मानो” (पुरुष अथवा पुरुष अर्थात् पुरुष बड़ा कठोर होता है) इत्यादि।

विजयनगर के राजा बुक्करायलु के समकालीन थे नाचन सोमुडु। बुक्करायलु ने ई० १३५५ से १३७७ तक राज्य किया था। नाचन सोमुडु की अमर कृति “उत्तर हरिवंशमु” है। इनकी शैली सरस, सुबोध और सुन्दर है। तेलुगु-कहावतों का बड़ा ही मनोरम प्रयोग इन्होंने किया है, जैसे— “येंत परिगिन मिरियालु जोन्नलु सरिपोवे” (कितनी भी मोटी हो, काली मिर्च और ज्वार बराबर नहीं होती) “चिलुक पोयिन पंजरमु चेरिचेदु” (तोता उड़े तो पिंजड़े का क्या दोष) आदि। नाचन सोमुडु ने तेलुगु मुहावरों का भी सुन्दर प्रयोग किया है।

वेमना की जन्म तिथि के संबन्ध में निश्चित मत नहीं है। कहा जा सकता है कि १८ शताब्दी के प्रारंभ में वेमना रहते थे। ये “कापु” (रेड्डी) जाति के थे। कबीर के समान ही इनका निर्भीक व्यक्तित्व था। इन्होंने बाह्याडम्बर को कठोर शब्दों में खण्डन किया है। इनकी कई पंक्तियाँ कहावतों के रूप में प्रयुक्त होती हैं। आन्ध्र प्रदेश में वेमना के पद्य अत्यंत लोकप्रिय हैं। वेमना का तेलुगु-साहित्य में ही नहीं विश्व-साहित्य में भी स्थान है। वेमना की कुछ लोक-प्रसिद्ध उक्तियाँ देखिए—

"आडुदानिजूड नर्थंबु जूडंग
ब्रह्मकैन बुट्टु रिम्मतेगुलु"

(कामिनी और कनक को देखें तो ब्रह्मा का मन भी डोल जाय।)

"गुणमुलु कल्वानि कुलमेंचगानेल"

(गुणवान व्यक्ति की जाति क्यों पूछे ?)[1]

"नीरु चोरक लोतु निजमुगा देलियुना ?"

(पानी में उतरे बिना गहराई कैसे मालूम हो ?)

वेमना के अतिरिक्त अन्य शतक-कवियों ने भी कहावतों का अच्छा [illegible]ोग किया है।

आधुनिक काल के कवियों तथा लेखकों ने भी कहावतों का कम [illegible]ग नहीं किया है। परवस्तु चिन्नयसूरि की "नीतिचन्द्रिका" में [illegible]त्कालमुंदु विस्मयमु कापुरुष लक्षणमु", "रोटिलो तल दूर्चि रोकटि [illegible]कु वेरवदोत्ना ?" (ओखली में सिर दिया तो मूसले से क्या डर ?) [illegible]कोंचेमु कृत घनमु" (छोटा मुँह बड़ी बात) "[illegible] कुंदेटिकि [illegible]" (अपने पकड़े खरगोश के तीन ही पैर अर्थात् अपनी बात [illegible] [illegible]) आदि कहावतों का प्रयोग हुआ है।

यहाँ यह बात भी कह देना आवश्यक है कि तेलुगु कवियों तथा [illegible] ने तेलुगु-कहावतों के अतिरिक्त अपनी रचनाओं में संस्कृत [illegible]तियों का भी यथा रूप में ही प्रयोग किया है। तेलुगु पर संस्कृत [illegible]धिक प्रभाव ही इसका कारण है। साहित्यक तेलुगु में ६५ प्रतिशत

[1] [illegible]ना कीजिए — 'जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।' (कबीर)

संस्कृत के शब्दों का प्रयोग होता है। "यथा राजा तथा प्रजा" "जीवन् भद्राणि पश्यति", "नीचाः कलहमिच्छन्ति सन्धिमिच्छन्ति साधवः", "विनाशकाले विपरीत बुद्धिः" आदि कहावतें उदाहृत की जा सकती हैं।

हमने देखा कि आदि कवि नन्नया से लेकर चिन्नया तक के कवियों ने अपनी रचनाओं में कहावतों का प्रयोग किया है। वर्तमान युग के कलाकार भी कहावतों का प्रयोग करते हुए देखते हैं। श्री नूकल सत्यनारायण शास्त्री ने कुछ तेलुगु-कहावतों को पद्य रूप दिया है (तेलुगु सामेतलु, भाग १, २)।

ऊपर के विवरण से स्पष्ट है कि कहावतो का प्रयोग साहित्य में खूब होता है। यहाँ स्मरण रखना चाहिए कि कवियों या लेखकों ने कहावतों का प्रयोग करते समय उनका परिष्कार कर उन्हें साहित्यिक रूप प्रदान किया है।

कहना न होगा कि साहित्य में कहावतों के प्रयोग से अभिव्यंजना में स्पष्टता और स्फूर्ति आ जाती है। अतः साहित्य में इनका महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे आचार्यों ने लोकोक्ति को अलंकारों में गिनाकर इसे स्वीकार किया है।

मानव-जीवन पर कहावतों का जितना अधिक प्रभाव पड़ा है उतना शायद ही किसी दूसरी वस्तु का पड़ा हो। वे तो मानव-जीवन के गहरे अध्ययन के आधार पर निर्मित हुई हैं। किंवा मानव-जीवन ही उनमें प्रतिबिंबित है।

सभ्य राष्ट्र की असभ्य कहलानेवाली जनता के साहित्य को "लोक साहित्य" नाम से अभिहित करते हैं। कुछ समय तक यह साहित्

पेक्षित रहा, पर आज के युग में इस ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा। वस्तुतः लोक-साहित्य उपेक्षा-योग्य नहीं है। लोक-साहित्य में कहावतों का अन्यतम स्थान है। इन्हें "असभ्य जनता की उक्ति" कहना, हमारी दृष्टि में युक्ति-संगत नहीं है। कहावतें तो लोक साहित्य की महक हैं।[1] वे पर्वतों के सादृश्य अत्यंत प्राचीन हैं। वे प्राचीनता के शिलालेख हैं। सभी भाषाओं में सभी देशों में उनका प्रयोग होता है।

प्राचीन काल से अब तक अनेकों परिवर्तन रूपी आघातों को सहती हुई कहावतें अपने निजत्व की रक्षा कर वीर योद्धा के समान दृढ़ और अटल रही हैं। कहावतों में जहाँ मनोरंजन की सामग्री विद्यमान है वहाँ संस्कृति के चिह्न भी वर्तमान हैं। उनमें एक बहुत बड़ी शक्ति है। उनके अध्ययन से मानव मात्र के स्वभाव से परिचित हो सकते हैं। इतना ही नहीं, एक देशवासी दूसरे देशवासी के निकट— अत्यंत निकट खिंच जाते हैं। मानव किसी भी देश में वास करें, उसके आचार-विचार में विभिन्नतायें भी हों, फिर भी मानव-जीवन के मूल में जो समानतायें हैं उनके दर्शन हम कहावतों में करते हैं। एक ओर साहित्य में उनका [illegible] प्रभाव [illegible] लाने के लिए होता है तो दूसरी ओर जीवन में [illegible]शीलता लाने के लिए उनका प्रयोग होता है। यदि भाषा मानव को प्राप्त वरदान है तो "कहावत" भाषा को प्राप्त वरदान है। निस्संदेह साहित्य तथा मानव-जीवन पर कहावतों का अमिट प्रभाव है।

---

[1] देखिए— Everyman's Encyclopedia— New Edition (1958) Vol. 10

बन्धी साधारण कहावतें, ईश्वर संबन्धी कहावतें, भाग्य-कर्म संबन्धी, लोक-विश्वास और आचार-विचार संबन्धी, शकुन संबन्धी, भक्ति राग्य संबन्धी, जीवन-दर्शन संबन्धी एवं पौराणिक गाथाओं से संबन्धित कहावतें। क्रमशः प्रत्येक पर विचार करेंगे।

(क) धर्म संबन्धी साधारण कहावतें — इसके अन्तर्गत ऐसी कहावतें आती हैं जिन से हमें धर्म के संबन्ध में साधारण ज्ञान प्राप्त होता है। संस्कृत में ऐसी कहावतें बहुत हैं। संस्कृत में प्रयुक्त अनेक उक्तियाँ कहावतों के रूप में प्रायः हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होती हैं, जैसे—

१) आचारः प्रथमो धर्मः।
२) अहिंसा परमो धर्मः।
३) धर्मन्तु चिन्तयेत्प्राज्ञः।
४) को धर्मः कृपया बिना।
५) शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

गोस्वामी जी धर्म की व्याख्या करते हुए कहते हैं—

"परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई॥"

स्वामी की यह उक्ति कहावत के समान प्रयुक्त होती है।

धर्म का आचरण मनुष्य का कर्तव्य है। जो धर्म की रक्षा करते धर्म उनकी रक्षा करता है— "धर्मो रक्षति रक्षितः"। यदि यह प्रश्न है कि धर्म का आचरण कब करना चाहिए, इसका समय क्या है तो उत्तर है— यह निश्चय नहीं। मृत्यु मनुष्य की प्रतीक्षा नहीं करती।

सदा मनुष्य मृत्यु के मुँह में रहता है, अतः धर्म का आचरण करना ही मनुष्य को शुभप्रद है[1] अधर्म की कभी विजय नहीं होती। जहाँ धर्म रहता है वहाँ विजय होती है।[2] यह धर्म की सामान्य व्याख्या है। स्मरण रखना चाहिए कि यहाँ धर्म का अर्थ "Religion" नहीं है।

धर्म का प्रयोग अंग्रेजी शब्द "Religion" के अर्थ में भी होता है। हिन्दी में प्रायः यही अर्थ लिया जाता है, पर तेलुगु में यह अर्थ नहीं लिया जाता। यदि कहीं कहा गया कि अपने धर्म में रहना श्रेयस्कर, अन्य धर्म में नहीं जाना चाहिए[3] तो यह भी कहा गया है कि "मनुष्यता ही धर्म का मूल है" अंग्रेजी में भी ऐसी कहावत है— He has no religion who has no humanity. तेलुगु की एक कहावत में कहा गया है कि अपने से बढ़कर कोई धर्म नहीं है—

"तनकु मालिन धर्मंमु लेदु"

हिन्दी कहावत से तुलना कीजिए—

पहले आत्मा फिर परमात्मा। और—

पहले अपने घर में दिया जलाकर, फिर मंदिर में जलाया जाता है।[4]

1. धर्मकालः न पुरुषस्य निश्चितः, न चापि मृत्युः पुरुषं प्रतीक्षते। सदा हि धर्मस्य क्रियैव शोभना, यदा नरो मृत्युमुखे अभिवर्तते॥ और नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्मसंग्रहः।
2. यतो धर्मस्ततो जयः।
3. स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावह। (गीता)
4. Charity begins at home. (अंग्रेजी)

न्दी की एक दूसरी कहावत के अनुसार परोपकार करनेवाला ह
च्चा धर्मधारी है—

परोपकारी धरमधारी ।

ई की तुलनात्मक कहावत में कहा गया है कि "धर्म" की परीक्ष
दा में होती है—

धीरज, धर्म, मित्र अरु नारि ।
आपद काल परखिए चारि ॥

कुछ कहावतें किसी विशेष धर्मावलंबियों में ही प्रयुक्त होती है,
तेलुगु-कहावत है —

"इल्लु येड्चे अमावास्य, पितृपोरगु येड्चे तद्दिनं, ऊरु येड्चे
ल लेदु ।"

(अमावास्या के दिन घर में शोक नहीं होता, श्राद्ध के दिन अगल-
के घरवाले असंतुष्ट नहीं रहते और शादी के दिन गाँव असंतुष्ट
होता ।)

हिन्दुओं में अमावास्या के दिन तर्पण करने का आचार है । श्राद्ध
र अगल-बगल के घरवालों को भी भोजन के लिए बुलाने का तथा
ब्याह के समय गाँव भर के लोगों को भोजन के लिए निमंत्रित
का आचार है। कहना न होगा कि इस कहावत का प्रयोग हिन्दुओं
ग है। अन्य धर्म के लोगों में नहीं ।

कुछ कहावतें पहले किसी संप्रदाय या धर्मावलंबियों में प्रचलित हो
हैं [illegible]नुसार अपनी [illegible] के [illegible] के कारण उस
का उल्लंघन कर सर्वव्यापी हो जाती है— "जैसे [illegible]

फल पाय", "हिला के बलली पतिबरता, मूसल खेलन भरता", "हम तो डूबवाले भजनू हैं", आदि कहावतें उदाहरण के रूप में ले सकते हैं।

(ख) <u>ईश्वर संबन्धी कहावतें</u>— शायद ही ऐसी कोई भाषा हो जिसमें ईश्वर विषयक कहावतें न मिलती हों। हिन्दी और तेलुगु भाषाओं में ऐसी कहावतों की कोई कमी नहीं है। आज के युग में ईश्वर के अस्तित्व पर संदेह प्रकट करनेवाले तथा अनेक प्रकार की टीका-टिप्पणी करनेवाले लोग दिखाई पड़ते हैं। तथापि, इन कहावतों का महत्व किसी भी प्रकार न्यून नहीं होगा। इनके अध्ययन से हम जनता की विचार-धारा की परख कर सकते हैं। यह कहना अनुचित न होगा कि जिन लोगों में ईश्वर पर जितनी अधिक आस्था रहती है उतनी ही अधिक कहावतें उन भाषाओं में प्रचलित रहती हैं।

अनाथ के आश्रय परमेश्वर है। हिन्दी और तेलुगु में इस भाव की कहावतें उपलब्ध होती हैं —

निर्बल के बल राम।[1]

इक्के-दुक्के का अल्ला बेली।

दिक्कु लेनिवाडिकि देवुडे दिक्कु।

(निस्सहायों के सहायक भगवान है।)

ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करने के कारण ही ऐसी कहावतें चल पड़ी हैं—

"सब के दाता राम"

1. न च दैवात् पर बलम्। (संस्कृत)

नारु पोसिनवाडु नीरु पोयडा ?[1]
(जिसने पौधा लगाया, वह पानी नहीं देगा ?)

ईश्वर जो करता है, वही होता है, इस भाव की कहावतें

ईश्वर करे सो हो ।[2]
भगवंतुडु चेसिदि अवुतुंदि । (तेलुगु)
(भगवान जो करता है, वही होता है ।)

ईश्वर ही सृष्टि का मालिक है । हिन्दी कहावत है—

जग ईश्वर का, मुलक बादशाह का ।

उसकी आज्ञा के बिना कुछ भी नहीं होता, एक तृण भी हिल सकता । तेलुगु-कहावत देखिए—

शिवुनि आज्ञ लेक चीमैना कुट्टदु ।
(भगवान की आज्ञा न हो तो चींटी भी नहीं काटती ।)

ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता के समान ही उसकी उदारता क वर्णन कहावतों में मिलता है । उदाहरण के लिए—

1. [illegible] – ' ना॰ [illegible] नीरुपोयडा ? "
(जिस किसान ने पौधा लगाया, वह पानी नहीं देगा ?)
तुलना कीजिये --
(१) यो मे गर्भगतस्यापि वृत्तिं कल्पितवान् प्रभुः । (संस्कृत)
(२) [illegible] देवरु हुल्लु नीरु कोडने ? (कन्नड)

2. [illegible] राम रचि राखा । (तुलसी)

ईश्वर जब चाहता है तो खाक भी सोना हो जाता है।[1]

अथवा—

भगवान देता है तो छप्पर फाड़कर देता है।

और

भगवान जो करता है, भले के लिए करता है।

तेलुगु कहावत से तुलना कीजिए—

भगवंतुडु अंता मनमंचिकिकि चेस्ताडु।

(भगवान सब हमारे भले के लिए ही करते हैं।)

वह क्षमाशील भी है —

तीन गुनाह ईश्वर भी क्षमा करता है।

वह जिसकी रक्षा करता है, उसका कोई भी कुछ बिगाड़ नहीं सकते—

जाको राखे साइयाँ मारि न सकं कोइ।[2]

यद्यपि लोग नाना रूपों और नाना नामों से ईश्वर की पूजा-उपासना करते हैं, तथापि वह एक ही है।[3] जिसकी जैसी भावना रहती है उसको वह वैसा दिखाई पड़ता है —

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी।

1. तुलना कीजिए— When God wills all winds bring rain. (English)
2. Him whom God protects no one can injure. What God will, no force can kill. (English)
3. एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति।

कुछ ऐसी भी कहावतें मिलती हैं जिन में ईश्वर के अस्तित्व की सत्ता का कारण हमारी भावना मात्र कहा गया है। मूर्ति में देवत्व आरोप इसी भावना का फल है—

मानो तो देव नहीं तो पत्थर।

स्मृति के एक श्लोक में भी यही भाव व्यक्त किया गया है—

न काष्ठे विद्यते देवो, न शिलायां न मृण्मये।

भावे हि विद्यते देवस्तस्मात् भावो हि कारणम्॥

कुछ कहावतों मे यह भाव व्यक्त हुआ कि मानव-समाज की सेवा या सेवा करना ईश्वर की सेवा करने के समान है—

मानव सेवा ही माधव सेवा है।

अंग्रेजी में भी इस भाव की कहावत है।

सारांश यह कि कहावतों में ईश्वर की चर्चा बहुत प्राप्त होती है। हिन्दी और तेलुगु में ही नहीं अन्य भाषाओं में भी ईश्वर सबन्धी ऐसी विचारधारा कहावतों में मिल जाती है।

(ग) <u>भाग्य-कर्म संबन्धी कहावतें</u>— मानव-जीवन में भाग्य का स्थान बड़ा ही विचित्र होता है। भोले ग्रामीण भाग्य पर अटूट विश्वास करते हैं। ग्रामीण ही क्यों पढ़े-लिखे पंडित, लेखक, कवि आदि लोग भी विश्वास करते हैं। इसका कारण भारत का वातावरण है। विदेशों की कहावतों में भी भाग्य संबन्धी कहावतें मिलती हैं जो इस बात का प्रमाण है कि हमारे देश में ही नहीं संसार के अन्य देशों में भी लोग

मानै तो देव, नहीं भीन को भेव। (राजस्थानी)

भाग्य पर विश्वास रखते हैं। भाग्यवाद और कर्मवाद दोनों पर भारतीयों का विश्वास है। आधुनिक युग में इनका खण्डन किया जाता है और इनका महत्व उतना नहीं माना जाता। पर, प्राचीन काल में इसे निश्चित रूप से स्वीकार कर लिया गया है। उस समय जन्मान्तरवाद और कर्म-वाद का विशेष प्रचार भी रहा। कवियों की कृतियों में हम इसके दर्शन कर सकते हैं। भारत की किसी भी भाषा के साहित्य को लीजिए, उस में इनके अस्तित्व स्पष्टतया दिखाई पड़ते हैं। साहित्य तो जन-जीवन का प्रतिबिंब है। लोक-साहित्य में भी इसका स्वरूप हम देख सकते हैं। इस विषयक कहावतों की कोई कमी नहीं है। हिन्दी और तेलुगु में ऐसी बहुत-सी कहावतें मिलती हैं। भाग्य की अस्थिरता के संबन्ध में कहावत प्रसिद्ध ही है —

ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया।[1]

भाग्य ही सब कुछ है, क्योंकि—

भाग करे काज।[2]

तेलुगु कहावत से तुलना कीजिए—

अच्चि वच्चिन भूमि अडुगेडे चालुनु।

अर्थात् यदि भूमि सौभाग्य की है, तो एक इंच भी पर्याप्त है।

मनुष्य एक सोचता है, उसका भाग्य कुछ और ही होता है —

इनसान बनाए खुदा ढाये।

1. तुलना कीजिये – Change of fortune is the lot of life. (अंग्रेजी)
2. तुलना कीजिये – भाग्यं फलति सर्वत्र। (संस्कृत)

तानोकटि तलचिन दैवमोकटि तलचुनु ।

(अपने मन में कुछ और है, साईं के मन में कुछ और ।)

मनुष्य जो करता है, उसका फल भोगता है—

करेगा सो भरेगा ।[1]

जैसी करनी वैसी भरनी ।

जैसा देवै वैसा पावै, पूत भरतार के आगे आवै ।[2]

तेलुगु कहावत से तुलना कीजिए—

ई चेत चेसि आ चेत अनुभविञ्चिनट्लु ।[3]

(इस हाथ कर उस हाथ से फल पाने के जैसे)

अंग्रेजी में भी इसी भाव की कहावत है—

As you sow, so you reap.

जन्मजन्मान्तरवाद पर विश्वास रखने के कारण ऐसी कहावतों का प्रचलन हुआ है ।

अभागा मनुष्य सोना भी छुवे मिट्टी हो जाता है । हिन्दी कहावतें हैं ।

१) करमहीन खेती करें, बैल मरे या सूखा पड़े ।

२) जहाँ जाय भूखा तहाँ पड़े सूखा ।[4]

1. अवश्यमेव भोक्तव्यं कृत कर्म शुभाशुभम् । (संस्कृत)

2. कहानी के लिए देखिये – "कहावतों की कहानियाँ" पृ० ७२, लेखक – श्री महावीर प्रसाद पोद्दार.

3. [illegible] (कन्नड)

4. [illegible]

इनकी तुलना कीजिए तेलुगु की इन कहावतों से —

१) दरिद्रुडु तल कडुग पोते वडगंड्लवान वेंबडे वच्चिननि।[1]
(गरीब सिर धोने चला तो तभी उपलवृष्टि होने लगी।)

२) ऊरु विडिच्चि पोरुगूरु वेळ्ळिना पूर्विकर्ममु मानदु।
[अपना गाँव छोड़कर दूसरे गाँव जानेपर भी भाग्य नहीं बदलता।]

— पापि समुद्रानि वच्चिन मोकाळ्ळुदाक नीरु।[2]
[अभागा (मरने के लिए) समुद्र में भी जाय, तो भी घुटने तक ही पानी।]

पर और कुछ तेलुगु कहावतें लीजिए —

१) येंतवारिकि गानि दैवसलंध्यमु।[3]
[नियति का उल्लंघन नहीं किया जा सकता।]

२) एंट्टि पौरुषमु गानि दैवानि विपरीतमयिनप्पुडु पनिकि रादु।[4]
[कितना भी पौरुष रहे नियति प्रतिकूल हो तो कुछ नहीं होगा]

He who is bor[illegible] to misfortune [illegible] stumbles as he goes and though[illegible] [illegible] breaks [illegible]
(C[illegible]man)

पापि समुद्रके होदर [illegible] नीर। (कन्नड़)
श्री चित्रयसूरि [illegible] ४३—
विधिरहो बलवानिति मे मतिः। (संस्कृत)
वही, प ५९,

३) दैवंबु प्रतिकूलंबयिन पुरुषकारंबेल्ल व्यर्थबयिचुनु ।[1]
[नियति प्रतिकूल हो तो सब प्रयत्न व्यर्थ होते हैं ।]

४) अन्नि उन्नवि, अयिदवतनमु लेदु ।
[सब कुछ हैं, पर सौभाग्य नहीं ।]

राजस्थानी-कहावत से इसकी तुलना कर सकते हैं—
बे माता का घाल्योड़ा अंक टले कोन्या ।

५) कोटि विद्यलु चेसिना कोल अच्चिवते कोलवले काबु ।
[करोड़ों विद्यायें सीखने पर भी भाग्य अच्छा न हो तो कुछ न होगा ।]

हिन्दी-कहावत से इसकी तुलना कीजिए—
पढ़े फ़ारसी बेचे तेल, यह देखो किस्मत का खेल ।

नीचे की कहावतें भी बहुत प्रसिद्ध हैं —
१) अनहोनी होती नहीं, होनी होवनहार ।
२) होनहार फिरती नहीं, होवे बिस्वे बीस ।

कवियों ने अपनी रचनाओं में भाग्य संबन्धी कहावतों का स्थान-स्थान पर प्रयोग किया है, जैसे "भा विधिना प्रतिकूल जबै तब ऊँट चढ़े पर कूकर काटै", "होनी होय सो होई" (मीरा), "होई है सोई जो राम रचि राखा",[2] "सो न टरइ जो रचई विधाता",[3] "तुलसी जसि

1. "नीति चन्द्रिका" (श्री चिन्नयसूरि) से उद्धृत ।
2. श्री रामचरितमानस– बालकांड– ५२– ४.
3. वही ९६–३.

भवितव्यता तैसी मिलई सहाइ।" "आपुनु आवई पाहि ताहि तहाँ लै जाइ"[1] (तुलसी)। "आम बोओ तो आम खाओ, इमली बोओ तो इमली", "उत्तर जाय कि दक्षिण वही करम के लक्षण", "किस्मत की खूबी देखिए, टूटी कहाँ कमंद", "आज मेरी मंगनी कल मेरा विवाह टूट गयी मंगनी, रह गया विवाह" इत्यादि। जनता में ये कहावतें बहुत प्रचलित हैं।

तेलुगु और हिन्दी के उपर्युक्त कहावतों के पर्यालोकन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि दोनों भाषाओं में नियतिवाद या भाग्यवाद संबन्धी कहावतें अधिक संख्या में उपलब्ध होती हैं। जहाँ ये कहावतें मिलती हैं—

१) बाधकु ओक्क कालमु, भाग्यानिकि ओक कालमु।

[दुर्भाग्य के लिए एक समय, सौभाग्य के लिए एक समय।]

२) भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषं।

[विद्या और पौरुष से कुछ नहीं होता, भाग्य से होता है।]

३) यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः ?

[प्रयत्न करने पर भी फल न मिले तो इसमें दोष क्या है ?]

वहाँ ऐसी भी कहावतें मिलती हैं जिनमें कर्म की प्रधानता स्वीकार की गयी है। यथा— "जैसी करनी वैसी भरनी।"

भाग्य संबन्धी कहावतों पर विचार करने से यह प्रकट होता है कि इनकी उत्पत्ति का कारण है। जब मनुष्य अपने कृत प्रयत्न में सफलता प्राप्त नहीं करता, तब स्वभावतः उसके मुंह से ऐसी उक्तियाँ निकल

1. वही १५९ (ख)

पड़ती है। निराशा से पूर्ण उसके वचन उसकी अशक्तता प्रकट करते हैं।

"करम प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करहि सो तस फल चाखा॥" (तुलसी)

समझनेवाले मनुष्य के जीवन में ऐसी भी घड़ी आती है जब वह उत्साह के साथ तथाकथित नियति को लाँघने का प्रयत्न करता है, वह कहने लगता है— "मूर्ख मनुष्य ही अपने किये पर विचार न कर भाग्य या दैव पर दोषारोपण करता है।"

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः।
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति॥

अर्थात् कर्मठ पुरुष के पास लक्ष्मी स्वयं आती है। कापुरुष ही भाग्य पर स्थिर रहते हैं। यह कहावत हिन्दी और तेलुगु में ज्यों की त्यों प्रयुक्त होती है। इसी के अनुकरण पर तेलुगु में एक दूसरी भी कहावत चल पड़ी है—

उद्योगं पुरुष लक्षणं, अदिपोते अवलक्षणम्।
[[illegible] करना पुरुष का लक्षण है, वह नहीं तो [illegible]।]

और [illegible] है, धैर्य से काम लेता है, उसी के हाथ में [illegible] है—

"[illegible] लक्ष्मीः।"
[[illegible] और हिन्दी में प्रयुक्त होती है।]

[illegible]

प्रेरणा दी गयी है, आलसी बनकर रहने की नहीं। यही कारण है कि तेलुगु में ये कहावतें चल पड़ी हैं—

१) देवुडु यिस्ताडु गानि, वण्डि वार्चि वातकोट्टताडा ?[1]

अर्थात् भगवान् (आहार) देता है, पर क्या पकाकर मुँह में रखता है ?

२) देवुडिच्चुने गानि तिनिपिंचुना ?

अर्थात् भगवान् देता है, पर क्या खिलाता है ?

सारांश यह कि एक ओर "विधि विहितं बुद्धिरनुसरति", "बुद्धिः कर्मानुसारिणी"[2] जैसी कहावतें प्रचलित हैं तो दूसरी ओर दैव को दोष देना कापुरुष लक्षण है ऐसी कहावतें भी चलती हैं। कर्म करना ही मनुष्य का कर्तव्य है, फल मिले या न मिले।[3]

बात यह नहीं कि केवल तेलुगु और हिन्दी में ही भाग्य और कर्म संबन्धी कहावतें मिलती हैं, अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं में भी मिलती हैं। त्यागराज की उक्ति "तोलि ने जेसिन पूजा फलमु" तेलुगु में कहावत के रूप में प्रयुक्त होती है जिसका अर्थ है 'पूर्व (जन्म) में की गयी पूजा का फल'। इससे प्रकट है कि जन्मान्तरवाद को हमारे देश में माना गया है।

1. तुलना कीजिये — 1. विना पुरुषकारेण दैवं [illegible]
2. उद्यमेन हि सिध्यन्ति [illegible]
न हि सुप्तस्य [illegible]
[illegible]
3. God gives every bird its [illegible] does not through it [illegible]
2. ये कहावतें तेलुगु में प्रयुक्त होती हैं।
3. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। [illegible]

(घ) लोक-विश्वास और आचार-विचार संबन्धी कहावतें—
ध-विश्वास के बदले लोक-विश्वास शब्द का प्रयोग करना अधिक
मीचीन दिखाई पड़ता है। डॉ० कन्हैयालाल सहल ने अपनी पुस्तक
राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन" में इसी शब्द का प्रयोग किया
। प्रत्येक समाज की अपनी कुछ रूढ़ियाँ-परंपरायें होती हैं, उसके
पने विश्वास तथा आचार-विचार होते हैं। भारतवर्ष की अनेक
ातियों में अनेक प्रकार की परंपरायें प्रचलित हैं। समाज में ऐसी
ंपराओं, आचार-विचारों और विश्वासों को महत्व का स्थान प्राप्त
। कुछ लोग इसे "अंध-विश्वास" कहकर उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं।
रानी परंपराओं की अवहेलना करते हैं। ये अंध-विश्वास नहीं, "लोक"
प्रचलित विश्वास हैं। विचार करने पर ज्ञात होता है कि इनमे भी
त्यांश निहित है। प्रायः ऐसे विश्वास मनोविज्ञान की किसी आधार-
शिला पर स्थित रहते हैं। "लोक" में ऐसे विश्वास किस कारण प्रचलित
, उसकी खोज कर सकते हैं। किसी व्यक्तिविशेष के अनुभव के आधार
र ऐसे विश्वासों का प्रचलन असंभव नहीं है। व्यक्ति का विश्वास
ालांतर में लोक-मानस पर स्थिर रहकर लोक-विश्वास बन जाते हैं।
हावतों में हम उनके स्वरूप के दर्शन कर सकते हैं। यदि हम किसी
माज की स्वीकृति, सभ्यता आदि के बारे में जानना चाहते हैं तो ऐसी
हावतों का अध्ययन भी आवश्यक है। इनसे हम तत्संबन्धी कई बातें
ान सकते हैं। यहाँ स्मरण रखना चाहिए कि लोक-विश्वास, आचार-
चार आदि सार्वकालीन तथा सार्वदेशीय नहीं होते। युग की माँग

है। अब हम कहावतों में यह देखें कि समाज में कैसे-कैसे विश्वास और आचार-विचार प्रचलित रहते हैं।

ओलाद ही अंधेरे घर का चिराग है।

इस भाव को प्रकट करनेवाली कहावतें प्रायः भारत की सभी भाषाओं में मिलती हैं। "अपुत्रस्य गतिर्नास्ति" संस्कृत की लोकोक्ति, जो तेलुगु में प्रचलित है, इसका मूल है। इस कहावत से जनता के विश्वास पर प्रकाश पड़ता है। हिन्दुओं का यह विश्वास है कि जिसके पुत्र नहीं होता उसको मुक्ति नहीं मिलती।

लोगों में भूत, पिशाच आदि के संबन्ध में अनेक धारणायें होती हैं। भूतों के अस्तित्व पर विश्वास करने मात्र से ऐसी कहावतें प्रचलित हो सकती हैं—

भूत को पत्थर की चोट नहीं लगती।

दोंग पोयिन चोट्टु बय्यालु पट्टुकोन्नट्लु।

[जैसे जहाँ चोर गया वहाँ भूतों ने पकड़ लिया।]

तेलुगु जनता में ऐसी और भी कई कहावतें प्रचलित हैं —

१) देब्बकु देय्यमु सह अडलुतुंदि।

[लाठी से भूत भी कांपते हैं।]

हिन्दी-कहावत से तुलना कीजिए—

लातों के भूत बातों से नहीं मानते।

२) पात देय्यं पोते कोत्त देय्यं पट्टुकोन्नट्लु।

(जैसे पुराना भूत चला गया, नये भूत ने पकड़ लिया।)

ही रहेगा। उसे मिटानेवाले नहीं हैं। इस आशय को अभिव्यक्त करती है तेलुगु की निम्नांकित कहावतें—

ब्रह्म व्रासिन व्रालु तिरुगुना ?
(ब्रह्मा का लिखी लिखावट बदल सकती है ?)
नोसट व्रासिन व्रालु तप्पदु।
(जो माथे पर लिखा गया है, वह बदलता नहीं।)
नोसट व्रासिन व्रलकन्ना नूरेंड्लु चिंतिचिना येमी लेदु।
(एक सौ साल तक भी सोचो, माथे पर जो लिखा है, उसे छोड़कर और कुछ नहीं होगा।)

हिन्दी-कहावत से तुलना कीजिए—

विधि कर लिखा को मेटन हारा।

भाग्य सबन्धी कहावतों में हम इसकी चर्चा कर चुके हैं। यह लोगों के विश्वास पर प्रकाश डालनेवाली कहावत है, अतः इसका उल्लेख यहाँ भी आवश्यक हो गया।

हिन्दू लोगों का विश्वास है कि राजा की मृत्यु हो जाती है तो उस दिन और किसी की भी मृत्यु होती है। तेलुगु में एक कहावत है—

राजु पीनुगु तोडु लेकुंड पोवदु।

[illegible] राजा का शव साथी लिए बिना नहीं जाता।

तेलुगु-[illegible] का यह विश्वास है कि जब चूल्हा जलता है तब उसके जोर से आवाज निकले तो कोई रिश्तेदार आते हैं—

[illegible] चुट्टालु, कुक्कलु कूस्ते कल्लु।[1]

1. [illegible] — Let us have [illegible] and we shall find cousins (Italian)

(चूल्हा चिल्लावे तो रिश्तेदार आयेंगे, कुत्ते लगातार भूँके तो अकाल पड़ेगा ।)

लोगों में और भी कई प्रकार के विश्वास होते हैं। शरीर के अंगों से संबन्धित कुछ कहावतें मिलती हैं जिनसे यह प्रकट होता है कि लोगों का विश्वास कैसे काम करता है। उदाहरण के लिए एक हिन्दी कहावत देखिए —

"सिर भारी सिरदार का, पग भारी गुरदार का।"

जिसका सिर बड़ा होता है, वह सरदार होता है, और जिसके पैर भारी होते हैं, वह गँवार होता है।

समाज में जो विविध प्रकार की जातियाँ रहती हैं, उनके संबन्ध में भी अनेक विश्वास और विचार होते हैं। तेलुगु-जनता में स्त्री पुरुष, ब्राह्मण, वणिक् आदि के संबन्ध में अनेक प्रकार के विश्वास हैं। कुछ कहावतें देखिए—

१) नव्वे आडदानि येड्चे मगवाणिण नम्मरादु ।[1]
अर्थात् हंसनेवाली स्त्री और रोनेवाले पुरुष पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

२) नल्ल ब्राह्मणिण, तेल्ल कोमटिनि नम्मराद्‌ ।
अर्थात् काले ब्राह्मण और गोरे बनिए पर विश्वास नहीं रखना चाहिए।

इसी प्रकार की एक और कहावत है—

1. कन्नड में कहावत है —— "नगो हेंगसन्न अळो गंडसन्न नंबबारदु ।"

३) नल्ल ब्राह्मणि एर्र वेस्तनि नम्मरादु ।

अर्थात् काले ब्राह्मण और गोरे मछुए पर विश्वास नहीं करना चाहिए ।

४) ब्राह्मणुललो नल्लवाण्णि मालल्लो येर्रवाण्णि नम्मरादु ।

अर्थात् ब्राह्मणों में काले और चामरों में गोरे पर विश्वास नहीं करना चाहिए ।

साधारणतया देखा जाता है कि ब्राह्मण गोरे होते हैं और तथा कथित इतर जाति के लोग काले होते हैं । अपने अनुभव के विरुद्ध ऐसे लोगों को देखने के फलस्वरूप ऐसी कहावतें "लोक-विश्वास" बनकर चल पड़ी हैं ।

अन्यत्र धर्म-संबन्धी साधारण कहावतों में एक तेलुगु-कहावत का उल्लेख किया गया है—

"कुल्लु येड्चे अमावास्य, इरुगुपोरुगु येड्चे तद्दिनं, कूरु येड्चे लिल लेदु"

वर्ण्य विषय को दृष्टि में रखकर इसे यहाँ भी उद्धृत कर सकते । इस कहावत से हिन्दुओं के, विशेष कर ब्राह्मणों के आचार-विचार का पता चलता है । श्राद्ध के दिन अगल-बगल के घरवालों को भी भोजन देने की प्रथा (आचार) ब्राह्मणों में है ।

तेलुगु की नीचे दी कहावत को देखिए —

जाति कोद्दि बुद्धि, कुलमु कोद्दि आचारमु ।

अर्थात् जाति के अनुसार बुद्धि होती है और वंश के अनुसार आचार होता है ।

किसी दुर्भाग्यवती स्त्री का पति मर जाय, जिसका अभी-अभी ससुराल में आगमन हुआ हो तो लोग यही कहेंगे कि उसके कारण ही उसका पति मर गया। यह लोक-विश्वास एक तेलुगु-कहावत में इस प्रकार प्रकट है —

अम्म गृहप्रवेशमु, अय्य श्मशान प्रवेशमु ।

(बहू का गृहप्रवेश, पति का श्मशान प्रवेश ।)

स्त्री और पुरुष पर भी अलग-अलग कहावतें मिलती हैं जिससे लोगों के विश्वासों का पता चलता है। आगे इन पर विचार करेंगे।

काने, खोटे, कूबरे तथा स्त्री पर विश्वास नहीं करना चाहिए लोगों में ऐसी भावना होती है। प्रचलित इस लोक-विश्वास संबंधी कहावत का प्रयोग गोस्वामी जी ने रामायण में कैकेयी-मंथरा संवाद में किया है —

काने खोटे कूबरे कुटिल कुचाली जानि ।

तिय विसेषि पुनि चेरि कहि भरत मातु मुसुकानि ॥[1]

राजस्थानी-कहावत है—

काणूं खोडो खायरो, ऐंच्चाताण होय ।

इण दें जद ही छेडिये, हाथ वोसलो होय ॥[2]

जनता यह विश्वास करती है जो विकलांग होते हैं, उनको भगवान विलक्षण बुद्धि भी प्रदान करते हैं। तेलुगु-कहावत है—

1. श्री रामचरितमानस— अयोध्याकांड, दोहा १४.
2. राजस्थानी कहावतें— एक अध्ययन, पृ. २१७.

कंडलु चेरिपिन देवुडु मति इच्चिनाडु ।
(जिस भगवान ने आँखें छीन लीं, उसने बुद्धि भी दी ।)

जनता ने अपने जीवन के अनुभव के आधार पर ऐसा विश्वास प्रकट किया है ।

तिथि, वार, नक्षत्र आदि के संबन्ध में भी अनेक प्रकार के लोक-विश्वास रहते हैं । किसानों का विश्वास है कि मंगलवार को बीज नहीं बोना चाहिए । तेलुगु कहावत है—

मंगळवार मंडे वेयकूडदु ।

स्थापना करने के लिए शनिवार और व्यापार के लिए बुधवार अच्छे दिन माने जाते है । हिन्दी-कहावत है—

थीवर कीजै स्थापना, बुध कीजै व्योपार ।

माना जाता है कि बुध, गुरु, और शुक्रवार को कपड़ा पहनना श्रेयोस्पद है—

बुध बृहस्पत शुक्करवार कपड़ा पहरै तीन बार ।

तेलुगु-जनता में भी ऐसे विश्वास हैं ।

हिन्दी और तेलुगु में ही नहीं, दूसरी भारतीय भाषाओं में भी ऐसी कहावतें प्रसिद्ध हैं ।

कुछ कहावतें पहले हँसी-मजाक के रूप में पहले प्रचलित रहती हैं, कालांतर में "लोक-विश्वास" के अन्तर्गत आ जाती हैं । उदाहरण के लिए निम्नांकित कहावत देखिए —

बड़ी बहू बड़ा भाग, छोटे बनड़ो घणो सुहाग ।[1]

1 कहानी के लिए देखिए 'कहावतों की कहानियाँ' पृ १०६–१०७.

लोक-विश्वास सबन्धी कहावतो की चर्चा करते समय सच-झूठ और पाप-पुण्य पर जो कहावतें मिलती हैं उनकी भी चर्चा करना आवश्यक होता है। कारण स्पष्ट है। ये भी तो विश्वास ही हैं। सच-झूठ, पाप-पुण्य इत्यादि के संबन्ध में लोगों में नाना प्रकार के विश्वास होते हैं। ऐसी कहावतो के परिशीलन से विदित होता है कि समाज मे इनका क्या महत्व है। कतिपय कहावतें देखें —

सांच को आँच नहीं।

तेलुगु कहावत से तुलना कीजिए —

यथार्थंमुन्कु येंदु आलोचनलु अक्कर लेदु।

(सच बोलने में सकोच क्यों ?)

सत्य की जय होती है, झूठ की नहीं।[1] सत्य को धर्म भी कहा गया है,[2] उसे ईश्वर भी माना गया है। कबीर का कथन है—

सांच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप।
जाके हृदये सांच है, ताके हृदये आप ॥

सच सबका प्यारा है। पर कुछ कहावतो में इसके विरोधी भाव व्यक्त किया गया है—

सच का जमाना नहीं।[3] (हिन्दी)

निजानिकि काल कादु। (तेलुगु)

1. "सत्यमेव जयते नानृतम्" यह अत्यत प्रसिद्ध उक्ति है।
2. सत्यान्नास्ति परोधर्म।
3. साँच कहै तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना। (कबीर)

कि नग्न सत्य कठोर होता है—

सत्य कड़ुवा है।

Truth is bitter fruit (Danish)

ा—

अंधे को अंधा कहने में बुरा लगता है। (हिन्दी)

निजमाडिते निष्ठुरमु। (तेलुगु)

[सच कहने से रूखापन बढ़ता है।]

ा—

उन्नमाट चेप्पिते, वुलिकेसुकोनि वस्तुंदि।

[सच-सच कहने पर क्रोध आता है।]

भाव की और भी कहावतें हैं—

उन्नमाट चेप्पिते ऊरु अच्चिरादु।

[सच कहने से गांव ही शत्रु हो जाएगा।

यथार्थवादी बंधुविरोधी।

[सच बोलनेवाला रिश्तेदारों का शत्रु होता है।]

— यथार्थवादी लोकविरोधी।

[यथार्थ कहनेवाला मनुष्य जगत का वैरी होता है।]

होते हुए भी झूठ बोलने का विरोध किया गया है। कुछ कहा

—

डिद्दु कंडगे हेळिदरे कॆंडदंथ कोप। (कन्नड)

साची कही, अठा की वई। (राजस्थानी)

t is truth that makes a man angry (Latin)

झूठ के पाँव कहाँ ?

झूठ बोलना और खाक खाना बराबर है ।

झूठ का मुँह काला और सच्चे का बोलबाला ।

झूठ के आगे सच रो मरे ।

एक झूठ छिपाने के लिए दूसरा झूठ बोलना पड़ता है— इस भाव की तेलुगु कहावत है—

ओक अबद्धमु कप्पिपुच्चुटकु वेय्यि अबद्धालु कावलेनु ।

अर्थात् एक झूठ को छिपाने के लिए हजार झूठ चाहिए । और एक कहावत में कहा गया है कि "झूठ बोले तो भी ऐसा बोले कि उस पर विश्वास किया जा सके" —

अबद्धमु चेप्पिना नम्मेला वुंडवलेनु ।

समाज में सत्य का ही मान होता है, सत्य ही बोलना चाहिए । पर, कभी-कभी झूठ बोलने की अनुमति दी गयी है । समाजहित या लोकहित को दृष्टि में रखकर ऐसा किया जा सकता है । देखिए—

वेय्यि कल्ललाडैना ओ इल्लु निलबेट्टमन्नारु ।

अर्थात् हजार झूठ बोलकर भी एक घर-गृहस्थी ठीक करनी चाहिए ।

नूरु अबद्धालु आडि ओक पेळ्ळि चेय्यमन्नारु ।

अर्थात् एक सौ झूठ बोलकर भी एक शादी करानी चाहिए ।

इन कहावतों के अध्ययन से प्रकट होता है कि सच और झूठ के प्रति जनता की क्या विचारधारा है, उसका क्या विश्वास है । अब हम देखें कि पाप-पुण्य के सम्बन्ध में लोगों का क्या

जिज्ञासा प्राचीन काल से ही रही है। प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से इसकी व्याख्या करता है। तथापि, इस संबन्ध में लोगों की क्या धारणा, क्या विश्वास है, कहावतों से मालूम हो जायेगा।

दूसरे का हित करना ही पुण्य और अहित करना ही पाप माना गया है।[1] गोस्वामी जी की उक्ति हम पहले ही उद्धृत कर चुके हैं।[2] हिन्दी की एक कहावत है—

पापी के मन में पाप बसता है।

तेलुगु-कहावत से इसकी तुलना करके देखिए —

पापीकि अंदरमीदा अनुमानमे।

[पापी-मन सदा शंकित रहता है। वह सब को संदेह की दृष्टि से देखता है।]

पाप से कमाया धन कभी टिकता नहीं। कहावत है—

पापपु सोम्मु प्रायश्चित्तानिकि सरिपोतुंदि।

अर्थात् पाप का धन प्रायश्चित्त में जाता है।

तुलना कीजिए —

पाप का धन अकार्थ जाय।[3]

अथवा—

हरामकी कमाई हराम में गँवाई।

एक-दो ऐसी भी कहावतें मिलती हैं जिनमें पाप को पुण्य का मार्ग

1. परोपकार- पुण्याय पापाय परपीडनम्।
2. पृ. ११६
3. तुलना कीजिए —— पापी पापेन हन्यते। (संस्कृत)

कहा गया है। कन्नड की एक कहावत है जिसका उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा —

पापमु पुण्यमुखी।

अर्थात् पाप भी पुण्य की ओर ले चलता है।

ऋतु, नक्षत्र आदि विषयों पर लोगों के अनेक विश्वास होते हैं। ग्रहण-अमावास्या आदि पर्व दिनों में दान-तप आदि करना शुभ माना जाता है। कहा गया है—

ग्रहण को दान, गंगा को असनान।

ग्रहण के दिन दान करने से पुण्य मिलता है। गंगा में स्नान करने से पुण्य मिलता है।

समाज में स्थित ऐसे विश्वासों का देश-काल के अनुसार स्थान होता है। उन में परिवर्तन होता रहता है। तथापि, पुराने विश्वासों का अपना महत्व रहता है।

इस विषय पर और भी अनेक कहावतें मिलती हैं। स्थानाभाव के कारण संक्षेप में यहाँ विचार प्रकट किया गया है।

(ङ) शकुन संबन्धी कहावतें— मानव अपने पूर्वजों से अथवा अपने समाज से नाना प्रकार के विश्वासों, विचारों तथा रूढियों की परंपरा के रूप में प्राप्त करता है। व्यक्ति की अभिरुचि समाज की अभिरुचि से भिन्न होने पर भी व्यक्ति समाज से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। सामाजिक रूढियों तथा विश्वासों के विरुद्ध चलने का साहस उसे नहीं होता। बड़े-बड़े लोग भी ऐसा साहस नहीं करते। आज के वैज्ञानिक युग में भी पढ-लिखे लोग सामाजिक रूढियों और परंपराओं

पूर्णतः त्याज्य नहीं मानते। प्रायः लोग सोचा करते है — "हमारे
" ने अनुभव के आधार पर ही ये उक्तियाँ कही है। हम क्यों इसके
र चलें ?" कहा जाता है कि डॉ० जॉनसन सरीखे व्यक्ति भी शकुन
ड़ा विश्वास रखते थे।

शकुनों का रहस्य क्या है ? शकुन कैसे बनते हैं ? ये प्रश्न बड़े ही
त्वपूर्ण हैं। यह कहना अधिक युक्तिसंगत होगा कि शकुनों का
र अनुभव ही हैं। रास्ता चलते समय बिल्ली रास्ता पार कर जाय,
ों एक ब्राह्मण अथवा कोई विधवा दिखाई पड़े या खाली घड़ा लाते
यक्ति को देखे तो समझते है कि अपशकुन हो गया। हमारे समाज
। प्रकार की परंपरायें बन गयी हैं। हम बाल्यकाल से इस ओर
ट हो जाते हैं। अतः स्वयं उनपर विश्वास करते है। वस्तुतः ये
किसी एक व्यक्ति के जीवन में घटित घटनाओं के आधार पर बने
कसी व्यक्ति के रास्ता चलते समय सामने कोई विधवा आ गयी
ौर उस व्यक्ति का कार्य असफल हुआ हो और इसके आधार पर
में वह अपशकुन माना जाने लगा हो।

यह ऊपर कहा गया है कि सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य
वर्ग या समाज में प्रचलित रूढ़ियों और विश्वासों से प्रभावित
है। उनसे यह बच नहीं पाता। अतः शकुन-मनोविज्ञान जानने के
में वर्ग या समाज पर दृष्टिपात करना चाहिए। जो समाज प्रारंभ
सिक दृष्टि से बाल्यावस्था में रहता है, उस समाज में शकुन
े जैसे विचार बन जाते हैं और वे परंपरा के रूप चले आते हैं।

हमारे देश में प्राचीन काल से ही शकुनों का महत्व स्वीकार कर

लिया गया है। इनकी बहुत चर्चा भी हुई है। इन पर अनेक ग्रंथ मिलते है। पुराणों और इतिहासों में भी शकुनों का वर्णन प्राप्त है।

भारत वर्ष की सभी भाषाओं में शकुन संबन्धी कहावतें मि जाती हैं। हिन्दी और तेलुगु भी इससे रहित नहीं हैं। यहां एक बात की ओर हमारा ध्यान जाता है। वह यह है कि प्रायः इस देश के प्रदेश में शुभ तथा अशुभ माने जाने वाले शकुन समान रूप में परिगणित होते हैं। कहीं कोई भेद आ जाय तो आ जाय।

शकुनों का संबन्ध मानव-जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों से है। जन्म मरण, अकाल-बीमारी, विवाह-उत्सव आदि विषयों से इनका संबन्ध है अब हम कुछ कहावतों पर विचार करेंगे—

शरीर के अंगों के अनुसार शकुन का निर्णय किया जाता है। ऐसा मान जाता है कि पुरुष की दाहिनी आँख और स्त्री की बाई आँख फड़के त शुभ शकुन है। पुरुष की बाई आँख और स्त्री की दाहिनी आँख फड़े तो अशुभ शकुन है। इसी भाँति पुरुष की दाहिनी भुजा फड़के तो शु तथा बाई भुजा फड़के तो अशुभ है। इस प्रकार के विश्वास का कार यह प्रतीत होता है कि बिना प्रयत्न के ये अंग फड़कने लगते हैं। अत इन्हें अनुभव के आधार पर शुभ या अशुभ माना जाने लगा है एक कहावत है —

> आँख फड़कै बाई कै, बीर मिले कै साई।
> आँख फड़कै दहणीं, लात धमूका सहण्णी ॥ [1]

1. राजस्थानी कहावतें— एक अध्ययन, पृ. २५०.

अर्थात् यदि स्त्री की बाईं आँख फड़के तो भाई मिले या पति मिले। यदि दाहिनी आँख फड़के तो उसे लात-घूसा सहना पड़े।

तुलसी-रामायण में शकुन का वर्णन मिलता है—

१) राम सीय तन सगुन जनाए। फरकहिं मंगल अंग सुहाए॥
पुलकि सप्रेम परसपर कहहीं। भरत आगमन सूचक अहहीं॥
भए बहुत दिन अति अवसेरी। सगुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी॥[1]

रात में बुरा सपना देखना अशुभ माना जाता है। कैकेई मंथरा से कहती है—

२) सुनु मंथरा बात फुरि तोरी। दाहिनी आँख नित फरकइ मोरी॥
दिन प्रति देखउ राति कुसपने। कहऊँ न तोहि मोह बस अपने॥[2]

शरीर के अन्य भागों के संबन्ध में भी इस प्रकार की विचारधार दिखाई पड़ती है। बोलते समय या कार्यारंभ मे कोई एक बार छींके तो बुरा या अपशकुन माना जाता है। तेलुगु-कहावत प्रसिद्ध है—

तुम्मु तम्मुडै चेप्पुनु।

[छींक भाई बनकर कहता है, अर्थात् चेतावनी देता है।]

कुछ लोग मानते हैं कि एक बार छींकना बुरा है, पर दो बार छींकना अच्छा है।

हमारे देश में यह प्राचीन रीति है कि कोई छींकता है तो "शतं जीव" "चिरंजीव" या "शतायु" कहते हैं। हमारे देश में ही नहीं,

1. श्री रामचरितमानस– अयोध्याकांड ६–३.
2 वही १९–३

अन्य देशों में भी इस प्रकार की पद्धति है। वे लोग कहते हैं कि- "ईश्वर कल्याण करें"। तेलुगु की नीचे उद्धृत कहावत से यह बा प्रामाणित होगी—

तुम्मिनवाडे चिरंजीवि अनुकोन्नट्लु।

अर्थात् जैसे स्वयं छींकनेवाला ही कहे कि "चिरंजीव"।

जाति-विशेष से भी शुभाशुभ शकुन का निर्णय किया जाता है ब्राह्मण और विधवा स्त्री से संबन्धित विचार ऊपर बताया गया है कुछ अन्य जातियों के संबन्ध में धारणा देखिए—

दर्पण हाथ में लेकर नाई का सामने मिलना अत्यंत शुभ समा जाता है। कहावत है —

नाई साम्हो आवतो, दरपण लीधां हाथ।
सकुन विचारे पंलिया, आसा सब पूजन्त ॥ [1]

सोनार का सामने आना बहुत बुरा अथवा अशुभ माना जा है —

आटो कांटो ... घणो, खुलै केसा नार।
बावो भन्नो न दाहिणो, ल्यालीजरख सुनार ॥ [2]

पशु-पक्षियों में गधे का बोलना शुभ सूचक माना है। तेलुगु इसे "गदर्भ शकुनम्" कहते हैं। सियार को मुंह देखना भाग्य का सूच माना जाता है। इसलिए फेरीवाले से बोलते समय कहा जाता

1. राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन डा० कन्हैयालाल सहल, पृ. २२१.
2. वही.

"सियार का मुख देखकर आये थे।" पर, सियार का बोलना अशुभ माना जाता है। संभवत: इसीलिए तेलुगु में यह कहावत भी चल पड़ी है कि—

नक्कगूत दानि पिल्ललके चेट्टुदेच्चुनु।

अर्थात् सियार का बोलना उसके बच्चों के लिए भी अशुभ का कारण बनता है।

कुत्ते का रोना या चिल्लाना अशुभ माना जाता है। कहते हैं—

पोय्यि आरिस्ते बंधुवुलु कुक्कलु कूस्ते करवु।

(चूल्हा आवाज करें रिश्तेदार आते हैं, कुत्ते चिल्लावे तो अकाल पड़ता है।)

यात्रा के समय हरिण का सामने आना अशुभ माना जाता है। कहा जाता है कि मृत्यु हो जाती है—

'शकुनं भला के शामल्यां, सारा माठा काम।

रथिडा रथ हंकारजे, लइ नारायण नाम॥'

कहा जाता है कि हरिणों को बाईं तरफ़ देखकर अर्जुन रथ हाँकने में हिचकिचाने लगा। तब किसी ने कहा— "जब भगवान ही अनुकूल हो तब शकुनों का विचार ही क्यों?"[1]

जब खतरा सामने रहता है तब शकुनों का विचार नहीं किया जाता। तेलुगु की कहावत देखिए —

तुरकलु कोट्टगा तुम्मेदुरा?

अर्थात् जब मुसलमान मारने लगे हैं तब (भागने के लिए) क्या शकुनों

1 राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन डा० कन्हैयालाल सहल, पृ. २२२.

पर विचार किया जाता है ?

शकुनों का विचार करते समय यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि इसका मनोविज्ञान क्या है ? मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि अपशकुन पर विचार करनेवाले व्यक्ति के मन में कोई ग्रंथि रहती है । इस कारण, वह अपशकुन की ओर आकृष्ट होता है । मनो-विश्लेषण से इस ग्रंथि को दूर कर सकते हैं । जिसके मन में ग्रंथि नहीं होती, वह इसको [illegible] ध्यान नहीं देता ।

इतना कहने मात्र से शकुनों का महत्व कम नहीं हो जाता । शकुनों से भले ही हमको भविष्य के बारे में निश्चित रूप से न मालूम हो, पर उससे चेतावनी तो मिल जाती है । आधुनिक युग में पुरानी परंपराओं और मान्यताओं के प्रति एक प्रकार की विद्रोही मनोवृत्ति दिखाई पड़ती है । भौतिकवाद के प्राबल्य के कारण आज बहुत-से लोग शकुनों को मान्यता नहीं देते । तथापि, क्या इन मान्यताओं को एकदम वर्ग या समाज से निकाल फेंकना संभव है ?

(च) भक्ति-वैराग्य संबंधी कहावतें— दुर्लभ नरदेह प्राप्त कर मानव भगवान् का भजन नहीं करता तो अपने जन्म को ही व्यर्थ कर देता है । कहावतों में इस तथ्य की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है कि सच्ची भक्ति से ही भगवान की प्राप्ति हो सकती है । जिस भाँति अनेक साधु महात्माओं ने बाह्याडंबर का खंडन किया है, उसी प्रकार हम कहावतों में भी बाह्य का खण्डन देखते हैं । उनमें अन्तःकरण की शुद्धता को प्रधानता दी गयी है । पूजा-विधान में कमी भी रह जाय, पर भक्ति निर्मल तथा अटल रहनी चाहिए । तेलुगु-कहावत है—

शक्ति तप्पिना भक्ति तप्परादु ।

(शक्ति कम हो, पर भक्ति कम न हो ।)

भक्ति के लिए मन की शुद्धता अपेक्षित है—

मन चंगा तो कठौती में गंगा ।

मन शुद्ध नहीं हो तो पूजा ही व्यर्थ है । तेलुगु-कहावत देखिए—

भक्ति लेनि पूजा पत्तिचेट्टु ।

(भक्ति रहित पूजा से व्यर्थ ही फूल जाते हैं ।)

भक्ति के लिए छोटे-बड़े का विचार आवश्यक नहीं है । जो जैसी भक्ति करता है, वैसा फल पाता है, जितनी शक्ति है, उतनी भक्ति—

उडतकु वुडता भक्ति ।[1]

(गिलहरि अपनी शक्ति भर भक्ति करती है ।)

गिलहरी की भक्ति प्रसिद्ध ही है ।

भक्ति के लिए एकनिष्ठता आवश्यक है । भजन एकांत में ठीक प्रकार होता है । कहावत है—

भजन-भोजन एकांतमन्ना ।

दुख में सब भगवान का स्मरण करते, सुख में नहीं[2] —इस आशय को प्रकट करनेवाली कहावत —

विपत पड़ी तब माँगी भेंट ।[3]

1. अब्ठल सेवे मठ्ठल भक्ति । (कन्नड)
2. दुख में सब सुमिरन करे, सुख में करे न कोइ ।
   जो सुख में सुमिरन करे, तो काहे दुख होइ । (कबीर)
3. [illegible] [illegible] वेंकटरमण । (कन्नड़)

जो ढोंगी भक्त होते हैं उनको दृष्टि में रखकर ही ये कहावत पड़ी—

राम राम जपना, पराया माल अपना।

अथवा—

मुँह में राम-राम, बगल में छुरी।

अथवा—

अंदर छूत नहीं, बाहर दरदर।

तेलुगु में—

चेप्पेवि श्रीरंगनीतुलु दूरेवि दोम्मरि गुडिसेलु।

(भगवान का नाम कहते हैं, पर जाते हैं नीचों के यहां।)

अथवा —

चेसेवि शिवपूजलु चेप्पेवि अबद्धालु।

(पूजा तो शिव जी की करते है पर बोलते हैं झूठ।)

अन्य भाषाओं में भी इस प्रकार की कहावतें हैं —

All are not saints that go to church. (अंग्रेजी)

पडिक्किरदु रामायणं इडिक्किरदु पेरुमाळ्कोविल्। (तमिल)

हेळोदु पुराण माडोदु अनाचार। (कन्नड)

कहावतों का प्रयोग सदर्भानुसार होता है। पर, पहले ढोंगी भक्तों देखकर ही ये उक्तियां चल पड़ी होंगी। अस्तु :

यह दृश्यमान जगत नश्वर है। मानव अपनी आंखों से जो कुछ [illegible] है, वह सत्य नहीं है। वह सपने में देखी गयी वस्तु के समान [illegible] है। उसकी यह काया भी चिर काल तक रहनेवाली नहीं है।

आयु समाप्त होते ही या तो वह भस्म हो जाएगी या मिट्टी में मिल जाएगी। इस प्रकार की भावधारा के कारण ही मानव के मन में वैराग्य उत्पन्न होता है। साधारण जनता भी इस ओर आकृष्ट होती है। जीवन का ज्वार-भाटा देखकर उसके मुँह से ऐसी उक्तियाँ निकल पड़ती हैं। जिस प्रकार दार्शनिक कलाकार अपनी रचना में वैराग्य की बात करता है, उसी प्रकार साधारण जनता अपनी "रचना" कहावतों में इसकी अभिव्यक्ति करती है। कुछ उदाहरण देखेंगे—

आज है सो कल नहीं। (हिन्दी)

निन्न वुन्नारु नेडु लेरु। (तेलुगु)

[कल थे आज नहीं।]

नश्वर-जीवन को देखकर ही कहा जाता है—

आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर।

और

आखिर मरेगा, जोड़-जोड़कर क्या करेगा? वैराग्य के कारण ही मनुष्य के मुंह से निकल पड़ता है—

ई रोजु चस्ते रेपटिकि रेंडु।

[आज मरे तो कल दूसरा दिन।]

संस्कृत में वैराग्य संबन्धी कई उक्तियाँ मिलती हैं। भर्तृहरि का "वैराग्य शतक" प्रसिद्ध ही है जो तेलुगु में भी है। आन्ध्र में वेमना की कई उक्तियाँ प्रचलित हैं।

सभी लोगों के हृदय में सच्चे अर्थ में वैराग्य उत्पन्न नहीं होता। सांसारिकता से बचने के लिए जो लोग वैरागी हो जाते हैं — बाह्य

वेश-भूषा से वैरागी दृष्टिगत होते हैं, वे सब सचमुच वैरागी नहीं होते। जैसे ऊपर दिखाया गया कि मन शुद्ध रहना चाहिए, तभी भक्ति या वैराग्य उत्पन्न हो सकता है। तेलुगु में एक कहावत में यह भाव व्यक्त किया गया है —

तललु बोडियैना तलपुलु बोडियगुना ?

सिर मुँडाने पर क्या इच्छायें मुँडित हो जाती हैं ? अर्थात् गेरुवा वस्त्र पहने मात्र से कुछ नहीं होता। कबीर ने भी कहा था —

केशन कहा बिगारिया, जो मूँडो सौ बार।
मन को क्यों नहिं मूँडिए जामे विषय विकार ॥

पारिवारिक कठिनाई अथवा जीवन के कठोर आघात के कारण जो वैराग्य उत्पन्न होता है, वह क्षणिक है। इन तेलुगु कहावतों से यह प्रमाणित होगा —

पुराण वैराग्यं, प्रसूति वैराग्यं, श्मशान वैराग्यम्।

अर्थात् पुराण श्रवण करते समय जो वैराग्य उत्पन्न होता है, वह पुराण समाप्त करने के बाद नहीं रहता ; प्रसूति वैराग्य प्रसव काल तक और श्मशान वैराग्य घर लौटने तक रहता है।

और एक कहावत लीजिए, इसमें भी वही बात कही गयी है—

श्मशान वैराग्यं इंटिकोच्चेदाक।

[श्मशान वैराग्य घर लौटने तक।]

ऐसी कहावतों को शुष्क समझ कर त्याग नहीं सकते। विचार करने पर ज्ञात होगा कि समाज में वैराग्य संबन्धी ऐसी उक्तियों का महत्व है। इनके प्रचलन का कारण संभवतः मानव को दुराचारों से

बचने और सन्मार्गगामी होने की शिक्षा देना रहा हो। ये कह
जीवन को ज्योतिर्मय बनाती हैं, इसमें संदेह नहीं।

(छ) जीवन-दर्शन संबन्धी कहावतें — "जीवन का
प्रश्न पर कई दार्शनिकों ने विचार किया है। सच तो यह है
की व्याख्या करना बड़े-बड़े लोगों के लिए भी कठिन है।
दुख का सम्मिश्रण है। कविकुल गुरु के शब्दों में —

"नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।"

तेलुगु की इन कहावतों में यही भाव व्यक्त हुआ है—

बाधकोक कालम् भाग्यानिकोक कालमु।

(दुख-सुख का अपना-अपना समय है।)

बाध कोन्नाळ्ळु भाग्यं कोन्नाळ्ळु।

(दुख कुछ दिन तो सुख कुछ दिन।)

जहाँ सुख रहता है, वहाँ दुख भी रहता है और जहाँ प्रकाश
वहाँ अंधकार भी —

शादी और रंज का जोड़ा है।

अथवा—

घर घर शादी घर घर गम।

सुख-ऐश्वर्य की अस्थिरता को देखकर यह कहावत बनी —

"चार दिनकी चाँदनी फिर अंधेरी रात।"

तेलुगु-कहावत से तुलना कीजिए —

मूडनाळ्ळ मुच्चट।

(तीन दिन का सुख।)

अथवा—

आदिवारं नाडु अंदलं, सोमवारं नाडु जोलि।

(रविवार पालकी या डोली में, सोमवार कपड़े की झोली में।)

सुख-दुख शुक्ल और कृष्ण पक्ष के समान है। तेलुगु-कहावत है—

कष्टसुखालु रेडूं कावडि कुंडलंटिवि।

(कष्ट और सुख काँवर-घड़े के समान है।)

सुख के बाद दुख के दिन आते हैं —

सुखमु कष्टमुनके।

(सुख दुख भोगने के लिए ही है।)

दुख के बिना सुख और सुख के बिना दुःख नहीं होता।

नाना प्रकार की आशा-आकांक्षाओं में फँसकर मानव दुःख का भागी बनता है। उसकी आशा का अन्त नहीं —

आशकु अन्तमु लेदु।[1]

(आशा का अन्त नहीं।)

तुलना कीजिए —

जब तक साँस तब तक आस।

आशा ही दुःख का कारण है —

आशा आशा परमं दुःखं निराशा परमं सुखं।

और

संतोषं सगं बलमु।

(संतोष आधा बल है।)

1. Much would have more. (English)
No one is content with his lot. (Portuguese).
The more one has the more one wants. (Spanish)

अथवा

संतोषं परम सुखम् ।[1]

आखिर यह दुःख-सुख क्या है, मन की अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियं का नाम है —

दिल ही दोजख है दिल ही जहन्नुम ।[2]

जीवन में जो मिलता है, उससे संतोष करना चाहिए —

कभी घी घना, कभी मुट्ठी भर चना और कभी वह भी मना

जीवन की अस्थिरता प्रकट करनेवाली कहावतें भी कम नहीं है —

कल का नाम काल है ।

सब दिन जात न एक समान ।

आदि कहावतें इसी प्रकार की हैं । सांसारिकता में पड़े हुए मनुष्य ः संबन्ध में कहावतें कहती हैं —

माया तेरे तीन नाम परसा परशू परसराम ।

इस संसार में जब तक रहते हैं तब तक काम करना ही चाहिए —

जब तक जीना तब तक सीना ।

भाई-बन्धु, रिश्तेदार-मित्र सब मरते तक साथी हैं—

जीते जी का नाता ।

जीवित रहेंगे तो सब कुछ कर सकते हैं । इसलिए ही कहावतें चल पड़ी हैं-

जान बची लाखों पाये ।

तुलना कीजिए —

1. A contented mind is a continual feast. (English)
2. मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः । (संस्कृत)

प्राणमुंडे वरकु भयमु लेदु ।

(जब तक प्राण रहेंगे तब तक कोई डर नहीं ।)

और — जान है तो जहाँ ।

यह संसार क्षणिक । शरीर नश्वर है —

देहमु नीरु बुग्गवंटिदि । (तेलुगु)

आदमी बुलबुला है पानी का । (हिन्दी)

इस कारण कुछ लोग कहते हैं — "जीवन का मजा लूट लो ।"

चार्वाक का कथन है —

भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ।

तस्मात् सर्वप्रकारेण ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत् ।।

इस भाव की भी कहावतें दोनों भाषाओं में मिलती हैं, देखिए —

१) दुनिया ठगिये मक्कर से, रोटी खाओ शक्कर से ।

२) अब की अब के साथ है जब की जब के साथ । (हिन्दी)

अप्पु चेसि पप्पु कूडु । (तेलुगु)

[उधार लो, मजा करो ।]

परन्तु जीवन का उद्देश्य भोग-विलास नहीं और न यह कि निश्चिन्त रहे —

"उधो का लेना न माधो का देना ।"

उसका उद्देश्य कुछ और है । कहा जाता है कि इस संसार में जो जागृत रहता है, वह सफलता पाता है । मनुष्य को चाहिए कि वह इह तथा पर दोनों को सोचे, दोनों में सफलता प्राप्त करने का मार्ग ढूंढे । "दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम" के जैसे वह उभय भ्रष्ट न हो ।

जीवन-दर्शन संबन्धी जितनी भी कहावतें मिलती हैं, उनका समग्र रूप से परिशीलन करने पर यही तथ्य निकलता है कि मनुष्य को जब तक जीवित रहना है तब तक पवित्र रहना चाहिए। मृत्यु तो सदा ताक में बैठी रहती है, वह किसी की नहीं सुनती —

बहन कहे मेरा भैया प्यारा,
मौत कहे मेरा है यह चारा।

अतः मनुष्य को आदर्श-जीवन व्यतीत करना चाहिए। कहीं-कहीं कुछ विरोधी भाव व्यक्त होनें पर भी इन कहावतों का सार यही है कि "पाक रहो बेबाक रहो।"

(ज) पौराणिक गाथाओं से संबन्धित कहावतें — हमारे देश में प्राचीनकाल से पुराणों का विशेष स्थान रहा है। पौराणिक गाथायें जन-जीवन से हिल-मिल गयी हैं। पुराणों या काव्यों में लोक-कथाओं का रूप ढूँढा जा सकता है। पौराणिक गाथाओं का जन-मानस पर प्रभाव पड़ने के कारण इनसे संबन्धित उक्तियां कहावतो का रूप धारण कर चुकी हैं। किसी प्रसंग का उदाहरण देने के लिए अथवा साम्य दिखलाने के लिए ये कहावतें प्रयुक्त होती हैं। कुछ कहावतों में प्रसिद्ध पौराणिक पात्रों का उल्लेख रहता है। किसी व्यक्ति से तुलना करने अथवा साम्य दिखलाने के उद्देश्य से ऐसी कहावतों का उपयोग होता है। और कुछ कहावतें किसी घटना का चित्र हमारे नेत्रों के समक्ष उपस्थित कर देती हैं। तेलुगु में पौराणिक गाथाओं से संबन्धित कहावतों का प्रचार है। हिन्दी में भी ऐसी कहावतें हैं। अन्य भारतीय भाषाओं में

भी ऐसी कहावतें मिलती हैं। अब हम तद्विषयक कतिपय कहावतों का परिशीलन करेंगे ——

रामायण और महाभारत का जन-जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। बोलते समय किसी लंबी घटना अथवा कहानी सुनकर कहते हैं —— "चालु नी रामायणम्" अर्थात् "बस है, तुम्हारी राम कहानी"। कहीं लड़ाई-झगड़ा होने लगता हो कहते हैं– "महाभारत शुरू हुआ" "लंका कांड हुआ।" नीचे रामायण की कथा के आधार पर बनी कहावतें दी गयी हैं ——

१) भरतुडि पट्णमु, रामुडि राज्यमु।

[भरत का नगर, राम का राज्य।]

अथवा ——

२) भरतुनि पट्टणमु रामुनि राज्यमु सुखप्रदमुले।

[भरत का नगर और राम का राज्य सुखप्रद ही है।]

इसी प्रकार की और एक कहावत है ——

३) राम-राज्यमु भरतुडि पट्टमु।

[राम का राज्य और भरत का राजतिलक।]

इन कहावतों को देखने से रामायण की सारी घटना स्मरण हो जाती है। पहली दो कहावतों में चित्रकूट प्रसंग के बाद की और तीसरी में वन-गमन के पहले की घटना का उल्लेख मिलता है।

कुछ और कहावतें लीजिये ——

रामुनिवंटि राजुवुंटे हनुमंतुनिवंटि बंटु अप्पुडे वुंटाडु।

[यदि राम जैसे राजा रहे तो हनुमान जैसे सेवक भी रहेंगे।]

पूरी घटना का स्पष्टतया वर्णन करने के बाद भी व
उसे ठीक प्रकार न समझे और प्रश्न करें तो हम कहते हैं —

रामायणमंता विनि रामुडिकि सीता येमि कावलेनु
अडिगिनट्लु ।
(जैसे सारी रामायण सुनने के बाद यह पूछना कि
राम की कौन होती है ?)

हिन्दी में भी इस भाव की कहावत है —

सारी रामायण सुन गये पर यह न मालूम कि राम
था या रावण ।

'अतिदर्पे हता लंका ।'

यह लोकोक्ति, जिसका प्रयोग दोनों भाषाओं मे बराबर
रामायण की कथा का स्मरण दिलाती है ।

"रामरावणयोर्युद्धं रामरावणयोः इव ।"

वाल्मीकि-रामायण की यह पंक्ति कहावत बन गयी है ।

तुलसी-रामायण की कई पंक्तियों के संबन्ध में भी यही
जा सकती है । यह उक्ति प्रसिद्ध ही है —

रघुकुल रीति सदा चली आयी ।
प्राण जाई वरु वचन न जायी ।।

हिन्दी में प्रचलित —

घर का भेदी लंका ढाये ।

कहावत की उत्पत्ति का कारण रामायण की कथा ही है ।
की कहावत तेलुगु में इस प्रकार है —

लंकलोनि गुट्टु राक्षसलु चेट्टु ।

पाठांतर — इंटि गुट्टु लंककु चेट्टु ।

सीता का जन्म लंका के नाश के लिए ही हुआ था, इस आशय को प्रकट करती है नीचे की कहावत —

सीत पुट्टिदि लंककु चेटुके ।

राम-राज्य की स्थिति का चित्रण देखिए —

इवतल चेर, अवतल सोर, नडुम राम राज्यमु ।

(इस तरफ़ घेरा, उस तरफ़ दुःख, बीच में राम राज्य ।)

लंका में राक्षस लोग ही निवास करते थे, इस भाव को तेलुगु कहावत —

लंकलो पुट्टिनवाळ्ळंता राक्षसुले ।

(लंका में जो भी पैदा हुए राक्षस ही थे ।)

जैसा कि पहले ही स्पष्ट किया गया, इन कहावतों का प्रयोग किसी घटना या व्यक्ति से तुलना करने के उद्देश्य से होता है । तेलुगु में ऐसी कहावतें पर्याप्त मात्रा में मिलती हैं । इन कहावतों से यह भली-भाँति प्रकट होता है कि रामायण की घटनाओं से जनता अत्यंत प्रभावित हुई है ।

कुछ कहावतें महाभारत की घटनाओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती हैं । जैसे —

१) उत्तर कुमार प्रतिज्ञलु ।

(अर्थात् उत्तर कुमार की प्रतिज्ञायें जो किसी काम नहीं ।)

२) कार्तिक तेल्लतो वर्षमु, कर्णुनितो युद्धमु ।

(कार्तिक मास से वर्षा का अन्त, कर्ण से युद्ध का अन्त ।)

अर्थात् कार्तिक के बाद वर्षा नहीं होगी और अर्जुन-कर्ण के युद्ध के बाद और क्या रह जाता है ?

पौराणिक गाथाओं को स्मरण दिलानेवाली हिन्दी की एक कहावत है —

बलि बाह्यो पाताल को, हरि पठयो पाताल ।

इस प्रकार पौराणिक गाथाओं से संबन्धित अनेक कहावतों का उल्लेख किया जा सकता है । प्रसंगानुसार जनता में इन कहावतों का प्रयोग होता रहता है । पौराणिक तथा धार्मिक कथाओं से जनता जो शिक्षा ग्रहण करती है, वही हम ऐसी कहावतों में देख सकते हैं ।

निष्कर्ष — इन पृष्ठों में धार्मिक विषयों से सबन्धित कहावतों पर विचार किया जा चुका है । जैसा कि पहले ही कहा गया, कहावतों के वर्गीकरण के संबन्ध में मतभेद होने के कारण कुछ कठिनाइयाँ सामने आती हैं । धार्मिक कहावतों के अन्तर्गत जो-जो उपशीर्षक रखे गये हैं, वे अध्ययन की सुविधा को दृष्टि में रखकर ही रखे गये हैं । जहाँ तक संभव हो, उदाहरणों के रूप में ऐसी कहावतों का उल्लेख किया गया है जो विषय के प्रतिपादन के लिए अत्यंत उपादेय हो । यत्र-तत्र, तुलनात्मक दृष्टिकोण को अपनाने के कारण अन्य भाषाओं की कहावतें भी उद्धृत की गयी है । भाषायें भिन्न होने पर भी भावों में कैसी समानता पायी जाती है, यह दिखलाना इसका उद्देश्य रहा है ।

२. नैतिक कहावतें

हमारे देश में कहावतों को नीति-साहित्य के अन्तर्गत माना गया है। कहावतों का सीधा संबन्ध मानव के अनुभवों से होने के कारण उनमें नैतिकता का प्राधान्य है। जीवन में नीति-न्याय की बड़ी महत्ता है। समाज में अनैतिक व्यक्तियों का आदर नहीं होता। नैतिकता ही मानव के जीवन को सुन्दर से सुन्दरतम बनानेवाली वस्तु है। "नीति" के भी कई प्रकार हैं, जैसे अर्थ-नीति, राज-नीति, व्यवहार-नीति आदि। धर्म और नीति मे घनिष्ठ संबन्ध होते हुए भी उनमें अन्तर है। अतः धार्मिक विषय संबन्धी कहावतों को पृथक ही रखा गया है।

सर्वप्रथम अर्थ-नीति संबन्धी कहावतों को लें —

(क) अर्थ-नीति — अर्थ या धन की क्या महत्ता है, बतलाने की आवश्यकता नहीं। आज के युग मे तो इसके बिना एक काम भी नहीं चल सकता। अर्थ के संबन्ध में संस्कृत में 'धनमूलमिदं जगत्', 'सर्वे जनाः कांचनमाश्रयन्ति', 'अर्थस्य पुरुषो दासः' आदि लोकोक्तियाँ प्रसिद्ध हैं। इनका अन्य भाषाओं में भी प्रयोग होता है। प्रत्येक भाषा में इस विषय पर कई कहावतें मिल जाती हैं। अर्थ के संबन्ध में सभी मानवों के अनुभव समान होते हैं। अतः किन्हीं दो (या उनसे अधिक) भाषाओं की तद्विषयक कहावतों में समानता पायी जाय तो आश्चर्य नहीं।

पुरुषार्थों में अर्थ भी एक है। उनमें उसका दूसरा स्थान है। अर्थ का आर्जन आवश्यक ही है। एक श्लोक में कहा गया है कि अपने को अजर, अमर समझकर विद्या और अर्थ का उपार्जन करना चाहिए, पर

"मृत्यु सिर पर सवार है", ऐसा समझकर धर्म करना चाहिए —

अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च साधयेत् ।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥

स्पष्ट है अर्थ का उपार्जन धर्म के लिए, धर्म के अनुसार होना चाहिए ।

हिन्दी और तेलुगु में धन, धनी, दरिद्रता आदि पर जो कहावतें प्राप्त होती हैं, उनका स्वरूप देखिए —

(१) कान्ता कनकाले कार्यालकु कारणम् ।
(अर्थात् कामिनी और कांचन ही कार्य के कारण हैं ।)

तुलना कीजिए —

जर, जमीन, जन लडाई की जड है ।

धन बडा हानिकर है । उससे अनेकों हानियाँ होती हैं । वही लडाई-झगडे की जड़ है । हमारे दार्शनिकों ने कामिनी-कांचन की निन्दा की है । इतिहास इसका प्रमाण है कि धन ही लडाई-झगडे का कारण है । धन के मद में भूले मनुष्य स्वार्थवश लड़ाई मोल लेते हैं ।

समाज भी कैसा है, देखिये । जिसके पास धन है, वह समाज में आदर पाता है, वही बड़ा माना जाता है । धनहीन व्यक्ति को कौन पूछता है ? तेलुगु और हिन्दी की निम्नलिखित कहावतों में यही भाव व्यक्त किया गया है —

अर्थमु लेनिवाडु निरर्थकुडु ।[1]
(जिसके पास धन नहीं, वह किसी काम का नहीं ।)

1. A man without money is like a ship without sail. (Dutch)

बाप भला न मैया सबसे भला रुपैया।

धन की महत्ता पर प्रकाश डालनेवाली और एक तेलुगु-कहावत है—

दासि कोडुकैन, कासुगलवाडु राजु।

दासी का बेटा भी हो, पर जिसके पास धन है, वह राजा है। अर्थात् धन ही बड़ा है, उसी का मान है। निम्नलिखित हिन्दी-कहावत से इसकी तुलना कीजिये—

है सब का गुरुदेव रुपैया।[1]

जिसके पास धन है, उसके सब दोस्त रिश्तेदार होते हैं—

पैसा जिसकी गाँठ में उसके ही सब यार।

अथवा—

जिसके हाथ डोई, उसका सब कोई।[2]

तेलुगु कहावत है—

कलिगिनवारिकि अंदरु चुट्टाले।

(जिसके पास धन है, उसके सब रिश्तेदार हैं।)

परन्तु, धन एक स्थान पर स्थिर नहीं रहता। वह चंचल है। इसीलिए कहावत चल पड़ी—

जब चने थे तब दाँत न थे, जब दाँत थे तब चने नहीं।

धनवान सदा निन्यानबे के फेर में पड़ा रहता है। धन-संग्रह करता है, पर स्वयं उसका उपभोग नहीं करता—

1. Money makes many things. (English)
2. A full purse never lacked friends. (English)

जोड़-जोड़ मर जाएँगे, माल जमाई खाएँगे ।

तुलना कीजिए —

लोभी सोम्मु दोंगवाडि पालु ।

(लोभी के पैसे चोर के हाथ में ।)

धनहीन नीच व्यक्ति को धन मिल जाय तो वह बड़ा घमण्डी हो जाता है ।

अल्पनकु ऐश्वर्यं वस्ते अर्धरात्रिवेल गोडुगु तेम्मनाडट ।

(अर्थात् नीच व्यक्ति को दौलत मिली तो आधी रात में उसने कहा— "छतरी लाओ ।")

तेलुगु की एक कहावत में यह भी कहा गया है कि जिसके पास जितना धन होता है, उतना वैभव होता है—

वित्तमु कोद्दि विभवमु, विद्य कोद्दि विनयमु ।

(जितना धन उतना वैभव, जितनी विद्या, उतनी विनय ।)

धन के अवगुण पर प्रकाश डालने वाली कहावतें भी कम नहीं है। उदाहरण के लिए एक कहावत को लीजिए —

"जितनी दौलत, उतनी मुसीबत ।"

दरिद्रता मनुष्य का अभिशाप है । समाज में दरिद्र मनुष्य का आदर नहीं होता । गुण न होने पर भी धनवान का आदर होता है जब कि गुण होने पर भी दारिद्र्य के कारण दरिद्र की उपेक्षा की जाती है, उसको दोषी ठहराया जाता है —

गरीब तेरे तीन नाम झूठा, पाजी, बेइमान ।[1]

1. A light purse is a heavy curse (English)

संस्कृत में भी लोकोक्ति है—

दारिद्र्यदोषो गुणराशिनाशी।

(दरिद्रता गुणों को नष्ट करनेवाली है।)

दरिद्र व्यक्ति जहाँ भी जाता है, उसके साथ उसका दुर्भाग्य भी जाता है। हिन्दी और तेलुगु की इन कहावतों को देखिये —

गरीब ने रोजे रखे तो दिन ही बड़े हो गये।

दरिद्रुडु तल कडुग पोते वडगंड्ल वान वेंबडे वच्चिनादि।

(जब दरिद्र अपना सिर धोने गया तो तुरन्त उपलवृष्टि होने लगी।

दरिद्रता के कारण ही समाज में भेद उत्पन्न होता है। यही झगड़े का एक कारण है —

दारिद्र्यमे देब्बलाटकु मूलम्। (तेलुगु)

गरीबी ही कलह की जड़ है। (हिन्दी)

पर, एक कहावत में कहा गया है कि गरीब-गरीब लड़े तो क्या मिलेगा—

जोगी लड़े छप्परों का नास।

उसी भाव की तेलुगु-कहावत —

जोगी जागी राचुकोंटे बूडदे रालिनदि।

अर्थात् जोगी जोगी से लड़े तो राख नीचे गिरी।

दरिद्र आदमी का जीवन बड़ा दुःखमय होता है। प्रकृति भी मानों उसके विपरीत हो जाती है —

कंगाली में आटा गीला।

तुलना कीजिये —

काक्षलो अधिक मासम् ।

(अकाल में अधिक मास)

इस संसार में धन के कारण ही मनुष्य मनुष्य में अन्तर आ गया है —

मनुष्य मनुष्य में अन्तर, कोई रोड़ा कोई कंकर ।

एक दरिद्र दूसरे दरिद्र की क्या सहायता कर सकता है ? —

'नंगी क्या नहाएगी, क्या निचोड़ेगी ?'

दरिद्र मनुष्य दूसरों का मुहताज हो जाता है । उस अवस्था में वह क्या नहीं करता ? कहावतें हैं —

(१) मुहताजी सब कुछ करा देती है ।

(२) मरता क्या न मरता ?

किन्तु, इसके विपरीत ऐसी भी कहावत मिलती है जिसमें यह कहा गया कि दरिद्र के गुणों की पहचान धीरे-धीरे होती है —

गरीब आदमी की योग्यता धीरे-धीरे चमकती है ।

तेलुगु की एक कहावत है —

भिक्षाधिकारी अयिना का'ग्ले, लक्षाधिकारि अयिना काद्ले ।

अर्थात् या तो परम दरिद्र होना चाहिये, (भिक्षा का अधिकारी) या लखपति । क्योंकि परम दरिद्र हो तो भीख माँगकर गुजारा कर सकता है, लखपति का जीवन तो आराम से व्यतीत हो जाता है । कठिनाई मध्यवर्ग के लोगों को है । इस कहावत से मध्यवर्ग के लोगों की आर्थिक स्थिति का पता चलता है ।

दरिद्र आदमी क्रोध करेगा तो, उसे कौन पूछेगा ? इस भाव की तेलुगु कहावत है —

पेदवानि कोपं पेदविकि चेटु ।

बुढापे में दरिद्रता आ जाय तो उसका बखान नहीं किया जा सकता—

मुप्पुनु दरिद्रं वस्ते चेप्पवलनिगानि बाध ।

(अर्थात् बुढापे में दरिद्रता आ जाय तो दुःखों का वर्णन नहीं कर सकते ।)

बहुत सी कहावतों में कहा गया है कि दरिद्रता से मृत्यु श्रेष्ठ है। देखिये —

१) दारिद्र्यमु सर्वशून्यमु ।[1]

(दरिद्रता सब प्रकार से सूना है ।)

२) दारिद्र्यमु यावज्जीवनमु तीव्र वेदना करमु ।

(दरिद्रता जीवन-भर पीडा देनेवाली है ।

३) दारिद्र्यमु कंटे मरणमु मेलु ।

(दरिद्रता से मृत्यु भली ।)

संस्कृत के एक श्लोक में यही भाव प्रकट किया गया है—

दारिद्र्यान्मरणाद्वा मरणं मम रोचते न दारिद्र्यम् ।
अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम् ॥

(अर्थात् — दरिद्रता और मरण इन दोनों में मुझे मरण ही पसंद है, दरिद्रता नहीं । क्योंकि, मरण से थोड़ा क्लेश होगा जब कि दरिद्रता से अनंत दुःख सहना पडेगा ।)

हिन्दी की एक तुलनात्मक कहावत से भी यही भाव प्रकट होता है—

1. नीति चन्द्रिका : श्री परवस्तु चिन्नयसूरि, पृ. ३५.

अमीर को जान प्यारी, गरीब को जान भारी।
धनवान को जीने की इच्छा है तो दरिद्र को मरने की। "अर्थ" ही इसका कारण है।

उपर्युक्त विवरण से यह विदित होता है कि लोगों में "अर्थ" विषयक असंख्य कहावतें प्रचलित हैं। हिन्दी और तेलुगु की इस विषय संबन्धी कहावतें एक दूसरी के अति निकट हैं। जैसा कि पहले ही बताया गया, अर्थ के विषय में सभी मनुष्यों के अनुभव समान होते हैं। अतः उन कहावतों में भी समानता दिखाई पड़े तो आश्चर्य नहीं।

(ख) मैत्री — एक दूसरे पर विश्वास ही मैत्री का मूल मंत्र है। हिन्दी तथा तेलुगु दोनों भाषाओं में मैत्री विषयक कहावतें प्राप्त होती हैं। वही सच्चा मित्र है जो सुख तथा दुःख दोनों परिस्थितियों मे साथ देता रहे। दुःख में सच्चे मित्र की परख हो जाती है। इन कहावतों को उदाहरण के रूप मे दे सकते हैं —

१) वक्त पड़े पर जानिए को बैरी को मीत।[1]

२) धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी।
आपदकाल परखिये चारी॥

दुःख ही मित्रता को परखने की कसौटी है। सुख के साथी तो सब लोग हैं, पर दुःख में कोई काम नहीं आते। इस संसार में सच्चे मित्र का मिलना कठिन है। किससे मैत्री करनी चाहिए, किस से नहीं करनी चाहिए? इस प्रश्न का उत्तर इन नीति बोधक कहावतों से मिल

1. A friend in need is a friend indeed. (English)

जायेगा —

चपलुनितो मैत्री सर्वथा चेयरादु । [1]

अर्थात् चपल चित्त व्यक्ति से कभी मैत्री नही करनी चाहिए ।

वायतो सांगत्यमु चेयरादु । [2]

(शत्रु से मैत्री नहीं करनी चाहिए ।)

सज्जनों से मैत्री करनी चाहिए, नीचों के साथ कभी नहीं करनी चाहिए —

सत्संगति कंटे लोक मंदु येदियुलेदु । [2]

[सज्जनों की संगति से बढकर इस ससार में और कोई वस्तु नहीं ।]

बुरे व्यक्ति से मैत्री हानिकर है । कहावत है —

मूर्ख मित्र से चतुर शत्रु अच्छा ।

तेलुगु कहावत है —

अविवेकितो स्नेहमुकन्न विवेकितो विरोधमु मेलु । [3]

अच्छे मित्रों की संगति से बहुत लाभ होता है। एक कहावत है —

दूध तन को आनंद देता है तो मैत्री मन को आनंद देती है।

(Milk pleases the body and friendship the heart.)[4]

बुरी संगत से बचना चाहिए । क्योंकि —

1. नीति चन्द्रिका, पृ. २९.   2. वही, पृ. २६–२७.
3. पण्डितोऽपि वर शत्रुर्न मूर्खो हितकारक । (संस्कृत)
4. उद्धृत– National Proverbs – India by Abdul Hamid से

"बुरी संगत से अकेला भला।"

तेलुगु की एक कहावत में कहा गया है कि मित्रता (सच्ची) ही ऐश्वर्य है —

पोरु नष्टि पोत्तु लाभमु।

अर्थात् युद्ध से हानि होती है, मित्रता से लाभ होता है।

जो सब लोगों से मित्रता करता है, वह किसी का नहीं होता —

सबका साथी किसका मीत ?

सारांश यह कि हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में इस विषय से संबन्धित अनेक कहावतें मिलती है। तुलनात्मक अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि मैत्री के संबन्ध में दोनों भाषाओं में एक-सी भावना व्यक्त की गयी है।

(ग) राज-नीति— यहाँ पर इस शब्द का स्पष्टीकरण आवश्यक है। यहाँ इस शब्द का अर्थ राजा तथा राज्य से संबन्धित नीति से है। जिन कहावतों में राजा-प्रजा, राजा के गुण, राजा का धर्म आदि की चर्चा की गयी है, वे कहावतें इस शीर्षक के अन्तर्गत आती हैं।

प्रजा राजा को देवता मानकर उसकी आज्ञाओं को शिरोधार्य करती है। "राजा प्रत्यक्ष देवता" कहा गया है। राजा यदि सद्‌गुण संपन्न हो और धर्म का पालन करनेवाला हो तो प्रजा भी उसका अनुकरण करेगी। प्रजा सदा राजा का ही अनुकरण करती है, कहावत चल पड़ी है —

यथा राजा तथा प्रजा।

अथवा जैसा राजा वैसी प्रजा। (हिन्दी)

राजेंतो प्रजा अंते । (तेलुगु)

ईश्वर संसार का स्वामी है तो राजा देश का। हिन्दी-कहावत लीजिए—

जग ईश्वर का मुल्क बादशाह का ।

तेलुगु में यह भाव दूसरे ढंग से व्यक्त किया गया है—

राज्यानिकि राजु जगानिकि चन्द्रुडु ।

अर्थात् राज्य की शोभा राजा है और जगत की शोभा चन्द्र है। राजा यदि धर्ममार्गी हो तो प्रजा भी होगी । तेलुगु-कहावत है —

राजु एंतो धर्ममंत ।

[जैसा राजा वैसा धर्म ।]

राजा सर्व शक्तिमान है। वह जिसको चाहता है, वही धन्य है। तेलुगु की एक तुलनात्मक कहावत है —

राजु मेच्चिनदि माट, मोगडु मेच्चिनदि रंभ।

अर्थात् वही बात है जिसे राजा माने, वही रंभा है जिसे पति प्यार करे। राजा जो भी करे, कोई उँगली नहीं उठाता —

राजु चेसिन कार्यालकु रामुडु चेसिन कार्यालकु एम्मिक लेदु।

[राजा के किए कार्य और राम के किए कार्य — बुरे भी हों कोई कुछ नहीं कहता ।]

हिन्दी की इस कहावत से तुलना कर सकते हैं —

समरथ के दोष नहिं गोसाईं ।

किन्तु, एक दूसरी कहावत में कहा गया है कि लोग राजा के सामने भले ही न कहें, पीठ पीछे कहते हैं ही। लोगों की इस प्रकृति का उद्घाटन करती है नीचे की हिन्दी-कहावत —

पीठ पीछे बादशाह को भी कहते हैं।

राजा का स्वभाव ही है हठ करना। कहावत प्रसिद्ध है —

बाल हठ, तिरिया हठ, राज हठ।

बहुत-सी कहावतों में यह बतलाया गया है कि राजा से बचते रहना चाहिए। क्योंकि, नहीं कहा जा सकता कि उसका स्वभाव कब बदल जाता है —

१) राजा, जोगी, अग्नि, जल, इनकी उल्टी रीति।
बचते रहिए परसराम, थोड़ी पाले प्रीति॥

और

२) हाकिम की अगाडी और घोड़े की पिछाड़ी खड़ा न रह।

तेलुगु-कहावत से तुलना करके देखें —

पेद्दपुलि येदटनयिना पडवच्चुगानि नगरिवारी येदट पडरादु। अर्थात् बाघ के भी सामने जा सकते हैं, पर राजमहल के अधिकारियों (सरकारी अफसरों) के सामने कभी नहीं जाना चाहिए।

राजा में वीरता-शूरता होनी चाहिए। जो उससे विहीन होता है उसका मान ही क्या? उसका मंत्री भी अविवेकी हो तो फिर क्या कहना! ऐसे अविवेकियों को देखकर ही जनता के मुँह से ये कहावत निकल पड़ी है —

धैर्यमु लेनि राजू, योचन लेनि मंत्री।
अर्थात् धैर्य हीन राजा और विवेकहीन मंत्री॥

हिन्दी की निम्नांकित कहावत तो प्रसिद्ध ही है —

अंधेर नगरी, चौपट राजा ।

टके सेर भाजी, टके सेर खाजा ।।

ऊपर की तेलुगु-कहावत से तुलना कीजिए —

अंधा राजा, चौपट नगरी ।

स्त्री अथवा बालक यदि राजा हो तो राज्य अच्छा नहीं होगा । इसलिए तेलुगु में कहते हैं —

बहु नायकं, बाल नायकं, स्त्री नायकम् ।

संभवतः यह कहावतसंस्कृत के इस श्लोक से तेलुगु में आयी हो —

अनायका विनश्यन्ति, नश्यन्ति शिशुनायकाः ।

स्त्रीनायका विनश्यन्ति, नश्यन्ति बहुनायकाः ।।

आज के युग में भी यह कहावत बहुत महत्वपूर्ण मानी जा सकती है ।

लोक-विश्वास के संबन्ध में विचार करते समय नीचे की कहावत उद्धृत की गयी है —

राचपीनुग तोडु लेकुंडा पोवदु ।

अर्थात् राजा का शव साथी लिए बिना नहीं उठता । लोगों का विश्वास है कि जब राजा की मृत्यु होती है, तब (उस दिन) किसी और की भी मृत्यु होती है ।

स्त्री के राज्य के संबन्ध में तेलुगु की और एक कहावत है —

आड पोत्तनमु, तंबळि दोरतनमु ।

अर्थात् स्त्री-राज्य और तंबळि (व्यक्ति का नाम) की सरकार खराब होती है ।

यह प्रसिद्ध है कि कवि, गायक, विद्वान आदि राजा के आश्रय में रहते थे। राजा से उनको धन-दौलत, जमीन-जायदाद मिलती थी। तेलुगु की एक कहावत से इस बात की पुष्टि होती है।

दोरलु यिच्चिन पालुकन्ना धरणि यिच्चिन पाले मेलु।

अर्थात् राजाओं के दिये हुए हिस्से से भूमि का दिया हुआ हिस्सा श्रेष्ठतर है।

राजा अपने दूतों के द्वारा समाचार जान लेता है। इसलिए कहते हैं—

हाकिम की आँखें नहीं होती, कान होते हैं।

प्रजा पालक सच्चे राजा का यही कर्तव्य है कि वह प्रजा की बात के अनुसार चले—

जनवाक्यं तु कर्तव्यम्।

तेलुगु में राजा पर कुछ तुलनात्मक कहावतें भी उपलब्ध होती हैं—

१) मुंड कोडुके कोडुकु, राजु कोडके कोडुकु।

अर्थात् विधवा के बेटे और राजा के बेटे की बात चलती है।

२) राजुलि चूचिन कळ्ळतो मगण्णि चूस्ते मोलबुद्धि वेसिंदट।

अर्थात् जिन आँखों से राजा को देखा था, उन आँखों से पति को देखा तो मति भ्रष्ट हुई।

जनता की राजनीति की ओर उपेक्षा भरी दृष्टि का पता तुलसी रामायण की निम्न लिखित पंक्तियों से चलता है—

कोउ नृप होउ हमही का हानी।
चेरि छाँडि अब होब की रानी॥

यह प्रचलित कहावत ही है।

और एक तुलनात्मक कहावत है —

स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।

अपने देश में राजा आदर पाता है तो विद्वान का आदर सर्वत्र होता है।

इस विषय पर और भी अनेक कहावतें मिलती हैं।

(घ) परोपकार — कहना न होगा कि परोपकार का समाज में कितना अधिक मूल्य है। सर्वत्र परोपकारी मनुष्य का गुण गान होता है। सामाजिक प्राणी होने के नाते अपने स्वार्थ की पूर्ति करना ही हमारा धर्म नहीं है। दूसरों का उपकार भी करना हमारा कर्तव्य है। धर्म अथवा पाप-पुण्य को माने या न माने मनुष्यता के नाते एक दूसरे का उपकार करना बहुत ही आवश्यक है। यह कहना असंगत न होगा कि मनुष्य के साधारण धर्मों में परोपकार भी है। अतः यह कोई आश्चर्य नहीं यदि कहावतों में इस विषय की अधिक चर्चा की गयी हो। प्रत्येक भाषा में ऐसी कहावतें मिलती हैं।

जनता की उक्तियाँ कवि की उक्तियाँ बन कर अथवा कवि की उक्तियाँ जनता की उक्तियाँ बन कर प्राचीन काल से ही चली आ रही है। परोपकार संबन्धी कहावतें भी इसी रूप में हम को प्राप्त हैं। "परोपकारार्थमिदं शरीरं" "परोपकाराय सतां विभूतयः" आदि लोकोक्तियाँ बन कर बराबर हमारी भाषाओं में प्रयुक्त होती हैं। कहीं-कहीं परोपकार को ही धर्म कहा गया है —

परोपकारी धरमधारी।

अथवा

परहित सरिस धर्म नहिं भाई ।

उपदेशात्मक शैली में तेलुगु की यह कहावत देखिए—

अपकारिकैन उपकारमे चेय्यवलेनु ।

अर्थात् अपकारी का भी उपकार ही करना चाहिए। कबीर के दोहे से जो कहावत के रूप में प्रसिद्ध है, तुलना कीजिए—

जो तोको काँटा बुवै, ताहि बोव तू फूल ।
तो को फूल के फूल हैं, वाको है तिरसूल ।।

प्रसिद्ध कवि वेमना का पद्य है —

अपदागिन यद्दिशत्रुडु तनचेत
जिक्केनेनि कीडु जेयराडु
पोसग मेलु जेसि पोम्मनुटे चालु
विश्वदाभिराम विनुर वेमा ।।

अर्थात् यदि संयोगवश हंतव्य-शत्रु भी हाथ में आ जाय तो उसकी थोड़ी भी हानी नहीं करनी चाहिए, बल्कि उसका उपकार करना चाहिए और भेज देना चाहिए ; यही उचित है ।

साधु-संतों का जीवन परमार्थ के लिए ही होता है —

परमार्थ के कारने साधुन धरा सरीर ।

दूसरों का उपकार करना ही संतों का स्वभाव होता है ।

(ङ) आदर्श-जीवन — मनुष्य को आदर्श चाहिए। उसका जन्म भोग-विलास के लिए नहीं हुआ है। समाज में उस व्यक्ति का सम्मान होता है, जिसका जीवन आदर्श के मार्ग पर चलता हो। जीवन जीने के लिए है। गांधी जी के शब्दों में, जो जीना जानता है, वही

कलाकार है। जीवन में अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती है। इन सबका सामना करते हुए आदर्श-जीवन व्यतीत करना श्रेयस्कर है। अस्तु।

जितना भी मिले संतुष्टि कहाँ ? परन्तु, असंतोष से जीवन दुःख-मय होता है। संतोष ही सुख कारण है —

संतोषम् परम सुखम्।

और

संतोषम् सगं बलम्। (तेलुगु कहावत)

[अर्थात् संतोष आधा बल है।]

हम जिस समाज में रहते है, उस समाज से हमें गौरव प्राप्त करना चाहिए। क्योंकि —

अवमानमुकंटे चावे मेलु। (तेलुगु)

अपमान का जीवन मृत्यु से बुरा। (हिन्दी)

सदा मान की रक्षा करनी चाहिए —

प्राणमु पोयिना मानमु दक्किंचुकोवलेनु।[1] (तेलुगु)

प्राण जाय, पर मान न जाय। (हिन्दी)

उधार लेकर जीवन-यापन करने की अपेक्षा जो कुछ रूखा सूखा मिलता है, उससे संतुष्ट रहना ही आदर्श जीवन है। इन कहावतों से यही बात स्पष्ट होती है —

१) अप्पुलेक पोते ओप्पुगांजि मेलु।[2]

1. प्राणं वापि परित्यज्य मानमेवाभिरक्षतु। (संस्कृत)
2. तुलना कीजिये – Without debt, without care. (Italian). He is rich enough who owes nothing. (Greek).

अर्थात् उधार न हो तो दाल-भात ही उत्तम है।

२) अप्पुलेनि गंजि बोप्पुडे चालुनु।

अर्थात् उधार रहित दोना भर मांड ही पर्याप्त है।

३) अप्पुमोप्पु।

[उधार बला है।]

कबीर का यह दोहा प्रसिद्ध ही है —

रूखा सूखा खायके, ठंडा पानी पीव।

देख बिरानी चूपड़ी, मत ललचावे जीव॥

उपर्युक्त तेलुगु कहावतों की तुलना नीचे उद्धृत हिन्दी-कहावत से कर सकते हैं —

घर की आध भली, बाहर की सारी नहीं।

इस प्रकार कई अन्य कहावतों से भी आदर्श-जीवन पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

(च) अन्य नैतिक कहावतें — वैसे तो सभी नैतिक कहावतों का उपयोग जीवन को आदर्शमय बनने के लिए हो सकता है। परन्तु, विषय वैविध्य को दृष्टि में रखकर उनको पृथक-पृथक रखा गया है। प्रायः नैतिक कहावतें उपदेशात्मक या शिक्षात्मक होती हैं। नीचे विविध विषियों से संबन्धित कुछ तेलुगु और हिन्दी-कहावतें उद्धृत की जाती हैं—

उतावलापन १) आतुरगानिकि तेलिवि मट्टु।[1]

[उतावले मनुष्य की बुद्धि कम होती है।]

1. आतुरगारनिगे बुद्धि मट्ट। (कन्नड)
Haste makes waste. (English)

अथवा — कंगारु कार्यानिकि चेटु ।

[उतावलेपन से कार्य की हानि होती है ।]

तुलना कीजिए —

उतावलो सो बावलो ।

<u>आदत</u> — जो आदत पड़ जाती है, वह छूटती नहीं —

१) आडे काल्लू पाडे नोरू वूरुकुंडवु ।

[नाचनेवाला पैर और गानेवाला मुँह चुप नहीं रहते ।]

२) तिरिगे काळ्लू तिट्टे नोरु वूरकुंडवु ।

[घूमनेवाले पैर और कोसनेवाला मुँह चुप नहीं रहते ।]

तुलना कीजिए —

आदत दूसरा स्वभाव है ।[1]

<u>अभ्यास</u> — अभ्यासं कूसु विद्या ।

[अभ्यास से विद्या सुगम हो जाती है ।]

काम ही कारीगरी सिखाता है ।

अथवा

करत-करत अभ्यास जडमति होय सुजान ।

आदत और अभ्यास न हो तो उल्टा परिणाम होगा —

अलवाटु लेनिवाडु औपासनं चेय्य बोते मीसालन्नि तेग कालिनवि ।

अर्थात्— जिसको आदत नहीं थी, वह औपासन करने बैठा तो उसकी सारी मूँछ जल गयी ।

1. Habit is second nature. (English)

तुलना कीजिये —

अनभ्यासे विषं शास्त्रम् । (संस्कृत)

उपदेशात्मक— १) आहारमंदु व्यवहारमंदु शिग्गु पडकूडदु ।

आहारे व्योहारे लज्जा न कारे ।[1]

२) आडितप्पराडु, पलिकि बोंकराडु ।

[प्रण कर पीछे नहीं हटना चाहिए, झूठ नहीं बोलना चाहिए ।]

तुलना कीजिए —

रघुकुल रीति सदा चली आयी ।

प्राण जाय बरु बचन न जायी ।।

सुंदरता — १) अंदमुनकु अलंकारमेंदुकु ?

अर्थात् रूप को अलंकार की आवश्यकता नहीं ।

सच्ची सुन्दरता कौन-सी और स्तुत्य है ? इस विषय पर कहावत कहती है —

राजु मेच्चिनदि माट, मोगुडु मेच्चिनदि रंभ ।

अर्थात् वही बात है जिसे राजा माने, वही रंभा है (सुन्दरी है) जिसे पति प्यार करे ।

तुलना कीजिए —

जाके पिय होय, वही सुहागिन नारी ।

कालिदास ने भी कहा है —

"प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता ।"

1. आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् । (संस्कृत)

कुछ अन्य शिक्षात्मक कहावतें —

१) पेद्दलतो वादु पोलकलतो पोरु ।

अर्थात् बड़ों से वाद-विवाद करना भूतों के साथ में भी लड़ने के समान बुरा माना जाता है । [1]

२) चेडु पेरु कंटे चेडु मनिषि नयम् ।

[बद अच्छा बदनाम बुरा ।]

३) चेप्पडं कंटे चेयडं मेलु ।

[कथन से करनी भली ।]

तुलना कीजिए —

पर उपदेश कुशल बहुतेरे ।

४) चेप्पेदि ओकटि चेसेदि ओकटि ।

[कहना कुछ, करना और कुछ ।]

हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और ।

अधूरा ज्ञान, असामर्थ्य, मूर्खता, आलस्य, सज्जन-दुर्जन, स्वार्थ, लोभ आदि अन्य विषयों पर भी कई कहावतें मिलती हैं ।

निष्कर्ष — नैतिक कहावतें अपरिमित हैं । जीवन के जितने पहलू हैं, उन सब से संबन्धित नैतिक कहावतें उपलब्ध की जा सकती हैं । समग्र रूप से इनका अध्ययन करने पर हमको जनता के नैतिक जीवन का ज्ञान हो जाता है । हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में नैतिक कहावतों की प्रचुरता है । तुलनात्मक अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि विचारधारा की दृष्टि से दोनों में समानतायें हैं ।

1. A bad man is better than a bad name.

३. सामाजिक कहावतें

कहावतें समाज की संपत्ति हैं। उनमें समाज की रीति-नीति, विश्वास-विचार आदि का विश्लेषण रहता है। व्यापक दृष्टि से देखा जाय तो सभी कहावतें सामाजिक ही होती हैं। किन्तु, अनुभव के आधार पर बनी कहावतें जब विषय प्रधान हो जाती हैं तब उनकी सीमाएँ भी निर्धारित कर सकते हैं। विषय को दृष्टि में रखकर उन्हें धार्मिक, नैतिक, सामाजिक आदि परिधि में रख सकते हैं।

प्रथम अध्याय में यह बतलाया गया है कि कहावतें सभी देशों तथा जातियों की संपत्ति होती है। किसी देश की कहावतों के अध्ययन से हम देश की जनता के बुद्धि-कौशल के बारे में ही नहीं जानते, प्रत्युत् उस देश के समाज के संबन्ध में भी जान लेते हैं। यदि एक ही वाक्य में कहना हो तो कह सकते हैं कि "कहावतें समाज का दर्पण" हैं। समाज का स्पष्ट प्रतिबिंब हम कहावतों में पाते हैं।

कुछ विद्वानों ने[1] कहावतों को दो वर्गों में-सामान्य और विशेष-रखा है। सामान्य वर्ग के अन्तर्गत उन कहावतों को माना हैं जिनमें किसी सार्वकालीन या सार्वदेशीय सत्य की अभिव्यक्ति होती है। ऐसी कहावतें सर्वत्र उपयोग में लायी जा सकती हैं। ये स्थिर रह जाती हैं। राजनैतिक, आर्थिक या किसी दूसरी परिस्थिति के कारण इनको हानि नहीं पहुँचती। इस वर्ग की, चाहे किसी भी भाषा की हों, कहावतों में

1. देखिए : 'People of Iadia' by Risley.

हम भाव साम्य देखते हैं। बाह्य रूप अथवा कथन-शैली में भिन्नता होते हुए भी आंतरिक भाव एक ही रहता है, उनमें सामान्य सत्य की अभिव्यक्ति होती है। ऐसी कहावतों के उदाहरण हम पहले दे चुके हैं। संप्रति एक और उदाहरण लीजिये --

एक हाथ से ताली नहीं बजती। (हिन्दी)

ओक चेय्यि तट्टिते चप्पुडु अवुना ? (तेलुगु)

ओंदु कैय्यल्लि चप्पाळे होडेयोके आगत्ये ? (कन्नड)

Two hands are better than one. (English)

One man is no man. (Latin)

Hand washes hand and finger finger. (Greek)

दूसरे वर्ग अर्थात् विशेष के अन्तर्गत ऐसी कहावतें आती हैं जिनको देश-काल-समाज की सीमा के अन्दर रख सकते हैं। दोनों वर्गों की कहावतों का आधार जीवन के व्यापक अनुभव ही है। तथापि, दूसरे वर्ग की कहावतों में किसी देश या समाज का विशेष चित्र ढूँढने का प्रयास कर सकते हैं।

(क) समाज का सामान्य चित्र --- समाज का सामन्य चित्र प्रस्तुत करनेवाली कहावतें पर्याप्त संख्या में प्राप्त होती है। समाज व्यक्ति से बनता और व्यक्ति समाज से। व्यक्ति का बल समाज है। कलियुग में समाज या संघ में ही शक्ति है --

"संघे शक्तिः कलौ युगे"

इस लोकोक्ति का ही भाव हिन्दी, तेलुगु आदि भाषाओं की कई कहावतों में भी व्यक्त हुआ है, जैसे --

जबान में करामात है ।

मृदुता में अमृत है ।

नोटिमुलो वरम्बादि ।

जिस देश या समाज में रहते हैं, उसके अनुसार चलना चाहिए । "जैसा देश वैसा भेष" "नलुगुरलो नारायण" (तेलुगु) जैसी कहावतें इसलिए उत्पन्न हुई हैं । जैसे चार लोग चलते हैं वैसे ही हमें भी चलना चाहिए । लोक समष्टि अपनी सम्मति है । कई आदमियों के मेल से काम में हानि भी हो जाय तो कोई कुछ नहीं कहता, किसी को भी लज्जित नहीं होना पड़ता । इस भाव की कहावत है —

पांच-पांच मिलके कीजे काज, हारे जीते हारे न लाज ।

(ख) व्यक्ति का चित्र — कहावतों में व्यक्ति के चित्र कई रूपों में मिलते हैं । समाज में रहकर ही व्यक्ति गौरव प्राप्त करता है । व्यक्ति के अस्तित्व से ही समाज का अस्तित्व है ।

तेलुगु की यह कहावत देखिए —

उंटे ऊरु पोते पाडु ।

अर्थात् लोगों से ही बस्ती बनती है, नहीं तो उजाड है ।

व्यक्ति अपने गुणों के अनुसार समाज में अपना स्थान बना लेते हैं इसलिए कहते है —

१) नोरु मंचिदैते ऊरु मंचिदि ।

ठीक-ठीक इस भाव की हिन्दी कहावत है —

जबान शीरी, मुल्कगीरी ।[1]

1. A good tongue is a good weapon. (English)

और — जबान ही हाथी चढ़ावे, जबान ही सिर कटावे ।

२) नोटिलो नालुक उंटे नालुगूळ्ळु अडुक्कु तिनि बतुकुताडु ।
अर्थात् मुंह में जिह्वा हो तो चार गांवों में जाकर मांगकर खाएगा ।

कुछ विशेष व्यक्ति-चित्र—

१) उल्लि मुंटे मल्लि वंटलक्क ।
अर्थात् प्याज रहे तो मल्लि (व्यक्ति का नाम) पकाने में सिद्धहस्त ही है ।

२) अल्लललो मल्लु पेद्द ।
अर्थात् रामायों में "मल्लु" बड़ा है । गुणहीन व्यक्तियों में थोड़े गुणोंवाला ही गुणवान हो जाता है । तुलना कीजिए —

अंधों में काना राजा ।

झूठी आशायें दिखलाकर ठगनेवाले व्यक्ति के संबन्ध में कहा जाता है —

अरचेतिलो वैकुंठमु चूपुताडु ।

अर्थात् हथेली पर वैकुंठ दिखलाता है ।

व्यक्ति के नाम और गुणों का वैषम्य दिखलानेवाली कहावतें देखिए—

हिन्दी में — १) पढ़ा न लिखा नाम विद्यासागर ।

२) आँखों का अंधा नाम नयनसुख ।

तेलुगु में — १) पेरु गंगानम्म, तागबोते नीळ्ळु लेदु ।

[नाम गंगा, पर घर में पानी नहीं ।]

२) इंटि पेरु कस्तूरिवारलु, इल्लु गब्बिलाल वासन ।

[घर का नाम तो "कस्तूरी", पर घर में दुर्गंध ।]

व्यक्ति के नाम और गुण का सामंजस्य नीचे की कहावतों में पायेंगे—

१) गंगा जाय गंगादास, जमुना जाय जमुना दास ।

२) माया तेरे तीन नाम परसा, परसू, परसराम ।

३) यथा नाम तथा गुण ।

स्मरण रखना चाहिए कि तुक और अनुप्रास के लिए नाम और गुण का वैषम्य अथवा सामंजस्य की कल्पना की जाती है ।

(ग) सृष्टि में मानव तथा मानवेतर प्राणी - पदार्थ— सृष्टि में मनुष्य का प्रमुख स्थान है । हिन्दी की यह कहावत प्रसिद्ध ही है—

आदमी जाने बसे सोना जाने कसे ।

आदमी की पहचान पास रहने से होती है और सोने की कसौटी पर कसने से ।

कहावतों में मानवेतर प्राणी अथवा पदार्थों का उल्लेख मिलता है । कभी-कभी वे प्राणी या पदार्थ बोलते हुए दिखलाये जाते हैं। कुछ स्थानों पर उनका मानवीकरण हो जाता है। इन सब का कारण अभिव्यक्ति में प्रभावशीलता लाना ही है । कुछ उदाहरणों से यह स्पष्ट होगा —

१) अंडा सिखावे बच्चे को चीं चीं कात कर ।

ठीक इस भाव की कहावत तेलुगु में इस प्रकार है —

गुड्डु वच्चि पिल्लनु वेक्करिंचिनट्लु ।

[अंडा आकर बच्चे को चिढ़ाने लगा ।]

संवाद रूपी कहावत —

२) आ बैल मुझे मार ।

तेलुगु से एक उदाहरण लीजिए —

नालिका, नालिका, वीपकु देब्बलु तेका ।

[अरी जिह्वा, पीठ को थप्पड़ न ला ।]

ुछ और हिन्दी कहावतें —

१) ऊँट किस करवट बैठता है ?

२) ऊँट के मुँह में जीरा।

३) ऊँट रे ऊँट तेरी कौन-सी कल सीधी ?

४) कुत्ता भी दुम हिलाकर बैठता है ?

७) कुतिया चोरों मिल गयी पहरा किसका दे ?

८) हंसा मोती चुगै के फाके मर जाय।

लुगु-कहावतें [प्राणी संबन्धी] —

१) नक्क येक्कड देवलोक येक्कड ?

[सियार कहाँ, स्वर्ग कहाँ ?]

ानवरों में सियार बुद्धिमान माना जाता है —

२) नक्कलु येरगनि बोक्कलु, नागुलु येरगनि पुट्टलू वुण्वा ?

र्थात् ऐसे गड्ढे जो सियार को मालूम न हों और ऐसे बिल जो साँपों को मालूम न हों, होते हैं ?

३) एनुग पडुकुन्न गुर्रमंत एत्तु।

[हाथी सोवे तो भी घोड़े के बराबर ऊँचा।]

४) एनुगकु कालु विरगडम्, दोमलकु रेक्क विरगडमु समम्।

[हाथी के पैर का टूटना और मच्छरों के परों का टूटना समान है— अर्थात् दोनों को अधिक हानि नहीं।]

अन्य पदार्थों से संबन्धित कुछ कहावतें लीजिए —

हिन्दी में —

१) कुएँ की मिट्टी कुएँ में लगती है।

२) कोयल होय न उजला सौ मन साबुन धोय ।

३) राजहंस बिन को करे छीर-नीर को नेरा ?

तेलुगु में —

१) एरु निद्र पोदिनट्लु ।

[जैसे नदी सो जाती है ।]

२) एरु मूरेडु लोतैते कालुव आरेडु लोतुंटि ।

[नदी तीन हाथ गहरी चले तो नाला (खेत का) छे हाथ गहरी चले ।]

३) एरु एन्नि वंकलु पोयिना समुद्रमुलोने कलुस्तुंदि ।

[नदी कितनी भी टेढ़ी चले, अन्त में समुद्र में ही उसे गिरना है ।]

४) ए पुट्टलो ए पामुंदो, एवरिकि तेलुसु ?

[किस बिल में कौन-सा साँप है, किसको मालूम ?]

हम अपने आस-पास की मानवेतर वस्तुओं से कई बातें सीखते हैं, और अपने जीवन के स्तर को समुन्नत बनाने की ओर प्रयत्नशील रहते हैं । स्मरण रखना चाहिए ऊपर उद्धृत हिन्दी और तेलुगु कहावतें प्राय. किसी नीति का, तथ्य का उद्घाटन करती हैं । परन्तु, समाज के संबंधों को समझने में ये कहावतें उपयोगी सिद्ध होती हैं । अतएव, मैंने इनको सामाजिक कहावतों के अन्तर्गत रखा है ।

(घ) जाति-संबन्धी कहावतें — हमारे देश में जाति-प्रथा का सामाजिक जीवन पर विशेष प्रभाव रहा है । आधुनिक युग में यद्यपि इस बन्धन को ढीला करने का प्रयत्न हो रहा है, तथापि अधिकतर

पुरानी परंपराएं ही चालू हैं। भारत के प्रत्येक प्रदेश में जाति-प्रथा का प्रचलन है। अतः हिन्दी और तेलुगू इन दोनों भाषाओं में इस विषय संबन्धी अनेक कहावतें उपलब्ध होती हैं।

प्रमुख जातियाँ

(१) ब्राह्मण — हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में ब्राह्मण विषयक अनेक कहावतें प्राप्त होती हैं। वेदकाल से ही समाज में ब्राह्मण को विशेष आदर प्राप्त है। हम कहावतों में यत्र-तत्र इसकी झलक प्राप्त कर सकते हैं किन्तु, ऐसे चित्र कम हैं। अनेक कहावतों में ब्राह्मण की दरिद्रता, मूर्खता, भोजन प्रियता, दक्षिणा-लिप्सा आदि का वर्णन मिलता है।

दरिद्रता— ब्राह्मण की दरिद्रता का वर्णन करनेवाली जो कहावतें मिलती हैं, उन के अनुसार, ब्राह्मण प्रायः दरिद्र होते हैं। उनमें शारीरिक बल कम होता है। नीचे की तेलुगु-कहावत को देखिए —

बलवंतुनि सोम्मु गानि बापडि सोम्मु कादु।[1]

अर्थात् बलवान की संपत्ति है, बेचारे ब्राह्मण की नहीं। "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली कहावत इसलिए निकली।

ब्राह्मण के पास पैसा नहीं बचता। वह जितना भी कमाता है, खर्च हो जाता है। तेलुगु-कहावत है —

1. Might is right. (English)

ब्राह्मण सोम्मु दूदिलो अग्निहोत्रम् ।

अर्थात् ब्राह्मणों का पैसा रूई में अग्निहोत्र के समान चला जाता है ।

परन्तु, दूसरी एक तेलुगु-कहावत में कहा गया है कि गायों में साधुता और ब्राह्मणों में दरिद्रता नहीं होती —

आवुल साधुत्वमू ब्राम्हणुल पेदरिकमू लेदु ।

मूर्खता — हिन्दी में ऐसी कहावतें मिलती हैं, जिनसे ब्राह्मण की मूर्खता स्पष्ट होती है, जैसे —

बामन बेटा बावन बर्ष का भौंरा ।

अर्थात् ब्राह्मण का बेटा बावन वर्ष तक मूर्ख ही बना रहता है । तेलुगु में ऐसी कहावत नहीं मिलती ।

पेशा — ब्राह्मण खेती करेगा तो उसे नुकसान ही उठाना पड़ेगा। तेलुगु में इस पर बहुत-सी कहावतें प्रचलित हैं —

१) बापुल सेद्यं बडुगुल नष्टम् ।

अर्थात् ब्राह्मण की खेती का अंत बैलों की मृत्यु से होता है —

२) बापुल सेद्यं मत्यं चेटु ।

अर्थात् ब्राह्मण खेती करेगा तो उसे हानि ही होगी । लाभ के बदले मूलधन भी गँवाना पड़ेगा । मजदूरों को दी जानेवाली मजदूरी नुकसान का और एक कारण है ।

३) बापुल सेद्यमु कापुल समाराधना ।

अर्थात् ब्राह्मण की खेती किसान के दिये हुए भोज के समान है ।

४) बापनक व्यवसायं, बापट्ल बतुकु चेरपु ।

अर्थात् ब्राह्मण खेती करे तो उसका जीवन ही नष्ट हो जाय ।

इस तरह की कई कहावतें मिलती हैं जिनसे प्रकट होता है कि ब्राह्मण को कृषि या व्यवसाय नहीं अपनाना चाहिए। पर, कहावतों में यह जो कहा गया है, सामान्य सत्य है। इतिहास बतलाता है कि विजयनगर-साम्राज्य काल में ब्राह्मण खेती-बाड़ी भी करते थे और उनके खेत और बाग-बगीचे अच्छे थे।[1]

भिक्षाटन-प्रवृत्ति — हिन्दी में ब्राह्मण की भिक्षाटन प्रवृत्ति का वर्णन करनेवाली कुछ कहावतें मिलती हैं —

ब्राह्मण हाथी चढ़्यो बी मांगे।

संस्कृत की उक्ति से तुलना कीजिए —

"नहि विप्रा राजयोग्याः भिक्षायोग्याः पुनः पुनः।"

ब्राह्मण के पास कोई भीख मांगने जावे तो व्यंग्य से कहते है — "ब्राह्मण से मांगते हैं।"

भोजन प्रियता— ब्राह्मण भोजनप्रिय माना जाता है। "ब्राह्मणो भोजन प्रियः" वाली कहावत बहुत प्रसिद्ध ही है। तेलुगु की इन कहावतों से उसकी भोजनप्रियता स्पष्ट होती है —

१) तप्पू वोप्पू देवमैरुगुनु, पप्पू कूडू बापडेरुगुनु।

अर्थात् गलत-सही भगवान जानता है, दाल-भात ब्राह्मण जानता है।

२) गुळ्ळो देवुनिकि नैवेद्यमु लेकुंटे पूजारी पुळिहोरकु पेड्चिनाडट।

अर्थात् मंदिर में भगवान को नैवेद्य नहीं, पर पुजारी "पुळिहोरे" के

1. "आन्ध्रुल साघिक चरित्र"— श्री सुरवरमु प्रताप रेड्डी, पृ. ३३०.

लिए रो पड़ा। ("पुलिहोरे" एक विशेष प्रकार का भात है जो इमली, नमक, मिर्च आदि मिला करके बनाया जाता है। वैष्णव मंदिरों में इसे बनाते हैं।)

यहाँ "पुजारि" शब्द का प्रयोग "तुक" मिलाने के लिए किया गया है।

"ब्राह्मण रीझे लडवाँ" "ब्राह्मण रो जी लाडू में" आदि हिन्दी की कहावतें भी ब्राह्मण की भोजन प्रियता प्रकट करती हैं।

ब्राह्मण का स्वभाव — ब्राह्मण सीधा-सादा होता है। वह झगडालू नहीं होता —

१) कप्पकु काटू, ब्राह्मणुनिकि पोटू लेदु।

अर्थात् मेंढक डसता नहीं, ब्राह्मण झगडालू नहीं। इसलिए उसे चोट नहीं आ सकती। इस कहावत से उसके डरपोक स्वभाव का भी पता चलता है।

२) ब्राह्मणुनि चेय्यि, एनुगतोंडमू ऊरकुंडवु।

अर्थात् ब्राह्मण का हाथ चुप नहीं रहता, हाथी की सूँड चुप नहीं रहती। दोनों चपल हैं।

अन्य कहावतें — तेलुगु की निम्नांकित कहावतों से इस विषय पर और भी प्रकाश पड़ता है।

ब्राह्मणुललो चिन्न वेंस्तललो पेद्दवालिकि पनियेक्कुव।

अर्थात् ब्राह्मणों में छोटे और मछुओं में बड़े को (घर में) अधिक काम करना पड़ता है।

"लोक-विश्वास" शीर्षक में यह कहावत उद्धत की गयी है —

ब्राह्मणुललो नल्लवाण्णि मालललो येर्रवाण्णि नम्मराटु ।

अर्थात् — ब्राह्मणों में काले और चमारों में गोरे पर विश्वास नहीं रखना चाहिए ।

ब्राह्मण पर और भी कई कहावतें मिलती है । हिन्दी और तेलुगु की ऊपर उद्धृत कहावतों की तुलना से यह स्पष्ट होता है कि तेलुगु-कहावतों में ब्राह्मण के गुण तथा अवगुण दोनों का वर्णन मिलता है । इन कहावतों के अध्ययन से उसके पारिवारिक जीवन के संबन्ध में भी थोड़ा ज्ञान प्राप्त होता है ।

२) राजपूत — हिन्दी में राजपूत जाति से संबन्धित कहावतें मिलती हैं । राजपूत की वीरता तो लोक प्रसिद्ध है । जन्म भूमि के प्रति उसका अत्यधिक प्रेम होता है । ये कहावतें [1] प्रसिद्ध हैं —

१) राजपूत री जात जमी ।

अर्थात् राजपूतों की जाति ही जमीन है ।

२) नाहर नै राजपूत नै रैकारे री गाल ।

अर्थात् राजपूत को रे, अरे या तू कहकर पुकारना गाली देने के बराबर है ।

जब राजपूतों ने अपना कर्तव्य-पालन छोड़ दिया तो इस प्रकार की कहावतें [2] चल पड़ी —

१) ठाकुर गया, ठग रह्या, मुलक रा चोर ।

[जो सच्चे थे वे चले गए, अब तो केवल मुल्क के चोर ही रह गए है ।]

1. "राजस्थानी कहावते – एक अध्ययन", पृ. १३८.
2. वही.

२) राजपूती रैइ नहीं, पुगी समंदां पार ।
[राजपूती है ही नहीं, सात समुद्र पार गई ।]

आन्ध्र में राजपूत जाति नहीं । अतः तेलुगु में ऐसी कहावतें नहीं मिल सकती । आन्ध्र की अन्य जातियों से संबन्धित कहावतों पर बाद मे विचार करेंगे ।

३) बनिया — तेलुगु में बनिए को "कोमटि" या "शेट्टी" कहते हैं । हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में बनिये पर अधिक संख्या में कहावतें मिलती हैं । व्यापार करना उसका पेशा है । उसमें वह अत्यधिक चतुर है । दूसरी जाति के लोग व्यापार करते हैं तो क्या करते हैं, उसका अनुकरण करते हैं । कहा गया है —

तिजारत करेंगे बनिया और करेंगे रीस ।

पाठांतर — बनिज करेंगे बानिये और करेंगे रीस ।

उसका सिद्धान्त है —

व्यापार में क्या भैया-बंदी ।

बनिये की बुद्धिमत्ता पर और एक कहावत है —

बनिये से सियाना सो दीवाना ।

बनिया जो कमाता है, उसे या तो कठिनाई का कोई अवसर आने पर खर्च करता है या धार्मिक कृत्यों में लगाता है — डाक्टर, वैद्य आदि को नहीं देता —

बाणियों के तो आंट में दे के खाट में दे ।

बिना लाभ के वह कभी कोई काम नहीं करता । कहावत प्रचलित है—

बनिये के बेटा कुछ देखकर ही गिरता है ।

इसी भाव की तेलुगु कहावत है —

लाभमु लेन्दिदे सेट्टि वरदबोडु ।

अर्थात् लाभ न होता तो बनिया नदी के प्रवाह न जाता ।

और — "बनिये की सलाम भी बेगरज नहीं होती ।"

वह परिचित व्यक्ति को अधिक ठगता है —

जान मारे बानिया, पहचान मारे चोर ।[1]

वह बड़ा कंजूस है । प्राण भी चाहे तो दे देता है, पर पैसा खर्च नहीं करता —

चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय ।

एक कहावत में कहा गया है कि बनिए, पकौड़े, बड़े कांसी और कसार को गरमागरम ही तोड़ लेना चाहिए नहीं तो "विकार" हो जाएगा —

बडो बडकलो बाणियो कांसी और कसार ।
ताता ही नै तोडिये, ठंडा करै विकार ।।

अथवा

इतना तो ताता भला, ठंडा करै बिगाड़ ।[2]

उपर्युक्त कहावतों में बनिये की व्यापारिक कुशलता, स्वार्थपरता और अवसरवादिता का चित्रण हुआ है । ऐसी भी कहावतें मिलती हैं जिन में बनिये की कायरता का चित्रण हुआ है । इतना ही नहीं, स्पष्ट कहा गया है कि उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए, वह कभी सच

1. पाठांतर — जान सारे बानिया, अनजान मारे ठग ।
2. राजस्थानी कहावतें — एक अध्ययन · डा० कन्हैयालाल सहल, पृ. १३९.

नहीं बोलता। तेलुगु की इन कहावतों को देखिए —

कोमटि परिकि कोट्टिते उरिकि।

अर्थात् बनिया डरपोक है, मारे तो भाग जाएगा।

कोमटि इल्लु कालिनट्लु।

अर्थात् जैसे बनिये का घर जल गया। उसका घर जल जाय तो वह प्राण ही दे दे। उसकी लोभ प्रवृत्ति प्रसिद्ध है। उसकी सहायता कोई नहीं करेगा।

कोमटि विश्वासमु।

अर्थात् बनिया विश्वास करने योग्य नहीं है।

कोमटि सत्यमु।

अर्थात् बनिये की गवाही। वह कभी सत्य नहीं बोलता। इससे संबन्धित कथा उद्धृत करना अप्रासंगिक न होगा — "एक बार घोड़े के व्याज से दो व्यक्तियों में लड़ाई हो गयी। एक हिन्दू था, दूसरा मुसलमान। जब बनिये को, जो लड़ाई के समय वहाँ मौजूद था, गवाही के लिए बुलाया गया तो उसने कहा "घोड़े का अग्रभाग देखने से लगता है कि यह घोड़ा मुसलमान का है और उसका पृष्ठ भाग देखने से लगता है कि यह हिन्दू का है।' "

इससे बनिये की कुशलता तथा अवसरवादिता दोनों स्पष्ट होती हैं। बनिये पर और भी ऐसी कई कहावतें मिलती हैं।

४) जाट — हिन्दी में जाट विषयक कहावतें मिलती हैं। बनिये की तुलना में जाट होशियार नहीं है। एक कहावती पद्य है —

बनिज करेंगे बानिये, और करेंगे रीस ।

बनिज किया था जाट ने, रह गए सौ के तीस ।[1]

जाट लट्ठमारो मेतुको बात करनेवाला कहा गया है —

जाट रे जाट तेरे सिर पर खाट ।

तेली रे तेली तेरे सिर पर कोल्हू ।।

जाट की खुशामदी प्रवृत्ति भी प्रसिद्ध है । एक कहावती पद्य है —

जाट है सुण जाटणी, ई गाँव में रहणूँ ।

ऊँट बिलाई ले गयी, हाँजी हाँजी कहणूँ ।।[2]

इस प्रकार की कहावतें और भी मिल जाती हैं ।

५) दासरि — यह आन्ध्र की एक जाति है । नीच जाति के जो लोग वैष्णव हो गए, वे सब दासरि हैं । "दासभाव" उनमें है, अतः उनको "दासरि" कहा गया हो । बुक्क दासरि, पाग दासरि, दण्डे दासरि आदि अनेक शाखाएँ उनमें हैं । ये लोग इधर-उधर घूमते-फिरते और भिक्षाटन कर पेट भरते हैं । स्त्रियाँ भिक्षाटन नहीं करतीं । तेलुगु में दासरि पर कई कहावतें मिलती हैं । कुछ उदाहरण लीजिए —

१) दासरि तप्पु दंडमुतो सरि ।

दासरि की गलतियाँ सलाम तक सीमित है अर्थात् सलाम करके अपनी गलती के लिए माफ़ी माँग लेता है ।

1. कहानी के लिए देखिये – "कहावतों की कहानियाँ" – महावीर प्रसाद पोद्दार, पृ. १०३.
2. राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन : डा० कन्हैयालाल सहल, पृ. १४३.

२) दासरि पाटकु मुष्टि मजूरा ।

अर्थात् दासरि जो गीत गाता है, उसके बदले में वह मुट्ठी भर अन्न पाता है । दासरि का यही पेशा है ।

कुछ कहावतों में उसकी दयनीय दशा का वर्णन मिलता है । जैसे–

दासरि पाट्नु पेरुमाळ्ळकु थेरुक ।

अर्थात् दासरि के कष्ट भगवान् को मालूम हैं । भगवान् ही उस पर दया करे ।

नीचे उद्धृत कहावत में उसकी अवसरवादिता का उल्लेख है–

दासरिवा जंगमवा अंटे, मंट्टुरिवारि कोट्टि अन्नाडट ।

जब दासरि से पूछा गया कि "तुम दासरि हो या जंगम" अर्थात् वैष्णव हो या शिवभक्त, तो उसने उत्तर दिया — "वह तो दूसरे गाँव पर निर्भर है ।"

६) मुसलमान — हमारे देश में मुसलमानों को भी एक जाति मानते आये हैं । अतः इस विषयक कहावतों को धार्मिक कहावतों में न रखकर यहाँ रखा गया है । समाज में मुसलमानों का वही स्थान है जो अन्य जातियों का है । हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में मुसलमानों से संबन्धित कई कहावतें प्राप्त होती हैं । कुछ उदाहरण लीजिए —

१) काको बेटी ना देगो तो देगा ही कुण ।

२) घर को दायजो घर में ही राखले ।

३) घर की बेटी घर की भू ।

४) आवै आंगण सासरो, आवै आंगण पीर ।

हिन्दी की ये कहावतें [1] जो मुसलमानों से संबन्धित हैं, बतलाती है कि मुसलमानों के यहाँ चचा की लड़की से ही शादी करने की प्रथा है। तेलुगु में जो कहावतें प्रचलित हैं, उनसे मुसलमानों के संबन्ध में कुछ और बातें मालूम होती हैं —

मुसलमान लोग, चाहे अमीर हों या ग़रीब, अपने नाम के साथ "साहब" लगाते हैं। अतः तेलुगु में हास्य शैली में कहा जाता है —

नाडुवुंटे नवाबु सायेबु, अलमुंटे अमीर सायेबु, बीद वडिते फकीरु सायेबु।

अर्थात् देश (या जमींदारी) रहे तो मुसलमान नवाब साहब कहलाते हैं। धन-दौलत हो तो अमीर साहब कहलाते हैं, ग़रीब हो जाय तो फकीर साहब कहलाते हैं।

तुरकलुंडु वीधिलो फकीरु सायेबु स्वामुलवारे।

अर्थात् जिस गली में मुसलमान रहते हैं, वहाँ फकीर ही संन्यासी है।

देश पर मुसलमानों का जो आतंक रहा, उसका आभास मिलता है नीचे की तेलुगु-कहावत में —

तुरकलु कोट्टगा चुक्केदुरा ?

अर्थात् जब मुसलमान आक्रमण करते हैं, तब क्या शकुन देखा जाता है? खतरे के समय शुभाशुभ का ध्यान नहीं रखा जाता।

७) रेड्डी — आन्ध्र में रेड्डी जाति बहुत प्रसिद्ध रही है। तेलुगु साहित्य में "रेड्डी युगमु" अर्थात् रेड्डी-काल एक महत्वपूर्ण काल है। रेड्डी

1. उद्धृत— "राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन", डा० कन्हैयालाल सहल, पृ. १५५ से।

जाति के लोग वीर और साहसी माने जाते हैं। परन्तु, कह उनका यह रूप नहीं दिखाई पड़ता। अधिकतर कहावतों में विवेकहीनता और व्यंग्य का चित्रण मिलता है —

गुर्रमुवले कुक्कनु पेंचि रेड्डी ताने मोरिगिनाडट।

अर्थात् घोड़े के जैसे कुत्ते को पालकर रेड्डी स्वयं भूंकने लगा

एन्नडू येरुगनि रेड्डि गुर्रमेक्किते, मूँडू वेनक दाथेनु।

अर्थात् जो रेड्डी कभी घोड़े पर नहीं बैठा था, वह घोड़े पर उल्टा बैठने वाले पूँछ की तरफ मुँह करके चढ़ा।

पेशेवर जातियाँ

८) नाई — हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में नाई कुछ कहावतें मिलती हैं। संस्कृत की एक लोकोक्ति में कहा गया मनुष्यों में नाई और पक्षियों में कौआ धूर्त होता है —

"नराणां नापितो धूर्तः पक्षिणां चैव वायसः।"

हिन्दी की इस कहावत में नाई को दगाबाज कहा गया है —

नाई की बात पँवाई।[1]

वह सदा अपवित्र समझा जाता है —

नाई धाई कसाई इनको सूतक कबे न जाई।

और एक कहावत है —

1. "राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन", डा० कन्हैयालाल सहल पृ. १४

नाई के आगे सब सिर झुकाते हैं ।

"नाई को देखने से बाल बढ़ते हैं" वाली कहावत तो प्रसिद्ध ही है ।

तेलुगु की ये कहावतें देखिए —

मंगलि पात, चाकलि कोत्त ।

अर्थात् नाई पुराना होना चाहिए क्योंकि अपने पेशे में अनुभवी होता है; धोबी नया होना चाहिए, क्योंकि नया धोबी कपड़े जल्दी धोकर देता है।

नाई के घर के सामने कहे बाल ही रहेंगे, और क्या होंगे ? कहावत है —

मंगलि इंटि मुंदर पेंट किव्व येंत त्रव्विना बोच्चे । अर्थात् नाई के घर के सामने का घूरा जितना भी खोदे, बाल ही बाल मिलेंगे ।

९) धोबी — यह जानी हुई बात है कि धोबी समय पर कपड़े नहीं देता । "मंगलि पात चाकलि कोत्त" वाली तेलुगु-कहावत ऊपर उद्धृत है। हिन्दी और तेलुगु की ये कहावतें प्रसिद्ध हैं —

धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का ।

रेंटिक चेडिन रेवडि ।

इस कहावत से संबन्धित कहानी का उल्लेख दूसरे अध्याय में किया गया है ।

धोबी पर हिन्दी में ये कहावतें भी मिलती हैं —

१) धोबी बसि कै क्या करै दिगंबरन के गाँव ।

२) धोबी रोवें धुलाई को मियाँ रोवें कपड़े को ।

तेलुगु में ये कहावतें मिलती हैं —

१) चालि चालनंदुकु चाकिटि गुड्डलु शान उन्नदि ।
अर्थात् तुम्हारे पास कपड़े न हो तो धोबी के घर में बहुत का

२) उलिकेवाडिके गालि चाकलि उतकडु ।
अर्थात् जो आदमी दबाव डालते हैं, उन्हीं के कपड़े वह धोता । न डाले तो वह जल्दी कपड़े नहीं देता ।

१०) कुम्हार — तेलुगु में कुम्हार पर कुछ कहावतें हैं । कतिपय उदाहरण लीजिए —

घड़े बनाना ही कुम्हार का पेशा है । उसके घर में घड़ों के बर्तनों) के सिवा और होता ही क्या है ? —

कुम्मरि आवमुलो कुंडलेगानि बिंदेलु दोरकवु ।
अर्थात् कुम्हार के आंगन में घड़े ही मिलते, गगरे नहीं ।

वह जो मिट्टी के बर्तन बनाता है, उसका मूल्य भी देखिये बहुत परिश्रम करता है, उन्हें बनाता है । पर, एक डंडा पड़ा तो सारा परिश्रम चूर-चूर हो जाता है । इसलिए कहावत है —

कुम्हरि कष्टमंता ओक देब्बकु लोकुव ।
अर्थात् कुम्हार का परिश्रम डंडे के एक आघात से भी कम ।

इस कहावत का दूसरा रूप है —

कुम्मरिकि वकयेडु, गुदियकु वकपेट्टु ।[1]
हास्य शैली में और एक कहावत लीजिए —

राजुभार्या मेडेक्किते कुम्मरिवाडि कोडलु गुडिसे येक्कि

1. कुंबारनिगे वर्ष दोण्णेगे निमिष । (कन्नड)

अर्थात् राजा की पत्नी मंजिल पर चढ़ी तो कुन्हार की बहू झोपड़ी
के ऊपर चढ़ी ।

११) सोनार — सोनार के संबन्ध में प्रसिद्ध है कि वह गहने बनाते समय सोने-चांदी की चोरी अवश्य करेगा । तेलुगु-कहावत है—

तल्लिबंगारु अयिना कंसालिवाडु दोंगिलक मानडु ।

अर्थात् यदि सोना अपनी माँ का ही हो, फिर भी सोनार चोरी
करना नहीं छोड़ेगा ।

हिन्दी की इस कहावत से भी उसकी चोरी की प्रवृत्ति का पता चलता है —

सोना सुनार का, आभरण संसार का । [1]

सोनार ठीक समय पर काम पूरा नहीं करता । वह "कल" की हामी भरता रहता है । तेलुगु-कहावत है —

मादिग मल्लि कंसालि येल्लि ।

अर्थात् चमार कहता "फिर", सोनार कहता है "कल" ।

१२) चमार — हिन्दी और तेलुगु में चमार पर काफ़ी कहावतें मिलती हैं । कुछ हिन्दी कहावतें देखिए —

१) मोची मोची लड़ाई होय, फाटे राज के जीन ।

२) चमार चमड़े का यार ।

तेलुगु-कहावतें—

1. कहानी के लिए देखिये — "कहावतों की कहानियाँ"— महावीर प्रसाद पोद्दार, पृ. १४६-४७.

१) मादिगवाडि आलु आयिना माडेकाळ्ळकि चप्पुलेदु ।[1]

अर्थात् मोची की पत्नी होने पर भी उसके जलनेवाले पैरों को जूते नहीं।

२) मादिग मल्लि कंसालि येल्लि ।

इसका उल्लेख ऊपर कर चुके हैं ।

१३) पटवारी — तेलुगु में पटवारी पर कई कहावतें प्राप्त होती हैं । उसके लिए यह प्रसिद्ध है कि उस पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए —

१) काटिकि पोयिना करणाग्नि नम्मरादु ।

अर्थात् पटवारी पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए । भले ही वह जंगल में चला गया हो ।

२) आकलिगोन्न करणम् पात कथिले तीसिनाडु ।[2]

अर्थात् भूखा पटवारी पुराना हिसाब देखने लगा ।

३) कूत करणमु ।

अर्थात् पटवारी केवल बोलनेवाला है, काम करनेवाला नहीं ।

४) मेत करणमु ।

खानेवाला पटवारी अर्थात् वह जितना भी रिश्वत ले लेता है । रिश्वत लेना तो उसका स्वभाव ही ।

इनके अतिरिक्त दर्जी, जुलाहे, कृषक आदि पर भी अनेक कहावतें

1. तुलना कीजिये — A shoemaker's wife and a smith's mare are always the worst shod. (अंग्रेजी)
2. केलसविल्लद शानुभोग हळे लेक्क तेगेद । (कन्नड)

मिलती हैं। कृषक से संबन्धित कहावतों पर अन्यत्र विचार करेंगे। दर्जी, लोहार और जुलाहे पर तेलुगु की एक तुलनात्मक कहावत लीजिए—

सूदेड्डुवाण्णि सुत्तेड्डुवाण्णि कंकेड्डुवाण्णि नम्मराडु।

अर्थात् दर्जी, लोहार और जुलाहे पर विश्वास नहीं करना चाहिए। ब्राह्मण-बनिए, ब्राह्मण-कृषक, जाट-तेली आदि पर भी तुलनात्मक कहावतें मिलती हैं। "नट" जाति से संबन्धित हिन्दी की एक कहावत नीचे उद्धृत है —

नटनी बाँस पर चढ़ी तो घूँघट क्या ?

तेली से संबन्धित —

मैं हूँ तेली, घूँ गो रिपये की धेली।

तेली के बैल को घर ही कोस पचास।

जैसी कहावतें प्रसिद्ध हैं।

फुटकर

चोर — चोर को किसी जाति में नहीं मिला सकते। चोर की जाति नहीं होती। पर, चोर का पेशा चोरी होता है। उसके पेशे को दृष्टि में रखकर उसके संबन्ध में यहाँ कहना उचित समझा गया है। चोर पर हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में बहुत-सी कहावतें देखी जाती हैं।

१) चोर को चोरी ही सूझे।

अथवा — चोर के मन में चोरी ही बसे।

तेलुगु-कहावत से तुलना करें —

दोंगकु दोंग बुद्धि, दोरकु दोरबुद्धि ।

[चोर की बुद्धि चोर की होती है, राजा की बुद्धि राजा की होती है

२)   चोर की दाढ़ी में तिनका ।

तेलुगु कहावत है —

गुम्मडिकायल दोंग अंटे तन भुजालु तामे पट्टिचूचुकोन्नाडट

अर्थात् "कुम्हड़े का चोर" किसी ने कहा तो चोर अपनी भुजाओं

आप पकड़कर देखने लगा ।

इसी भावों की कहावतें अन्य भाषाओं में भी हैं । [1]

चोर को सब पर संदेह होता है । वह संदेहात्मा है —

दोंगकु अंदरमीद अनुमानमे (चोर को सब पर संदेह) ।

चोर को चोर ही पहचान सकता है —

चोर को चोर की पहचान ।

क्योंकि — चोर चोर मौसेरे भाई ।

तेलुगु-कहावतें हैं —

दोंगकु दोंग वेरुगुनु ।

[चोर को चोर जानता है ।]

और — दोंगनु पट्टवलेनु दोंगे कावलेनु ।

[चोर को चोर ही पकड़ सकता है ।]

चोर को अपने कर्म के कारण शर्म से सिर झुकाना पड़ता है । तेलुगु की एक कहावत में कहा गया है कि चोर की स्त्री कभी विधवा होगी ही-

1. कुंबळकायि कळ्ळ अंदरे हेगलु मुट्टि नोडिकोंड । (कन्नड)
A guilty conscience need no accuser. (अंग्रेजी)

दोंगवाडि पेंड्लामु एप्पडू मुंडमोपे ।[1]

"चोरी का माल मोरी में" वाली हिन्दी-कहावत प्रसिद्ध ही है।

तेलुगु-कहावत से तुलना कीजिए —

दोंगल सोम्मु दोरलु पालु ।

[चोरों का माल प्रभुओं के हाथ में ।]

कुछ और कहावतें देखिए —

चोर से कहो चोरी कर और शाह से कहो जागते रहो ।

दोंगलकु तलुपु तेरचि दोरनु लेपिनट्लु ।

[जैसे चोर के लिए दरवाजा खोला और राजा को जगाया ।]

अथवा

इंटिवाण्णि लेपि दोंगचेतिकि कट्टे इच्चिनट्लु ।

[जैसे घरवाले को जगाकर चोर के हाथ में लाठी दी]

हिन्दी में प्राप्त होनेवाली निम्नांकित कहावतें भी द्रष्टव्य है —

१) चोर का जी कितना ।

२) चोरी और सीना जोरी ।

३) उल्टा चोर कोतवाल को डांटे ।

४) चोर चोरी से गया तो क्या फेराफारी से भी गया ?

अन्य तेलुगु-कहावतें —

१) दोंगनु पुट्टिंचिनवाडु मतिभ्रष्टनु पुट्टिंचक मानडु ।

[जो भगवान चोर को पैदा करता है वह "मतिभ्रष्ट" को भी पैदा करता है ।] अर्थात् बेवकूफ़ को ही चोर धोखा देता है ।

1. कळ्ळन हेंडति ऍंदिद्दरू मुंडे । (कन्नड)

२) दोंग वाकिटने मंचमु वेसिनट्लु ।
[जैसे चोर के घर के सामने ही खाट रखी गयी ।]

३) दोंगलु तोलिन गोड्डु एरेवुन दाटिना वकटे ।
[जिस बैल को चोर ले गए, वह किसी भी घाट से पार कराया गया हो, उससे क्या लाभ ।]

४) दोंगनि तल्लिकि येडव भयमु ।
[चोर की माँ खुले आम नहीं रो सकती ।]

इस विषय पर और भी अनेक कहावतें मिलती हैं । यहाँ संक्षेप में इस पर विचार किया गया है । तेलुगु और हिन्दी की चोर संबन्धी कहावत के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट है कि दोनों में प्रायः एक-सा भाव व्यक्त हुआ है ।

अब तक हमने प्रमुख जातियों तथा पेशेवर जातियों से संबन्धित कहावतों का अध्ययन किया । यहाँ स्मरण रखना चाहिए कि जिस समाज में जिस जाति के प्रति जिस प्रकार की भावना रूढिबद्ध हो जाति है, वह कहावतों में मुखरित हो उठती है । समाज का रूप एक ही प्रकार नहीं रहता । उसमें परिवर्तन होता रहता है । परिवर्तन के आघात से ऐसी कहावतें भी बच नहीं सकतीं । या तो उनमें रूप-परिवर्तन हो जाता है या वे लुप्त हो जाती है ।

(ङ) पुरुष-संबन्धी कहावतें — हिन्दी की अपेक्षा तेलुगु में ऐसी कहावतें बहुत मिलती हैं । हिन्दी-कहावत प्रसिद्ध ही है —

मर्द साठे पर पाठे होते हैं ।

पुरुष परुष होता है। वह अत्यंत निष्ठुर होता है। एक तेलुगु कहावत है —

मोगवाडो मानो।

[पुरुष अथवा काष्ठ अर्थात् काष्ठ के समान कठोर है।]

इसके विपरीत कालिदास की उक्ति है —

कठिनाः खलु स्त्रियः।

पुरुष का लक्षण है, वह किसी न किसी काम-धंधे में लगा रहे। नौकरी उसका गौरव है। यदि वह बेकार बैठा रहेगा तो घर में ही उसका मान नहीं होगा। तेलुगु-कहावत है —

उद्योगं पुरुष लक्षणम्, आदि पोते अवलक्षणम्।

[नौकरी पुरुष के लिए शोभनीय है, उसके अभाव में वह शोभा नहीं देता।]

कुछ कहावतों में तुलनात्मक दृष्टिकोण से स्त्री और पुरुष के संबन्ध में निम्न प्रकार से भाव व्यक्त किया गया है, जैसे —

१) आडदानि चेत अर्थंनु मगवानि चेत बिड्डा ब्रतकवु।

[स्त्री के हाथ में पैसा नहीं बचता, पुरुष के हाथ में बच्चा जीवित नहीं रहता।]

२) आडदि बोंकिते गोडपेट्टिनट्टु, मोगवाडु बोंकिते तडिक कट्टिनट्टु।

[स्त्री झूठ बोलती है तो दीवार बनाने के सदृश्य बोलती है, पुरुष झूठ बोलता है तो टट्टी की आड रखने के सदृश्य बोलता है। अर्थात् पुरुष झूठ बोले तो पकड़ा जाता है।]

३) नव्वे आडदानि येड्चे मगवाण्णि नम्मरादु ।
(हँसनेवाली स्त्री और रोनेवाले पुरुष पर विश्वास नहीं करना चाहिए ।)

कहावतों में दामाद के संबन्ध में भी कई प्रकार की भावना व्यक्त हुई है । कुछ उदाहरण लीजिए —

१) अंगट्लो अन्नि उन्नवि, अल्लुनि नोट्लो शनि उन्नदि ।
(बाजार में सब कुछ है, पर दामाद के मुंह में शनि है । अर्थात् दामाद ससुर की अच्छाई से लाभान्वित नहीं होता ऐसे दामाद के प्रति कहा जाता है ।)

२) अल्लुडिकि नेय्यि लेदु, अल्लुडितोटि कूडा वच्चिन वारिकि नूने लेदु ।
(दामाद को (भोजन में) घी नहीं और उसके साथियों को तेल भी नहीं)

अर्थात् ससुराल में दामाद का जैसा सत्कार होना चाहिए, वैसा नहीं हुआ ।

कोई सास अपने दामाद को कितनी ममता से देखती है, देखिए-

३) अल्लुडिकि वंडिन अन्नमु कोडुकुकु पेट्टि कोट्टुकोन्नदट
(सास ने अपने दामाद के लिए खाना बनाया और अपने बेटे को खिलाकर रोने लगी ।)

हास्य-शैली की एक और कहावत है —

४) अल्लुनकु पेदिमेलु लेवु ।
(दामादों के होंठ नहीं अर्थात् ससुराल में उसे गंभीर

होकर बैठना पड़ता है, वह हँस नहीं सकता।)

५) अल्लुल्लो मल्लु पेद्द।

(दामादों में 'मल्लु' बड़ा है, क्यों कि दूसरों से वह उत्तम है।

इन कहावतों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि समाज में पुरुष का क्या स्थान है और समाज उसे किस दृष्टि से देखता है।

(च) नारी संबन्धी कहावतें — ऊपर ऐसी कहावतें उद्धृत की गयी हैं जिनमें पुरुष और नारी पर तुलनात्मक रीति से विचार प्रकट हुआ है। अब नारी से संबन्धित कहावतों पर स्वतंत्र रूप से विचार करेंगे। हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में नारी विषयक कहावतों का बाहुल्य है। अन्य भारतीय भाषाओं में भी ऐसी कहावतें यथेष्ट संख्या में मिलती हैं। इसका हेतु यह है कि समाज में नारी के विषय मे अनेक प्रकार की धारणाएँ होती हैं। समाज में नारी का बहुत ही मुख्य स्थान है। यह प्रश्न दूसरा है कि वह स्थान किस प्रकार का है। नारी-जीवन के विविध पहलुओं को दृष्टि में रखकर कहावतों का अध्ययन करने पर इसका उत्तर मिल जाता है।

१) कन्या जन्म — जब कन्या का जन्म होता है तब लोग उस संबन्ध में क्या कहते हैं, उसे किस रूप में स्वीकार करते है, इसका विश्लेषण करने पर मालूम हो जाता है कि समाज में नारी की कैसी स्थिति है। यह तो सर्वविदित सत्य है कि समाज में पुत्र जन्म को जितना महत्व और आदर दिया जाता है, उतना कन्या जन्म को नहीं। पुत्र के जन्मते ही पुत्रोत्सव मनाते हैं, पर कन्या के जन्म पर इस प्रकार का वैभव नहीं देखा जाता। उत्सव मनावे तो मनावे, पर वह रंग-ढंग यहाँ

कहाँ ? "अपुत्रस्य गतिर्नास्ति" अर्थात् "पुत्रहीन की गति नहीं" वाली उक्ति की बद्धमूल धारणा के कारण संभवतः कन्या की अपेक्षा पुत्र को अधिक महत्व दिया गया है। ऋग्वेद-काल में भी लड़के और लड़की की समान स्थिति थी ऐसा नहीं कहा जा सकता। अथर्ववेद तक आते-आते लड़की के जन्म को हेय समझा जाने लगा और इस प्रकार की प्रार्थनाएँ की जाने लगीं — "वह लड़की को अन्यत्र रखे, यहाँ वह पुत्र दे।"— (अथर्व ६.२.३)।[1] ब्राह्मण ग्रन्थों में तो पुत्र को 'मुक्ति का जहाज' माना गया।[2] मध्ययुग में कन्या जन्म के संबन्ध में प्रायः यही धारणा थी। आधुनिक काल में जब कि दहेज प्रथा का भयावह रूप सामने दिखाई पड़ा तो समाज में कन्या जन्म को एक प्रकार का अभिशाप समझा जाने लगा। पर अब देश में शिक्षा के अधिक प्रचार-प्रसार के कारण इस विचार-धारा में परिवर्तन के चिह्न दृष्टिगोचर हो रहे हैं। आज दिन कन्या-जन्म को कम आदर की दृष्टि से नहीं देखते। पर, सर्वत्र यह दशा नहीं है। पुरानी विचारधारा अब भी दिखाई पड़ती है।

हिन्दी और तेलुगु में जो कहावतें प्रचलित हैं, उनको देखने से यह प्रकट होता है कि कन्या-जन्म दुःख का कारण है। हिन्दी की ये कहावतें सर्वत्र प्रचलित हैं —

१) बेटी भली न एक।

२) बेटो जाम अमारो हार्यो।

1. दे. 'Women in the Vedic Age' by Shakuntala Rao Shastri

2. राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन डा० कन्हैयालाल सहल, पृ १५८

माता सोचती है कि पुत्री को जन्म देकर जीवन व्यर्थ ही खो दिया ।

"बेटी का बाप" यह उक्ति सभी भाषाओं में साधारण रूप से चलती है, जो एक कहावत ही बन गयी है । सच है कि 'बेटी का बाप' होना, दुःख सहने के लिए ही है ।

तेलुगु की निम्न लिखित कहावतों को देखने से स्पष्ट होता है कि समाज में नारी होकर जन्म लेना अत्यंत दुःख का विषय है । नारी की आहें ही कहावतों के रूप में निकल पड़ी है—

आडदै पुट्टुटकंटे अडविलो रायि अयि पुट्टुट मेलु ।

अर्थात् नारी होकर जन्म लेने की अपेक्षा अरण्य में पत्थर होकर जन्म लेना उत्तम है ।

पुत्र जन्म को जितनी मान्यता मिली है, उतनी पुत्री जन्म को नहीं । नीचे उद्धृत तेलुगु कहावत से यह बात स्पष्ट होगी —

तोलकरनि चेरुवु निंडिना तोलिचूरि कोडकु पुट्टिना लाभमु ।

अर्थात् पहली वर्षा से तालाब भरे और पहली संतान पुत्र हो तो बड़ा लाभ होगा ।

समाज में पुत्र को ही मान्यता है, देखिए —

कोडलु कोडुकुनु कंटानंटे वद्दने अत्तगारु वुन्नदा ?

अर्थात् यदि कोई बहू यह कहे कि मैं पुत्र को जन्म दूंगी तो ऐसी भी कोई सास है जो "नाहि" कहे ?

(२) <u>पराधीनता</u> — ऋग्वेदकाल में नारी स्वयं अपने पति को चुन सकती थी, वह स्वतंत्र थी । वह पुरुष के समान ही उपनीता होती थी एवं वेदाध्ययन की अधिकारिणी मानी जाती थी । ऋग्वेद की बहुत-

सी रचनाएं नारी से निर्मित हैं। इतना ही नहीं, ऋग्वेद का संपादन नारियों के हाथ से ही हुआ। उपनिषद्काल में भी नारी आध्यात्मिक वाद-विवाद में सक्रिय भाग लेती थी। इसके बाद के युग से परिवर्तन के दृश्य स्पष्ट दीखने लगे। मनु आदि धर्मशास्त्रकारों ने तो उसे स्वतंत्रता से वंचित किया। यद्यपि यह माना गया कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता:" अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती हैं, वहाँ स्वयं देवता विराजमान होते हैं, तथापि समाज में पुरुष का स्तर बढ़ता गया और नारी की स्वतंत्रता जाती रही। यह कहना कठिन होगा कि पुरुष का अधिकार नारी पर दृढ़ हो गया। जीवन पर्यंत पुरुष के अधीन में रहना ही नारी का कर्तव्य माना गया —

पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने।
पुत्रस्तु स्थविरे भावे, न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति ॥

अर्थात् कौमार में पिता, यौवन में पति, तत्पश्चात् पुत्र नारी की रक्षा करते हैं, वह स्वतंत्र रहने योग्य नहीं है।

"न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति" वाली उक्ति तो कहावत बन गयी है। प्रादेशिक भाषाओं में भी इसका अनूदित रूप दिखाई पड़ता है। नारी की पराधीनता से संबन्धित कहावतें इसी सत्य की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती हैं। कुछ कहावतें लीजिए —

१) कत विधि सृजीं नारी जग माहीं।
पराधीन सपनेहु सुख नाहीं ॥

तुलसी-रामायण की ये पंक्तियाँ कहावत बन गयी हैं। कौन जाने गोस्वामी जी ने किसी प्रचलित लोकोक्ति को ही यह रूप दिया हो।

रामायण की और एक पंक्ति है —

२) जिमि स्वतंत्र भये बिगरहिं नारी।

एक कहावत में कहा गया है कि दुनिया में दो ही गरीब हैं — बेटी और बैल। क्योंकि, दोनों परतंत्र है —

३) दुनिया में दो गरीब, कै बेटी कै बैल।

४) जमी, जोरु जोर की, जोर हट्यो और की।

तुलना कीजिए —

पुस्तकं वनिता वित्तं परहस्तगतं गतम्।

अर्थात् पुस्तक, नारी और वित्त दूसरों के हाथ में गये तो शायद ही लौट आवे।

आन्ध्र में प्रचलित "बोम्मल नोमु" (व्रत) का विवरण दूसरे अध्याय में दिया गया है। स्मृतिकारों की पंक्ति 'न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति' का भाव बालिकाओं के मन पर सुदृढ अंकित करने के निमित्त ही व्रताचरण की ऐसी प्रथा चल पड़ी हो।

(३) गृहिणी — समाज में गृहिणी को सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त है। जिस घर में स्त्री नहीं होती, उस घर को घर नहीं कहा जाता। इसलिए तेलुगु-कहावत है —

इंटिकि दीपं इल्लालु।

[घर का दीपक गृहिणी है।]

"गृहिणी गृहमुच्यते" का ही यह तेलुगु रूप है।

जो स्त्री अपने गौरव की रक्षा नहीं करती, अपने पति के अनुकूल नहीं चलती, वह सच्ची गृहिणी नहीं है। ऐसी स्त्री के संबन्ध में कहा जाता है —

१) आलु काडु शालु ।

अर्थात् वह पत्नी नहीं है, दुर्भाग्य है ।

२) इल्लु इरुकं, आलु मरकं ।

अर्थात् घर छोटा है (तंग है) और पत्नी बंदर है । दोनों तरफ़ कठिनाई ।

(४) विधवा — वैधव्य नारी को अभिशाप है । समाज में विधवा का शोचनीय स्थान है । विधवा के दर्शन को (किसी कार्यारंभ में) अपशकुन माना गया है । मंगल कार्यों में उसको कोई स्थान प्राप्त नहीं है । वह साज-शृंगार नहीं कर सकती । एक कहावत है —

तीतर पंखी बादली, विधवा काजल रेख ।
वा बरसै वा घर करै, ई में मीन न मेख ॥[1]

अर्थात् यदि विधवा अपने नेत्रों में काजल की रेखा देने लगेगी तो वह निश्चय ही अपने लिए नया पति ढूँढ लेगी, इसमें किंचित् भी संदेह नहीं ।

विधवा को साज-शृंगार नहीं करना चाहिए, इसी भाव की द्योतक है यह तेलुगु-कहावत —

मुण्ड मोपिकेल मुत्याल पापट ?

अर्थात् विधवा अपनी माग में मोतियों का आभूषण क्यों पहने ?

विधवा का जीवन त्याग-तप का होना चाहिए । उसको रूखा-सूखा भोजन ही करना चाहिए । कहावत है —

जैन्, बैरागी, बोकड़ो, चौथी विधवा नार ।
एता तो भूखा भला, धाया करे बिगाड़ ॥[1]

1. "राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन", डा० कन्हैयालाल सहल पृ. १६४

(बैल, बैरागी, साधु, बकरा और विधवा स्त्री ये चारों तो भूखे ही अच्छे हैं, तृप्त होने पर ये नुकसान पहुँचाते हैं।)

विधवा अपने पुत्र को बड़े लाड़ प्यार से पालती है। अतः तेलुगु में कहावत है —

मुंड कोडुके कोडकु, राजु कोडुके कोडुकु। अर्थात् विधवा का बेटा ही बेटा, राजा का बेटा ही बेटा है।

उसका बेटा निरंकुश होता है, इस आशय की तेलुगु कहावत है—

मुंड पेंचिन बिड्डु मुगदाडु लेनि एद्दु समानमु।

अर्थात् विधवा का लड़का और वह बैल जिसकी नाक में रस्सी नहीं होती दोनों बराबर हैं।

वर्तमान युग में विधवा को लोगों की सहानुभूति प्राप्त है। आज वह वैसी उपेक्षिता नहीं है जैसी पहले थी।

(५) बड़ी–बहू — लड़के की अपेक्षा लड़की की आयु अधिक हो तो यह कहावत कही जाती है —

बड़ी बहू बड़ा भाग, छोटे बनड़ो घणो सुहाग।[1]

किसी संदर्भ में ऐसी कहावतों का जन्म हो जाता है, कभी-कभी हँसी-मजाक के रूप में ऐसी उक्तियाँ चल पड़ती है जो बाद कहावतें बन जाती हैं।

(६) सास-बहू — भारत की प्रत्येक भाषा में सास-बहू संबन्धी कहावतें पर्याप्त मात्रा में मिलती हैं। केवल भारतीय भाषाओं में ही नहीं

1. कहानी के लिए देखिये — "कहावतों की कहानियाँ" — महावीर प्रसाद पोद्दार, पृ. १०६.

विदेशी भाषाओं में भी ऐसी कहावतों की कमी नहीं है। तेलुगु में इस विषय पर असंख्य कहावतें उपलब्ध होती हैं। इन कहावतों के अध्ययन से समाज का स्पष्ट चित्र हमारे सामने उपस्थित हो जाता है।

साधारणतया सास-बहू में नहीं पटता। ऐसी सास-बहुएँ बहुत कम हैं जो एक दूसरी के साथ सद्व्यवहार करती हों। इन दोनों में ठीक प्रकारेण निर्वाह इसलिए नहीं होता कि सास बहू पर अधिकार जमाना चाहती है जो बहू के लिए असह्य है। इसका परिणाम होता है गृह-कलह। इससे संबन्धित लोककथा जो यहाँ प्रचलित है, इस प्रकार है—

भीख माँगता हुआ एक भिखारी किसी के द्वार पर आया। बहू द्वार पर ही थी। उसने भिखारी से कहा — ''नहीं, जाओ'। भिखारी चलने लगा। बहू की बातें सास के कानों में पड़ी जो अन्दर काम कर रही थी। वह बाहर चली आयी और भिखारी को बुलाया। भिखारी ने सोचा, भीख मिलेगी। उसने कहा —''मैं कहती हूँ अब तुम जाओ''।

घर की स्वामिनी सास है। "नहीं" कहने का अधिकार उसे ही है। भला वह बहू को कैसे मिले!

सारांश यह कि सास-बहू में निर्वाह नहीं होता। दोनों परस्पर प्रेम का व्यवहार नहीं करतीं। एक दूसरी पर विश्वास भी कम रखती हैं। इस कारण, सास मर जाय तो भी बहू समझती है कि अच्छा ही हुआ। कहावत है—

सास मरेगी कटेगी बेड़ी। भू चढ़ेगी हर की पौढ़ी॥

[सास मर गयी तो बहू की बेड़ी कट गयी। बहू हर की पौढ़ी पर चढ़ गई।]

सास की मृत्यु पर उसे दुःख नहीं होता। दिखावे के लिए रोती है। कहावतें प्रसिद्ध है —

आज मरी सासू, कल आये आँसू।

आज सास मर गयी तो कल आँसू आये।

इसी भाव की अभिव्यक्ति तेलुगु में देखिए —

अत्त चच्चिन आरु नेललकु कोडलि कंट नीरु वच्चिनट्ट।

अर्थात् सास की मृत्यु के मास के बाद बहू की आँखो में आँसू निकले और —

अत्त चच्चिनदनि कोडलु येड्चिनट्लु।

अर्थात् जैसे बहू रोने लगी कि सास मर गयी। उसको वास्तविक दुःख नहीं होता। समाज के सामने यों ही दुःख प्रकट कर लेती है।

सास चाहे जो भी काम करे, पूछनेवाले नहीं है। बहू करे तो सास की घुड़कियाँ सुननी पड़े। तेलुगु में कहावतें प्रचलित है—

अत्त चेसिन पनुलकु आरळ्ळु लेवु।

अर्थात् सास जो भी काम करे, उसे घुड़कियाँ नहीं सुननी पड़तीं।

अत्त कोट्टिन कुंड अडुगोटि कुंड, कोडलु कोट्टिन कुंड कोत्त कुंड।

अर्थात् सास के हाथ से जो घडा फूट गया वह पहले ही तले फूटा हुआ था, बहू के हाथ से फूटा घड़ा बिलकुल नया था।

सास पदे-पदे बहू को तंग करती है। उसके प्रत्येक कार्य की बुरी तरह से टीका-टिप्पणी करती है। इसलिए तेलुगु में कहते हैं —

अत्तगारि साधिपुं।[1]

1. तुलना कीजिये— A Husband's mother is the wife's devil. (जर्मन).

अर्थात् सास की कपटून या छिकदारी।

सास अच्छी नहीं हो सकती —

कत्ति मेसला अत्त मंची लेदु।

अर्थात् तलवार मृदु नहीं होती, सास अच्छी नहीं होती।

अत्त मंचि वेमुल तीपू लेदु।

अर्थात् सास में अच्छाई और नीम में मीठापन नहीं होता।

जब बहू को सास पर क्रोध आता है तो अपना क्रोध दूसरे प उतारती है —

अत्त पेरु पेट्टी कूतुरूनि कुंपट्लो वेशिनट्लु।[1]

अर्थात् जैसे (बहू) सास का नाम लेकर अपनी बेटी को अंगीठी ं डाल देती है।

तुलना कीजिए —

धोबी का धोबिन पर बस न चले तो गधैया का कान उमेठे

यदि बहू खराब होती है तो उसका कारण या तो सास है या पति —

अत्तवल्ल दोंगतनमुन्नु, मगणिवल्ल रंकुन्नू नेर्चुकोन्नट्लु।

अर्थात् बहू अपनी सास से चोरी करना सीखती है और पति के कारण चंचलता होती है।

सास बहू का अहित तो चाहती है, पर बेटे का नहीं। देखिए—

कोडुकु बागुंडवले, कोडलु मुंडमोय्यवले।

बेटा अच्छा रहे, पर बहू विधवा बने।

1. असे मेलिन कोप कौत्ति मेळे। (कन्नड)

जिस बहू की सास नहीं होती और जिस सास की बहू नहीं होती, वे दोनों उत्तम गुणवाली हैं —

अत्त लेनि कोडलु उत्तमरालु, कोडलु लेनि अत्त गुणवंतरालु ।

ससुराल में जाकर बहू क्या सुख भोगेगी ? वहाँ तो उसे कष्ट ही सहने पड़ेंगे । कहा गया है —

अत्तवारिंट सुखमु मोचेति देब्बलांटिदि ।

अर्थात् ससुराल का सुख कैसा, कुहनी पर लगी चोट जैसा ।

सास भलमानस होने पर भी संसार यही कहता है कि सास बुरी है और बहू को कष्ट देती है । कहावत है —

अत्त मंचिदैना चेड्डपेरु तप्पदु ।

अर्थात् सास अच्छी तो भी बदनाम होती है ।

सास चतुर हो तो क्या बहू कम चतुर होती है ? तेलुगु में कहावत चल पड़ी है —

इल्लु मिंगे अत्तगारिकि युगमु मिंगे कोडलु ।

अर्थात् सास यदि घर निगलनेवाली है तो बहू युग (काल) को ही निगलनेवाली है । बहू सास भी बढ़कर चतुर है ।

बहू की दृष्टि सदा सास पर ही रहती । वह सास के प्रत्येक कार्य पर आँख लगाये रहती है । इसलिए कहावत चल पड़ी —

अत्तमीद कळ्ळु अंगटि मीद चेतुलु ।

अर्थात् आँखें सास पर, हाथ दूकान में ।

ससुराल में बहू के आते ही सास चल बसती हैं तो कहते हैं —

कोडलु गृहप्रवेशमु, अत्त गंगा प्रवेशमु ।

अर्थात् बहू का गृहप्रवेश और सास का गंगा प्रवेश (मृत्यु)।

घर में सब काम करनेवाली बहू है। पर, सास अन्त में जाकर अपना हाथ रख देती मानों उसी ने सब काम किया हो। कहावत है--

अमर्चिनदांट्लो अत्तगारु वेलु पेट्टिनदि।

अर्थात् जो बिलकुल तैयार था, उसमें सास ने अपनी उंगली रखी।

एक व्यंग्यपूर्ण कहावत है --

आकलि वेस्तुंदि अत्तगारु अंटे रोकलि मिगले कोडला अन्नदट।

अर्थात् जब बहू ने कहा -- "भूख लग रही है सास जी, तो सास ने कहा -- "बहू, मूसले को निगल जा।"

उपर्युक्त कहावतों में सास-बहू का कितना मार्मिक वर्णन है। समाज सास-बहू को किस दृष्टि से देखता है, यह बात इन कहावतों में अभिव्यंजित हुई है।

(७) नारी संबन्धी कुछ धारणाएँ -- समाज में नारी के संबन्ध में कुछ धारणाएँ बद्धमूल हो गयी हैं। उनको हम कहावतों में देख सकते हैं। कुछ उदाहरण लीजिए --

लुगाई की अकल गुद्दी में होय।

इससे मिलती-जुलती तेलुगु-कहावत है --

आडदानि बुद्धि अपर बुद्धि।[1]

अर्थात् स्त्री की बुद्धि अपर (गलत) बुद्धि है।

स्त्री की बात पर विश्वास नहीं करना चाहिए, इस भाव की

1. स्त्रीबुद्धिः प्रलयंकरी। (संस्कृत)

हिन्दी कहावतों तथा तेलुगु कहावतों की तुलना

तेलुगु कहावत है —

आडदानि माट नीळ्ळुमाट ।'

अर्थात् स्त्री की बात पानी पर लिखी हुई बात है ।

पुरुष और स्त्री से संबन्धित कुछ तुलनात्मक कहावतें इस उद्धृत की गयी है । फिर से उन्हें दुहराना अनावश्यक है ।

धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी,

आपतकाल परखिए चारी ।

इस कहावत का उल्लेख इसके पहले ही प्रसंगानुसार किया गया

ढोल गँवार शूद्र पशु नारी ।

ये सब ताडन के अधिकारी ।।

तुलसी की यह उक्ति कहावत बन गयी है । नारी के संबन्ध धारणा है, स्पष्ट है ।

बालहठ, तिरिया हठ, राजहठ ।

अथवा —

तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजै बार ।

ऊपर की कहावत से नारी का हठी स्वभाव मालूम होता है ।

नारी किसी के अधीन में रहेगी तभी उसकी शोभा है, लोकोक्ति है —

निराश्रया न शोभन्ते पंडिता वनिता लता ।

यह कहावत अन्य भाषाओं में भी प्रयुक्त होती है ।

1. न नारी हृदयस्थितम् । (संस्कृत) [
A woman's mind and winter wind change

कामिनी विष की बेल मानी गयी है, इसलिए दार्शनिकों ने कंचन-कामिनी की निन्दा की है —

छोटी मोटी कामिनी, सभी विषकी बेल।

"नारीणां भूषणं पतिः" वाली कहावत तो हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में प्रचलित है।

एक तेलुगु कहावत में कहा गया है कि स्त्रियाँ वार्तालाप में निमग्न हो जाती हैं तो शीघ्र उसका अंत नहीं होता —

मुग्गुरु आडवाळ्ळु कूडिते पट्टपगले चुक्कलु पोडुस्तवि।

अर्थात् तीन स्त्रियाँ मिल जाती हैं (और बातचीत करने लग जाती हैं) तो सबेरे के समय ही नक्षत्र उदित हो जायेंगे।

उपर्युक्त कहावतों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि समाज में नारी के संबन्ध में नाना प्रकार की धारणाएँ बद्धमूल हो गयी हैं। समाज में उसका स्थान साधारण है, अति उन्नत नहीं।

(छ) अन्य सामाजिक कहावतें —

(१) विवाह संबन्धी कहावतें — विवाह जैसे मुख्य विषय पर भी कुछ कहावतें मिलती हैं। तेलुगु में इस विषयक जो कहावतें हैं, उनसे स्पष्ट होता है कि विवाह करना सुगम कार्य नहीं है। बेटी का विवाह करना भी अति कष्टदायक कार्य है। एक तुलनात्मक कहावत है—

इल्लु कट्टि चूडु, पेळ्ळि चेसि चूडु।

अर्थात् घर बनाकर देखो और शादी करके देखो, तभी उनकी कठिनाई मालूम पड़ेगी।

"अष्टवर्षा भवेत् कन्या" वाली उक्ति तेलुगु में प्रचलित है। हिन्दी कहावत है —

तिरिया तेरा मर्द अठारा।

अर्थात् जब कन्या तेरह वर्षों की होती है और पुरुष अठारह वर्ष की अवस्था का होता है, तब वे विवाह योग्य होते हैं। लोगों में ऐसा विश्वास है कि विवाह की घड़ी आती है तो विवाह हो जाता है, कोई रोक नहीं सकते। कहावत है —

कल्याणमु वच्चिना कक्कोच्चिना आगदंटारु।

अर्थात् विवाह आ जाय अथवा उल्टी (वमन) आ जाय तो दोनों नहीं रुकतीं।

वृद्ध विवाह संबन्धी एक तेलुगु-कहावत है —

वयस्सु मीरु चेयु वैवाहिकम्मु मेप्पुग मगुने ?

अर्थात् आयु ढल जाने के बाद किया जानेवाला विवाह प्रशंसनीय होता है ?

"चच्चिनवाडि पोळ्ळिकि वच्चिनदे कट्नम्।"

एक तेलुगु कहावत है जिसका अर्थ है मरे व्यक्ति की शादी में जो भी दहेज में मिले, पर्याप्त है। इस कहावत को देखने से विदित होता है, लोगों में दहेज के प्रति कितना आकर्षण है।

हिन्दी में प्रचलित "बड़ी बहू बड़ा भाग, छोटे बनड़ो घणो सुहाग" कहावत बाल-विवाह संबन्धित है।

(२) भोजन-वस्त्र आदि से संबन्धित कहावतें — तेलुगु में ऐसी कहावतें मिलती हैं जिनमें यह कहा गया है कि मानव जो भी काम

करता है अपने जीवन-निर्वाह के लिए ही। एक कहावत है —

कोटि विद्यलु कूटि कोरके।

अर्थात् जितनी प्रकार की विद्याएं हैं, सब भोजन (जीविका) प्राप्त करने के लिए ही है।

तुलना कीजिए —

उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः।

इस कहावत का प्रयोग दोनों भाषाओं में समान रूप से होता है। गरीब होने पर भी दूसरों के सामने जाकर नहीं मांगना चाहिए। इसलिए कहा जाता है —

कूटिकि पेदंते कुलानिकि पेदा ?

अर्थात् भोजन के लिए दरिद्रता है तो क्या कुलीनता की कमी है ?

आहार और व्यवहार में लज्जा नहीं करनी चाहिए। कहावतें प्रसिद्ध हैं —

आहारे व्योहारे लज्जा न कारे। (हिन्दी)

और —

आहारमंदु व्यवहारमंदु शिग्गु पडकूडदु।

भोजन अधिक नहीं करना चाहिए, इससे स्वास्थ्य के लिए हानि होगी। "अल्पाहारी सदा सुखी" वाली कहावत दोनों भाषाओं में प्रसिद्ध ही है।

जब मनुष्य भूखा रहता है, तब वह भोजन की रुचि नहीं देखता। कहा गया है —

भूख में चने मखाने।

तेलुगु में —

आकलि रुचि येरगदु, निद्र सुखमेरगदु, वलपु सिग्गेरगदु ।

अर्थात् भूख को रुचि, निद्रा को सुख, और प्रेम को लज्जा मालूम नहीं है।

उधार लेकर खाने से पेट नहीं भरता तेलुगु-कहावत है —

अप्पु आकलिकि वच्चुना ?

अर्थात् क्या उधार भूख में काम आता है।

जब तक खाकर नहीं देखते तब तक किसी वस्तु की रुचि मालूम नहीं हो सकती —

तिन्टेगानि रुचि तेलियदु, दिगिते गानि लोतु तेलियदु ।

अर्थात् बिना खाए रुचि नहीं मालूम होती, बिना पानी में उतरे गहराई नहीं मालूम होती। जो व्यक्ति भोजन के लिए ही जीवित है, उसके संबन्ध में कहा जाता है —

तिण्डिकि चेटू नेलकु बरुवु ।

अर्थात् भोजन व्यर्थ है और वह भूमि पर रहने योग्य नहीं।

कभी अधिक भोजन नहीं करना चाहिए। उसमें "मिति" का ध्यान रखना चाहिए। तेलुगु-कहावत है—

मिति तप्पिते अमृतमैना विषमे ।

अर्थात् सीमा से अधिक हुआ तो अमृत भी विष हो जाता है।

तुलना कीजिए —

अजीर्णे भोजनं विषम् ।

भोजन संबन्धी जो विशेष कहावतें तेलुगु में प्रचलित हैं उनमें कुछ नीचे दी जाती हैं —

बंकाय बारिकूडु ।

बैंगन की तरकारी यहाँ बहुत पसंद की जाती है। इसलिए कहा गया है कि बैंगन के साथ भात रहे तो पर्याप्त। बैंगन का महत्व भी स्पष्ट है।

अल्लंतो अरवै पच्चड्लु।

अर्थात् अदरक से साठ प्रकार की चटनी बना सकते हैं। अदरक अत्यंत स्वादिष्ट और आवश्यक पदार्थ माना जाता है। "बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद" वाली कहावत से भी उसकी श्रेष्ठता मालूम होती है।

उल्लि पदि तल्लुल पोट्टु।

अर्थात् प्याज दस माताओं के बराबर है। प्याज से अत्यधिक लाभ पहुँचता है। प्याज पर तेलुगु में बहुत-सी कहावतें मिलती हैं —

उल्लिलेनि कूर तल्लिलेनि पिल्ल मेच्चनगुने।

अर्थात् प्याज रहित तरकारी और माँ-रहित लड़की को कौन पूछे?

उल्लि यनग बेद पल्लल कस्तूरी।

अर्थात् प्याज तो गरीब ग्रामीणों की कस्तूरी है।

उल्लिवुंटे मल्लि वंटलक्के।

अर्थात् प्याज रहे तो "मल्लि" (एक व्यक्ति का नाम) खाना बनाने में सिद्धहस्त ही है। याने वह तो प्याज की महिमा है, मल्लि की कुशलता नहीं।

बासीभात में अचार बहुत ही अच्छा रहता है, इस आशय की तेलुगु-कहावत है —

चद्दि कंटे दूरकाय घनमु।

और एक तुलनात्मक कहावत है —

चच्ची रानी माटलु रुचि, ऊरि ऊरनि ऊरगाय रुचि।

अर्थात् बच्चों की तोतली बोली अच्छी होती है और नया-नया बनाया
 आचार अच्छा होता है ।

ऊपर भोजन संबन्धी कहावतों पर विचार किया है । अब वस्त्र से संबन्धित दो कुछ कहावतें लीजिए —

तेलुगु में भोजन और वस्त्र संबन्धी एक तुलनात्मक कहावत है जिसमें कहा गया है कि वस्त्र तथा खाने-पीने के लिए जो उधर किया जाता है, बहुत दिनों तक नहीं रहता —

बट्टप्पु पोट्टप्पु निलवदु ।

एक कहावत में कहा गया है कि खाने-पीने के लिए न होने पर भी अच्छे कपड़े पहनने चाहिए —

खाइए मन भाता, पहनिए जग भाता ।

अर्थात् खाना तो अपने पसंद का खाना चाहिए और कपड़ा तो ऐसा पहनना चाहिए जो दूसरों को अच्छा लगे । तेलुगु में "लोपल लोटारमैना पैकि पटारमे" अर्थात् "अंदर कुछ न होने पर भी बाहर आडंबर" वाली कहावत का जन्म इस सिद्धान्त के कारण ही हुआ होगा ।

निवास के संबन्धि एक-दो कहावतें देखिए —

इल्लु कट्टि चूडु, पेळ्ळि चेसि चूडु ।

अर्थात् घर बनाना और शादी करना कठिन काम हैं । इस कहावत का उल्लेख विवाह संबन्धी कहावतों में कर चुके हैं ।

जिस स्थान में मनुष्य रहता है, उस स्थान के आधार पर उसकी परख हो जाती है । इसी कारण हिन्दी में कहते हैं —

आदमी जाने बसे, सोना जाने कसे ।

तेलुगु की एक कहावत है —

तन बलिमिकन्ना स्थान बलिमि मेलु ।

अर्थात् अपने बल से स्थान बल उत्तम है ।

(३) संयुक्त परिवार — कहावतों में संयुक्त परिवार के गुण-दोषों का चित्रण प्राप्त होता है। एक ओर कहा गया है कि उसमें गुण हैं तो दूसरी ओर यह कहा गया है कि उसमें अशान्ति का वातावरण रहता है । क्योंकि स्त्रियों की आपसी फूट के कारण घर में शान्ति का भंग होता है । तेलुगु-कहावत है —

रेण्डु कत्तुलोक पोरलो निमुडुनुगानि रेण्डु कप्पुलोक
इण्टिलो निमुडवु ।

अर्थात् एक म्यान में दो तलवारें समा भी जाएँ, पर एक घर में दो बर्तन नहीं समा सकते ।

शिक्षा के अभाव के कारण ही स्त्रियों में कलह होता है । शिक्षित स्त्रियों में यह बात नहीं ।

एक राजस्थानी-कहावत में कहा गया है कि संयुक्त परिवार में रहने से मान बढ़ता है, अलग रहने से मान घटता है —

बंधी भारी लाख की खुल्ली बोखर ज्याय ।[1]

(४) अतिथि-सत्कार — हमारे देश में अतिथि-सत्कार का विशेष महत्व है । अतिथि का सत्कार उचित रीति से करना चाहिए । "अतिथि देवो भव" अर्थात् अतिथि को देवता कहा गया है । यहाँ तक

1. "राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन", डा० कन्हैयालाल सहल पृ. १७२.

कहा गया है कि "घर आए बैरी का भी सत्कार करना चाहिए।" वेमना और कबीर के पद्य अन्यत्र हम उद्धृत कर चुके हैं। इस विषयक हिन्दी और तेलुगु-कहावतें लीजिए —

साँझ का आया पाहुन और घन टिकता है, जाता नहीं।

इससे मिलती-जुलती तेलुगु-कहावत है —

प्रोद्दुन्ने वच्चिन चुट्टं प्रोद्दुन्ने वच्चिन वान निलुवदु।

अर्थात् सवेरे आया हुआ रिश्तेदार और वर्षा— दोनों नहीं टिकते।

अतिथि एक-दो दिन आदर पाता है, उसके बाद नहीं। कहावत प्रचलित है —

एक दिन मेहमान, दो दिन मेहमान, तीसरे दिन हैवान।

तेलुगु-कहावत से तुलना कर सकते हैं —

विन्दु मंदु मूडु पूटलु।

अर्थात् आतिथ्य और दवा तीन जून तक अच्छे होते हैं, उसके बाद नहीं। अतिथि का सत्कार दो-तीन दिनों के बाद नहीं होता।

जहाँ आदर के साथ खाना खिलाते हैं, वहीं खाना उचित है। आतिथ्य में खाने-पीने की वस्तुओं की अपेक्षा प्रेम का मुख्य स्थान है। तेलुगु-कहावतें हैं —

प्रीतितो पेट्टिनदि पिडिकिडे चालुनु।

अर्थात् प्रेम के साथ एक मुट्ठी भर भी खिलावे, पर्याप्त है।

प्रीतिलेनि कूडु पिंडा कूटितो समानमु।

अर्थात् प्रीतिहीन भोजन (श्राद्ध के) पिंडों के समान है।

(५) पेशे संबंधी कहावतें — कौन-सा पेशा उत्तम है, कौन-सा अधम है, इस संबन्ध में भी कहावतें प्रचलित हैं। हिन्दी और तेलुगु में ये कहावतें प्रसिद्ध हैं —

१) धन खेती, धिक चाकरी, धन-धन वाणिज व्योहार।

२) उत्तम खेती, मध्यम बान, निखद चाकरी भीख निदान।

३) नौकरी ना करी।

४) कोटि विद्यलु कूटिकु लोपलने।

अर्थात् करोड़ों विद्याएँ खेती से नीचे हैं। खेती सर्वोच्च है।

५) सेवावृत्ति चे वच्चु पायसमुकंटे स्वच्छंद वृत्तिये लभिंचु गंजि मेलु।[1]

अर्थात् सेवावृत्ति से मिलनेवाले पायस से स्वेच्छावृत्ति से मिलनेवाला माँड श्रेष्ठ है।

दोनों भाषाओं में नौकरी को अधम और खेती को उत्तम कहा गया है। कृषि प्रधान देश होने के कारण भारतवासी खेती को ही उत्तम समझते हैं। वह ठीक भी है।

(६) जीव-जंतु संबन्धी कहावतें — सृष्टि में मानव तथा मानवेतर प्राणी-पदार्थ संबन्धी कहावतों में कुछ जीव-जन्तुओं पर विचार किया गया है। अब यहाँ अन्य कुछ कहावतों को देखेंगे। घोड़ा, ऊँट, बकरी, भेड़, कुत्ता, बिल्ली, गधा, गीदड़ आदि जानवरों से संबन्धित कहावतें अधिक प्रचलित हैं।

1. दे. नीतिचन्द्रिका : श्री परवस्तु चिन्नयसूरि, पृ. ६२.

घोड़ा — घोड़े से संबन्धित हिन्दी कहावत, जो नीचे दी गयी है, बहुत प्रसिद्ध है —

पिता पर पूत देश पर घोड़ा ।

बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा ॥

तेलुगु में एक तुकबात्मक कहावत है —

एनुगकु ओक सीम, गुर्रानिकि ओक वूर, बरेंक ओक बानिस ।

अर्थात् हाथी को (पालने के लिए) एक प्रदेश चाहिए, घोड़े को एक बस्ती और बैल को एक नौकर ।

बकरी — बकरी बहुत साधु प्राणी है । उसके संबन्ध में हिन्दी के ये कहावतें मिलती हैं —

१) बकरी की माँ कब तक खैर मनाएगी ?

२) बकरी ने दूध दिया पर मेंगनी भरा ।

(इनका प्रयोग प्रसंगानुसार होता है) । एक तेलुगु कहावत है —

ताळ्ळकु तलनु चंडलु मेकलकु मेडनु चंडलु ।

[ताड़ के सिर पर थन होते हैं, बकरी के गले में थन होते हैं ।]

भेड — हिन्दी-कहावत है —

एक भेड कुएँ में गिरे सब सब गिर पड़ते हैं ।

ऊँट — हिन्दी में ये कहावतें प्रचलित हैं —

१) काणो ऊँट कंकेडा काली देखं ।

[कंकेडे को ऊँट बड़े चाव से खाता है ।]

२) ऊँट फिटकड़ी दियां ही अलरावे, गुड़ दिया ही अलरावे ।

[फिटकरी देते समय भी ऊँट असाता है और गुड देते समय भी ।]

कुत्ता — कुत्ते के संबन्धित कहावतें तेलुगु में अधिक मिलती हैं। निम्नांकित हिन्दी-कहावत अत्यंत प्रसिद्ध है —

कुत्ते की दुम बारह बरस नल में रही तो भी टेढ़ी की टेढ़ी।

तेलुगु में भी इस भाव की कहावत है —

कुक्कनु अंदलमुलो कूर्चुंडबेट्टिते कुच्चुळ्ळ तेग कोरकिनट्ट।

अर्थात् कुत्ते को पालकी पर बिठाया गया तो पालकी का डब्बा ही वह काटने लगा।

कुत्ते की हत्या महा पातक माना गया है। तेलुगु कहावत है —

कुक्कनु चंपिन पापमु गुडि कट्टिना पोदु। अर्थात्
एक मंदिर बनवाने पर भी कुत्ते की हत्या का पाप नहीं कटता।

कुक्क तोक पट्टु कोनि गोदावरी ईदवच्चुना? अर्थात्
कुत्ते की पूंछ पकड़कर गोदावरी पार कर सकते? असंभव कार्य है।

बिल्ली — बिल्ली हमेशा चूहों को मारती रहती है। उसकी चालाकी प्रसिद्ध है। एक हिन्दी-कहावत है —

बिल्ली नौ सौ चूहों को मार कर हज करने चली।

तेलुगु में बिल्ली संबन्धी कई कहावतें उपलब्ध होती हैं। उदाहरणार्थ—

१) पिल्लि कंड्लु मूसुकोनि पालु तागुतू तन्नु येवरू येरुगरनि येंचुकोन्नट्लु।

अर्थात् जैसे आँखें मूंदकर दूध पीती हुई बिल्ली समझती है कि उसे कोई नहीं देख रहा है।

बिल्ली को दूध-मलाई बहुत पसंद है। अतः वह चाहती है कि घर की मालिकिन की आँखें फूट जायें। एक तुलनात्मक कहावत है —

पिल्लि कंड्लु पोगोरुनु, कुक्क पिल्ललु कलुग कोरुनु। अर्थात् बिल्ली चाहती है आँखें फूट जायँ, कुत्ता चाहता है बच्चे पैदा हों।

गधा — गधा एक मूर्ख पशु माना जाता है। अतः वह मूर्खता का प्रतीक माना गया है। वह अपनी प्रकृति नहीं छोड़ता।

हिन्दी-कहावत है —

गधा धोने से बछड़ा नहीं होता।

एक तेलुगु-कहावत है —

गाडिदेगत्तर।[1]

[गधे का कूड़ा करकट।]

अर्थात् वह किसी काम का नहीं है।

गीदड़ — इसके संबन्ध में एक हिन्दी-कहावत है —

गीदड़ की शामत आए तो गाँव की तरफ़ भागे।

भेड़िया — भेड़िये से संबन्धित तेलुगु की यह कहावत अधिक प्रचलित है —

जीतमू बत्यमु लेकुंडा तोडेलु मेकलु कास्तानदट्लु। अर्थात् जैसे भेड़िये ने कहा, "बिना वेतन और भत्ते के बकरियों की रक्षा करूँगा।"

इनके अतिरिक्त अन्य अनेक जीव-जन्तुओं पर भी कहावतें मिलती हैं। गाय और बैल से संबन्धित कहावतों को "कृषि में सहायक पशुओं से संबन्धित कहावतें" शीर्षक में रखा गया है।

1. तुलना कीजिये : Nothing passes between asses but kicks. (Italian).

(७) हास्य-व्यंग्य संबन्धी कहावतें — कहावतों में हास्य-व्यंग्य के लिए अच्छा स्थान है। बहुत-सी कहावतों में हास्य रस का बड़ा ही सुन्दर मिश्रण मिलता है। कहावतें चुटकीली और नुकीली उक्तियाँ हैं, अतः उनमें हास्य-व्यंग्य की सुन्दर अभिव्यक्ति संभव है। हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में ऐसी कहावतों की कमी नहीं है।

कुछ हिन्दी कहावतें

१) सारी रामायण सुन गए, पर यह न मालूम हुआ कि राम राक्षस था या रावण।

तेलुगु में भी इसी भाव की कहावत है —

रामायणमंता विनि रामुडिकि सीत एमि कावलेनु अनि अडिगिनट्लु।

[सारी रामायण सुनने के बाद जैसे पूछा जाता है कि सीता राम की कौन होती है ?]

२) साधवाँ कै कैसो सुवाद ? माई अण बिलोयी ही आवा दे।[1]

एक साधु किसी के घर छाछ माँगने गया। छाछ मांगनेवाली स्त्री ने कहा कि छाछ अभी मथी नहीं गयी। साधु ने कहा — बिना मथी हुई (मलाई युक्त) ही आने दो, हम साधुओं को स्वाद से क्या मतलब ?

1. "राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन", डा० कन्हैयालाल सहल पृ २६०

३) मियाँ जी की दाढ़ी वाह-वाह में गयी ।

४) मैं आपका नौकर हूँ, बैगन का नहीं ।[1]

तेलुगु-कहावतें

१) बावा ! नी भार्य मुंडमोशिनदोयि अंटे मरी अनि येड्चिनाडट ।
जब साले ने बहनोई से कहा कि "तुम्हारी पत्नी विधवा हो गयी", तब वह फूट-फूट कर रोने लगा ।

२) माधव भोट्लकु पडिशमु पेटा रेंडुसार्लु रावडमू,
वच्चिनप्पुडेल्ल आरेसि मासमुलु वुंडडमू ।

माधव भट्ट को जुकाम होता है तो साल में दो बार । जब जुकाम होता है तो छे महीने तक रहता है ।

३) बोंकरा बोंकरा पोलिगा अंटे, टंगुटूरि मिरियालु ताटि
कायलंतेसि अन्नाडट ।

एक ने कहा — "अरे पोलिगा, अपनी झूठी बात कहते जा ।" उसने कहा — "टंगटूर (स्थान का नाम) की काली मिर्च ताड़ के फल के आकार की होती है ।"

४) चक्किलालु तिंटावा, चल्दि तिंटावा अंटे, चक्किलालु
तिंटानु, चल्दि तिंटानु, अय्यतोटि वेडी तिंटानु अन्नाडट ।

(माँ ने पूछा) — "बेटे, चुक्कुल खाओगे या बासी भात ?"

1. कहानी के लिए देखिये — "कहावतों की कहानियाँ" — महावीर प्रसाद पोद्दार.

(उसने कहा) — "चक्कुल खाऊँगा, बासी भात खाऊँगा और पिताजी के साथ ताजा खाना भी खाऊँगा।"

तेलुगु में ऐसी बहुत सी कहावतें प्रचलित हैं जिनमें हास्य रस का आनंद मिलता है।

(८) भाषा-संबन्धी कहावतें — सब लोग अपनी-अपनी भाषा को मीठी ही कहते हैं। तथापि, कुछ भाषाओं के प्रति लोगों का आकर्षण रहता है और उस संबन्ध में अपनी धारणा बना लेते हैं। इससे जनता की रुचि का पता चलता है।

"'फारसी' शीरी जबान है" वाली उक्ति प्रसिद्ध ही है। तेलुगु में ऐसी एक तुलनात्मक कहावत है —

तेलुगु तेट, अरव अध्वानम्।

अर्थात् तेलुगु मृदु-मधुर है, तमिल कठोर है।

स्मरण रखना चाहिए कि अनभिज्ञता और दृष्टिकोण की भिन्नता के कारण ऐसी कहावत चल पड़ती है।

भाषा विज्ञानियों ने तेलुगु को Italian of the east अर्थात् "पूर्व की इटली भाषा" कहा है।

उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त यात्रा, त्योहार, आरोग्य, आभूषण-प्रेम इत्यादि विषयों पर भी हिन्दी और तेलुगु में कहावतें उपलब्ध होती हैं। उदाहरणार्थ आभूषण-प्रेम संबन्धी तेलुगु की यह कहावत देखिए —

अंदानिकु पेट्टिन सोम्मु आपदकु वस्तुंदि।

अर्थात् अलंकार के लिए जो आभूषण पहनते हैं, विपत्ति में काम आते हैं। इससे मिलती-जुलती एक राजस्थानी-कहावत है

मनुषो नें गन्नायत अवसो पुल में काम आवें हैं।

[आभूषण और संबन्धी दुःख में सहायक होते हैं।]

निष्कर्ष — सामाजिक कहावतों की सीमा अति विस्तृत है। जिसके अन्तर्गत प्रायः सभी विषय रखे जा सकते हैं। यहाँ पर कुछ मुख्य-मुख्य विषयों के आधार पर सामाजिक कहावतों का परिशीलन किया गया है। आन्ध्र की संस्कृति तथा जनता की विचार धाराओं से परिचय कराने के उद्देश्य से यत्र-तत्र मैं ने तेलुगु से अधिक उदाहरण दिए हैं। हिन्दी तथा तेलुगु कहावतों की तुलना करते हुए उनकी समानताओं तथा विभिन्नताओं की चर्चा यथा स्थान, यथा संभव की गयी है। समग्र रूप से देखने पर स्पष्ट होगा कि दोनों भाषाओं की कहावतों में समानताएँ ही अधिक हैं। भाषाएँ भिन्न होने पर भी भाव एक ही है।

४. वैज्ञानिक कहावतें

"विज्ञान" शब्द का अर्थ विशेष ज्ञान है। इस शीर्षक के अन्तर्गत वे कहावतें आती हैं जो शिक्षा और ज्ञान तथा विज्ञान से संबन्धित हैं। सर्वप्रथम हम शिक्षा-संबन्धी कहावतों को लेंगे —

(क) शिक्षा तथा ज्ञान संबन्धी कहावतें — संस्कृत में एक कहावत है —

लालनात् पालनाच्चैव ताडनात् बहवो गुणाः।
तस्मात् पुत्रं च शिष्यं च ताडयेत् न तु लालयेत्॥

अर्थात् लालन-पालन की अपेक्षा ताड़न में बहुत गुण हैं। अतः पुत्र तथा शिष्य को ताडना चाहिए, न कि लालन। इस कहावत का ही भाव हम नीचे की हिन्दी कहावतों में देखेंगे —

१) गुरु की चोट विद्या की पोट।

गुरु की चोट से ही विद्या आती है।

२) सोट बाजै चमाचम, विद्या आवै धमधम।[1]

तेलुगु में "दंड दशगुणं भवेत्" वाली उक्ति प्रसिद्ध ही है।

परन्तु, आधुनिक शिक्षा-वेत्ताओं के अनुसार शिक्षक को चाहिए कि वह प्रेम से विद्या सिखावें, छड़ी का प्रयोग न करे। छड़ी के बल पर जो शिक्षा दी जाती है, वह टिकेगी नहीं। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि जो बात प्रेम से सिखाई जाती है, उसका शिक्षार्थी के मन पर अमिट प्रभाव पड़ता है।

अनेक कहावतों में यह कहा गया है कि विद्या कंठस्थ होनी चाहिए, पुस्तकीय विद्या से लाभ नहीं —

घोखत विद्या नै खोदत पानी।

रटने से विद्या प्राप्त होती है, खोदने से पानी मिलता है।

माया अंट की विद्या कंठ की।

गांठ का पैसा और कंठस्थ की हुई विद्या काम आती है।

संस्कृत के एक श्लोक में यही भाव व्यक्त हुआ है। संभव है,

1. तुलना कीजिये और देखिये : Spare the rod and spoil the child. (अंग्रेजी)

संस्कृत से ही हिन्दी में ये कहावतें आयी हों —

पुस्तकस्था च या विद्या परहस्ते च यद् धनम्।

कार्यकाले समायाते न सा विद्या न तद् धनम्॥

अर्थात् पुस्तकीय विद्या तथा दूसरों के हाथ का पैसा समय पर काम नहीं आते।

गुरु और शिष्य का संबन्ध उचित प्रकार का होना चाहिए। गुरु ज्ञानी हो तो शिष्य भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर सकेगा। इसीलिए कहा जाता है —

गुरुवुकु तग्ग शिष्युडु।
जैसा गुरु वैसा चेला।

जो अयोग्य शिष्य होते हैं, उनको तेलुगु में "परमानंदय्य (एक गुरु का नाम) शिष्यलु" कहते हैं। यह उक्ति कहावत के रूप में चल पड़ी है।

यदि शिष्य योग्य हो तो, वह गुरु से भी आगे बढ़ जाता है। हिन्दी-कहावत है —

गुरु गुड़ चेला चीनी।

इस विषय को लेकर हिन्दी में कबीर और तेलुगु में वेमना ने कई पद्य कहे हैं। ये पद्य लोक प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं।

जो व्यक्ति पढ़ा-लिखा है, वह विनयी होता है। तेलुगु की एक तुलनात्मक कहावत है —

वित्तमु कोद्दि विभवमु, विद्य कोद्दि विनयमु।

अर्थात् जितना ऐश्वर्य रहेगा उतना वैभव होगा, जितनी विद्या रहेगी

उनकी विनय होगी।

"विद्या ददाति विनयम्" का ही भाव ऊपर की कहावत में व्यक्त हुआ है।

विद्वान का सर्वत्र सम्मान होता है। "विद्वान् सर्वत्र पूज्यते" और "विद्वान् धनवान् भवेत्" जैसी लोकोक्तियाँ दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रयुक्त होती हैं। विद्वान का सम्मान सब लोग तो करते हैं, पर आश्रय देनेवाला राजा है। तेलुगु की एक कहावत है —

विनयमु लोकवश्यमु, विद्य राजवश्यमु।

अर्थात् विनय लोक के अधीन में है, तो विद्या राजा के अधीन में। राजा से ही विद्वान को धन-दौलत मिलती है।

सच्ची शिक्षा वही है जिससे सर्वांगीण विकास हो। पुस्तक पढ़ने से ही शिक्षा नहीं मिलती, लोकानुभव प्राप्त करना चाहिए। किसी विद्वान ने ठीक कहा है कि "यह विशाल विश्व ही विद्यालय है, यहाँ के अनुभव ही शिक्षा है, जीवन-काल ही शिक्षा काल है।" शिक्षा या विद्या पाने के लिए परिश्रम करना पड़ता है, तभी तो फल मिलेगा। कहावत है —

आदमी कुछ खोकर ही सीखता है।[1]

अथवा —

कुछ खोकर ही अक्ल आती है।

ठोकर खाए बिना अक्ल नहीं आती, लोकानुभव नहीं होता।

1. To loose is to learn. (English)

तेलुगु की ये कहावतें देखिए —

१) चदुवेस्ते उन्न मति पोतुंदि ।

अर्थात् पढ़-लिख लेने से जो बुद्धि थी, वह भी चली जाती है । कच्चा-ज्ञान प्राप्त किए हुए लोगों को देख कर ही ऐसी कहावतें प्रचलित हो गयी होंगी ।

२) चदुवुकुन्नवानिकंटे चाकलिवाडु मेलु ।

अर्थात् पढ़े-लिखे व्यक्ति की अपेक्षा अनपढ़ धोबी अच्छा है ।

शिक्षा, शिक्षा-पद्धति तथा ज्ञान संबन्धी और भी कहावतें दोनों भाषाओं में मिलती हैं । सारांश यह कि इन कहावतों में सच्ची शिक्षा तथा ज्ञान की सुन्दर व्याख्या मिलती है ।

(ख) कृषि तथा वर्षा विज्ञान संबन्धी कहावतें — हमारा देश कृषि-प्रधान देश है । अधिकतर लोगों के जीविकोपार्जन का यही मुख्य आधार है । हिन्दी भाषा प्रदेश तथा आन्ध्र प्रदेश में इस पर निर्भर रहनेवाले लोगों की संख्या अधिक है । अतः हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में कृषि संबन्धी कहावतों की प्रचुरता है । कृषि करने से पूर्वजों को जो अनुभव ज्ञान प्राप्त हुआ, वह इन कहावतों के रूप में सुरक्षित है । कृषि विज्ञान तथा ज्योतिष-विज्ञान के ज्ञान के अभाव में कृषकों को इन कहावतों से तत्संबन्धी अनेक उपयोगी विषय ज्ञात हो जाते हैं । यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि ये कहावतें ही अशिक्षित कृषक को शिक्षा देती हैं, और उनका पथप्रदर्शन करती हैं । कहावतें सरल, सुगम तथा संक्षिप्त होने के हेतु कृषकों के मनःपटल पर अनायस ही अंकित रहती हैं ।

(१) कृषि-संबन्धी साधारण कहावतें — कृषि की महिमा का वर्णन पुराणों तथा धर्मशास्त्रों में भी मिलता है। कहा भी गया है कि कृषि से बढ़कर धर्म नहीं है। उसके समान उत्तम व्यवसाय दूसरा नहीं है, हिन्दी और तेलुगु की इन कहावतों से यह बात प्रमाणित होती है—

उत्तम खेती, मध्यम बान, निखद चाकरी भीख निदान।

कोटि विद्यलु कोंडुकु लोपलने।

[करोड़ों विद्याएँ कृषि से निचले-स्तर पर हैं।]

तेलुगु में कृषि की सर्वोच्चता का वर्णन करनेवाली और भी कई कहावतें हैं, जैसे —

दोरलु इच्चिन पालुकन्ना धरणि इच्चिन पालु मेलु।

अर्थात् राजाओं से मिलनेवाली संपत्ति से धरणी से मिलनेवाली संपत्ति श्रेष्ठ है। कृषि करके जीवन व्यतीत करना चाकरी करने से हजार गुना अच्छा है, यही सत्य यहाँ प्रकट किया गया है।

यह भूमि स्वर्णगर्भा है। इसके अन्दर पद-पद पर भंडार भरा है, इस आशय को व्यक्त करती है तेलुगु की यह कहावत —

अडुगडुगुकु निक्षेपम्।

कृषि से भाग्य चमक उठता है, कोई भी विद्या इसके समान नहीं है —

कोटि विद्यलु चेसिना कोल अच्चिने कोलवले कादु।

जो भू-माता पर विश्वास करता है वह कभी धोखा नहीं खाता। तेलुगु में कहावत प्रचलित है —

तल्लिनि नम्मिनवाडु धरणिनि चेडडु

अर्थात् जो माता पर और धरती पर विश्वास रखता, उसकी हानि नहीं होती।

किन्तु कृषि तभी लाभदायक होगी जब कि भूमि का स्वामी स्वयं उसकी देख-रेख करें। हिन्दी और तेलुगु की इन कहावतों से यह स्पष्ट होगा—

खेती खसम सेती।

अथवा —

खेती धणियाँ सेती।

अर्थात् कृषि भूस्वामी की देख-रेख से ही फलदायिनी हो सकती है।

बडि लेनि चदुवु चेंबडि लेनि सेद्यमु कूडदु।

अर्थात् विद्यालय में गये बिना विद्या नहीं आती और बिना देख-रेख के कृषि से लाभ नहीं होता।

पोरुगूरी चाकरि पोरुगूरि व्यवसायं तननु तिनेवेगानि
तानु तिनेदि कादु।

अर्थात् दूसरे गाँव की नौकरी और खेती अपने को खानेवाली है (नष्ट करनेवाली है)। न कि हम उनसे लाभ उठा सकते हैं।

यदि भूस्वामी स्वयं निरीक्षण नहीं करेगा तो मूलधन को भी गँवाना पड़ेगा। "घर के धान पुआल में" वाली कहावत इसलिए प्रचलित है।

व्यवसायों में कृषि का सर्वोच्च स्थान अवश्य है, इसमें संदेह नहीं। किन्तु, जो व्यक्ति हल छूने से डरता है, उसे कृषि करने से क्या लाभ पहुँच सकता है? इन कहावतों को देखिए —

अनुभवहीन कृषि करे तो भी लाभ नहीं पाता। कहा गया है—

पट्नम् सेद्यं बयटिकि रादु।

अर्थात् शहरों की खेती का फल बाहर नहीं आता।

कृषि के लिए जल अर्थात् वर्षाएँ आवश्यक हैं। इस संबंध में तेलुगु में अनेक कहावतें मिलती हैं। उदाहरणार्थ —

चेरवु ओडु [illegible] पाडु।

अर्थात् तालाब फूट गया तो गाँव उजड़ गया।

एक दूसरी कहावत है —

तोलकरि चेरवु निंडिना तोलिचूरि कोडुकु
पुट्टिना लाभम्।

अर्थात् पहली वर्षा से ही तालाब भर जाय और पहली प्रसूति में पुत्र पैदा हो तो बड़ा लाभ होगा।

और एक तुलनात्मक कहावत है —

पेद्द इंटि ओड्डु अयिना कावले पेद्द चेरवु
नीरु अयिना कावले।

अर्थात् बड़े घर की बेटी (जो पत्नी के रूप में आए) चाहिए, (कृषि के लिए) बड़े तालाब का पानी चाहिए।

इस प्रकार की अनेक कहावतें मिलती हैं। इनके अध्ययन से कृषि के संबंध में इस देश की प्रजा की विचारधारा भली-भाँति प्रकट हो जाती है। जहाँ कृषि को अत्यधिक महत्व दिया गया है और अन्य व्यवसायों की तुलना में उसे श्रेष्ठ ठहराया गया है, वहाँ यह भी कहा गया है कि जो व्यक्ति परिश्रम करता है, वही फल प्राप्त करने का

अधिकारी होता है। "कष्टे फले" वाली कहावत चरितार्थ होती है।

२) वर्षा तथा वातावरण संबन्धी कहावतें— हिन्दी तथा तेलुगु दोनों भाषाओं में वर्षा तथा वातावरण संबन्धी अनेक कहावतें उपलब्ध होती हैं। हमारे देश में कृषि-विज्ञान की भाँति ही वर्षा-विज्ञान भी अत्यंत प्राचीन है। प्राचीन ग्रंथों से इनसे संबन्धित अनेक बातों का संग्रह किया जा सकता है। ऐसा समझा जाता है कि गर्ग, कश्यप, पराशर आदि मुनियों ने इस विषय पर अच्छा काम किया था।

वर्षा कैसे होती है? इस संबन्ध में कहा जाता है कि [illegible] सूर्य अपनी रश्मियों से पृथ्वी के जल को ऊपर खींचता है और नक्षत्र की सहायता से पृथ्वी पर जल-वर्षा करता है। निमित्त-शास्त्र में वर्षा-विज्ञान संबन्धी पूरा विवेचन मिलता है।

अब वर्षा संबन्धी कुछ कहावतों का अवलोकन करें —

वर्षा की अनिश्चितता — तेलुगु की कुछ कहावतों में यह बतलाया गया है कि वर्षा कब होगी, निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता —

वान राकडमु प्राणं पोवडमू तेलियदु।

अर्थात् वर्षा कब होगी, प्राण कब निकल जाएँगे, नहीं कहा जा सकता।

याद रखना चाहिए कि यह एक सामान्य कहावत ही है। कुछ अन्य कहावतों में कब वर्षा होगी, कहाँ-कहाँ होगी, इस संबन्ध में विवरण मिलता है।

वर्षा की आवश्यकता — कृषि वर्षा पर ही निर्भर है। एतत् कारण समय पर वर्षा न हो तो अकाल पड़े। एक तुलनात्मक कहावत है —

वानतो करवु लेदु, येनिमिदितो दारिद्र्यमु लेदु।

अर्थात् वर्षा से अकाल नहीं, (स्त्री को) पति के साथ दरिद्रता नहीं।

<u>अकाल वृष्टि</u> — परन्तु अकाल में पानी बरसे तो लाभ नहीं, हानि होगी तेलुगु-कहावत है —

अदुनुकानि पदुनु ।

अर्थात् अकाल की वर्षा व्यर्थ है।

हिन्दी-कहावत से तुलना कीजिए —

"का वर्षा जब कृषि सुखाने ।"

<u>वर्षाकाल का महत्व</u> — जैसा कि पहले ही कहा गया, वर्षा से ही कृषि अच्छी हो सकती है। अतः वर्षा काल का बड़ा महत्व है। इस संबन्ध में एक तेलुगु कहावत है —

पंडेंडु नेललो रेंडे नेललु पोते पाडु पाडु ।

अर्थात् बारह मासों में दो मास गए (वर्षा न हुई) तो सब व्यर्थ ही व्यर्थ है।

क्योंकि —

पोलिकरिवानलु मोलकललु तल्लि ।

अर्थात् प्रारंभिक वर्षा अंकुरों की माता है।

वर्षा कहाँ अधिक होती है ? — जहाँ पेड़ पौधे अधिक होते हैं वहाँ अधिक वर्षा होती है। कहावत प्रचलित है —

चेट्लु मेंडु अयिते चेरिके वान ।

[पेड़-पौधे अधिक हों तो वर्षा अधिक होगी।]

<u>वर्षा का अनुमान</u> — कुछ कहावतों में यह कहा गया है कि वर्षा कब, होगी। उदाहरण के लिए हिन्दी की इस कहावत को देखिए —

सांझ का आया पाहुन और घन निकला है जाना नहीं।

इससे मिलती-जुलती तेलुगु-कहावत है —

प्रोद्दुने वच्चिन चुट्टं प्रोद्दुने वच्चिन वान निलुवदु।

अर्थात प्रातः आया हुआ अतिथि नहीं टिकता और प्रातः आयी हुई वर्षा नहीं जाती।

हिन्दी के एक दूसरी कहावत में भी यही कहा गया है कि प्रातः-काल बादल का गरजना व्यर्थ नहीं होता —

सावर तो गाजियो, एँलेन जाय।[1]

यदि शनिवार को वर्षा प्रारंभ हो जाय तो अगले शनिवार तक न रुके, इसी भाव की तेलुगु-कहावत है —

शनिवारमु वान शनिवारं विडुवनु।

[शनिवार की वर्षा शनिवार को रुकती है।]

हिन्दी की निम्नलिखित कहावत में भी यही कहा गया है कि शुक्रवार की बादली शनिवार तक छायी रहे तो बरसे बिना नहीं जाती—

सुकरवार री बादरी, रही सनीचर छाय।

डंक कहे हे भड्डली, बरस्या बिना न जाय॥[2]

नक्षत्र, राशि तथा मास — कई ऐसी कहावतें मिलती हैं जिनमें यह बतलाया गया है कि किस नक्षत्र, राशि अथवा मास में कितनी वर्षा होगी और उससे क्या लाभ होगा।

1. "राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन", डा० कन्हैयालाल सहल पृ. २८१.
2. वही.

अश्विनी नक्षत्र में वर्षा हो तो, उससे विशेष लाभ नहीं हो सकता। तेलुगु-कहावत है —

अश्विनि कुरिस्ते ओक अडविलोकि चाल्दु।

अर्थात् अश्विनी में वर्षा हो तो एक खेत के लिए पर्याप्त न हो।

यदि भरणी में वर्षा हो तो उससे खूब फसल होगी —

भरणि कुरिस्ते धरणि पंडुनु।

रोहणी में यदि वर्षा न हो तो सूर्य की प्रखर किरणों से पत्थर भी फट जाय, इस आशय की तेलुगु-कहावत है —

रोहिणी ऍंडकु रोळ्ळु पगुलुनु।

[रोहिणी की धूप में ओखली भी फट जाय।]

मृगशिरा नक्षत्र में वर्षा हो तो शुभ माना जाएगा। इससे अनुमान किया जाता है कि उस वर्ष अच्छी वर्षा होगी।

कहावत लीजिए —

मृगशिर बिबिस्ते मिगिलिन कार्तेलु वर्षिंचुनु।

[मृगशिरा में वर्षा हो तो आगे भी खूब वर्षा होगी।]

संस्कृत लोकोक्ति से तुलना कीजिए, जिसका प्रयोग प्रायः हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में होता है —

मघी वर्षे मघे गर्जे म्वाति सौवागिनी तथा।

मघा में वर्षा होनी चाहिए, यदि वर्षा नहीं हुई तो बड़ी हानि होगी। तेलुगु-कहावत देखिए —

१) मखा वर्षिस्ते मनुष मीदि कर्र अयिना पंडुनु। अर्थात् मघा में वर्षा हो तो पड़छती पर की लकड़ी भी हरी भरी हो जाय।

२) मखा पंचकं रखा पंअकम् ।

अर्थात् मखा में वर्षा न हुई तो अकाल पड़ेगा ।

इसी भाव की हिन्दी-कहावत है —

मघा मावन्त मेहा, नहीं तो उडन्त खेहा ।

आर्द्रा की वर्षा बहुत ही आवश्यक है । आर्द्रा से अच्छी पैदावर होगी —

१) आर्द्र कुरिस्ते दारिद्रयं लेदु ।

[आर्द्रा बरसे तो दरिद्रता नहीं ।]

२) आरुद्र वान अदुन वान ।

आर्द्रा की वर्षा समय (timely) की वर्षा है

हिन्दी की कहावत से तुलना कीजिए —

आदरा भरै खावड़ा, पुनरवसु भरै तालाब।

न बरस्यो पुष तो वरस ही घणा दुखं ।।

[आर्द्रा में वर्षा हो तो खड्डे पानी से भर जाएंगे, पुनर्वसु में तालाब भर जाएँ और पुष्य में बरसै तो फिर वर्षा न हो ।]

और एक कहावत है —

पहली आव टपूकडे, मासां पक्खा मेहा । [1]

[आर्द्रा के शुरू में बूँदे पड़ जाय तो महीने पंद्रह दिन में वर्षा

स्वाति में वर्षा हो तो समुद्र भी भर जाएँ, स्वाति की अच्छी फसल होगी । इन कहावतों से यह बात स्पष्ट होगी —

1. " कहावतें एक अध्ययन' डा० कन्हैयालाल सहल पृ

१) स्वाति वानद्दु चट्टुलि किंद वेन्नु ।

[स्वाति में वर्षा हो, तो चट्टानों पर भी अन्न पैदा हो जाय ।]

२) चित्रा दीपक चेतवै, स्वाति गोवर बन्न ।
डंक कहे है भड्डली, अथग नीपजै अन्न ॥

[यदि चित्रा नक्षत्र में दीपावली हो और गोवर्धन पूजने के समय स्वाति नक्षत्र हो तो खूब अन्न पैदा हो ।]

हस्त, चित्रा, आश्लेष, रोहिणी आदि नक्षत्र संबन्धी कहावतें दोनों भाषाओं में मिलती हैं । अगस्त्य के उदय होने पर वर्षा का अंत हो जाता है । कहा जाता है —

अगस्त्य ऊगा, मेह पूगा ।

"कर्काटक" में वर्षा होगी तो हल की रस्सी भी भीग नहीं सकती । तेलुगु में कहते हैं —

कर्काटकपु वर्षमु काडिमोकु तडियदु ।

"तुला" में वर्षा हो तो खूब अन्न पैदा हो—

१) तुलावृष्टिर्धरा सस्या ।

२) तुलावृष्टिर्धरा धन्या ।

ये कहावतें तेलुगु में प्रयुक्त होती हैं ।

वर्षा की दृष्टि से बारह महीनों के फल का उल्लेख कहावतों में प्राप्त होता है । हिन्दी का एक कहावती पद्य है —

कातिक सुद पूनो दिवस, जो कृत्तिका रख हुन्त ।
तो बादल बीजू हिवै, सारे बार बरसन्त ॥[1]

1. "राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन"– डा० कन्हैयालाल सहल, पृ २४३.

में मिलती हैं। कुछ कहावतों पर विचार करें —

चैत में अधिक धूल उड़ती है। इसलिए "धूलि चैत्र" कहा गया है।

दीवाली तक तो वर्षा समाप्त हो जाती है। तेलुगु-कहावत है—

दोमलकु दीपांतर शद्दु ।

अर्थात् दीपावली तक वर्षा समुद्र पार कर जाएगी।

मार्गशिर मास से जाड़े के दिन प्रारंभ हो जाते हैं।

मार्गशिर मासमु महत्तैना चलि ।

[मार्गशिर मास में बहुत सर्दी पड़ती है।]

पूस में तो थोड़ी-सी गरमी रहती है। संक्रांति से तो ऐसी सर्दी पड़ती है कि हाथ-पैर हिलाना कठिन हो जाता है।

संक्रान्तिकि चंकलेत्तनिव्वदु ।

अर्थात् संक्रान्ति को कांख नहीं उठा सकते, इतनी सर्दी पड़ती है।

हिन्दी कहावत से तुलना कीजिए —

धान का तेरा, मकर पचीस, जाड़ा दो कम चालीस।[1]

अर्थात् १३ दिन धन संक्रान्ति के और २५ मकर के, इस प्रकार दो कम चालीस (३८) दिन तक जाड़ा पड़ता है।

माघ मास में जाड़े की महत्ता और भी बढ़ जाती है। माघ का जाड़ा प्रसिद्ध ही है। तेलुगु की दो कहावतें लीजिए —

१) माघमासमुलो मंटलो दूकिना चलि तीरदु ।

माघ मास में आग की ज्वाला में कूद पड़े तो भी जाड़ा कम न हो।

1. "राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन", डा० कन्हैयालाल सहल पृ २५१.

२) माघमासमुलो माकुल् डोल्लुतुंदि ।

अर्थात् माघ मास में पेड़-पौधे भी जाड़े के कारण कांपने लगते हैं ।

शिवरात्रि तक तो जाड़ा समाप्त हो जाता है, कहावत है —

शिवरात्रि की शिव शिव अनि पोतुंदि ।

अर्थात् शिवरात्रि को 'शिव शिव' कहते हुए जाड़ा चला जाता है ।

पूस की सर्दी का उल्लेख हिन्दी की एक कहावत में देखिए —

पौस पर आकड़ी खौस ।

एक तुलनात्मक कहावत है, जिसमें कहा गया है कि गरमी गरीबों की होती और जाड़ा साहूकारों का । क्यों कि साहूकार जाड़े में भी आनंद से रह सकता है —

गरमी गरीब की, र जाड़ो साहूकार को ।[1]

अन्य ऋतुओं के संबन्ध में भी ऐसी ही कहावतें मिलती हैं ।

ऊपर के विवरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में वर्षा तथा वातावरण संबन्धी कहावतें पर्याप्त संख्या में प्रचलित हैं । इन कहावतों का अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि इनमें बहुत व्यापक रूप से इस विषय पर विचार किया गया है । इनके निर्माता चाहे कोई भी हों, इतना तो सत्य है कि जीवन के अनुभव की आधारशिला पर वे स्थित हैं । संभव है, कुछ कहावतें संस्कृत के ज्योतिष-विद्या संबंधी ग्रंथों से परंपरागत संपत्ति के रूप से चली आयी हों । स्वतंत्र अनुभव के आधार पर निर्मित कहावतों में समानता दिखलाई पड़ती है तो इसका कारण भी जीवन के समान अनुभव हैं

1. "राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन", डा० कन्हैयालाल सहल पृ. २५१

और भारत की सांस्कृतिक एकता भी इसके पीछे स्पष्टतया लक्षित हो रही है।

3) <u>मिट्टी के लक्षण संबन्धी कुछ कहावतें</u> — कौन-सी मिट्टी श्रेष्ठ है, किस मिट्टी में किस प्रकार का अनाज उत्पन्न होता है इत्यादि के संबन्ध में भी कहावतों में विचार किया गया है। कुछ तेलुगु-कहावतें—

पग-पग पर मिट्टी का रंग बदलता जाता है। इस सम्बन्ध में एक तेलुगु-कहावत है —

कोडि अडुगुलो कोटि वर्णाल भूमि।

लाल मिट्टीवाली भूमि में जो अनाज उत्पन्न होता है, वह एक दिन के लिए ही पर्याप्त है अर्थात् इतना कम उत्पन्न होता है तेलुगु कहावत है —

एर्र भूमि पंट ओक नाटि पंट।

ऊसर भूमि में बीज बोने से कुछ उत्पन्न नहीं होगा, बीज नष्ट होंगे —

ऊसर भूमि लो विततनालु वेस्ते उलिक्कोबुलु पंडुलु।

[ऊसर भूमि में बीज बोने से कुछ नहीं पैदा होगा, केवल कूड़ा-करकट होगा।] और एक तेलुगु कहावत है —

ऊसर होने दूसर मोने।

[ऊसर भूमि में केवल सिर्फ ढेला ही पैदा होता है।]

सारांश यह कि खाद और पानी डाले बिना खेती करना व्यर्थ है।

ऊपर की तेलुगु-कहावतों की तुलना निम्नांकित हिन्दी कहावतों से कर सकते हैं —

खात पड़े तो खेत, नहीं तो कूड़ा रेत ।[1]

[खाद डालने से खेत हो सकता है, नहीं तो कूड़ा-करकट उत्पन्न होगा।]

खात अर पाणी, के करै बिनाणी ?[2]

[खाद और पानी न दें तो भगवान क्या करेगा ।]

दोनों भाषाओं की कहावतों में यही कहा गया है कि खेत में खाद और पानी देने से ही खेत में अनाज उत्पन्न होगा। ऊसर भूमि से कुछ लाभ नहीं होगा।

४) <u>जोताई तथा कृषि-प्रबन्ध संबन्धी कहावतें</u> — भूमि जैसी जोती जाती है, जैसा प्रबन्ध किया जाता है, वैसा फल मिलता है। जो व्यक्ति परिश्रम करेगा, उसको फल अवश्य मिलेगा। परिश्रम का फल व्यर्थ नहीं जाता। हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में कहावतें प्रचलित हैं—

साह नांटज्या, पण बाह नां नाटै ।[3]

[साहुकार भी रुपए देने से इनकार कर सकता है, किन्तु खेत में जो जोताई की जाती है, वह कभी निष्फल नहीं जाती ।]

तेलुगु में इसकी अभिव्यक्ति देखिए—

दुन्निनल भूमि दिक्कुगल मनुजंडु चेडडु ।

[जिस भूमि में जोताई हो, वह भूमि निष्फल नहीं होती और जिस आदमी के बन्धु-बान्धव हो, उसका हाल खराब नहीं होता ।]

तेलुगु में एक तुलनात्मक कहावत प्रचलित, जिससे इस विषय पर और कुछ प्रकाश पड़ता है।

1. "राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन"— डा० कन्हैयालाल सहल, पृ २३३.
2. वही.
3. वही

दुक्कि कोद्दि पंट, बुद्धि कोद्दि सुखमु ।

(जोताई के अनुसार फसल मिलेगी, बुद्धि के अनुसार सुख मिलेगा।)

इन कहावतों का सार यही है कि जोताई ठीक प्रकार होनी चाहिए, तभी खूब अन्न पैदा हो सकता है। अन्यथा कृषि से लाभ नहीं हो सकता।

<u>५) उपज संबन्धी कहावतें</u>— हिन्दी तथा तेलुगु दोनों भाषाओं में ऐसी कहावतें मिलती हैं। इन कहावतों के अध्ययन से विविध प्रकार के अनाजों के संबन्ध में जानकारी प्राप्त होती है। कुछ कहावतों का अवलोकन करें।

१) क्षेत्र मेरगि विक्तनमु पात्रमेरगि दानमु ।

भूमि देख कर बीज बोना चाहिए और पात्र को देख कर दान देना चाहिए। मिट्टी के गुणों के अनुसार ही बीज बोना चाहिए, तभी अच्छी उपज हो सकती है।

आषाढ़ मास में खेत जोतते समय कृषि संबन्धी कोई भूल हो गयी तो दुबारा खेत जोतने की याद आवै —

माघ की साढ़ ही याद आवै ।

अतः बहुत सावधानी के साथ बीज बोना चाहिए।

वर्षा के प्रारंभिक दिनों में ही बीज बोना चाहिए, उससे अच्छी उपज होगी। तेलुगु-कहावत इस बात को भी प्रकट करती है —

[illegible]

बीज बोते समय जी नहीं चुराना चाहिए —

विस्तु वल्लुटकु विसुग कूडदु ।

धान — तेलुगु में इससे संबन्धित कई कहावतें मिलती हैं। एक-दो उदाहरण पर्याप्त होंगे —

धान के लिए पानी की ज़्यादा आवश्यकता है। अत एव कहा जाता है —

वरिकि आरु, दोरकु ओक माक।

अर्थात् धान के खेत के लिए (नाले का) पानी और राजा के लिए एक सेना आवश्यक है।

पोट्ट पयिरुकु पुट्टेडु नीळ्ळु।

छोटे अंकुरों को तो और भी अधिक पानी चाहिए।

एक तुलनात्मक कहावत है —

क्षामम्मुन जोन्न, वर्षम्मुन वड्लु पंडुनु।

अकाल में ज्वार और वर्षाकाल में धान पैदा होता है।

अन्य अनाज —

१) पत्तिकि पदि चाळ्ळु जोन्नकु एडु चाळ्ळु।

कपास को दस जोताई और ज्वार को सात जोताई अपेक्षित है।

२) कंदि पंट पंडिते करवु तीरनु।

अरहर की उपज हो तो अकाल दूर हो जाएगा।

चने को जोताई अपेक्षित नहीं है। उसे नमी चाहिए। हिन्दी कहावत है —

चनो न मानी बाहु।

नारियल के पेड़ को मांड नहीं डालना चाहिए।

तेलुगु-कहावत है —

कोब्बरि चेट्टुकु कुडिति मृत्यु ।

नारियल के पेड़ के लिए मांड मृत्यु (मवृक्ष) है ।

मामिडि मग्गिते सज्जुलु पंडुनु ।

जब तक आम पकने लगेगा तब तक बाजरे की उपज होगी ।

मार्गशिर मासमुनकु मामिळ्ळु पूस्तुनु ।

मार्गशिर मास में आम फलने लगेगा ।

मामिळ्ळकु मंचु चेरुपु ।

पाले से आम की हानि होती है ।

शिवरात्रि तक आम फलना शुरू हो जाएगा, उगादि तक तो वह बहुत अच्छा हो जाएगा । तेलुगु-कहावत है —

शिवरात्रिकि पोडुकाय, उगादिकि वूरगाय ।

शिवरात्रि में आम छोटे-छोटे होते हैं, उगादि तक तो वह अचार के योग्य हो जाते हैं ।

इनके अतिरिक्त अन्य अनाज तथा पेड़-पौधों से संबन्धित कई कहावतें उपलब्ध की जा सकती हैं ।

६) <u>कृषि में सहायक पशुओं से संबन्धित कहावतें</u> — बैल बड़ा ही उपयोगी पशु है । हमारे देश में बैल की सहायता से ही कृषि की जाती है । गाय की पूजा और रक्षा हमारा धर्म माना गया है । गाय के महत्व के संबन्ध में अधिक कहना अनावश्यक होगा । गाय और बैल किसानों के धन हैं । अतः इनसे संबन्धित असंख्य कहावतें समाज में प्रचलित हैं ।

बैल खरीदते समय उसके दांत देखे जाते हैं । हिन्दी में प्रचलित—

मंगनी-बैल के दाँत नहीं देखे जाते ।

कहावत से इसकी पुष्टि होती है । तेलुगु में एक कहावत है --

एक्कुव वेलपेट्टि गुड्डनु, तक्कुव वेल पेट्टि गोड्डुनु कोनरादु ।

अधिक दाम देकर कपड़े और कम दाम देकर बैल नहीं खरीदना चाहिए ।

मोंडि पोक गोड्डु नागलिकि, मुड्डि चीरालकु ।

छोटी पूँछ का बैल आना चाहता है और अच्छा बैल आना चाहता है ।

जो बैल काम का है, उसी को किसान अधिक मारते हैं, इस तथ्य की ओर निर्देश है नीचे की कहावत में —

पनि एद्दुने कोट्टेदि

बैल को खरीदते समय नस्ल देखना चाहिए । एक तुलनात्मक कहावत है —

तल्लिनि चूचि पिल्लनु, पाडिनि चूचि बर्रेनु तीसुकोवलेनु ।

माता को देखकर बेटी (से शादी करनी चाहिए) और नस्ल को देखकर बैल को (खरीद) लाना चाहिए ।

बैल बुद्धिमान नहीं माना जाता । वह खाता भी खूब है । इसलिए तेलुगु में कहावतें हैं—

एद्देमि येरुगुरा अटुकुल रुचि ?

बैल को चूड़े की रुचि क्या मालूम ?

एद्दुवले तिनि मोद्दुवले निद्रपोयिनट्लु ।

बैल के जैसे खाना और मूर्ख के जैसे सोना ।

गाय एक साधु पशु है । आत्म समर्पण और दया आदि गुण उसमें

हैं। गाय का दूध अत्यंत उपयोगी होता है। तेलुगु में एक कहावत है—

अरवै आरु पिंडि वंटलु आवु चनुलो कुडवि।

छियासठ प्रकार के व्यंजन गाय के थन में ही हैं।

दूध देनेवाली गाय की लात भी सही जाती है। हिन्दी-कहावत है—

दुधारु गाय की लात भी सही जाती है।

जिस गाय को चारे की चाह होती है, वह उछली-कूदती दूर निकल जाती है —

खूँटि तुडगी गाय, बावडै तो बाडै नहिं आवै निकल जाय।[1]

भैंस पर भी कहावतें मिलती हैं। हिन्दी की इस कहावत से स्पष्ट है कि वह मूर्ख पशु है —

भैंस के आगे बीन बजाई, भैंस पड़ी पगुराय।

कुछ अन्य कहावतों में कहा गया है कि दूध के लिए भैंस को पालना चाहिए।

यदि दूध गाढ़ा हो तो मक्खन अधिक प्राप्त किया जा सकता है, इस आशय की तेलुगु-कहावत —

पालुचिक्कनयिते वेन्न चाल वच्चुनु।

गाय, भैंस, बैल जैसे पशुओं से कृषकों को अधिक लाभ होता है। कृषकों के जीवन के मानों वे अंग हैं। अतः मैं ने इनसे संबन्धित कहावतों को इस शीर्षक में रखा है।

निष्कर्ष — अब तक कृषि तथा वर्षा-विज्ञान संबन्धी कहावतों का पर्यालोकन हुआ है। यह विषय इतना बड़ा है कि इस पर एक पुस्तक ही लिखी जाती है। यहाँ संक्षेप में उस पर विचार किया गया है।

1. "राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन" – डा० कन्हैयालाल सहल, पृ. २५५.

(ग) मनोवैज्ञानिक कहावतें — मानव का मन भावनाओं का समुद्र है। वैसे तो सुखात्मक तथा दुःखात्मक— दो ही प्रकार के भाव प्रधान हैं। मनुष्य के प्रत्येक कार्य के पीछे उसका अंतःकरण लगा रहता है। दूसरे शब्दों में, उसके कार्य-व्यापार को देखकर हम उसकी प्रवृत्तियों का पता लगा सकते हैं। कहावतें जीवन की अभिव्यक्ति होने के कारण उनसे मानव के अंतःकरण का पता लग सकता है। जीवन के व्यावहारिक सत्य के आधार पर मानव-मन का विश्लेषण हम कहावतों में पाते हैं।

मनोवैज्ञानिक कहावतों को हम दो वर्गों में रख सकते हैं — साधारण और विशेष। साधारण वर्ग के अंतर्गत उन कहावतों को रख सकते हैं जिनमें प्रेम-प्रीति, लोभ, ईर्ष्या, कोप, उत्साह आदि मनोविकारों पर विचार किया गया है। इनमें सर्वसामान्य तथ्य व्यक्त हुआ रहता है। यह बात भूलना नहीं चाहिए कि इनके निर्माण का आधार जीवन का विशाल अनुभव है। रेंकु कळ्ळु लेवु (इश्क और मुश्क छिपते नहीं), काकिपिल्ल काकिकि मुद्दु (कौवे का बच्चा कौए को प्यारा होता है), ओछे की प्रीत बालू की भीत[1]। कोपं पापकारणम्[2] (कोप पाप का कारण है) इत्यादि कहावतें इसी प्रकार की हैं।

विशेष वर्ग की कहावतों को "विश्लेषणात्मक कहावतें" भी कह सकते हैं। मानव की प्रवृत्तियों का विश्लेषण जिन कहावतों में मिलता

1. खल कै प्रीति जथा थिर नाहिं। (तुलसीदास)
2. कोपः पापस्य कारणम्। (संस्कृत)

है, वे विश्लेषणात्मक कहला सकती है। यहाँ स्मरण रखना चाहिए कि इन कहावतों में सैद्धांतिक विश्लेषण नहीं मिलता, केवल प्रयोगात्मक विश्लेषण मिलता है।

समाज में ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं है जो अपनी असामर्थ्य स्वीकार नहीं करते, अपनी असफलता का दोष दूसरों पर मढ़ते हैं, एवं अपने को निर्दोष प्रमाणित करने का प्रयत्न करते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मनःप्रवृत्ति को ही देख कर कहा गया — "नाच न जाने आँगन टेढ़ा" (तेलुगु में — आडनेरक मद्देल मीद तप्पुवेसिनट्लु।)

हम देखते हैं, अपने अफ़सर से असंतुष्ट कार्यकर्त्ता घर आकर अपनी पत्नी पर गुस्सा उतारता है। सास पर गुस्सा आया तो बहू बच्चों को मारने लगी। यह सब मानव मात्र की प्रकृति है। भाव-प्रवाह के इस प्रवर्तन को मनोविज्ञान में मार्गान्तरीकरण कहते हैं। मार्गान्तरी-करण के उदाहरण प्रत्येक भाषा की कहावतों में मिल जाते हैं। उदाहरण के लिए हिन्दी और तेलुगु की इन कहावतों को लीजिए —

धोबी का धोबिन पर बस चले तो गधैया के कान उमेठे।

अत्त पेरु पेट्टि कूतुरुनि कुंपट्लो वेसिनट्लु।

[जैसे सास का नाम लेकर बहू ने अपनी बेटी को अंगीठी में डाल दिया।]

हिन्दी और तेलुगु में ही नहीं, अन्य भाषाओं में भी ऐसी कहावतें है, जैसे—

Cutting one's nose to spite of one's face. (अंग्रेज़ी)

अत्ते मेलिन कोप कुत्ती मेले। (कन्नड)

जब कोई आदमी अपने द्वारा किए गए काम पर लज्जित हो जाता है तो दूसरों पर क्रोध करने लग जाता है। मानव की इस प्रवृत्ति का उद्घाटन यह कहावत कितनी सुन्दर शैली में करती है, देखिए—

खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे।

शांति से जो काम किया जाता है, वह वाद विवाद से नहीं। एक शांतिशील मनुष्य हजार बड़बड़ करनेवाले व्यक्तियों का हरा देता है।

एक चुप हजार को हरावे।

तेलुगु में —

ऊरकुंटे पोम्मनट्लु।

Speech is silvern and silence is golden.

अंग्रेजी में कहावत है।

यह भी मानव की प्रवृत्ति है कि जब वह कोई बुरा काम करता है तो उसे छिपाने का प्रयत्न करता है, जब संभव नहीं होता, तब मुँह जोरी करने लगता है।

एक तो चोरी — दूसरे सीनाजोरी।

वाली कहावत इस तथ्य की ओर इंगित करती है। तेलुगु में इसलिए कहावत चल पड़ी है —

ओक अबद्धमु कप्पडानिकि वेयि अबद्धालु कावलेनु।

[एक झूठ को छिपाने के लिए हजार झूठ चाहिए।]

मनुष्य अपनी संगत से जाना जाता है। यदि निर्दोष मनुष्य भी बुरे लोगों के साथ रहे तो लोग उसे बुरा ही कहते हैं। लोगों की यह

1. One lie draws ten after it. (Latin)

स्वाभाविक प्रवृत्ति है —

कलाल की दुकान पर पानी भी पिओ तो शराब का शक होता है।

(मदिरा मानत है जगत दूध कलाली हाथ।)

तेलुगु-कहावत से तुलना कीजिए —

ईत चेट्टुकिंद पालु तागिना कल्ले अंटारु।

देशी खजूर के पेड़ के नीचे बैठ कर दूध पिओ तो भी कहेंगे कि शराब है। इसी भाव की कहावतें कन्नड, अंग्रेजी, लैटिन आदि भाषाओं में भी हैं।[1]

प्रायः यह देखा जाता है कि जो आदत पड़ जाती है वह छूटती नहीं। छूटेगी बड़ी कठिनाई से। मनोविज्ञान के अनुसार बुद्धि पर आदत का अधिकार हो जाता है, बुद्धि आदत का अनुसरण करने लगती है. आदत बुद्धि का अनुसरण नहीं करती। दूसरों के उपदेशों से ऐसी आदतें नहीं छूटती। मानव अपने में ही नहीं, अपने आस-पास के पशुओं में भी देखने लगा तो उसके मुँह से निकल पड़ा —

१) कुत्ते की पूँछ बारह बरस नल में रही तो भी टेढ़ी की टेढ़ी.

२) कुक्कपळ्ळेवि अन्नि गोगिन पंड्लु।

[कुत्ते के सब दाँत टेढ़े ही होते हैं।]

२) कुक्कनु अंदलमुलो कूर्चोबेट्टिते कुच्चुलु तेग कोरिकिनट्टु.

[कुत्ते को पालकी में बिठाया तो वह बार-बार डण्डा ही काटने लगा।]

३) कुक्क तोक वंकर कुदरदु।

[कुत्ते की पूँछ का टेढ़ापन नहीं जाता।]

1. देखिए परिशिष्ट, १.

तेलुगु में और एक कहावत है —

पुट्टिननाटि बुद्धि पुडकलतो गानि पोदु ।[1]

अमेरिका के मनोवैज्ञानिक एडलर ने हीन-भाव की मनोवृत्ति का अच्छा विवेचन किया है। जिस व्यक्ति में कमी होती है, वह उस कमी को ढकने के लिए अपनी प्रशंसा करता है, जिसमें ज्ञान नहीं होता वह बढ़-बढ़कर बातें बनाता है, जो ज्यादा धमकी देता है, वह धमकी के अनुसार काम नहीं कर पाता। ज्ञान की कमी, चातुर्य का अभाव, अंग-विकार आदि अनेक कारणों से मनुष्य अपने में हीन भाव का अनुभव करने लगता है। कहावतों में हीन भाव का कोई सैद्धांतिक विश्लेषण नहीं मिलता किन्तु वह हीन-भाव किस प्रकार अपने आपको अनुभव करता है, इसके अच्छे उदाहरण मिलते हैं[2] उदाहरणार्थ हिन्दी और तेलुगु के इन कहावतों को लीजिए —

१) गरजनेवाला बादल बरसता नहीं।

२) भूँकनेवाला कुत्ता काटता नहीं।

३) अरिचे कुक्क करवनेरदु।

अन्य भाषाओं में भी इस भाव की कहावतें मिलती हैं।

जो आधा पढ़ा-लिखा होता है, वह बड़ा घमंडी होता है। वह अपनी प्रशंसा आप करता है। ऐसे व्यक्तियों को ही देखकर कहा गया—

१) अल्पविद्या महागर्वी।

1. What belongs to nature lasts to the grave. (Italian)
2. "राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन". डा० कन्हैयालाल सहल पृ. १८७.

२) नीम हकीम खतराए जान, नीम मुल्ला खतराए ईमान।

३) अध जले गगरी छलकत जाय।

४) निडु कुंडु तोणकदु। [भरा घड़ा नहीं छलकता।]

मनुष्य की यह प्रवृत्ति है कि वह दूसरों की दृष्टि में हीन नहीं होना चाहता। इसलिए वह अपना डींग हाँकता है —

थोथा चना बाजे घना।

यह भी मनुष्य का स्वभाव है कि वह नहीं चाहता कि उसमें जो बुराई हो उसका उल्लेख अन्य लोग उसके सामने करें। कहावतें इस तथ्य की ओर हमें आकर्षित करती हैं —

उन्न माट अंटे वुलिकेसुकोनि वस्तुंदि।

[सच बो ने से गुस्सा आता है।]

अंधे को अंधा कहने में बुरा लगता है।

हम जिन व्यक्ति अथवा वस्तुओं के संपर्क में रहते हैं, वास्तव में बुराई होने पर भी बुरा नहीं कहना चाहते।

अपने दही को कोई खट्टा कहता है?

यह कहावत इस सत्य का उद्घाटन करती है।

किसी ने हमारी बुराई की तो जन्म भर याद रखते है। किसी ने अच्छाई की बहुत कम याद रखते हैं। इस प्रवृत्ति का उल्लेख नीचे की कहावत में है —

खिलाए का नाम नहीं, रुलाए का नाम है।

सारांश यह कि हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में इस प्रकार की कहावतों का भण्डार बिखरा पड़ा है। इन कहावतों के अध्ययन से हम मानव-मन की सूक्ष्म वृत्तियों को जान सकते हैं। इतना ही नहीं, कभी-कभी इन कहावतों के आधार पर किसी जाति अथवा समुदाय विशेष की परख भी कर सकते हैं। मानव जीवन के विशाल प्रांगण से निर्मित इन कहावतों का अनुशीलन जीवन के व्यावहारिक सत्य के आधार पर होना चाहिए।

(घ) कुछ अन्य कहावतें — इस शीर्षक के अन्तर्गत ऐतिहासिक तथा भौगोलिक विषयों से संबन्धित कतिपय कहावतें आती हैं। "राजस्थानी कहावतें—एक अध्ययन" के लेखक डॉ० कन्हैयालाल सहल जी ने ऐतिहासिक कहावतों को अलग विभाग में रखा है। एक दृष्टि से देखा जाय तो इनको वैज्ञानिक कहावतों के अन्तर्गत मान सकते हैं। अतः मैंने तत्संबन्धी कहावतों को भी इस शीर्षक के अन्तर्गत रखा है। सर्वप्रथम ऐतिहासिक घटना मूलक कहावतों को लें —

(१) ऐतिहासिक घटनामूलक — कुछ कहावतों के साथ इतिहास की कोई न कोई घटना जुड़ी हुई रहती है। तत्संबन्धी ऐतिहासिक घटना को जानने से कहावत का रहस्य खुल जाता है। ऐसी कहावतें प्रत्येक भाषा में वर्तमान रहती हैं। कहावतों की उत्पत्ति की चर्चा करते समय इस विषय पर विस्तार के साथ विचार कर चुके हैं। कुछ उदाहरण लीजिए —

१) गांधी जी ने जब सत्याग्रह किया था, तब लोगों की जिह्वा

पर यह वाक्य रहता था — Do or die (करो या मरो)। यह बाद में कहावत के रूप में प्रचलित हो गया। अन्य प्रान्तीय भाषाओं में भी इसका प्रवेश हो गया है।

२) "दिल्ली दूर नहीं है" वाली कहावत भी इसी प्रकार की है। इससे तात्कालीन राजनैतिक चेतना का पता चलता है।

३) "अट्टनुंडि कोट्टरा" एक तेलुगु कहावत है, इससे संबन्धित कथा (घटना) का उल्लेख दूसरे अध्याय में कर चुके हैं।

४) "तिरिया तेल हम्मीर हठ, चढ़ै न दूजी बार" यह एक प्रसिद्ध हिन्दी कहावत है। इससे संबन्धित घटना इस प्रकार है —

अला उद्दीन महिमशाह (मुहम्मद शाह) से, जो तब मुसलमानों का नेता था, रुष्ट हो गया था। मुहम्मद शाह ने अला उद्दीन के सेनापति उलूगखाँ और नसरत खाँ के अशिष्ट व्यवहार के कारण जालोर के पास छपावल की ओर जालोर आदि होता हुआ यह रणथंभोर पहुँचा। यह वास्तव में महान वीर और योद्धा था। रणथंभोर के शासक राव हम्मीर ने उसे निर्भीकतापूर्वक शरण दे दी। बादशाह ने हम्मीर को लिखा कि वह पठान को अपने पास न रखे किन्तु हम्मीर ने जो उत्तर दिया, वह राजस्थान में ही नहीं, बल्कि उत्तर भारत में भी कहावत की भाँति समय-समय पर प्रयुक्त होता है —

सिंह संग सत्पुरुष वच, केल फलै इक बार।
तिरिया तेल हमीद हठ, चढ़ै न दूजी बार॥

अला उद्दीन ने किले पर घेरा डाल दिया। वर्षों के युद्ध के बाद वीरता से लड़ते हुए हम्मीर ने अपने प्राण दे दिए। वह पठान भी

जिसको हम्मीर ने शरण दी थी, अलाउद्दीन के विरुद्ध लड़ता हुआ काम आया।[1]

५) अढ़ाई दिन सक्के ने भी बादशाहत की।

कहा जाता है कि एक बार निजाम नाम के भिश्ती ने बादशाह हुमायूँ के प्राणों की रक्षा की थी। हुमायूँ ने अपने वचन के अनुसार उसे अढ़ाई दिन के लिए बादशाह बनाया था। उसने अपनी बादशाहत की यादगार में चमड़े का सिक्का चलाया, जिसमें सोने की एक कील थी।

सारांश यह कि कुछ कहावतें ऐतिहासिक घटनामूलक होती हैं। तत्संबन्धी घटना को जानने से उनका स्पष्टीकरण हो जाता है।

२) <u>कहावतों में प्रसिद्ध व्यक्तियों के नाम</u>— कुछ कहावतों में इतिहास-प्रसिद्ध व्यक्तियों का नामोल्लेख रहता है।

कहाँ राजा भोज कहाँ कंगाल तेली।

इस कहावत का उल्लेख ऊपर किया गया है।

भोज, कालिदास, भट्टि-विक्रमार्क जैसे प्रसिद्ध व्यक्तियों की कहानियाँ तो जनता में सर्वत्र प्रचलित हैं। अतः कहावतों में भी उन व्यक्तियों के संबन्ध में चर्चा पाते हैं। उदाहरण के लिए इन तेलुगु-कहावतों को लीजिए —

१) भोजुनिवंटि राजु उंटे कालिदासु वंटि कवि अप्पुडे उंटाडु।

जब भोज के समान राजा रहेगा तब कालिदास के समान कवि भी रहेगा।

२) विक्रमार्कुनि वंटि राजु उंटे भट्टि वंटि मंत्रि अप्पुडे उंटाडु।

1. "राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन", डा० कन्हैयालाल सहल पृ. १०६.

विक्रमार्क के समान राजा रहे तो भट्टि के समान मंत्री भी रहेगा।

कुछ कहावतों से राजवंश के संबन्ध में ज्ञान प्राप्त होता है। राजस्थानी "हाडा" राजपूत अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध है। इनके संबन्ध में कहावत प्रसिद्ध है —

गाडा टलै, हाडा न टलै।[1]

हिन्दी साहित्य में कवि नंददास के विषय में कहावत प्रसिद्ध है —

और कवि जड़िया, नंददास कवि गड़िया।

(३) कहावतों में स्थानों के नाम— कहावतों से प्रसिद्ध स्थानों के विषय में थोड़ा-बहुत ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। कुछ कहावतों में केवल स्थानों के नाम मात्र उल्लिखित रहते हैं। दो-चार उदाहरण लीजिए।

बंगालियों के केश सजे-सजाए रहते हैं। इसके संबन्ध में कहावत है—

साजा बाजा देस, गोड बंगाल देस।

सिरोही की तलवार प्रसिद्ध है। इस पर कहावत है —

शमशेर तो सिरोही की।

"दिल्ली दूर नहीं है" वाली कहावत का उल्लेख ऊपर किया गया है। "दिल्ली में बारह वर्ष रहे" "कांधे धनुष हाथ में बाना, कहाँ चले दिल्ली-सुल्तान" जैसी कहावतों में भी दिल्ली का उल्लेख हुआ है। "झांसी गले की फांसी", "दतिया गले का हार" कहावतें भी प्रसिद्ध हैं।

काशी और रामेश्वर प्रसिद्ध तीर्थ स्थान हैं। तेलुगु की कतिपय कहावतों में ये नाम आते हैं, जैसे —

1. "राजस्थानी कहावतें एक अध्ययन"– डा० कन्हैयालाल सहल, पृ. १०८.

काशिकि पोगाने कारि कुक्क गंग गोवु आवुना ?

[काशी जाते ही काला कुत्ता पवित्र गाय हो जाएगा ?]

काशिकि पोयि कुक्क वोच्चु तेच्चिनट्लु ।

[जैसे काशी जाकर कुत्ते के बाल लाए ।]

रागल शनि रामेश्वरमु पोयिना तप्पदु ।

[जो शनि अर्थात् दुर्भाग्य आनेवाला है, वह रामेश्वर जाने पर भी अवश्य आएगा ।]

कोंडवीटि चेंत्राडु ।

[कोंडवीडु की कुएँ की रस्सी ।]

प्रसिद्ध है कि कोंडवीडु के कुएँ बहुत ही गहरे होते हैं । इसलिए यह कहावत चल पड़ी है ।

स्थानों की विशेषता तथा स्थानों के नाम बतलानेवाली इस तरह की कहावतें और भी कई मिलती हैं ।

सप्तम अध्याय

कहावतों में अभिव्यंजना

भोजन में अचार और साग का जो स्थान है, वही स्थान है संवादों में कहावत का। वह सीधे हृदय पर चोट करनेवाली उक्ति है, अतः अभिव्यंजना में स्पष्टता और स्फूर्ति उसके आवश्यक गुण समझने चाहिएँ। उसकी भाषा और शैली भी इस प्रकार होती है कि उसे सुनते ही उसकी छाप हमारे हृदय पर पड़ जाती है। सच तो यह है कि उसमें "ध्वनि" की प्रधानता है। जिस भाँति नदी का तटवर्ती पत्थर जल की तरंगों के थपेड़े खाकर अपनी रूक्षता त्याग चिकना और चमकदार बन जाता है उसी भाँति "कहावत" अपनी भाषा-शैली तथा अभिव्यंजना की स्पष्टता तथा स्फूर्ति के गुण के हेतु जन-मन को अनुरंजित और आलोकित करती रहती है।

शब्द और अर्थ का अविनाभाव संबन्ध है। शब्दहीन अर्थ और अर्थहीन शब्द की कल्पना साहित्य में नहीं की जाती। कहावती-साहित्य में भी ठीक यही बात है। वस्तुतः सार्थक शब्द ही शब्द कहलाते हैं।

जिसके द्वारा शब्द के अर्थ का बोध होता है, उसे "शक्ति" कहते हैं। शब्द-शक्तियाँ तीन मानी गयी है — अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। कहावतों में हम शब्द-शक्तियों का विकास देख सकते हैं। अभिधा शक्ति के उदाहरण के रूप में कई कहावतों को उद्धृत कर सकते हैं। प्रायः वे उपदेशात्मक या शिक्षाप्रद शैली में होती हैं, उनमें वाच्यार्थ की प्रधानता होती है। जैसे —

१) पिए रुधिर पय ना पिए लगी पयोधर जोंक।

२) करत-करत अभ्यास जडमति होई सुजान।

३) अभ्यासमु कूसु विद्या।

४) कोट्टेदि मंचं, कुट्टेदि नल्लि।

[खटमल काटता है खाट पर चोट करते हैं।]

५) इल्लु ईर्कटं, आलु मर्कटम्।

[घर छोटा, पत्नी बंदर अर्थात् मूर्ख है।]

६) अकलमंद को इशारा, मूर्ख को तमाचा।

७) विवाहो विद्या नाशाय।

किन्तु, कहावतों की विशेषता उनके लाक्षणिक प्रयोग से है। दूसरे शब्दों में, लाक्षणिक पद-प्रयोग के कारण ही उनमें प्रभाव और स्फूर्ति आती है। कुछ कहावतें लीजिए —

१) अंधे को अंधेरे में बहुत दूर की सूझी।

यहाँ "अंधे" का अर्थ मूर्ख और "अंधेरे" का अर्थ "मूर्खता" लेना पड़ेगा। किसी प्रयोजन से ही इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जाता। यह रूढ अर्थ भी है। जब कोई मूर्ख विद्वत्ता की बात करता है

तो उस समय इस कहावत का प्रयोग होता है।

२) अधजल गगरी छलकत जाय।

निंडु कुंड तोणकदु। [भरा घडा नहीं छलकता।]

यहाँ "अधजल गगरी" का साधारण प्रचलित अर्थ न लेकर दूसरा ही लेते हैं। किसी विशेष प्रयोजन से मुख्यार्थ ग्रहण न कर दूसरा ही अर्थ लक्ष्यार्थ लेते हैं।

कुछ अन्य कहावतें देखिए —

३) दीपमु मुड्डिक्रिंद चीकटि।

चिराग तले अंधेरा।

४) समुद्र के पास पहुँचकर घोंघा हाथ लगा।

अथवा —

नाम बड़ा दर्शन थोड़ा।

५) घर की मुर्गी साग बराबर।

पेरटि चेट्टु मंदुकु रादु।

इन कहावतों में भी लाक्षणिक अर्थ का ही प्रधानता है। विशेष प्रयोजन से ही रेखांकित शब्दों का अर्थ ग्रहण किया जाता है।

कहावतों में व्यंजना के भी अच्छे उदाहरण मिलते हैं। एक दो उदाहरण पर्याप्त होंगे —

१) घी खाया बापू ने सूंघो मेरा हाथ।

"घी" और "सूंघो" शब्दों में ही प्रभावशीलता है। इनके प्रयोग से अभिव्यक्ति बड़ी ही सुन्दर बन पड़ी है।

एक तेलुगु-कहावत है —

२) गालिकि पोयिन पेलपिडि भगवर्दापितमु अन्नट्लु ।

[जो अटा हवा में उड़ गया, वह भगवान को समर्पित है ।]

तुलना कीजिए —

अंगूर खट्टे हैं ।

जैसा कि पहले ही कहा गया है, कहावतों में ध्वनि की ही प्रधानता है। यदि उन्हें ध्वनि काव्य कहें तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

१) जोगी जोगी राचुकोंटे बूडदे रालिनदि । (तेलुगु)

[दो जोगी भिडे तो भस्म के सिवा और क्या मिलेगा ?]

जोगी जोगी लड़े, खप्परों का नास । (हिन्दी)

२) पानी मथने से घी नहीं निकलता ।

३) गालिलो दीपमु बेट्टि देवुडा नी महिमा चूपमन्नट्लु ।

[हवा में दीपक रख कर यह कहना कि भगवान, अपनी महिमा दिखा दे ।]

इत्यादि कहावतें ध्वनि प्रधान ही हैं । "ध्वनि" के कारण ही अर्थ मे स्पष्टता और स्फूर्ति आती है ।

कहावतों में अलंकारों को भी ढूंढा जा सकता है। उनमें भावोत्कर्ष के लिए अथवा अभिव्यंजना की स्पष्टता और प्रभावशीलता के लिए अलंकारों का अनायास ही प्रयोग हुआ है। अब हम उनमें प्रयुक्त अलंकारों के संबन्ध में थोड़ा विचार करें ।

कहावतों में अलंकार

हमारे आचार्यों ने कहावत को भी एक अलंकार माना है। कुवलयानंद के अनुसार उसका लक्षण यों है — "लोकप्रवादानुकृति-र्लोकोक्तिरिति कथ्यते" अर्थात् लोक प्रसिद्ध कहावतों का अनुसरण लोकोक्ति अलंकार कहलाता है। उदाहरणार्थ —

१) प्रकृति जोइ जाके अंग परी,
स्वान पूछ कोटिक जो लगै सूधि न काहू करी।

सूरदास के उक्त पद में लोकोक्ति अलंकार का प्रयोग हुआ है।

२) पर घर घालक लाज न भीरा।
बाँझ कि जान प्रसव कै पीरा॥ (रामचरित मानस)

इसमें भी कहावत का प्रयोग हुआ है। अतः यहाँ लोकोक्ति अलंकार होगा।

यद्यपि आचार्यों ने लोकोक्ति को स्वतंत्र अलंकार स्वीकार किया है, तथापि कहावतों में इतर शब्दालंकार तथा अर्थालंकार स्थान-स्थान पर मिल जाते हैं। यह बात पहले ही कह चुके हैं कि अनेक संदर्भों में कवियों द्वारा प्रयुक्त रूपक, अर्थांतरन्यास आदि अलंकार लोक प्रसिद्ध होकर कहावतों का रूप धारण कर लेते हैं। "समय फिरे रिपु होहिं पिरीते" (तुलसी), "प्रीति करि काहू सुख न लह्यो" आदि उक्तियाँ इसी कोटि की हैं।

(क) शब्दालंकार — कहावतों में शब्दालंकारों का प्रयोग विशेष रूप से द्रष्टव्य है। प्रायः प्रत्येक कहावतो में अनुप्रास अलंकार की छटा दिखाई पड़ती है।

१. अनुप्रास —

(१) छेकानुप्रास — छेकानुप्रास के कुछ उदाहरण देखिए

१) अंधे को अंधा कहने में बुरा लगता है।

२) अंधे को अंधेरे में बहुत दूर की सूझी।

३) अंदरू अंदलम् एक्किते मोसेवार एवरु ?

इस भाव की तेलुगु-कहावत —

४) अंधुलकु अद्दमु चूपिनट्लु।

५) तिय्यगा तिय्यगा रागमु, मूलगगा मूलगगा रोगमु

[गाते गाते राग, कराहते कराहते पीड़ा।]

२) वृत्यनुप्रास — वृत्यनुप्रास के भी अच्छे उदाहरण कहावतों में मिलते हैं —

१) जमी जोरु जोर की, जोर हट्यो ओर की।

२) पांडिदे पाडरा पाचिपंड्ल दासरि।

[अरे साई, अपने गंदे दाँतों से बार-बार वही गीत

३) धुण्यानिकि पुट्टेडिस्ते पिच्चकुंचमनि पोट्लाडिनट्

[जब दान में अनाज दिया गया तो लेनेवाले ने शिकायत की कि माप ठीक नहीं है।]

४) अत्त कोट्टिन कुंड अडुगोटि कुंड कोडलु कोट्टिन कुंड कोत्त कुंड।

[सास के हाथ से जो घड़ा फूटा, वह पहले से ही तले फूटा था, बहू के हाथ से जो घड़ा फूटा वह बिलकुल नया था

(३) श्रुत्यनुप्रास —

भाई के मन भाई भायो, बिन बुलाए आवै आयो।

इसमें श्रुत्यनुप्रास का अलंकार है।

(४) अंत्यानुप्रास — कहावतों में इसका विशिष्ट स्थान है अधिकतर कहावतों में इसका प्रयोग हुआ है। कुछ उदाहरण लीजिए

१) अपनी करनी पार उतरनी।

२) अमीर को जान प्यारी, गरीब को जान भारी।

३) आँख न दीदा, काढ़े कसीदा।

४) आदमी जाने बसे, सोना जाने कसे।

५) इल्लु कट्टि चूडु क्लि चेसि चूडु।

[घर बनाकर देखो, शादी कर देखो।]

६) उद्योगं पुरुष लक्षणं, अदि पोते अवलक्षणम्।

[नौकरी करना पुरुष का लक्षण है, वह नहीं अशुभ है।

७) इल्लु इकटम्, आलु ःकटम्।

[घर छोटा, पत्नी बंदर है, अर्थात् दोनों ओर कठिनाई।

(५) लाटानुप्रास —

पूत कपूत को धन संचै।

पूत सपूत को धन संचै॥

इस प्रसिद्ध उक्ति को, जो कहावत के रूप में प्रयुक्त होती है, लाटा प्रास का उदाहरण मान सकते हैं।

२. यमक — उदाहरण —

१) गढ़ै सुनार, पहरै नार।

२) हाथी चले बाजार, कुत्ता भूँके हजार।

३) के सहरा, के डेहरा।

(३) पुनरुक्ति प्रकाश — एक बार कही हुई बात को पुनः कहने से पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार होगा। एक उदाहरण लीजिए —

तिय्यगा तिय्यगा रागमु, मूलगगा मूलगगा रोगमु।

इस कहावत का उल्लेख ऊपर कर चुके हैं। इसमें "तिय्यगा" और "मूलगगा" शब्दों की आवृत्ति हुई है।

अन्य शब्दालंकारों के भी उदाहरण हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं की कहावतों में मिल जाते हैं।

(ख) अर्थालंकार — कहावत में, जो जन-मन को अनुरंजित करने वाली चुटीली, नुकीली उक्ति है, वक्रोक्ति की प्रधानता है। इस विशेष गुण के कारण उसमें अनेक अर्थालंकार ढूंढे जा सकते हैं। आचार्यों ने अर्थालंकारों के चार प्रकार माने हैं — विरोध मूलक, साम्य मूलक, साहचर्यमूलक और बौद्धिक शृंखलामूलक। यहाँ इनके कुछ उदाहरण दिए जाते हैं।

विरोधमूलक —

(१) अधिक — जहाँ आधार से आधेय की अधिकता का वर्णन या आधेय से आधार की अधिकता का वर्णन किया जाय, वहाँ अधिक अलंकार होता है, जैसे —

लुगाई के पेट में टाबर खटा जाय, बात कोनी खटावै।[1]

[स्त्री के पेट में बच्चा समाया रहता है, बात नहीं समाती।]

1. "राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन", डा० कन्हैयालाल सहल पृ. ७६.

(२) विषम अलंकार — जब ऐसी वस्तुओं का एक साथ रहना वर्णित हो जिनमें असमानता हो अथवा प्रयत्न करने पर भी बुरा फल हो, वहाँ विषम अलंकार होता है, यथा —

१) कहाँ राजा भोज, कहाँ कंगाल तेली।

२) नक्क एक्कड देवलोकमेक्कड ?

सियार कहाँ ? स्वर्ग कहाँ ?

३) कौआ चला हंस की चाल, अपनी भी भूल गया।

(३) विरोधाभास — जब दो विरोधी पदार्थों का संयोग एक साथ दिखाया जाता है अथवा गुण, जाति, क्रिया आदि के संयोग से जहाँ परस्पर विरोध प्रदर्शित किया जाता है, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है —

भाई बरोबर वैरी नहीं, भाई बरोबर प्यारे नहीं।

साम्यमूलक अलंकार

(१) उपमा — साम्यमूलक अलंकारों में उपमा का अग्रस्थान है। कहावतों में इसका अधिक प्रयोग द्रष्टव्य है। तेलुगु में साम्य या सादृश्य दिखलाने के लिए ही अधिकतर अलंकारों का प्रयोग होता है। अन्य दक्षिणी भाषाओं की कहावतों में भी यह विशेषता देखी जाती है।

१) अग्निलो मिडित पडुनट्लु।

[जैसे आग में जुगनु गिरता है।]

२) अग्निकि वायुवु सहायमयिनट्लु।

[जैसे हवा आग की सहायक बन जाती है।]

इस प्रकार की तेलुगु-कहावतों का प्रयोग साम्य या सादृश्य दिखला
के लिए ही होता है।

"राजस्थानी कहावतें—एक अध्ययन" के लेखक ने एक कहावत
पद्य को उद्धृत किया है —

आबा की-सी बिजली, होली की-सी झल। [1]

(२) रूपक — जहाँ उपमेय और उपमान में पूर्ण समत
दिखाया जाय, वहाँ रूपक अलंकार होता है। इन कहावतों को देखिए-

१) आडदानि माट नीळ्ळु माट।

[स्त्री की बात पानी की बात है।]

२) साँप चलती मौत है।

३) है सब का गुरुदेव रुपैया।

(३) सम — अनुरूप वस्तुओं के वर्णन में सम अलंकार होत
है। कहावतों में इसके बहुत-से उदाहरण मिलते हैं, यथा —

१) बड़ों की बड़ी बड़ाई है।

अथवा बड़ों की बड़ी बात।

२) जैसे साँपनाथ वैसे नागनाथ।

३) जैसी तेरी कौमरी वैसे मेरे गीत।

४) कंतुक तगिन बोंत।

[जैसा गड्ढा, वैसी रस्सी।]

(४) अर्थान्तरन्यास — कहावत और अर्थान्तरन्यास का इतन
घनिष्ठ संबन्ध है कि कवियों द्वारा प्रयुक्त अनेक अर्थान्तरन्यास अलंक

1. "राजस्थानी कहावतें —एक अध्ययन"— डा० कन्हैयालाल सहल पृ ७

कहावतें बन गए हैं। कवियों ने अर्थांतरन्यास अलंकार के रूप में लोक प्रचलित कहावतों का भी प्रयोग किया है। ऐसे कई उदाहरण पहले दिए जा चुके हैं। कालिदास, तुलसीदास, वेमना, वृंद आदि कवियों की रचनाओं मे ऐसे अनेक पद्य मिलेंगे।

साहचर्य मूलक —

(१) अप्रस्तुत प्रशंसा — प्रत्येक कहावत को इस अलंकार के अन्तर्गत ले सकते है। क्योंकि, कहावते अप्रस्तुत कथन ही होती है। उदाहरण के लिए —

एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकती। (हिन्दी)
ओक वरलो रेंडु कत्तुलु यिमडलु। (तेलुगु)

जहाँ दो समान व्यक्ति किसी काम के या घर के मालिक बनते हों और दोनों ही अपना-अपना पूरा अधिकार चाहते हों, वहाँ पर अप्रस्तुत कथन के रूप में इन कहावतों का प्रयोग होता है।

बौद्धिक शृंखलामूलक —

(१) देहली दीपक — जहाँ एक ही शब्द का अन्वय दो वाक्यों मे होता है, वहाँ देहली-दीपक अलंकार होता है। उदाहरण —

१) बिना बाप को छोरो बिगडे, बिना माय को छोरी।

यहाँ बिगडे का अन्वय दोनों वाक्यों मे होता है।

२) अत्त मंचि, वेमुल तीपु लेदु।
[सास अच्छी, नीम अच्छा नहीं है।]

यहाँ "लेदु" (नहीं) का अन्वय दोनों वाक्यों में होता है। अतः यहाँ देहली दीपक अलंकार है। और कुछ उदाहरण देखिए —

३) उत्तवल्ल बोंगतनमुनु, अत्तगारिवल्ल रंकुनु नेर्चुकोन्नदि ।
[सास से चोरी और पति से (बहू) आलस्य सीखती है ।]

४) तिम्मिनि बम्मिनि बम्मिनि तिम्मिनि चेस्ताडु ।
[वह "तिम्मि" को बम्मि और "बम्मि" को तिम्मि बनाता है । अर्थात् बुरे का भला और भले का बुरा करता है ।]

मानवीकरण — कहावतों में मानवीकरण के भी अच्छे उदाहरण मिलते हैं । एक उदाहरण लीजिए —

रिपिया तेरी रात दूजो नर जलम्यो नहीं ।
जे जलम्या दो चार तो जुग में जीया नहीं ॥[1]

उपर्युक्त अलंकारों के अतिरिक्त अन्य कई अलंकारों के भी उदाहरण कहावतों में मिलते हैं । कई कहावतें तो अन्योक्ति के रूप में प्रचलित हुई हैं ।

इस विवरण से यह स्पष्ट होता है कि अभिव्यक्ति में स्पष्टता, स्फूर्ति और प्रभाव लाने के लिए कहावतों में अलंकारों का प्रयोग होता है । पर, यह प्रयत्नपूर्वक नहीं होता । अलंकारों का यह सहज प्रयोग ही कहावतों की अभिव्यक्ति की सफलता घोषित कर रहा है ।

हिन्दी और तेलुगु-दोनों भाषाओं की कहावतों में प्रयुक्त अलंकारों के अध्ययन से यह बात प्रकट हो गयी कि ये अलंकार भावोत्कर्ष में अत्यंत सहायक होते हैं । इस कारण अभिव्यक्ति में कहीं भी अस्पष्टता या कृत्रिमता नहीं दिखाई पड़ती । अभिव्यक्ति सर्वथा मार्मिक और प्रभावशाली होती है ।

1. "राजस्थानी कहावतें – एक अध्ययन", डा० कन्हैयालाल सहल पृ.८०.

कहावतों में छंद

कहावतों की अभिव्यंजना शक्ति की चर्चा करते समय उनमें प्रयुक्त छंदों के संबन्ध में भी थोड़ा विचार करना अनुपयुक्त न होगा। कहावतों के निर्माताओं को छंद शास्त्र का ज्ञान न होने पर भी उनमें स्वभावतया अनेक छंदों का प्रयोग हुआ है। सृष्टि के अणु-अणु में छंद का स्पंदन व्याप्त है। अतः जनता के मुँह से स्वाभाविक रूप से होनेवाली कहावतों में भी यह स्पंदन दिखाई पड़ता है। कहावतों में तुक और गति का विशेष महत्व है। प्रथम अध्याय में इस पर थोड़ा विचार किया गया है। प्रायः प्रत्येक कहावत में तुक का नियम पाला जाता है। कतिपय कहावतें देखिए —

१) कोत्त चित, पात रोत।

[नया विचित्र, पुराना फीका।]

२) ओछे की प्रीत, बालू की भीत।

३) एक दिन मेहमान, दो दिन मेहमान, तीसरे दिन हैवान।

४) Haste makes waste. (अंग्रेजी)

इन सभी कहावतों में तुक का नियम रखा गया है। कुछ भाषाओं की कहावतों में तो यह आवश्यक गुण माना गया है।

स्वर सामंजस्य का दूसरा नाम लय या गति है। कहावतों में इस लय के कारण ही अधिक स्फूर्ति व चमत्कार आ जाता है। वह श्रवण-सुखदायक एवं हृदय ग्राही हो जाती है। इन कहावतों को देखिए —

१) अटका बनिया देय उधार।

२) अंधे के हाथ बटेर लगी।

३) ता वलसिनदि रंभ, ता मुनिगिनदि गंग ।

जिस स्त्री को चाहता है, वह रंभा है, जिसमें स्नान करता है, वह गंगा है ।

४) एद्दुतुंडु कावलि मद्दु ?

[बैल का ज्ञान ढोर को ध्यान है ?]

नीचे की कहावतों में तुक और लय का सुन्दर रूप देखिए —

१) बाप न भैया, सबसे भला रुपया ।

२) कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमति का कुनबा जोड़ा ।

३) इल्लु इरुकटम्, आलु मर्कटम् ।

[घर छोटा, घरवाली मर्कट]

कहावतों में एक चरण, दो चरण, या चार चरणों के लिए आश्रय मिलता है । हिन्दी में कई दोहों की एक पंक्ति कहावत के रूप में प्रयुक्त होती है । कभी-कभी पूरे दोहे भी प्रयुक्त होते हैं । अन्य छंद, जैसे चौपाई आदि भी प्रयुक्त होते हैं । इसी भाँति तेलुगु में वेमना जैसे कवियों के पद्यों की एक या दो पंक्तियाँ अथवा पूरा पद्य ही कहावत के रूप में प्रचलित हैं । उदाहरण के लिए —

१) जिन ढूँढा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ ।

मैं बौरी डूबन डरी, रही किनारे बैठ ।। (कबीर)

२) पराधीन सपनेहु सुख नाहीं । (तुलसी)

३) सूरदास खल कारी कामरी चढ़े न दूजे रंग । (सूरदास)

४) तललु बोडुलयिते तलपुलु बोडुला ? (वेमना)

[सिर मुंडित हो तो क्या इच्छाएँ मुंडित होती हैं ?]

कहावतों मे मात्राओं का भी ध्यान रखा जाता है। सम-मात्रावाली कहावतों को देखिए —

१) आप काज — ६ मात्राएँ।
महा काज — ६ मात्राएँ।

२) सौ सुनार की — ८ मात्राएँ।
एक लुहार की — ८ मात्राएँ।

३) भरतुडि पट्णमु — ८ मात्राएँ।
रामुडि राज्यमु — ८ मात्राएँ।

४) कालिकि वेस्ते मेडकु — १० मात्राएँ।
मेडकु वेस्ते कालिकि — १० मात्राएँ।

स्वर के उतार-चढ़ाव अथवा उच्चारण की सुविधा के अनुसार कहावतों मे असम-मात्राओंवाली पंक्तियों का प्रयोग होता है। जैसे —

१) घर-घर शादी — ८ मात्राएँ।
घर-घर गम — ६ मात्राएँ।

२) इंट्लो ईग पुलि — ९ मात्राएँ।
बयट पेद्द पुलि — ८ मात्राएँ।

३) आदमी जाने बसे — १२ मात्राएँ।
सोना जाने कसे — १२ मात्राएँ।

तुक और लय का ध्यान प्रायः प्रत्येक कहावत में रखा जाता है। ढूँढने पर एक-दो कहावते ऐसी मिल जायँ तो मिल जायँ जिनमे तुक या लय नहीं रहता।

कहावतों के निर्माताओं को छंदःशास्त्र का ज्ञान रहा हो या न रहा हो, पर यह प्रकट सत्य है कि कहावतों में छंद का स्पंदन अनेक

रूपों में मिलता है। कहावतों के निर्माताओं को "लय" और "ध्वनि" का ज्ञान होने के कारण ही कहावतों में हम छंद का स्पंदन देखते हैं। अस्तु।

कहावतों की भाषा-शैली

कहावतों की भाषा सरल, सुबोध, सरस तथा मार्मिक होती है। साधारण जन-समाज की संपत्ति होने के कारण कहावतों की भाषा साधारण जनता—— अनपढ़ लोगों की समझ में भली-भांति आनेवाली होती है। भाषा भावों की वाहिका है। भाव प्रकाशन के लिए भाषा का प्रयोग होता है। जिस भाषा के द्वारा मनोवांछित भाव प्रकट हो सके, वह भाषा अवश्य समर्थ तथा प्रभावशाली होगी, इसमें संदेह नहीं। कहावतों की भाषा सरल होने साथ-साथ उनकी शैली मनोहारिणि होती है। यही कारण हैं कि बड़े-बड़े लेखक और महाकवि भी अपनी रचनाओं में कहावतों को स्थान देते हैं। कहावत वह वन्य कुसुम है जिसके सौन्दर्य पर कृत्रिमता का लवलेश भी रंग नहीं चढ़ा है और जो अपनी निसर्ग सिद्ध सुषुमा के कारण लोक-साहित्य तथा शिष्ट-साहित्य दोनों में अपना अनुपम स्थान रखती है।

प्रथम अध्याय में हम देख चुके हैं कि कहावतें प्रायः "लघु" होती हैं। सूत्र शैली उनका मुख्य गुण है। वह कहावत अत्यंत श्रेष्ठ मानी जाती है जो कम शब्दों से निर्मित हो। तभी वह हृदय में अपना स्थान बना सकती है। दूसरे शब्दों में, कहावत में कम से कम शब्दों के द्वारा अर्थ की अभिव्यक्ति होती है और वह अभिव्यक्ति भी अत्यंत स्पष्टता

तथा प्रभावशीलता के साथ। कभी-कभी कहावतों में शब्दों का अध्याहार करना पड़ता है। मुख्य रूप से अध्याहार के दो प्रकार हैं — उद्देश्य का अध्याहार और विधेय का अध्याहार। उदाहरण के लिए हिन्दी और तेलुगु की ये कहावतें देखिए —

१) धायो मीर, भूखो फकीर, मरयो पाछे पीर।

इस कहावत में "मुसलमान" कर्ता शब्द का अध्याहार करना पड़ता है। इसी भाव की तेलुगु कहावत है —

२) नाडुवुंटे नवाबुसायेबु, अन्नमुवुंटे अमीरु सायेबु
बीद बडिते फकीरु सायेबु, चस्ते पीरु सायेबु।

[देश रहे तो नवाब साहब, भोजन रहे तो अमीर साहब, गरीब हो तो फकीर साहब और मर जाय तो पीर साहब।]

इस कहावत में भी "मुसलमान" शब्द का अध्याहार करना पड़ता है।

विधेय के अध्याहार के लिए दो उदाहरण पर्याप्त होंगे —

१) ग्रहण को दान, गंगा को असनान।

यहाँ "पुण्य मिलता है" का अध्याहार करना पड़ता है।

२) क्षेत्रमेरिगि वित्तनमु, पात्रमेरिगि दानमु।

अर्थात् क्षेत्र को देखकर बीज (बोना चाहिए) और पात्र को देख कर दान (देना चाहिए)।

इस कहावत में रेखांकित शब्दों का अध्याहार करना पड़ता है।

इस प्रकार अनेक स्थानों पर कहावतों में अर्थ के लिए कुछ शब्दों का अध्याहार करना पड़ता है। इससे बुद्धि की भी परख हो जाती है।

कथन-शैली का अनूठापन कहावतों का गुण है। इस कारण

अभिव्यंजना में स्पष्टता तथा प्रभावशीलता दिखाई पड़ती है। उदाहरण के लिए —

१) पानी मथने से मक्खन नहीं निकलता।

२) भूखे भजन न होय गोपाला।

४) भैंस के आगे बीन बजाई भैंस पड़ी पगुराय।

इन कहावतों में कथन-शैली की विशिष्टता देखने योग्य है। छोटे-छोटे वाक्यों मे भाव की कैसी सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है !

कथन-शैली की भिन्नता भी कहावतों में द्रष्टव्य है। एक ही भाववाली, दो विभिन्न भाषाओं की कहावतों की कथन-शैली की परीक्षा करके देखें —

नीम हकीम खतराए जान, नीम मुल्ला खतराए ईमान।

इस हिन्दी कहावत की तुलना अंग्रेजी कहावत से करके देखें —

A little knowledge is always dangerous thing.

तुलना करने पर स्पष्ट है कि दोनों कहावतों में भाव साम्य है। पर अभिव्यक्ति की शैली भिन्न है। शैली की दृष्टि से इनके प्रभाव पर विचार कीजिए। दोनों कहावतों में अनुभवजन्य बात की ही अभिव्यक्ति हुई है। अंग्रेजी कहावत एक सामान्य उक्ति के सादृश्य है। उसमें प्रकट भाव प्रत्यक्ष है। हिन्दी कहावत मे व्यक्त भाव उदाहरण से पुष्ट होने के कारण एक चित्र हमारे सामने मानों खड़ा कर देता है। उस कहावत को सुनते ही तत्संबन्धी कथा का अनुमान हो जाता है। इस प्रकार शैली की भिन्नता के कारण दोनों के प्रभाव और स्पष्टता में भी भिन्नता दिखाई पड़ती है।

जब मूल भाषा से दूसरी भाषाओं में कहावतों का प्रवेश होता है तब उनकी शैली में, कभी-कभी भिन्नता दृष्टिगोचर हो सकती है। भाषा-गत अथवा प्रदेशगत विशेषता इस प्रकार की भिन्नता का कारण होती है। "हत्थकंकणं किं दप्पणो पेक्खि" वाली कहावत का रूप हिन्दी में—

हाथ कंगन को आरसी क्या ?

और तेलुगु में —

अरचेति रेगुपंडिकि अद्दमु कावलेना ?

[हथेली पर जो बेर है, उसे देखने के लिए आइना चाहिए ?]

इन दोनों कहावतों में एक ही भाव व्यक्त हुआ है। हिन्दी के "कंगन" शब्द के स्थान को तेलुगु में दूसरे शब्द ने अपना लिया। बस, इतना ही भेद है। ऐसे और भी कई उदाहरण मिल जाते हैं। इस संबन्ध में हम पहले ही विचार कर चुके हैं।

ऊपर के विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि कहावतों में भावा-भिव्यक्ति के सभी आवश्यक उपकरण विद्यमान हैं। उनमें शब्दशक्तियों तथा ध्वनि के विकास का पूर्ण वैभव देखा जाता है। एक मुख्य विषय पर हमारा ध्यान सहज ही खिंच जाता है। वह है, विभिन्न भाषाओं की कहावतों में व्यक्त भावों में समानता। अभिव्यक्ति के शैली में भले ही अन्तर दिखाई पड़े, पर अभिव्यक्त भाव में समानता अनेक स्थानों में दिखाई पड़ेगी।[1] केवल भारतीय भाषाओं में ही नहीं, अन्य भाषाओं की कहावतों में भी ऐसा साम्य ढूँढा जा सकता है। इससे प्रमाणित होता है

1. देखिए परिशिष्ट—१.

कि मानव किसी भी प्रदेश में रहें, कोई भी भाषा बोलें, पर उनका हृदय एक है। उनके अनुभव समान हैं। भाषा की भिन्नता के कारण उनके मूल भावों तथा अनुभवों में अन्तर नहीं आ सकता। सारांश यह कि कहावतों में सांस्कृतिक एकता के उपकरण वर्तमान है। उनमें बहुत भारी शक्ति है। उनके द्वारा हम किसी एक जाति या देश की विशेषता ही नहीं समझते, अपितु मानव-जाति का सर्वमान्य तथ्य क्या है, यह भी परख सकते हैं।

अष्टम अध्याय

उपसंहार

आज के युग में जिस प्रकार साहित्य के विविध अंगों पर अनुसंधान कार्य हो रहा है, उसी प्रकार लोक-साहित्य पर भी अच्छा और उपयोगी कार्य हो रहा है। कहावतें लोक-साहित्य का एक अंग हैं। कहावतों का अत्यधिक महत्व इस बात में है कि उनका प्रयोग साधारण जनता में ही होता नहीं, प्रत्युत पढ़े-लिखे समाज तथा साहित्य में भी होता है। हमारे पूर्वज कहावतों का अधिक प्रयोग करते थे। उनकी अपेक्षा हम कहावतों का कम प्रयोग करते है। पढ़े-लिखे लोगों की अपेक्षा अनपढ़ लोग, पुरुष की अपेक्षा स्त्रियाँ एवं नगरवासियों की अपेक्षा ग्रामीण लोग कहावतों का अधिक प्रयोग करते हैं। इसका कारण यह है कि जैसे-जैसे शिक्षा का प्रचार बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे इनका प्रयोग कम होता जा रहा है। तथापि यह सत्य है कि कवियों तथा लेखकों ने इनको अपनी रचनाओं में आवश्यकतानुसार स्थान दिया है। वर्तमान युग में कहावतों के संग्रह और प्रकाशन के कार्य भी हो रहे हैं। कुछ विद्वान इस विषय को लेकर आलोचनात्मक अध्ययन भी कर चुके हैं। और कर रहे हैं। इससे कहावतों पर नया प्रकाश पड़ सकता है।

जिस भाँति प्राचीन काल की अपेक्षा आज-कल कहावतों का कम प्रयोग होता है, उसी भाँति नयी कहावतों का निर्माण भी कम होता है। नयी कहावतों का सर्वथा अभाव नहीं है। पर, वे अपेक्षाकृत कम है। कई पत्र-पत्रिकाओं में यदा-कदा नयी कहावतों का प्रकाशन होता रहता है। कुछ लेखकों ने भी इस दिशा में काम किया है। उदाहरण के लिए, कन्नड-लेखक ना. कस्तूरी पत्र-पत्रिकाओं में नयी कहावतों का प्रकाशन करते हैं। अन्य भारतीय भाषाओं की पत्रिकाओं में भी कहावतों पर लेख छपते हैं। सिक्कों के प्रचलन के समान कुछ कहावतों का प्रचलित युग विशिष्ट की सीमा में होता है। कालांतर में उनका लोप हो जाता है। किन्तु, लुप्त होनेवाली कहावतों की संख्या बहुत कम है। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि जीवन के अनुभव की कसौटी पर कसी गयी कहावतें पुरानी होने पर भी अपना मूल्य उसी प्रकार रखती है जिस प्रकार सोना। सोना पुराना हो या नया, सोना ही है। उसका महत्व कम नहीं हो सकता।

कहावतें मौखिक-परंपरा में आती है। इस कारण आज के युग मे वे एक प्रकार से उपेक्षित सी रह गयी हैं। नयी कहावतों के लिए क्षेत्र बंद हो गया है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। नये-नये विषयों पर नयी-नयी कहावतों का निर्माण हो सकता है।

विश्व-साहित्य में कहावती-साहित्य का स्थान कम महत्वपूर्ण नहीं है। इस साहित्य पर अनेकानेक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है और नये नये प्रकाशन भी निकल रहे हैं।

जीवन-दर्शन की सुन्दर झांकी कहावतों में प्राप्त होती है। इस

दृष्टि से कहावतों का संग्रह और अध्ययन अत्यंत उपादेय है। प्रत्येक भाषा मे कहावतें उपलब्ध होती हैं। किसी भी देश या जाति के आचार विचार, रीति-नीति आदि जानने का सर्वोत्तम साधन कहावतें ही है। अतएव, इनका अध्ययन और विश्लेषण सांस्कृतिक एकता के दृष्टिकोण से विशेष महत्व का सिद्ध होता है।

पिछले पृष्ठों में हिन्दी और तेलुगु कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस अध्ययन से यह बात भली भाँति स्पष्ट है कि दोनों भाषाओं की कहावतों में अनेक समानताएँ हैं। हिन्दी तथा तेलुगु प्रदेशों की जनता की चिन्तन-पद्धति, धारणाएँ आदि मे समानताएँ स्पष्ट दीखती हैं। भाषा विज्ञानियो के कथनानुसार हिन्दी और तेलुगु को विभिन्न परिवार की भाषाएँ हैं। कुछ तेलुगु-पंडित इस मत के पक्ष मे नहीं है। संप्रति उस विवादास्पद विषय पर विचार करना हमारा अभीष्ट नहीं है। हिन्दी और तेलुगु को विभिन्न परिवार की भाषाएँ मानें या न मानें, पर यह बात तो सत्य है कि दोनों भारतवर्ष की ही भाषाएँ हैं। दोनों के साहित्य में भारतीयता कूट-कूट कर भरी है। कहावतों के तुलनात्मक अध्ययन से यह बात अत्यंत स्पष्ट हो जाती है कि भाषा भेद तथा अन्य भेदों के कारण आन्तरिक अभिन्नता दूर नहीं हो जाती। भारत के प्रदेशों में बाह्य रूप से अनेक भेद दिखाई पड़ते हैं, पर साहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि यहाँ अनेकता में एकता स्थापित है, भारतवासी एक हैं, भारत हृदय एक है।
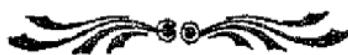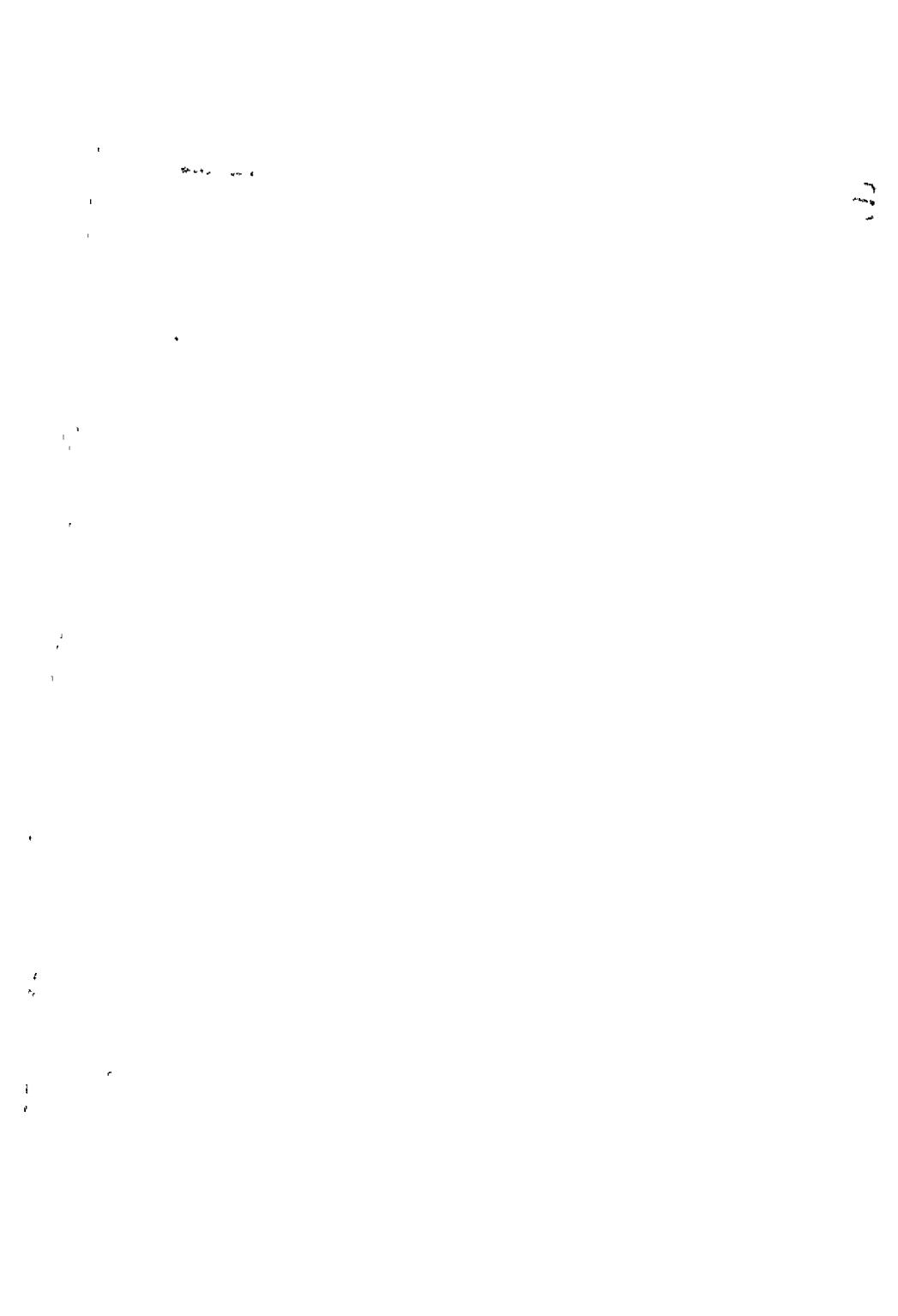
परिशिष्ट—१

तुलनात्मक कहावतें

१ अंगिट बेल्लमु, आत्मलो विषमु। (तेलुगु)
(मुह में गुड, हृदय में विष।)
मन मलिन तन सुन्दर कैसे।
विष रस भरा कनक कटोरा जैसे॥
अथवा – मधुर बानी दगाबाजी की निशानी। (हिन्दी)
Honey in his mouth, words of milk;
Gall of heart, fraud in his deed. (Latin)

२ अंदनि पूलु देवुनिकि अर्पण। (तेलुगु)
(जो फूल नहीं मिलते हैं, भगवान को समर्पित हैं।)
अंगूर खट्टे हैं। (हिन्दी)
अशक्तस्तत्पदं गन्तुं ततो निन्दां प्रकुर्वते। (संस्कृत)
Grapes are sour. (English)

३ अंदरु अंदलमु येक्किते मोसेवारु येवरु? (तेलुगु)
(सब पालकी पर बैठे तो ढोनेवाले कौन हैं?)
एल्लारु पल्लक्कि हत्तिदरे होरोवरु यारु? (कन्नड)
तू भी रानी मैं भी रानी कौन भरे कुएँ का पानी। (हिन्दी)
You a lady I a lady, who is to drive out a sow.
(Galician)

४ निजमाडिते निष्ठुरमु। (तेलुगु)
(सत्य बोलने से बुरा लगता है।)

कडिद्दु कडगे हेळिदरे कोंडदथ कोप। (कन्नड)
अंधे को अंधा कहने मे बुरा लगता है। (हिन्दी)
Truth is bitter food. (Danish)
५ अडवि नक्कलकु कोत्वालु दुराया ? (तेलुगु)
(जगल के सियार दारोगा से डरते है ?)
कुत्तों के भूकने से हाथी नही डरते।
अथवा – कुता भूके हजार, हाथी चले बाजार। (हिन्दी)
नायि बोगळिदरे देवलोक हाळे ? (कन्नड)
Does the moon care if the dog bark at her ? [(German)
६ अडुगुळोने हुस पाद। (तेलुगु)
सिर मुडाते ही ओले पडे। (हिन्दी)
प्रथमग्रासे मक्षिका पात । (संस्कृत)
He who begins ill finishes worse. (Italian)
७ अत्त चच्चिन आरु मासमुलकु कोडलिकंट नीरु वच्चिनदट। (तेलुगु)
(सास की मृत्यु के छे मास बाद बहू की आँखों में आँसू आये।)
आज मरी सासू, कल आये आँसू। (हिन्दी)
अत्ते सत्त आरु तिङ्गळिगे सोसे अत्तळंते। (कन्नड)
Crocodile tears. (English)
८ अपकारिकैन उपकारमु चेयवलेनु। (तेलुगु)
अपकारिगादरु उपकार माडबेकु। (कन्नड)
(अपकारी का भी उपकार करना चाहिए।)
जो तोको कांटा बुवै, ताहि बोव तू फूल। (हिन्दी)
If thine enemy be hungry, give him bread to eat, and if he be thirsty give him water to drink. Proverbs xxv, 21.
९ अभ्यासमु कूसु विद्य। (तेलुगु)
(अभ्यास से सब विद्यायें आसान होती हैं।)
अथवा तिय्यगा तिय्यगा रागमु मूलुगा मूलुगा रोगमु।
(गाते गाते राग कराहते कराहते रोग)

परिशिष्ट १

करत-करत अभ्यास जड मति होइ सुजान। (हिन्दी)

हाड्ता हाड्ता राग, नरळ्ता नरळ्ता रोग। (कन्नड)

Practice makes perfect. (English)

पापि समुद्रानिकि वेळ्ळिना मोकाळ्ळुदाक नीळ्ळु। (तेलुगु)

(पापी समुद्र गया तो वहाँ भी घुटने तक ही पानी।)

पापि समुद्रक्के होदरु मोळकालुद्द नीरु। (कन्नड)

गरीब ने रोजे रखे तो दिन ही बडे हो गये। (हिन्दी)

अथवा – जहाँ जाय भूखा वहाँ पडे सूखा।

प्रायो गच्छति यत्र दैवहतकस्तत्रैव यान्त्यापदः। (संस्कृत)

अरिचे कुक्क नेरदु। (तेलुगु)

(भूकनेवाला कुत्ता नहीं काटता।)

बोगळो नायि कडियोल्ल। (कन्नड)

गरजनेवाला बादल बरसता नहीं। (हिन्दी)

A barking dog does not bite. (English)

Great barkers are not biters. (Scotch)

गर्जन्ति न वृथा शूरा निर्जला इव तोयदा.।

(वाल्मीकि रामायण ६–६५–३)

अरवै येण्ड्लकु अरलु मरलु। (तेलुगु)

अरवत्तु वर्षक्के अरळु मरळु। (कन्नड)

मर्द साठे पर पाठे होते हैं। (हिन्दी)

साठी बुद नाठी। (राजस्थानी)

A man at sixty is a fool. (Kashmiri)

अर्थमु लेकिवाडु निरर्थकुडु। (तेलुगु)

(जिसके पास धन नही है, वह किसी काम का नही है।)

दुड्डिद्दवनु दोड्डप्पा। (कन्नड)

(धनवान ही बडा है।)

पणमिल्लादवन् पिणम्। (तमिल)

हैं सब का गुरुदेव रुपैया। (हिन्दी)

A man without money is like a ship without sail. (Dutch)

१४ आडदानि बुद्धि अपर बुद्धि। (तेलुगु)
स्त्री बुद्धि प्रळयातक अंत। (कन्नड)
स्त्रीबुद्धिः प्रलयांतकारी। (संस्कृत)
लुगाई की अक्ल गुद्दी में होय। (राजस्थानी)
पेण बुद्धि पिन बुद्धि। (तमिल)

१५ आतुरगारनिकि तेलिवि मट्टु। (तेलुगु)
(उतावले मनुष्य की बुद्धि नहीं के बराबर।)
आतुरगारनिगे बुद्धि मट्ट। (कन्नड)
उतावलो सो बावलो। (हिन्दी)
Haste makes waste. (English)
He that is hasty of spirit exalth foliy
(Proverbs xiv)

१६ आदायमु लेक शेट्टि वरदबोडु। (तेलुगु)
(बिना लाभ के बनिया बाढ में नहीं जाता।)
शेट्टी लाभ इल्लदे बीळोल्ल। (कन्नड)
बनिये का बच्चा कुछ देख कर ही गिरता है। (हिन्दी)
बनिये की सलाम भी बेगरज नहीं होती। (हिन्दी)

१७ आहारमंदु व्यवहारमदु शिग्गुपडकूडदु। (तेलुगु)
आहारे व्योहारे लज्जा न का-। (हिन्दी)
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्। (संस्कृत)
A bashful dog never falters. (German)
A modest man at court is the silliest weight breathing. (English)

१८ इंटि पेरु कस्तुरिवारट, इल्लु गब्बिलवाल वासन। (तेलुगु)
(घर का नाम कस्तूरी, पर घर में दुर्गन्ध।)
अथवा – पेरु गगानम्म, ताग बोते नीळ्ळु लेवु।
(नाम तो गगा पर पीने के लिए पानी नहीं।)
हेसरु क्षीर सागर, मनेलि मज्जिगे नीरिगे गति इल्ल। (कन्नड)
(नाम क्षीरसागर घर में छाछ तक नहीं।)

आखों के अधें नाम नयनसुख। (हिन्दी)
जन्म के दुखिया नाम सदासुख। ,,
He is blind his name is Mr. Bright (English)
Where you think there are fliches of bacon
there are no even hooks to hang there on
[(Spanish)

१९ आडनेरक मद्देलमीद तप्पु त्रेसिनट्लु। (तेलुगु)
कुणियल्लारद सूळे नेल डोंकु येंदळु। (कन्नड)
नाच न जाने आगन टेढा। (हिन्दी)
A bad workman complains of his tools.
An ill Shearer never got a good look (Scotch)
निन्दति कचुकमेव शुष्कस्तनी नारी। (संस्कृत)

२० ई चेत चेसि आ चेत अनुभविंचिनट्लु। (तेलुगु)
(इस हाथ से कर उस हाथ से अनुभव करना।)
जैसा करोगे वैसा भरोगे। (हिन्दी)
अपनी-करनी पार उतरनी। ,,
यो यद् वपति बीज हि लभते सोऽपि तत्फलम्। (संस्कृत)
As you sow so you shall reap (English)
As you make your bed, so must lie on it.

२१ उत्तर चूचि येत्तरगप। (तेलुगु)
("उत्तरा" को देख कर अपनी टोकरी उठा लो।)
अथवा — गालि वच्चिनप्पुडुगदा तूपरि पट्टुकोवलेनु।
(जब हवा आती है तभी उसका उपयोग करना चाहिए।)
बहती गगा में हाथ धोओ। (हिन्दी)
गाळि बदाग तूरिको। (कन्नड)
काट्टुळ्ळप्पोल तूट्टुक। (मलयाळम)
Make hay while the sun shines. (English)
Strike while the iron is hot. (,,)
Know your opportunity. (Latin)

२२ एहेमि येरुगुरा अट्टुकुल रुचि, गाडिदेमि येरुगुरा गंधपोडि वासना। (ते)

(बैल को चूरे का स्वाद क्या मालूम, गधे को चंदन की सुगंध क
मालूम ?)
अथवा– गुड्डिवाडु येरुगुना कुन्दनपु छाय ? (तेलुगु)
(अंधे को विशुद्ध सोने का रंग मालूम है ?)
बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद ? (हिन्दी)
कुरुडनु बल्लने मरुगद गमव ? (कन्नड)
A blind man is no judge of colours. (Italian)
A pebble and a diamond are alike to a
blind man. (English)
चै दानद बूजना लज्जाते अद्रक। (फारसी)

२३ तल्लि अयिना येडवनिदे पालिव्वदु। (तेलुगु)
माँ भी बच्चे को बिना रोये दूध नहीं देती। (हिन्दी)
A close mouth catches no flies. (English).
Asking costs little. (Italian).

२४ गुम्मडिकायल दोंग अटे तन भुजालु ताने पट्टि चूचुकोन्नाडट। (ते
(किसी ने कहा, "कुम्हड़े का चोर" तो वह अपनी भुजा आप पक
कर देखने लगा।)
कुम्बळकायि कळ्ळ येंदरे हेगलु मुट्टि नोडिकोड। (कन्नड)
चोर की दाढ़ी में तिनका। (हिन्दी)
A guilty conscience need no accuser. (Englist
He that has a big nose thinks every one
speaking of it. (Scotch)

२५ ईंटि सोम्मु इप्पडि पिंडि, पोरिगिंटि सोम्मु पोडि बेंल्लमु। (तेलुग
(घर की चीज कडुवी और बाहर की चीज मीठी।)
अथवा– पेरटि चेट्टु मंदुकु रादु।
(घर के पिछवाड़े में जो पौधा है, उसका उपयोग दवा में न
किया जाता।)
हित्तल गिड मद्दल्ल। (कन्नड)
घर की मुर्गी दाल बराबर। (हिन्दी)

परिशिष्ट १

Familiarity breeds contempt. (English)
No man is a hero to his valet. ,,
A cow from afar gives plenty of milk. (Fr.
लोक प्रयागवासी कूपे स्नान समाचरति । (संस्कृत)
चदिवेदि रामायणमु पडगोट्टेवि देवस्थलालु । (तेलुगु)
(रामायण पढते हैं, पर गिराते हैं मन्दिर ।)
अथवा – चेसिवि शिवपूजा, चेप्पेवि अबद्धालु ।
(पूजा शिव की करते हैं, बोलते हैं झूठ ।)
ओदोदु पुराण, माडोदु अनाचार । (कन्नड)
मुह में राम राम, बगल में छुरी । (हिन्दी)
पडिक्किरदु रामायणम् , इडिक्किरदु पेरुमाळ कोविल । (तमिल
Beads about the neck and the devil in th heart. (English)
एनुग बाहमुनकु चूरु नीळ्ळा ? (तेलुगु)
(बूदो से क्या हाथी की प्यास बुझती है ?)
रावणासुरन होट्टेगे आरु कासिन मज्जिगेये ? (कन्नड)
ऊंट के मुह में जीरा । (हिन्दी)
निंडु कुंड तोणकदु । (तेलुगु)
तुबिद कोड तुळुकोल्ल । (कन्नड)
निरैंक्कोड नीरु तुळंबादु । (तमिल)
निरकोडं तुळुपकयिल्ल । (मलयाळम्)
अधजल गगरी छलकत जाय । (हिन्दी)
अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम् । (संस्कृत)
Empty vessels make more sound. (Eng.)
Deep rivers move in silence, shallow brooks are noisy. (English)
चच्चिन वानि कळ्ळु चेरडु । (तेलुगु)
(मरे की आँखें बहुत बडी ।)
मरे पूत की आँख कचौली–सी । (राजस्थानी)

A lost horse is valued for sixty sovereigns.
(कश्मीरी)

A dead infant is always a fine child. (English)

३० पिच्चिक मीद ब्रह्मास्त्रमा ? (तेलुगु)
(गौराया पर ब्रह्मास्त्र ?)
कीडि पर कटक। (राजस्थानी)
गुब्बि मेले ब्रह्मास्त्रवे ? (कन्नड)
He takes a spear to kill a fly. (English)

३१ पिट्ट कोंचमु कूत घनमु। (तेलुगु)
(चिडिया छोटी, चिल्लाहट बहुत।)
नाराशिद्दरू जोराशिदाने। (कन्नड)
छोटा मुंह बडी बात। (हिन्दी) [(French)
A little man sometimes castes a long shadow.
A little dog, a cow with horns, and a short man are generally proud. (Danish)

३२ उन्नमाट चेप्पिते ऊरु अच्चिरादु। (तेलुगु)
(सच कहने से गांव अनुकूल नहीं होगा।)
साची कही मारे की दई। (राजस्थानी)
साँच कहै तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना। (कबीर)
He who is truthful may be enemy of others.
Truth produces hatred. (Latin) [(Tamil)

३३ इंटिकि दीपं इल्लालु। (तेलुगु)
घर की मांडा इस्तरी। (राजस्थानी)
गृहिणी गृहमुच्यते। (संस्कृत)
न गृहं गृहमित्याहु. गृहिणी गृहमुच्यते।
गृहं तु गृहिणीहीनं कान्तारादतिरिच्यते॥ (पञ्चतन्त्र, ४–८१)
A wife is the ornament of the house. (Tamil)

३४ कलिमिते काळ्ळु मुय्य, लेकपोते मोकाळ्ळु मुय्य। (तेलुगु)
(कपडे हों तो पैरों तक. नहीं तो घुटने तक।)

परिशिष्ट–१

हासिगे इद्दष्टु कालु चाचु । (कन्नड)

जितनी चादर हो उतने ही पैर पसारो । (हिन्दी)

Cut the coat according to your cloth. (Eng.)

ईत चेट्टु क्रिंद पालु तागिना कल्ले अटारु । (तेलुगु)

(देशी खजूर के पेड के नीचे बैठ कर दूध पिये तो भी लोग कहेंगे "शराब है"।)

ईचल मरद केळगे मज्जिगे कुडिदरू हेंड अनारे । (कन्नड)

कलाल की दूकान पर पानी भी पिओ तो शराब का शक होता है।

अथवा– मदिरा मानत है जगत दूध कलाली हाथ । (हिन्दी)

Tell me the company you keep and I'll tell you what you are (English)

From a clear spring clear water flows (Latin)

रोट्लो बुर्र पेट्टि रोकटि देब्बकु अडिस्तारा ? (तेलुगु)

ओरळलि तले इट्टु ओनकेपेट्टिगे हेदरुत्तारेये ? (कन्नड)

ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर ? (हिन्दी)

The gladiator, having entered the lists is taking advice (Latin)

ओक चेय्यि तट्टिते चप्पुडु अवुना ? (तेलुगु)

ओंदु कै तट्टिदरे चप्पाळे आगत्ये ? (कन्नड)

एक हाथ से ताली नहीं बजती । (हिन्दी)

One man is no man. (Latin)

Two hands are better than one (English)

Hand washes hand and finger finger (Greek)

ओक्कक्क रायि तीस्तुवुंटे कोंडैना तरुगुनुद्दि । (तेलुगु)

(एक–एक पत्थर निकालते रहने से पहाड भी घिस जाता है।)

अथवा– कूर्चुनि तिन्टू वुंटे कोंडकूड मममिपोतदि ।

(बैठ कर खाते रहने से पहाड भी घट जाता है।)

अथवा– कोद्दिगा तीस्ते, कोंडकूड मससिपोतुंदि ।

(थोडा–थोडा निकाले तो पहाड भी घट जाता है।)

कूतकोंडु उण्णोनिगे कुडिके हण सालदु । (कन्नड)

अंततो अश्मापि जीर्यते । (संस्कृत)
पत्थर भी घिस जाता है । (हिन्दी)
Drop by drop the lake is drained. (English)
You must pluck out the hairs of a horse's tail one by one. (Latin)

१९ ओक वरलो रेंडु कत्तुलु विमडवे । (तेलुगु)
एक म्यान में दो तलवारे नहीं समा सकती । (हिन्दी)
Tow cats and a mouse, two wives in one house, two dogs and a bone, never agree in one. (English)

२० दीपमु मुड्डिकिद चीकटि । (तेलुगु)
दीपद बुडदल्ले कत्तलु । (कन्नड)
चिराग तले अन्धेरा । (हिन्दी)
Roguery hides under the judgement seat.
The nearer the church, the farther from the God. (English)

१ कवि येरगिनदि रवि येरगडु । (तेलुगु)
रविकाणदन्नु कवि कंड । (कन्नड)
जहाँ पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि । (हिन्दी)

२ कम्मरि वीदिलो सूदुलु अम्मिनट्लु । (तेलुगु)
(लुहार की गली मे सुइयाँ बेचना ।)
अथवा– कुम्मरि वीधिलो कुंडलु अम्मिनट्लु ।
(कुम्हार की गली में घडा बेचना ।)
उल्टे बाँस बरेली को । (हिन्दी)
To carry coal to New Castle. (English)

३ आकलि रुचि येरगदु, निद्र सुखमेरगदु । (तेलुगु)
हसिविगे रुचि इल्ल, निद्रेगे सुखविल्ल । (कन्नड)
भूख में चने मखाने । (हिन्दी)
अथवा – भूख को भोजन क्या, नींद को सवेरा क्या ?

Hunger is the best sauce. (English)
क्षुधातुराणां न रुचिर्न पक्वम् । (संस्कृत)

४४ कलिगिनवारिकि अदरु चुट्टाले । (तेलुगु)
(जिसके हाथ पैसा है, उसके सब रिश्तेदार ।)
जिसके हाथ डोई, उसका सब कोई । (हिन्दी)
पैसा जिसकी गाठ में, उसके ही सब यार । ,,
A full purse never lacked friends. (English)

४५ कानिकालमुनकु करे पामु अवुतुंदि । (तेलुगु)
(बुरे दिनों में लकडी भी साप हो जाती है ।)
मुट्टिद्देल्ला मण्णु । (कन्नड) (सोना भी मिट्टी ।)
समय फेर की बात, बाज पर झपटे बगुला । (हिन्दी)
समय फिरे रिपु होई पिरीते । (तुलसीदास)

४६ कारणमु लेकने कार्यमु पुट्टदु । (तेलुगु)
कारण के बिना कारज नहीं होता । (हिन्दी)
कारण इल्लदे कार्य आगोल्ल । (कन्नड)
Every way has a wherefore. (English)
There is a cause for all things. (Italian)

४७ कष्टमुखमुलु कावटि कुण्डलाटिवि । (तेलुगु)
(दुख—सुख काँवर के घडे के समान है ।)
घर-घर शादी घर घर गम । (हिन्दी) [(English)
Joy and sorrow are today and tomorrow.
चीकटि कोन्नाळ्ळु वेन्नेल कोन्नाळ्ळु । (तेलुगु)
(अंधेरा कुछ दिन, चादनी कुछ दिन ।)

४८ काकुलनु कोट्टि पद्दलकु वेशिनट्लु । (तेलुगु)
(कौओं को मार कर गिद्धों को खिलाना ।)
हावन्नु होडेदु हद्दिगे हाकिदते । (कन्नड)
(साँप को मार कर गिद्ध को खिलाना ।)
अहमद की पगडी महमद के सिर । (हिन्दी)
He robs Peter to pay Paul. (English)

४९ काकि पिल्ल काकिकि मुद्दु । (तेलुगु)
(कौए का बच्चा कौए को प्यारा होता है।)
हेत्तवरिगे हेग्गण मुद्दु, कट्टिदवरिगे कोण मुद्दु। (कन्नड)
(माता को अपना बच्चा प्यारा होता है, चाहे वह चूहे के समान काला ही क्यों न हो, जीवन साथी कुरूप होने पर भी प्यारा (प्यारी) होता (होती) है।)
अपने दही को खट्टा कौन कहे ? (हिन्दी)
The crow thinks that her own bird is the fairest. (English)

५० कालमु गोप्पनु नाट निलुवुनु। (तेलुगु)
काल होदरु मातु इरत्ते। (कन्नड)
बात रह जाती है, समय निकल जाता है। (हिन्दी)

५१ काले कडुपु मंडे गंजि। (तेलुगु)
(उबलता हुआ माड, जलता हुआ पेट। अर्थात् भूखा आदमी कुछ भी मिले, स्वीकार करता है।)
मरता क्या न करता ? (हिन्दी)
बुभुक्षितः किं न करोति पापम्। (संस्कृत)
Beggers must not be choosers. (English)
Hungry dogs will eat dirty puddings. ,,
A hungry ass eats any straw. (Italian)

५२ काल जारिते तीसको वच्चु कानि, नोरु जारिते तीसको कूडदु। (ते.)
(पैर फिसले तो ले सकते हैं, जबान फिसले तो नहीं।)
मातु आडिदरे होयितु, मुत्तु ओडेदरे होयितु। (कन्नड)
बात तोलो तब मुंह खोलो। (हिन्दी)
A slip of foot may be soon recovered, but that of the tongue perhaps never. (English)
Better a slip of foot than of tongue. (Fr.)
A word and a stone once let go cannot be recalled. (Spanish)

५३ कावडि येन्नि वक्लु पोतेनेमि यिल्लु चेरिने सरि। (तेलुगु)
(काँवर कितना ही टेढा हुआ झुके, घर पहुँचे तो ठीक है।)
अन्त भला सो भला। (हिन्दी)
All's well that ends well. (English)

५४ काशिकि पोगाने करि कुक्क गग गोवु अवुना? (तेलुगु)
(काशि जाते ही काला कुत्ता पवित्र गाय होगा?)
अथवा – गंगलो मुनिगिना काकि हंस अवुना?
(गंगा में डुबकियाँ लेने से क्या कौआ हंस हो जाएगा?)
खर को गंग न्हावाइये तऊ न छोडे छार। (हिन्दी)
खाल ओढाये सिंह की स्यार सिंह न होय। (हिन्दी)
Send a fool to the market and a fool he'll return (English)
He that goes a beast to Rome, a beast returns (Italian)

५५ नि अटे क अनलेडु। (तेलुगु)
("क्या" पूछने से "कौन" नही कह सकता।)
ओ अदरे ठो अन्नोके बरोल्ल। (कन्नड)
काला अक्षर भैंस बराबर। (हिन्दी)
He can say bo to a goose (English)

५६ कुडलो कूडु कूडुगाने वुडवले, पिल्ललु मोद्दुलुगाने वुडवले।(तेलुगु)
(खाना खर्च नही होना चाहिए, बच्चे मोटे रहने चाहिए।)
तप्पले अन्न खर्चागकूडदु, मक्कळु बडवागकूडदु। (कन्नड)
साँप भी मरे लाठी न टूटे। (हिन्दी)
You cannot eat your cake and have it too (English)

५७ कुक्कलु अदनमुलो कूर्चंडवेट्टिते कुच्चलु तेग कोरकिनदि। (तेलुगु)
(कुत्ते को पालकी में बिठाया तो झब्बा ही बार-बार काटने लगा।)
नायिबाल डोंकु। (कन्नड) (कुत्ते की दुम टेढी।)
कुत्ते की दुम बारह बरस नल में रही तो भी टेढी की टेढी। (हिन्दी)
Crooked by nature is never made straight by education. (English)

Set a frog on a golden stool, and off it hops again into the pool (German)

५८ कोटि विद्यल् कूटि कोरके। (तेलुगु)
(करोडो विद्याएँ पेट भरने के लिए ही है।)
उदरनिमित्तं बहु कृतवेषा। (हिन्दी)
उदरनिमित्त बहुकृतवेषः। (संस्कृत)
(इसका प्रयोग अन्य भाषाओं में यथावत् होता है।)

५९ गतकु तगिन बोंत। (तेलुगु)
जस दूल्हा तस बनी बरात। (हिन्दी)
Like pot like cover. (English)

६० कोल् आडिते कोति आडुनु। (तेलुगु)
लकडी के बल बंदर नाचे। (हिन्दी) [(Dutch)
It is the raised stick that makes the dog obey.

६१ ओक बूरिक बोग्ग दोवलु। (तेलुगु)
जाननेवाले के हजार रास्ते ढूढनेवाले का एक। (हिन्दी)
Every man in his way. (English)
There are more ways to the wood than one ,,

६२ गट्टुचेरिन वेनक पुट्टिवानितो पोट्लाडिनट्लु। (तेलुगु)
(जैसे नदी पार करने के बाद मल्लाह से झगडा करना।)
दुख गया राम विसरा। (हिन्दी)
The river past, the saint forgotten. (Spanish)

६३ गुड्डिकन्न मेल्ल मेलु। (तेलुगु) (अंधे से काना भला।)
अथवा – गोवुलेनि बूळ्ळो गोड्डगेदे श्रीमहालक्ष्मी।
(जहाँ गाय नही वहाँ बाँझ भैंस ही श्रीमहालक्ष्मी है।)
अधों मे काना राजा। (हिन्दी)
निरस्तपादपे देशे एरण्डोपि द्रुमायते। (सस्कृत)
The one eyed is a king in the land of the blind. (English)

६४ गुर्रमिकि गुग्गिळ्ळु तिन नेर्पवलेना ? (तेलुगु)

(घोडों को चना खाना सिखाना चाहिए ?)
नानी के आगे ननसाल की बातें। (हिन्दी)
Teach your grand mother to suck eggs. (Eng.)

६५ गोरत वुटे कोडत चेस्ताडु। (तेलुगु)
राई का पर्वत। (हिन्दी)
To make a mountain of a mole hill (Eng.)

६६ अत्त पेरु चेप्पि कूतुरुनि कुपट्लो वेशिनट्लु। (तेलुगु)
(सास का नाम लेकर बेटी को अगीठी में डाला।)
अत्ते मेलिन कोप कोत्ति मेले। (कन्नड)
आप हारे बहू को मारे। (हिन्दी)
अथवा – धोबी का धोबिन पर बस न चले तो गधैया के कान उमेठे।
Cutting of one's nose to spite one's face. [(English)

६७ कुप्पलो माणिक्यम्। (तेलुगु)
(कूडा करकट में ही हीरा।)
लाल गुदडी मे नही छिपते। (हिन्दी)
A diamond is valuable though it lies on a dung-hill. (English)

६८ ऐदु वेळ्ळू समगा वुडवु। (तेलुगु)
ऐदु बेरळू समनागिल्ल। (कन्नड)
पाँचों उँगली बराबर नही होती। (हिन्दी)

६९ इन्लु चोरबडि इटि वासालु लेक्क पेट्टिनाडट। (तेलुगु)
तिन्न इटि वासालु एन्नेवाडु। ,,
उंड मनेगे एरडु बगेयोदु। (कन्नड)
(जिस घर में खाते हैं, उसी का अपकार करनेवाले।)
जिस थाली मे खाना उसी में छेद करना। (हिन्दी)
अथवा – गोद में बैठ कर आँख मे ऊँगली।
All's lost that's put into a river dish (Eng.)
Do good to a knave and pray god he require thee not. (Dutch)

७० जोगी जोगी राचुकोंटे बूडिदे रालिनदि। (तेलुगु)
(दो जोगियों में लड़ाई हुई तो राख गिरी।)
जोगी जोगी लड़े, खप्परों का नास। (हिन्दी)
मोची-मोची लड़ाई होय, फटै राजा कै जीन। ,,

७१ तनकु मालिन धर्मम् लेदु। (तेलुगु)
पहले घर में पीछे मसजिद में। (हिन्दी)
पहले आत्मा फिर परमात्मा। ,,
Charity begins at home. (English)

७२ तल्लि चालु पिल्लकु तप्पुनुंदा? (तेलुगु)
(बेटी मा का अनुकरण करना भूल जाएगी?)
ताय्यिगते मगळु नूलिन्ते सीरे। (कन्नड)
(माँ जैसी बेटी, धागे जैसे साड़ी।)
जैसी माई, वैसी जाई। (हिन्दी)
खाण तशी माती व जाती तशी पोती। (मराठी)
माँ गैल डीकरी, घड़ा गैल ठीकरी। (राजस्थानी)
पितृन्समनुजायन्ते नरा मातरमङ्गनाः।
(वाल्मीकि रामायण २/३५/२८)
As the old cock crows so crows the young.
She hath mark after her mother. (English)

७३ तातकु दग्गु नेर्पवलेना? (तेलुगु)
(दादा को खाँसना सिखाना चाहिए?)
अज्जनिगे केम्मु कलिसिदगे। (कन्नड)
अंडा सिखावे बच्चे को चीं–चीं मत कर। (हिन्दी)

७४ तानोकटि तलस्ते दैवमोकटि तलचिनदि। (तेलुगु)
तानोंदु नेनेदरे दैववोंदु नेनेयितु। (कन्नड)
इनसान बनाये खुदा ढाये। (हिन्दी)
Man proposes, God disposes. (English)

७५ तिंटे गानि रुचि तेलियदु, दिगिते गानी लोतु तेलियदु। (तेलुगु)
(बिना खाये रुचि मालूम नहीं होती, बिना उतरे पानी की गहराई

मालूम नहीं होती ।)

जिन ढूढा तिन पाइया गहरे पानी पैठ । (हिन्दी)

The proof of pudding is in the eating (Eng.)

तिन्नकुक्क तिनि पोने, कऱ्ुकुक्कनु पट्टि काळ्ळु विरिगि कोट्टिनट्टु ।
(तेलुगु)

(जिस कुत्ते ने खाया था, भाग गया, जान पहचान के दूसरे कुत्ते को पकडकर उसके पैर तोड लिये गये ।)

हण्णु तिंदवनु नुणुचिकोंड सिप्पे तिंदवनु सिक्कोंड । (कन्नड)

(जिसने फल खाया था, वह खिसक गया गया, जिसने छिलका खाया, पकडा गया ।)

गधा खेत खाय जुलाहा मारा जाय । (हिन्दी)

दरिद्रुडु तलकडग पोते वडगड्ल वान वेवडे वच्चिनदि । (तेलुगु)

(गरीब अपना सिर धोने लगा तो तभी उपलवृष्टि होने लगी ।)

जहाँ जाय भूखा तहँ पडे सूखा । (हिन्दी)

He who is born to misfortune stumbles as he goes, and though he falls on his back will fracture his nose. (German)

दिक्कु लेनिवाडिकि देवुडे दिक्कु । (तेलुगु)

दिक्किल्लदवरिगे देवरे दिक्कु । (कन्न)

इक्के–दुक्के की अल्ला बेली । (तेलुगु)

God is where He was. (English)

दिस मोलवाडि दग्गरकु दिगबड्डु वच्चिवट्ट अडिगिनट्टु । (तेलुगु)

(नंगे के पास नगा जाकर कपडा माँगने लगा ।)

एले तिन्नोवर मनेगे हप्पळक्के होदहागे । (कन्नड)

(पत्तियाँ खानेवाले के यहाँ पापड माँगने चले ।)

अंधे के आगे रोना अपना दीदा खोना है । (हिन्दी)

दागबोयि तलारि इट्लो दूरिनाडट । (तेलुगु)

(छिपने गया और गाँव के मुखिया के हाथ पडा ।)

कढाई से निकल चूल्हे में पड । (हिन्दी)

To run into lion's mouth (English)
To break the constable's head and take refuge with the sheriff (Spanish)

८१ दूरकु कोंडलु नुनपु। (तेलुगु)
दूरद बेट्ट कण्णिगे नुण्णगे। (कन्नड)
दूर के ढोल सुहावने। (हिन्दी)
"It is distance which leads enchantment to the view.
And robes the mountain in its azure hue."
—Campbell.
दूरत: पर्वता: रम्या:। (सम्कृत)

८२ देब्बकु वॆंय्यमु सह अडलुतुदि। (तेलुगु)
लातों के भूत बातों से नहीं मानते। (हिन्दी)
मार के आगे भूत भागे। "
दण्डं दशगुणं भवेत्। (संस्कृत)
(इसका प्रयोग कन्नड में होता है।)

८३ दोंगकु तलुपुतीशि दोरनु लेपेवाडु। (तेलुगु)
(वह चोर के लिए दरवाजा खोलकर शाह को जगाता है।)
चोर से कहे चोरी कर और शाह से कहे जागते रह। (हिन्दी)
Run with the hare and hunt with the hounds. (English)

८४ दोंगनु दोंग येरुगनु। (तेलुगु)
(चोर को चोर की पहचान।)
चोर-चोर मौसेरे भाई। (हिन्दी) (English)
A thief knows a thief as a wolf knows a wolf.

८५ ना कोडि कुपटि लेकपोते येलागु तेल्लवारुतुन्नदि। (तेलुगु)
(मेरी मुर्गी और अंगीठी न रहे तो सवेरा कैसा होगा?)
नम्म कोळि इल्दे इद्रे बेळगागल्वे? (कन्नड)
जहां मुर्गा नहीं होता वहाँ क्या सवेरा नहीं होता? (हिन्दी)
Day light will come, though the cock does not crow. (English)

निन्नवुन्नारु नेड्डु लेरु। (तेलुगु)
इदिद्दवरु नाळे इल्ल। (कन्नड)
आज जो हैं, सो कल नहीं। (हिन्दी)
To day stately and brave, tomorrow in the grave. (Danish)
पिल्लगलवाडु पिल्लकु येडिस्ते, काटवाडु कासुकु येड्चिनाडट। (ते)
(बच्चेवाला बच्चे के लिए रोये तो श्मशानवासी पैसे के लिए रोने लगा।)
अथवा– गोड्डुवाडु गोड्डुकु येडिस्ते गोडारिवाडु तोलुकु येड्चिनाडट।
(गायवाला गाय के लिए रोवे तो चमार चमडे के लिए रोने लगा।)
धोबी रोये धुलाई को मियाँ रोवे कपडे को। (हिन्दी)
Crows bewail the dead sheep and then eat them (English)
पुण्यानिकि पुट्टेडिस्ते पिच्चकुंचमनि पोट्लाडिनट्लु। (तेलुगु)
(दान में कुछ परिमाण में अनाज दिया गया तो उसने शिकायत की कि माप ठीक नहीं है।)
धर्मक्के दट्टि कोट्टरे हित्तलिगे होगि मोळ हाकिदरु। (कन्नड)
(दान में धोती दी गयी तो लेनेवाले ने घर के पिछवाड़े में जाकर नाप कर देखा कि कितने हाथ की है।)
दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते। (हिन्दी)
मँगनी बैल के दाँत नहीं देखते। ,, (English)
No body looks at the teeth of a gift horse.
Look not a gift horse in the mouth. (Latin)
गोडलुकु चेविलुटायि। (तेलुगु)
गोडेगळिगू किवि इरुवे। (कन्नड)
दीवार के भी कान होते हैं। (हिन्दी)
प्राणमु पोयिना मानमु दक्किच्चुकोवलेनु। (तेलुगु)
प्राण होदरु मान होगबारदु। (कन्नड)

प्राण जाय पर मान न जाय। (हिन्दी)
प्राणं वाऽपि परित्यज्य मानमेवाभिरक्षतु। (संस्कृत)

९१ प्राणमुंडेवरकु भयमु लेदु। (तेलुगु)
प्राण इरोवरेगे भय इल्ल। (कन्नड)
जान बची लाखो पाये। (हिन्दी)
While there is life there is hope. (English)

९२ बलवंतुनि सोम्मु गानि बापडि सोम्मु कादु। (तेलुगु)
(बलवान की संपत्ति है, बेचारे ब्राह्मण की नहीं।)
जिसकी लाठी उसकी भैंस। (हिन्दी)
वीरभोग्या वसुन्धरा। (संस्कृत)
Might over comes right. (English)

९३ ब्रह्मव्रासिन व्रालु तप्पुना? (तेलुगु)
(ब्रह्मा का लिखा परिवर्तित हो सकता है?)
ब्रह्म बरेदिरोदु अळिसोके साध्यवे। (कन्नड)
विधि कर लिखा को मेटनहारा? (हिन्दी)

९४ पोरुगिंटि चूडरा ना पेद्दचेय्या। (तेलुगु)
(मेरी उदारता दूसरों के यहाँ देखो।)
माल मुफ्त दिल बेरहम। (हिन्दी)
It is easy to be generous of another man's
purse. (English)
Broad things are cut from other man's leather.
[(Latin)

९५ प्रीति लेनि कूडु पिंडाकूटितो समम्। (तेलुगु)
(जो खाना प्रेम से खिलाया नहीं जाता, वह "पिंडों" के समान है।)
अथवा — प्रीतितो पेट्टिनदि पिडिकिडे चालुनु। (तेलुगु)
(प्यार से जो खिलाया जाता है, वह मुट्ठी भर पर्याप्त है।)
मान का पान अपमान का लड्डू। (हिन्दी)

९६ स्वतंत्रमु स्वर्गं लोकमु, परतंत्रमु प्राणसंकटमु। (तेलुगु)
(स्वतंत्रता स्वर्ग है परतंत्रता पीडा है।)
पराधीन सपनेहु सुख नाहीं। (तुलसीदास)

धिगस्तु परवश्यताम् । (वाल्मीकि रामायण ५/२५/२०)

९७ मनोव्याधिकि मन्दु लेदु । (तेलुगु)

मनोव्याधिगे औषध इल्ल । (कन्नड)

(मन के रोग की दवा नहीं है ।)

सरीर के रोगी की दवा नहीं, मन के रोगी की कहीं ? (हिन्दी)

Gold is no balm to a wounded spirit. (Eng.)

९८ पिल्लिकि चेलगाटमु येलिककु प्राणसंकटमु । (तेलुगु)

बेक्किगे चल्लाट इलिगे प्राणसंकट । (कन्नड)

(बिल्ली को खेल, चूहे के प्राण संकट में ।)

चिडियों की मौत गँवारों की हँसी । (हिन्दी)

What is the sport to the cat is death to the mouse. (German)

What is play to the strong is death to the weeak (Danish)

९९ कोत्त वैष्णवुनिकि नामालु मेंडु । (तेलुगु)

(नये वैष्णव के "नाम" (तिलक) बड़े–बड़े होते हैं ।)

नया मुल्ला अल्ला अल्ला ही पुकारे । (हिन्दी)

होसदरल्लि अगस गोणि येत्तेत्ति ओगेद । (कन्नड)

New broom sweeps well. (English)

१०० आदिवारं नाडु अदलं सोमवार नाडु जोलि । (तेलुगु)

(रविवार को पालकी पर, सोमवार को झोली में ।)

अथवा – मूडुनाळ्ळ मुच्चट । (तीन दिन का आनंद ।)

चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात । (हिन्दी)

Beauty has a short life. (English)

To every spring there is an autum. (,,)

परिशिष्ट—२

कुछ संस्कृत लोकोक्तियाँ जिनका प्रयोग प्रायः हिन्दी और तेलुगु दोनों भाषाओं में होता है ।

१ अंततोऽश्मापि जीर्यते ।
२ अजीर्णे भोजन विषम् ।
३ अतिपरिचयादवज्ञा ।
४ अतिविनय धूर्तलक्षणम् ।
५ अति सर्वत्र वर्जयेत् ।
६ अधिकस्याधिकं फलम् ।
७ अमृत क्षीरभोजनम् ।
८ अल्पविद्या महागर्वी ।
९ अल्पारंभः क्षेमकर ।
१० अल्पाहारी सदा सुखी ।
११ अहिंसा परमो धर्मः ।
१२ आलस्यादमृतं विषम् ।
१३ अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ।
१४ उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः ।
१५ उद्योग. पुरुषलक्षणम् ।
१६ उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी ।
१७ कष्टे फले ।
१८ कण्टकेनैव कण्टकम् ।
१९ कालस्य कुटिला गतिः ।
२० कुपितो नास्ति दुर्भिक्षम् ।

२१ क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत् ।
२२ कोप. पापस्य कारणम् ।
२३ गतजले सेतुबन्धनम् ।
२४ चिन्ता जरा मनुष्याणाम् ।
२५ जीवन् भद्राणि पश्यति ।
२६ जीवो जीवस्य भोजनम् ।
२७ जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।
२८ दैवोपि दुर्बलघातक· ।
२९ दैवी विचित्रा गतिः ।
३० धनमूलमिदं जगत् ।
३१ धर्मो रक्षति रक्षित· ।
३२ परोपकारार्थमिदं शरीरम् ।
३३ निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते ।
३४ परोपकाराय सतां विभूतय· ।
३५ पत्रं नैव यदा करीलविटपे दोषो वसन्तस्य किम् ?
३६ बुद्धि. कर्मानुसारिणी ।
३७ मौनं अर्धांगीकारः ।
३८ मौनं सम्मति लक्षणम् ।
३९ मौनं सर्वार्थसाधनम् ।
४० भिन्नरुचिर्हि लोकः ।
४१ भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम् ।
४२ महाजनो येन गतः स पन्थाः ।
४३ यथा राजा तथा प्रजाः ।
४४ यत्र आकृति. तत्र गुणाः वसन्ति ।
४५ लंघनं परमौषधम् ।
४६ वचने का दरिद्रता ।
४७ विद्या विहीन. पशुः ।
४८ विनाशकाले विपरीतबुद्धिः ।
४९ विषस्य विषमौषधम् ।

५० शठे शाठ्यम् समाचरेत् ।
५१ शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि ।
५२ शुभस्य शीघ्रम् ।
५३ सतोष परम सुखम् ।
५४ सत्यमेव जयते नानृतम् ।
५५ साहसाद्धजते लक्ष्मीः ।
५६ सर्वे गुणाः काचनमाश्रयन्ति ।
५७ सत्यान्नास्ति परो धर्मः ।
५८ हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ।
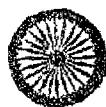
परिशिष्ट—३

सहायक पुस्तकों की सूची

अंग्रेजी

1. Encyclopaedia Britannica Vol II, X & XIV
2. Chambers's Encyclopaedia of Universal Knowledge Vol I.
3. Nelson's Encyclopaedia Vol 18.
4. Every man's Encyclopaedia Vol 10 New Edition 1958.
5. Oxford Junior Encyclopaedia, Vol XII-The Arts.
6. Dictionary of Hindustani Proverbs.
7. Oxford Dictionary of English Proverbs.
8. G. Apperson — English proverbs and proverbial phrases. (1929)
9. Proverbs from East and West.
10. Harwest Field — Kanarese Proverbs.
11. H. Puttar Streeker — Proverbs for pleasure. (1954)
12. Dictionary of world Literature. (1943)
13. Webster's English Dictionary.
14. B. J. Whiting — Proverbs in the earliar English Drama. (1938)
15. Monier Williams — Indian Wisdom
16. Abdul Hamid — National Proverbs-India.
17. Thomas Seccombe and J. W. Allen — The Age of Shakespeare, Vol II (1947)

संस्कृत

१ पं० द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी – संस्कृत शब्दार्थ-कौस्तुभम् (१९२८
२ श्री जगदम्बा शरण – सस्कृत लोकोक्ति सुधा। (१९५०)
३ कालिदास के ग्रन्थ।
४ पञ्चतन्त्र।
५ हितोपदेश।
६ श्री हंसराज अग्रवाल – सस्कृत प्रबन्ध प्रदीपः।

हिन्दी

१ श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध – बोलचाल।
२ डॉ० कन्हैयालाल "सहल" – राजस्थानी कहावतें–एक अध्यय
३ डॉ० सत्येंद्र – ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन।
४ संक्षिप्त हिन्दी शब्द-सागर– नागरी प्रचारिणी सभा। (स २
५ हिन्दी साहित्य कोश – (डॉ० धीरेन्द्रवर्मा, डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा
६ डॉ० गुलाब राय – लोकोक्तियाँ और मुहावरे।
७ श्री ब्रह्मस्वरूप शर्मा – हिन्दी मुहावरे।
८ श्री श्याम परमार – भारतीय लोक साहित्य।
९ श्री महावीर प्रसाद पोद्दार – कहावतों की कहानियाँ।
१० तुलसी रामायण।
११ सूरसागर।
१२ श्री प्रेमचन्द – गोदान, गबन तथा अन्य कृतियाँ।
१३ कामता प्रसाद गुरु – हिन्दी व्याकरण।
१४ वारणासि राममूर्ति "रेणु" – आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमन

तेलुगु

१ Captain M. W. Carr — तेलुगु सामेतलु। (१
२ Benson- Telugu sayings and proverbs. (1.

३ श्री वो. वें. दोरैस्वामय्या — नाना देशपु सामेतलु ।
४ लोकोक्ति मुक्तावळि ।
५ तेन्गुगु सामेतलु (आन्ध्र प्रदेश साहित्य अकाडमी ।)
६ श्री सुरवरम् प्रताप रेड्डी — आंध्रुल साविक चरित्र ।
७ श्री खण्डवल्लि लक्ष्मीरञ्जनम् तथा खडवल्लि बालेन्दुशेखरम् — आन्ध्रुल चरित्र-संस्कृति ।
८ खडवल्लि लक्ष्मीरञ्जनम् — आन्ध्र साहित्य चरित्र संग्रहम् ।
९ श्री वेङ्कटनारायण राव — आन्ध्र वाङ्मय चरित्र संग्रहम् ।
१० तेलुगु विज्ञान सर्वस्वमु (तेलुगु भाषा समिति, मद्रास) ।
११ श्री सत्यवोलु राजेश्वर राव — देशदेशाल सामेतलु ।
१२ श्री नूकुल सत्यनारायण शास्त्री — तेलुगु सामेतलु, भाग १, २ ।
१३ श्री बी. रामराजु — जानपद गेय साहित्यम् ।
१४ श्री शठकोपम् — आन्ध्र हिन्दी निघंटुवु ।
१५ श्री रा० अनन्तकृष्ण शर्मा — वेमना ।
१६ श्री परवस्तु चिन्नय सूरि — नीति चन्द्रिका ।

कन्नड

१ श्री एच. सी. अय्यप्पा — कन्नड गादेगळु ।
२ श्री एस. एम. वृषभेन्द्रस्वामी — बरेयुव दारि ।

पत्र-पत्रिकाएँ

आन्ध्र प्रभा, आन्ध्र पत्रिका, भारती (तेलुगु), सरस्वती, साहित्य संदेश, भारती (हिन्दी) आदि ।

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
7	24	Chamber's	Chambers's
9	2	है कि जनता की	जनता की
13	8	कटिनाई	कठिनाई
14	6	जिस	जिससे
16	11	कहवत	कहावत
24	1	चहिए	चाहिए
31	12	को	कोई
32	32	सत्यज गत	सत्य जगत
38	3	मुंह को जाना	मुंह को आना
47	6	उद्धत	उद्धृत
47	21	रेम्नल	वेम्नल
51	12	प्राज्ञा	प्रज्ञा
57	5	चलकल	चलकर
68	13	प्रणणता	प्रवणता
76	1	एप्पाटिकि	एप्पटिकि
79	9	नित्य जीवन का	नित्य जीवन में
82	8	किसी भाषा के	किसी भाषा की
82	11	होती है	होती हैं
86	3	पच्चनिदन्तयमु	पच्चनिबंतयु
86	10	आकाली	आकलि
86	10	पलपु	वलपु
87	11	कहाँ कहाँ	कहाँ
90	2	कूतरूनि	कूतरुनि
91	2	घर छाँछ	घर में छाँछ
91	13	घर घी	घर की

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
91	14	लगोटी	लंगोटी
99	8	अत.करखलु	अंत करणलु
99	19	आनुरगारतिकि	आतुरगारतिकि
100	3	चाल	चाम
108	21	सुम	सुभ
109	3	हिम	हिय
111	4	मागवाडो	मगवाडो
111	12	वोषिन	वोयिन
117	7	श्रेयस्कर	श्रेयस्कर है
120	12	तहीं	नहीं
124	9	हाथ कर	हाथ से कर
124	12	जन्मजन्मतरवाद	जन्मातरवाद
125	7	समुद्रानि	समुद्रानिकि
132	4	का	की
134	1	वेस्तन्नि	बेस्तन्नि
136	1	कंडलु	कंड्लु
140	13	पापमु	पापपु
144	5	भरल	भरत
145	18	सियार को	सियार का
148	15	एकातमला	एकांत में भला
157	6	लगता हो	लगता हो तो
159	21	काम नहीं	काम का नहीं
160	7	बाह्यो	चाह्यो
163	1	मैया	भैया
172	17	ये	यह
177	4	सुख	सुख का
178	18	विविषयों	विषयो
178	18	संबन्धित	सबंधित

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
180	9	बस	बरु
180	12	दिषय	विषय
184	3	बलमुखादि	बलमुखादि
187	9	देवलोक	देवलोकं
190	8	बामन बेटा	बामन का बेटा
190	15	मत्यं	मत्थ
190	19	बापुल	बापुल
195	1	बनिये के	बनिये का
195	4	प्रवाव	प्रवाह में
195	21	सारे	मारे
200	3	और	पर
200	4	मोरिगिनाइट	मोरिगिनाइट
204	17	स्वभाव ही	स्वभाव ही है
210	17	कोट्टुकोम्रडट	कोट्टुकोम्रदट
213	7	है	हैं
215	8	परहस्त	परहस्तं
217	17	बाद	बाद में
221	16	सास	सास से
221	17	रहती	रहती है
221	19	अगटि	अंगडि
222	7	मिगले	मिगवे
229	6	उघर	उधार
229	16	के मबन्धि	सबंधी
232	19	मेड	मेंड
234	1	के	से
237	18	चुष्कुल	शष्कुली
238	1	चष्कुल	शष्कुली
240	17	कुठ	कंठ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
249	15	मोलकलल्ु	मोलकलकु
256	4	शिवरात्रि की	शिवरात्रिकि
258	9	ज	जो
259	22	चल्लुटकु	चल्लुटकु
262	3	कोदराडु	कोनराडु
262	20	भोद्वुवले	भोवुदुवले
264	5	हीने	होने
264	13	भूलना	भूलनी
269	2	जले	जल
270	13	मेंने	मैंने
275	9	थपेड	थपेडे
277	8	मुड्डिक्रिद	मुड्डिकिव
277	15	अर्थ का	अर्थ की
278	2	अटा	आटा
278	9	जीगी	जोगी
279	21	कहावतो	कहावत
281	3	श्रुत्यनुप्रास का	श्रुत्यनुप्रास
284	18	कंदकु	गलकु
286	1	त्तवल्ल	अत्तवल्ल
290	11	मनोहारिणि	मनोहारिणी
292	17	सादृश्य	सदृश

परिशिष्ट– १

1	15	अंदनमु	अदलमु
2	10	अड्गुळोने	अड्गुलोने
3	10	नेरदु	करव नेरदु
3	22	लेकिवाडु	लेनिवाडु
3	26	पणयिल्लावन्	पणमिल्लावन्
4	3		प्रत्यकरी

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
9	19	के	कै
10	18	पहुँचे रवि	न पहुँचे रवि
12	21	काल	कालु
12	21	तच्चु	मच्चु
13	24	अबनमुलो	अंबलमुलो
18	12	वैप्यमु	वैय्यमु

* * *

लेखक की अन्य कृतियाँ

*

१. कर्नाटक और उसका साहित्य 4–00

प्रकाशक –

मैसूर रियासत हिन्दी प्रचार समिति, बेंगलोर–11.

२ कर्नाटक-दर्शन (संपादित तथा अनूदित) 3–00

प्रकाशक –

मैसूर रियासत हिन्दी प्रचार समिति, बेंगलोर–11.

३. रत्नाकर (कन्नड से अनूदित उपन्यास) 3–00

प्रकाशक –

पद्म प्रकाशन, बेंगलोर–4.

४. पंपरामायण की कथा

('दक्षिण भारत' में प्रकाशित)

५. कन्नड जैमिनि-भारत

('दक्षिण भारत' में प्रकाशित)

यंत्रस्थ

६. सूरदास और पोतना – तुलनात्मक अध्ययन

७. कन्नड-हिन्दी-कोश